॥ ओ३म् ॥

नैपोलियन बोनापार्ट

सम्पादक

मुन्शीराम

॥ ओ३म् ॥

नैपोलियन बोनापार्ट

का

जीवन चरित

सम्पादक तथा प्रकाशक

मुन्शीराम जिज्ञासु

पं० अनन्तराम प्रिन्टर द्वारा

सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय गुरुकुल कांगड़ी

में मुद्रित

संवत् १९६८ वि०

दयानन्दाब्द २८ } सन् १९११ ई०

करम प्रधान विस्व करि राखा ।
जो जस करहि सो तस फल चाखा ॥

(तुलसीदास)

॥ ओ३म् ॥

सम्पादक की प्रस्तावना।

आदित्य ग्रन्थमाला की पहिली मणि सर्वसाधारण के सन्मुख रख कर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई है। जिस आर्य्यभाषा की उन्नति के लिये मैंने उर्दू के उस्तादों की झाड़ें सहकर भी उसका क्रमशः प्रवेश उर्दू दानों की वाणी तथा हृदय में कराने का प्रयत्न किया, जिस मातृ भाषा को उस की प्राचीन राजधानी पंचनद प्रधान देश में फिर से अधिकार दिलाने के लिये सहस्रों की आर्थिक हानि की परवा न की, जिस देवी को उसका प्राचीन राजसिंहासन दिलाने के प्रयत्न करने वाले भारतभूषणों के पीछे चलकर मैं अब तक केवल उनके पुरुषार्थ की स्तुति करने में अपने कर्त्तव्य की समाप्ति समझता रहा, उसके प्रकाशमय कोष की पूर्त्ति में एक नए ग्रन्थ के सम्पादन द्वारा सेवक का पद उपलब्ध करना मेरे लिये आज बड़ा ही आल्हादजनक है। आर्य्यभाषा के साहित्य में यह ग्रन्थमाला एक स्वतन्त्र स्थान ग्रहण करे, यह मेरी हार्दिक इच्छा है।

एक नए ग्रन्थकर्त्ता के पुरुषार्थ का यह जीवनचरित पहिला फल है, जिस का आदर होने पर आशा है कि आर्य्यभाषा प्रेमियों के मनोरंजन तथा शिक्षा का नित्य नया प्रबन्ध होता रहेगा। इस ग्रन्थमाला में मणि पिरोने का काम करने के लिये मातृ-भाषा के अन्य भक्त भी तय्यार होरहे हैं। परमात्मा आशीर्वाद दे कि आदित्य बारबार उदय होकर आर्य्यजाति को प्रकाश देता रहे।

मुंशीराम जिज्ञासु

स्थान गुरुकुल

ग्रन्थकार की भूमिका।

जापान की पाठशालाओं में सब से प्रथम पाठ्यपुस्तक नेपोलियन बोनापार्ट का जीवनचरित है। इस असाधारण पुरुष का जीवनचरित है भी ऐसा ही, कि प्रत्येक बालक युवा या परिणत मनुष्य को इस का अनुशीलन अवश्य ही करना चाहिये। बालक इस से उत्साह और शक्ति का पाठ पढ़ सक्ते हैं, युवा इस से अपनी असम्भव इच्छाओं का परिमित करना सीख सक्ते हैं और वृद्ध इस से अपने अन्तिम जीवन को सन्तोपदायक बना सक्ते हैं, क्योंकि किसी भी साधारण सत्पुरुष का अन्तिम जीवन उतना दुःखपूर्ण नहीं हो सक्ता, जितना नेपोलियन का था। जिस जीवन से सब अवस्थाओं के पुरुष उपदेश ले सक्ते हैं, आर्य्य भाषा में उसका होना अत्यन्त आवश्यक है॥

वंशानुक्रम से नैपोलियन किसी बड़ी सामाजिकस्थिति का न था। जब उस के पिता का देहान्त हुआ, तब वह छोटे से अनाथ के सिवाय कुछ नहीं कहा जा सक्ता था। विद्यालय में वह सारे विद्यार्थियों के उपहास का केन्द्र बना रहता था। जिस विद्यालय में उस की शिक्षा होती थी, वहां फ्रांस के बड़े ठाकुरों के पुत्र अस्त्र शस्त्र शिक्षा सीखते थे। नैपोलियन के छोटे वंश का उन्हें पता था, इस लिये वे सदा उसे अपमान की दृष्टि से देखते थे। कोर्सिकावासी होने से, उस के मुखवर्ण में भी फ्रांस निवासियों से भेद था, उस के लिये भी उसे बोसों अवाच्य सहने पड़ते थे। किन्तु वह दृढ़ निश्चय वाला मनुष्य अपनी गर्दन सीधी किये, किसी की परवा न करता हुआ, अपने रास्ते चलता गया।

जब वह अपने वास्तविक सैन्य जीवन में प्रविष्ट होता है, उस का दुर्भाग्य तब भी उसका पीछा नहीं छोड़ता। एक मोची के घर में उत्पन्न हुए २ अवारागर्द सिपाही के भाग्यों से अच्छे भाग्य, उस के पंजे नहीं पड़ते। कोर्सिका से भगाया जाकर वह फ्रांस में शरण लेता है। वहां के सैन्य के साथ टउलन पहुंच कर, अपनी असाधारण करामात दिखाता है, किन्तु दुर्भाग्य उस के साथ गांठ बांधे पीछे ही पीछे चला जाता है। टउलन का विजेता कैद में डाला जाता है, और पन्द्रह दिन तक उसे नरकयातना भुगतनी पड़ती है। कैद से छूट कर उसे फिर एक वार आवारागर्दी का जीवन बिताना पड़ता

है। निराशा और दरिद्रता से दबाया जाकर वह अपने आप को नदी में डुबोने के लिये तय्यार करता है, किन्तु अब सारे जीवन में पहली वार उसका भाग्यचन्द्रमा अपनी चमक दिखाता है। उसका एक मित्र ऐन समय पर उसकी सहायतार्थ आन पहुंचता है, और उसे पुष्कल धन देकर पूर्णहस्त कर देता है। यहां तक नैपोलियन के जीवन की पूर्व पीठिका–दुःखपीठिका–समाप्त होती है। यह दुःखपीठिका हर एक विपद्ग्रस्त आदमी के लिये शिक्षादायिनी है; विशेषतया वे लोग जो अपने वंश की नीचता के कारण संसार में उच्च उन्नति का मार्ग सार्गल पाते हैं, इस जीवन से धैर्य्य और अवष्टम्भ का पाठ सीख सक्ते हैं। वे इस प्रकाशमय जीवन के तमोमय प्रारम्भ से जान सक्ते हैं, कि मेघमण्डल से स्थगित होकर भी चन्द्रमा अपनी कान्ति को खो नहीं देता; किन्तु समय पाकर पहले से भी अधिक चांदनी से चमक सक्ता है।

पहली दुःखपीठिका के पीछे, नैपोलियन के जीवन की विजयपीठिका या आश्चर्य-पीठिका शुरू होती है। इस पीठिका के शुरू में, हम उसे एक पतला सा साहसिक सिपाही पाते हैं। कोई २० वर्षों के अन्दर ही, वह फूलता २, एक शक़दार सम्राट् बनजाता है। वह अपना विजयप्रसङ्ग एक सेनापति के रूप में प्रारम्भ करता है। पहले से ही विजयश्री उस की खड्ग का साथ देती है, जिधर उस की आंख फिर जाती है, उधर ही सहस्रों वर्षों मे स्थित राजवंशों के मुकुट झुक जाते हैं। एक घोर आंधी की तरह वह योरप के एक किनारे से दूसरे किनारे तक कंपकंपी फैला देता है; सारे देश उस के विजयी घोड़ों की टाप से गूंज उठते हैं; और थोड़े ही दिनों में, हम, सिवाय उस के और उस की सेना के, कुछ नहीं सुनते। शेष सभी सम्राट् हिमालय को घेरनेवाली छोटी २ पहाड़ियें दीखती हैं। आस्ट्रिया का नरेश तीन वार अपनी राजधानी से निकाला जाकर, सन्धि के लिये उत्सुक हो रहा है; प्रशिया का राजा मान और स्थान से शून्य हुआ हुआ दीनता को प्राप्त होकर अपने लड़के को विजेता की शरीररक्षक सेना में प्रविष्ट कराना चाहता है; रूस का अभिमानी ज़ार समय के विजेता के साथ विनीतमैत्री करने में अपना गौरव समझता है। अन्य छोटे २ देशों का तो कहना ही क्या है? वे तो दिग्विजयी का झण्डा उठाने में अपना अहोभाग्य मानते हैं। यह दशा है जिस में हम नैपोलियन को आस्टर्लिट्ज़ विजययात्रा के पश्चात् देखते हैं। क्या इस से बढ़ कर कोई सांसारिक पद हो सक्ता है? क्या दो एक ऐतिहासिक व्यक्तियों को छोड़ कर और किसी ने भी आज तक विजयलक्ष्मी के इतने कौशल दिखलाये हैं?

यह नैपोलियन की युवावस्था थी। उस की प्रतिभा उच्चतम शिखर पर विचर रही थी; शरीर पर उस का अवाधित अधिकार था; दवाने वाले आन्तरिक शत्रुओं पर उस का पूरा विजय था; उसे गुड़ाकेश कहें तो भी झूठ न होगा। न वह कभी थकता था, और न वह कभी आलसी होता था। दिन और रात उसे यदि कोई चिन्ता थी तो विजय की; यदि कोई स्वप्न था तो विजय का। यह समृद्ध अवस्था की उच्च कोटि थी।

आप समझते होंगे कि नैपोलियन इस समृद्ध अवस्था में बड़ा प्रसन्न होगा, किन्तु यह आप की भूल है। वह इस अवस्था में उतना ही असन्तुष्ट था, जितना असन्तुष्ट कोई मनुष्य हो सक्ता है। कई बड़े मनुष्यों को असन्तोष और सड़ियलपने की बीमारी होती है, और नैपोलियन उस का आदर्श स्थान था। वह कभी अपनी अवस्था से सन्तुष्ट न होता था; कोई भी बात—कोई भी उच्च से उच्च पद— उसे प्रसन्न न कर सक्ता था। वह कभी हंसता हुआ नहीं सुना गया, और हंसी ही सन्तुष्ट चित्त का चिन्ह है। वह सदा अन्दर २ ही सड़ा करता था, और कुछ न कुछ और चाहता रहता था। इसी रोग ने, उसे, इस समृद्ध अवस्था में भी असन्तुष्ट बना दिया; अब भी वह चुप न बैठ सका। एक बड़ा साम्राज्य स्थापित करके, और प्रायः सारे योरप का भाग्यनिश्चायक बन कर भी, उसे सन्तोष न था। सारे योरप का सम्राट् बनने के लिये, उस का असन्तोषी मन, उसे प्रेरित कर रहा था। यदि नैपोलियन सारे योरप का राजा हो जाता तब भी सन्देह है कि वह सन्तुष्ट होता। तब वह निःसन्देह एशिया और अफ्रीका को जीतने का भी उपक्रम करता।

इसी रोग ने उस का भयानक अधःपात उपस्थित किया। निरन्तर परिश्रम तथा खिंचाव से उस की बुद्धि ठिकाने न रही, और शरीर शिथिल पड़ गया; किन्तु तोभी विजयवासना ने उस का पिण्ड न छोड़ा। वह बड़े से बड़े कार्य्यों का आरम्भ करने लगा। स्पेन के राज्य में अपनी टांग पसारना और रूस के ऊपर आक्रमण करना, ये दो कार्य्य उस के अधःपात के कारण थे, और वे इसी असन्तोषरोग के फल थे।

यह नैपोलियन के जीवन की दूसरी पीठिका है। यह पीठिका मनुष्य जाति को सन्तोष और शम का उपदेश देती है, और विजेताओं को सिखाती हैं कि विना अपनी महत्त्वाकांक्षा को परिमित किये, संसार में रहना कठिन है।

अब हम उस के जीवन की तीसरी पीठिका पर पहुंचते हैं। वह पीठिका आश्चर्यदायक वीरता और धैर्य्य के साथ प्रारम्भ होती है और सेण्टहेलीना की सूखी और चुटीली पहाड़ियों में समाप्त होती है। उस पीठिका में, हम, एक बड़े शान्दार और मध्य आकाश में चमकते हुए सितारे को, बादलों से छुपे २ पश्चिम दशा में लम्बायमान होता हुआ देखते हैं। रूस की विपत्ति के पीछेही, शत्रु, चारों ओर से उमड़ आते हैं और फ्रांस अपने विजयों का कर अदा करने लगता है। नैपोलियन इस आक्रमण का सामना अनुपमेय साहस और शौर्य्य के साथ करता है, किन्तु थोड़ी संख्या पर बड़ी संख्या का विजय होता है। फिर वाटर्लू का युद्ध आता है, जो, नैपोलियन के सुविस्तृतसाम्राज्य को सेण्टहेलीना में बनी हुई एक छोटी-सी कोठरी तक ही परिमित कर देता है। सेण्टहेलीना की कथा अनुभव के स्नायुवों को तोड़ने वाली है। एक मनुष्य को जितने दुःख मिल सक्ते हैं, वे योरप के विजेता को वहां पर मिलते हैं; और पांच साल तक कैदखाने में सड़ कर उस के दुःखित प्राण पखेरू उड़जाते हैं।

इतनी कथा है, जिसका विस्तार इस पुस्तक में किया गया है। यह कथा मनोरञ्जक है इस में सन्देह नहीं, किन्तु साथ ही यह उपदेश देने वाली भी है। इस से उपदेश कौन से मिल सक्ते हैं, यह ऊपर दिखा दिया गया है; यह कथा मनोरञ्जक है यह सिद्ध करने के लिये सारी शेष पुस्तक विद्यमान है। नैपोलियन के जीवनचरित जितनी घनतया मनोरञ्जक पुस्तक मिलनी बहुत कठिन है। उस के कार्य हम से इतने दूर हैं, और वे हमें ऐसे असम्भव तथा अशक्य प्रतीत होते हैं कि हम उन्हें सिवाय मनोरञ्जक के और कुछ नहीं समझ सक्ते। देवों, राक्षसों और गन्धर्वों की कथायें हमें मनोरञ्जक प्रतीत होती हैं, क्योंकि वे हम से बहुत दूर हैं; क्योंकि उन के समझने में हमें अपनी कल्पनाशक्ति का अभीष्ट विस्तार करना पड़ता है। इन्हीं दोनों कारणों से नैपोलियन का चरित भी हमारे लिये मनोरञ्जक है।

ऐसा मनोरञ्जक और उपदेशप्रद चरित है, जिसे मैं आप के सामने रखने लगा हूं। सम्भव है, मैं इसे यथायोग्य उपदेशप्रद और मनोरञ्जक न बना सका हूं, और सम्भव है, इस से बहुत अच्छा और जीवन लिखा जासक्ता हो। सम्भव ही क्यों, यह निश्चित ही है कि यदि अधिक योग्य और अधिक अनुभवी पुरुष इस चरित को लिखे, तो वह इस वर्त्तमान चरित से बहुत ही उत्तम होगा। किन्तु मुझे निश्चय है कि

यह क्षुद्र यत्न भी निरर्थक नहीं होगा । और कुछ नहीं, तो यह आप के मनों में उस भविष्यत् में लिखे जाने वाले चरित के लिये, उत्सुकता तो पैदा कर ही देगा । नैपोलियन के इतने छोटे चरित से, सिवाय उत्सुकता पैदा करने के और कुछ हो भी नहीं सक्ता । उस के चरित के बीस पच्चीस बरस असाधारण घटनाओं से इतने भरे पड़े हैं, कि विना नमक मिर्च के लगाये उन का उल्लेख ही वर्त्तमान पुस्तक से दसगुणी मोटी पुस्तक को भर सक्ता है । सरवाल्टरस्काट ने, नैपोलियन का जीवन चरित, इस पुस्तक जितने बड़े २ दस भागों में लिखा है । जब किसी ने उस से पूछा कि तुम ने इतना लम्बा जीवनचरित क्यों लिखा है, तो उस ने उत्तर दिया कि इस से छोटा लिखने के लिये मेरे पास समय नहीं था । नैपोलियन के जीवनचरित को लम्बा करने के लिये परिश्रम नहीं चाहिये, परिश्रम उस के छोटा करने के लिये अपेक्षित है । कौनसी घटना छोड़ी जाय, और कौनसी लिखी जाय ? किस का विस्तार किया जाय और किस को थोड़े में लिखा जाय ? इत्यादि प्रश्न हैं, जो छोटा जीवन-चरित लिखने वाले के सिर पर आपड़ते हैं । नैपोलियन का लम्बा चरित लिखना कठिन नहीं, कठिनता छोटा लिखने में अनुभूत होती है । लार्डरोज़बरी ने केवल सेण्टहेलीना की कैद का वृत्तान्त लिखा है, और उस की पुस्तक इस पुस्तक की आधी के तुल्य है । इस से आप अनुमान कर सक्ते हैं कि वर्त्तमान चरित के लिखने में, लेखक को, कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा । कई दिनों तक वह केवल एक परिच्छेद में लिखने योग्य घटनाओं को ही सोचता रहता था और तब भी यह पता न लगता था कि उन्हें इतने छोटे आकार में कैसे लाया जाय ?

शायद आप पूछें कि फिर यह पुस्तक बड़ी ही क्यों न लिखी गई ? यदि इसे बड़े आकार में लिखा जाता तो हानि क्या थी ? इस कठिन प्रश्न का उत्तर भी सुन लीजिये । अभी हमारी आर्य्यभाषा के पढ़ने वालों में उत्तमोत्तम ग्रन्थ पढ़ने का शौक नहीं हुआ, अभी तक वे भाषा की पुस्तकों पर पैसा खर्चना हराम समझते हैं । हमें यह डर था कि कहीं हमारी नौसौ हज़ार पृष्ठों की छपी छपाई पुस्तक, हमारे ताक की शोभा ही न बनी रहे, इसी लिये, पहले, नैपोलियन के चरित को, इस छोटे आकार में लिखा गया है । यदि इस पुस्तक को वर्तमान आकार से पांच छः गुणे आकार में लिखा जाय, तो इस की मनोरञ्जकता भी कम से कम पांच छः गुणी हो सक्ती है । चरित की घटनायें जितने ही अधिक विस्तार और परिपूर्णभाव से लिखी जांय, उतनी ही मनोरञ्जक होती हैं । यदि इस पुस्तक के परीक्षण ने यह

सिद्ध कर दिया कि आर्यभाषा के प्रेमी नैपोलियन के जीवनचरित को पसन्द करते हैं, तो हम थोड़े ही वर्षों में, उन की सेवा में, इस चरित से पांच छः गुणे आकार का मोटा चरित उपस्थित करेंगे, जो मनोरञ्जकता में भी इस से पांच छः गुणे से कम न होगा।

नैपोलियन का जीवनचरित लिखने में, केवल छोटा करने की कठिनाई हो—ऐसा नहीं; और भी कई तरह की कठिनाइयें हैं जिन का सामना करना पड़ता है। नैपोलियन का चरित इतना विस्तृत है कि हर एक योरप निवासी किसी न किसी तरह उस से सम्बद्ध है। कोई उस का शत्रु है और कोई उस का मित्र। उस के शत्रुओं के लिखे हुए जीवनचरित्र, उसे वैसा ही काला बताते हैं, जैसा निष्कलंक चन्द्रमा उसे उस के भक्त कहते हैं। सरवाल्टरस्काट लैमर्टाईन आदि उस के शत्रुदल के मुखिया हैं, और ऐबट आदि उस के मित्रदल में प्रधान हैं। इन दोनों दलों के लिखे हुए नैपोलियन विषयक ग्रन्थ पढ़ने से, मनुष्य मायाजाल में फंस जाता है और उस की मति चकरा जाती है। एक पक्ष वाले कहते हैं नैपोलियन राक्षस था, दूसरी तरफ़ वाले कहते हैं वह देव था। सत्य मानें तो किसे मानें, झूठ कहें तो किसे कहें ? जैसा विवादग्रस्त चरित नैपोलियन का है, ऐसा शायद ही किसी अन्य एक मनुष्य का हो। इस पर भी तुर्रा यह कि उस के चरित की घटनायें बहुत ही स्पष्ट हैं; उस के एक २ दिन की दिनचर्या पूरी सचाई के साथ मिलती है। घटनाओं के स्पष्ट होते हुए भी, उस के विषय में इतनी भिन्न २ सम्मतियें आश्चर्य में डालने वाली हैं। ऐसी अवस्था में, किसी एक निश्चित, तथा निष्पक्षपात सम्मति पर पहुंचना, बहुत ही कठिन कार्य है। भूसे से अनाज को पृथक् कर लेना सहल है, दूध को पानी में से निकाल लेना भी सुगम है, किन्तु नैपोलियन के विषय में ठीक २ सम्मति बनाना बहुत ही दुष्कर कार्य है।

अंग्रेज़ इतिहासज्ञ, अब भी, नैपोलियन का जीवनचरित्र लिखते हुए यह कल्पना कर लेते हैं कि वह उनके साथ लड़ रहा है; अब भी वे यही समझते हैं कि उनके लिखे हुए ग्रन्थों से नैपोलियन की सेनाओं का नाश होना है। किसी अन्य मृत पुरुष के साथ, ऐसी शत्रुता कहीं नहीं देखी गई। गोल्डस्मिथ और सरवाल्टरस्काट आदि के ग्रन्थ, नैपोलियन के विरुद्ध ज्वालामुखी पर्वत के सिवाय अन्य कुछ नहीं। वे उसकी सब बुरी बातों को सामने लाने और सब अच्छी बातों को पीछे छुपाने की लीला में, साधारण सत्य की अवधि को पार कर गये हैं। कहीं २ सचाई की

हत्या करके भी, उन्हों ने, नैपोलियन के चरित्र को यथासम्भव काला करने का यत्न किया है।

यह तो हुई शत्रुओं की बात, अब मित्रों की भी कथा सुन लीजिये। नैपोलियन के भक्तों में से सब से अधिक प्रसिद्ध ऐबट हुआ है। एक अंग्रेज़ होते हुए भी, उस ने, सम्राट् के प्रति जो भक्ति तथा प्रेम का भाव दिखाया, वह प्रशंसनीय था, किन्तु शोक यही है कि उस के भक्ति तथा प्रेम भी, उसे इतिहास की निष्पक्षपात स्थली से बहुत दूर ले गये। जहां नैपोलियन के शत्रु उसे दोषों का पुंज सिद्ध करने का यत्न करते हैं, वहां ऐबट उसे संसार के सारे उच्चतम भावों का ढेर दिखाना चाहता है। वह उसे सर्वथा निर्दोष सिद्ध करना चाहता है, जो एक मनुष्य में होना असम्भव है। रूस के आक्रमण को और स्पेन के साथ युद्ध को भी, वह अशुद्धि मानने के लिये तय्यार नहीं है। उस की भक्ति ऐतिहासिक भक्ति की काष्ठा से गुज़र गई है। वह एक इतिहासज्ञ प्रतीत नहीं होता, किन्तु नैपोलियन की सेना में लड़ने वाला, और 'महाराज चिरंजीवी हों' पुकारने वाला, भक्त सिपाही प्रतीत होता है!

ऐसे कँटीले और दुर्गम जङ्गल में सत्य का खोज निकालना बड़ा कठिन कार्य है। ग्रन्थकर्ता ने अपनी शक्ति और समझ के अनुसार जो कुछ खोजा है, वह इस ग्रन्थ में सन्निहित कर दिया है। सम्भव है अधिक ज्ञान तथा परिश्रम से उसकी सम्मतियें बदल जांय, किन्तु कम से कम इतना वह अवश्य बड़ी चैन से कह सकता है कि उस ने अपने मन को पक्षपात से रहित करके यह ग्रन्थ लिखा है। यदि पाठक लोग इस को पढ़कर गत शताब्दि के सब से बड़े विजेता, तथा शासक के विषय में कुछ भी सम्मति बना सकें, यदि यह ग्रन्थ इस कोर्सिकन ऐन्द्रजालिक के इन्द्रजाल की पेचीदा पहेली के बूझने में कुछ भी सहायक हो सके, और यदि इस तुच्छ ग्रंथ को पढ़कर अध्येतृगणों की ऐतिहासिक अनुशीलन में कुछ भी प्रवृत्ति हो सके, तो ग्रन्थकर्त्ता अपने सारे यत्न को सफल समझेगा।

इस पुस्तक के लिखने में, जिन २ ग्रन्थों से साहाय्य लिया गया है, उन सब का नाम लिखना कठिन है। कठिनता का कारण पुस्तकों की बड़ी संख्या नहीं, किन्तु उन की अनेकविषयता है। नवीन योरप का कोई ऐसा इतिहास नहीं, जिसमें नैपोलियन का चरित न दिया गया हो। बीस वर्ष के अन्तर में, सिवाय उसके इति-

हास के योरप का कोई इतिहास ही नहीं। उन सब से सहायता लेने के अतिरिक्त, ऐबट, सर वाल्टरस्काट, रोज़बरी, बुरीने, एलीसन, कीलैण्ड, ओमन, फिफ्फ आदि विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़कर, इस ग्रन्थ का मसाला तय्यार किया गया है। फ्रांस की राज्यक्रान्ति के विषय में लिखने के लिये, मिचलेट, मिग्नेट, कार्लाइल तथा स्टीफन्स के इतिहासों से विशेष सहायता ली गई है।

यहांपर भूमिका का अन्त करने से प्रथम, उन सुहृदों तथा कृपालुओं का धन्यवाद करदेना भी आवश्यक है, जिन्हों ने इस ग्रन्थ के प्रूफ़ देखने में, भाषा की बनावट सुझाने में, तथा कहीं २ अशुद्धियें सुधारने में सहायता दी है।

गुरुकुल काङ्गड़ी
११–६–१८.

ग्रन्थकर्त्ता

विषय सूचि।

प्रथम भाग—(फ्रांस की राज्य क्रान्ति)

द्वितीय भाग—(बालसूर्य का उदय)

तृतीय भाग—(साम्राज्य लब्धि)

चतुर्थ भाग—(दिग्विजय यात्रा)

पंचम भाग—(दुःखमय अन्त)

नपोलियन बोना पार्ट ।
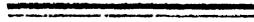
प्रथम-भाग ।

फ्रांस की राज्यक्रान्ति ।

प्रथम-परिच्छेद ।

राज्यक्रान्ति की तय्यारी ।

अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् । भवभूति ।

बुद्धिमानों का कथन है कि इस संसार में कोई भी क्रिया विना प्रयोजन के नहीं होती । विना किसी उद्देश्य के एक तिनके का टूटना भी असम्भव है । अतुल शक्ति शाली परमात्मा की सृष्टि में कोई अनर्थक बात कैसे हो सक्ती है ? यह कथन और भी अधिक सच प्रतीत होने लगता है जब हम छोटी २ क्रियाओं को छोड़ कर, संसार की बड़ी २ क्रियाओं के ऊपर विचार करते हैं । विचक्षण लोगों ने बड़े २ यत्न कर के यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि संसार की रंगस्थली में जो अद्भुत नाटक खेले जाते हैं; जो आश्चर्य्यदायक तथा असाधारण घटनायें होती हैं, वे सप्रयोजन होती हैं--उन्हें निष्प्रयोजन समझना भूल है । जिस अवस्था तथा जिस घटना चक्र में उस एक घटना का आना होता है, वहां वह आवश्यक ही होती है, उस के विना वह घटनाचक्र अंग हीन होने से ठीक २ नहीं चल सक्ता, परमात्मा की इच्छा पूरी नहीं हो सक्ती । चाहे वह घटना किसी को प्रिय लगे वा अप्रिय, उस की आवश्यकता में और सप्रयोजनता में सन्देह नहीं होसक्ता । फूल, खिलने से प्रथम, मुकुल के रूप में आता है, यह नियम है । किन्तु कौन व्यक्ति चाहता है कि मनोहर पुष्प का स्थान, सौन्दर्य्य रहित मुकुल लिये रहे, सब यही चाहेंगे कि किसी तरह एक दम फूल खिल जाय और हम उस से आनन्द ले सकें । किन्तु ऐसा हो नहीं सक्ता । यदि मुकुल न हो तो फूल खिलने की आशा की उत्पत्ति कैसे हो ? और अगर आशा न हो तो फूल खिलने से जो आनन्द हो, वह जो आनन्द होता है उस की अपेक्षा आधा भी न रहे । इस से प्रतीत होता है कि जिस घटना को हम नहीं चाहते, जिसे हम व्यर्थ समझते हैं, वस्तुतः वह वैसी नहीं--वह सार्थक है ।

मैं एक बड़ी भारी घटना आप के सामने रखना चाहता हूं । मैं एक ऐसा जीवन-चरित्र आप के सामने रखना चाहता हूं, जो यद्यपि एक बड़े घटनाचक्र का अंग है तथापि जिस को स्वयं एकाकी देखना भी महत्व से खाली नहीं है । वह घटना

नैपोलियन बोनापार्ट का विख्यात चरित्र है । नैपोलियन का चरित्र योरप के ही क्यों संसार के इतिहास में कितनी बड़ी घटना है यह आप को इस चरित्र के साद्यन्त अनुशीलन से स्वयं ही पता लग जायगा । जब कोई भी घटना और विशेषतः बड़ी घटना, विना प्रयोजन के नहीं होती, तब नैपोलियन के चरित्र जितनी बड़ी घटना किसी प्रयोजन के विना ही हो गई हो, ऐसा मानना बड़ी भारी गलती होगी ।

तब यह जानने के लिये कि नैपोलियन बोनापार्ट की इस संसार में क्या आवश्यकता थी, परमात्मा को उस के द्वारा संसार का क्या भला करना था, हमें यह देखना आवश्यक है कि वह कैसे समय में पैदा हुवा, उस समय को किस चीज़ की आवश्यकता थी, और क्या नैपोलियन अपने समय को वह चीज़ दे सका ? अगर देसका तो मानना पड़ेगा कि नैपोलियन का चरित सप्रयोजन था, वह ईश्वर प्रेरित था । अन्यथा नहीं ।

इन सब बातों को ध्यान में रख कर, मैंने यह उचित समझा है कि नैपोलियन का निज चरित प्रारम्भ करने से पूर्व, उस के पूर्व समय में फ्रांस देश की—जिस में नैपोलियन का जन्म हुवा था—क्या दशा थी यह दिखला दूं ।

नैपोलियन के वास्तविक चरित का आरम्भ, उस समय से होता है जिस समय फ्रांस देश में क्रान्ति रूपी अग्नि की ज्वाला चारों ओर बड़े ज़ोर से धधक रही थी । पुराने राजनैतिक तथा धार्मिक विचार लोगों के मनों से उड़ चुके थे; पुराना एक सत्तात्मक राज्य, जिस में एक राजा ही देश के सब निवासियों के जीवनों और सम्पत्तियों का सर्वाधिकारी था, समूल नष्ट हो चुका था; वह क्रिश्चियन धर्म, जिस ने किसी दिन फ्रांस के निवासियों के दिलों पर पूरा अधिकार प्राप्त करके उन की बुद्धियों पर मुहर लगा दी थी, धूल में मिल गया था; वे ठाकुर और बड़े २ ज़मीन्दार लोग, जो किसी दिन राजा के दाहिने बाहु समझे जाते थे और सर्वसाधारण पर अपना अखण्डित अधिकार समझते हुवे अकड़े फिरते थे, अपनी २ जान बगल में दबाये फ्रांस की हद के बाहिर बैठे हुवे अपराधियों की तरह अपने प्राण बचाने का फ़िक्र कर रहे थे । किम्बहुना, पुराना सारा ही ढंग बदल गया था । राजा और उस के दरबारियों की जगह सर्वसाधारण का राज्य होगया था । 'बाबा वाक्यम्प्रमाणम्' की जगह 'तर्क' शक्ति प्रधान होगई थी । और फ्रांस उस समय एक नये युग में से गुज़र रहा था--एक नये समय में से जा रहा था ।

यह क्रान्ति फ्रांस के लिये ही नहीं, किन्तु सारे योरप भर के लिये इतनी आ-

वश्यक थी, कि इसे योरप के इतिहास में सदा विशेष स्थान दिया जाता है । जिस क्रान्ति को इतना विशेष समझा गया है, जिस क्रान्ति ने फ्रांस देश की एक शताब्दि के चौथे भाग में ही काया पल्ट दी, और जिस क्रान्ति के भीतर नैपोलियन का सारा चरित्र केवल एक खण्ड मात्र है; वह क्या थी ? क्यों हुई ? और कैसे हुई ? इत्यादि विषयों पर कुछ थोड़ा सा निर्देश कर देना भी पाठकों के लिये अवश्य मनोरंजन का हेतु होगा ।

फ्रांस देश में सैकड़ों वर्ष पूर्व से बोर्बोन वंश के राजा राज्य करते आये थे । उसी वंश का चौदहवां ल्यूई नाम का राजा सतरहवीं शताब्दि के मध्य में फ्रांस के राज्यसिंहासन पर आरूढ़ हुवा । यह राजा बड़ा ही विचित्र नरेश था । यह बड़ा ही प्रबल, किन्तु नीच था । यह फ्रांस के आधिपत्य की हदों को बढ़ाने की तृष्णा से व्याकुल होकर सारे योरप में हल चल मचा रहा था, किन्तु अपनी प्रजा के सुख पर ज़रा ध्यान न देता था । युद्धों के लिये सामग्री की आवश्यकता पड़ने पर, विना सोच विचार के अपनी दरिद्र प्रजा पर धड़ाधड़ कर लगा देता था । किन्तु मेरे युद्धों से मेरी प्रजा को मिलता क्या है यह कभी भी न विचारता था । उस के समय में, फ्रांस के आधिराज्य की सीमा चाहे कितनी ही बढ़ गई हो, किन्तु वह अभागा देश दीनों और दरिद्रों से भर पूर था और एक बड़ा भारी हस्पताल प्रतीत होता था । ल्यूई के युद्ध फ्रांस से बाहिर होते थे, किन्तु घायल फ्रांस की प्रजा हो रही थी । इधर तो ये युद्ध तङ्ग कर रहे थे, और उधर चौदहवें ल्यूई को दरवार की सजावट से बेहद प्रेम था । कहा जाता है कि जैसा उज्ज्वल तथा बेतहाशा सजा हुवा चौदहवें ल्यूई का दर्बार था, वैसा—दो चार ऐसे ही और दृष्टान्तों को छोड़ कर—अन्य किसी का आज तक नहीं देखा गया । इन सजावटों के लिये भी रुपया ग़रीब प्रजा की हड्डियों से ही चूसा जाता था । लोग बिल्कुल निर्धन हो रहे थे, उन्हें एक समय खाने को भी मुश्किल से मिलता था ।

अपनी प्रजा को दीन और दया योग्य दशा में छोड़ कर १७१५ ईस्वी की प्रथम सेप्टेम्बर के दिन, इस प्रबल किन्तु क्रूर राजा ने इस लोक से प्रयाण किया । उस समय पन्द्रहवां ल्यूई केवल पांच बरस का बालक था । अतः पहले आठ बरस तक ड्यूक आव और्लीन उस की जगह शासन करता रहा । फिर ल्यूई ने स्वयं शासन किया । किन्तु इस निर्बल राजा का शासन, शासन कहाने के योग्य नहीं है । इस के शासन को फ्रांस का अधःपात कहें तो अयोग्य न होगा । इस राजा के आचरण बड़े ही गिरे

हुवे थे; यह सदा किसी न किसी स्त्री के वश में रहता था; राज्य के काम की स्वयं देख भाल करना इस के लिये हराम था। इन निर्बलताओं के होते हुवे इसे शासन उस देश का करना था जो बड़ा ही दरिद्र तथा दुःखित हो रहा था, और जो अब तक केवल चौदहवें ल्यूई के बलवान् दण्ड के डर से चुपचाप बैठा हुवा मौका ताक रहा था। चौदहवें ल्यूई की एकत्रित की हुई दुर्नियम्य शक्ति को काबू में रखना इस कमज़ोर दुराचारी के लिये असम्भव था । उस असम्भवता का फल जो होना था वही हुवा । राज्य का प्रबन्ध ढीला पड़गया । दबी हुवी प्रजा दबाव के उठजाने पर बड़े अदम्य ज़ोर से ऊपर को उठने लगी । शासन प्रणाली, धर्म, और कर आदि सम्बन्धी स्वतन्त्र विचार चारों ओर फैलने लगे । स्वाधीनता पाने के लिये लोगों में तय्यारी शुरू हुई। इसी समय क्रान्ति के तीन मुख्य दार्शनिकों ने अपने नये विचारों के प्रभाव से सारे फ्रांस को प्रक्षालित कर दिया ।

वे तीन दार्शनिक, मौण्टस्क्यू वाल्टेयर और रूशो थे। इन में से प्रथम, मौण्टस्क्यू ने (१६८९–१७५५) अपने 'नियम तत्व' (The spirit of laws) के द्वारा फ्रांस में विद्यमान राजकीय संस्था का बहुत कुछ विरोध कर के, इंग्लैण्ड की राजकीय संस्था का मण्डन किया था। दूसरा वौल्टेयर (१६९४–१७७८) था । यह बड़ा ही प्रचण्ड लेखक था । दूसरे की हंसी उड़ा देने और नई २ परिभाषा घड़ने में, बहुत थोड़े लेखक शायद इस के समान हुवे हों । इस ने अपनी तीक्ष्ण किन्तु तर्कगर्भा लेखिनी से, उस समय के धर्म तथा शासनसंस्था के दोषों की खूब धज्जियें उड़ाई । इस ने, पुराने विचारों का विध्वंस कर के क्रान्ति के लिये रास्ता साफ़ कर दिया । तीसरा क्रान्ति का सच्चा दार्शनिक रूशो (१७१२–१७७८) था । इसने ही वस्तुतः क्रान्ति की दृढ़ नींव रक्खी । इसने एक तरह से फ्रांस की राज्य संस्था की जड़ पर ही कुल्हाड़ा रख दिया । अपनी Social Contract नाम की पुस्तक में रूशो ने यह सिद्ध कर के दिखाया कि प्रकृति ने हर एक मनुष्य को दूसरे के समान तथा स्वतन्त्र उत्पन्न किया है । पूर्व समय में मनुष्यसमाज की प्राकृतिक दशा थी । उस समय कोई शासक या शासनीय न थे, सब समान और स्वतन्त्र थे। किन्तु पीछे दस्युओं के भय से, उन्होंने परस्पर अपनी स्वतन्त्र इच्छा से एक ठहराव या इकरार (Contract) कर लिया । उस के द्वारा उन्होंने अपने में से ही कुछ को अपनी रक्षा का भार सौंप दिया, और उस के बदले में रक्षकों को वे कर देने लगे और अपनी स्वतन्त्रता को थोड़ासा कम होजाने दिया । इस तरह रूशो ने यह दिखाया कि

शासन करने वाले सब पुरुष या संस्थायें समाज की अपनी कृति हैं, उन्हें समाज जब चाहे बदल सक्ता है। साथ ही उसने यह भी बताया कि सब मनुष्य परस्पर समान तथा स्वतन्त्र हैं। रूशो के इन सिद्धान्तों ने क्रान्ति के होने में बड़ी सहायता दी। क्रान्ति का मूलमन्त्र 'स्वाधीनता, समानता, भ्रातृता या मृत्यु' भी रूशो के ही दार्शनिक विचारों का गुर था।

इधर दार्शनिक लोग सर्वसाधारण को इस प्रकार की शिक्षा दे रहे थे और उधर राजा उस के दर्बारी तथा अन्य ठाकुरलोग और क्रिश्चियनधर्म के पादरी अत्याचार अन्याय और दुराचार के द्वारा उस शिक्षा रूपी अग्नि में घृत की आहुतियें डाल रहे थे। राजा के अधिकार, जैसा मैं ऊपर बता आया हूं, अनन्त होरहे थे, उन की कोई सीमा न थी। राजा की इच्छा के सामने कोई प्रतिबन्ध न था, वह सर्वथा स्वाधीन था। प्रजा के प्राण सम्पत्ति और परिवार सब के सब राजा की स्वाधीन इच्छा पर अवलम्बित थे। कर लगाने में भी राजा स्वतन्त्र था। दर्बार की सजावट के लिये, प्रायःप्रजा पर रोज़ ही कर लगा करते थे; दर्बारियों, अन्य बड़े ज़मीन्दारों, लार्डों तथा ठाकुरों का और भी बिगड़ा हुवा हाल था। उन लोगों के बहुत से अधिकार छिन चुके थे, तथापि अपने इलाके में उन का आधिपत्य बेरोक टोक था। जिस किसान को चाहें मारदें, जिस को चाहें बहाल करदें, कोई उन्हें प्रतिबन्ध न था। इन परमात्मा के बिगड़े हुवे पुत्रों के शिकार खेलने में रोक न हो, इसलिये किसान लोग अपने खेतों के चारों ओर बाड़ न लगा सक्ते थे। उन बेचारों को खाने के लिये तो एक समय भी मुश्किल से मिलता था किन्तु ज़मीन्दार लोग जब चाहते पुलों और सड़कों पर भी कर लगाकर जो कुछ उन के पास था उसे भी छीनने का यत्न करते थे। राजा को अधिकार था कि वह जब चाहे जिस मनुष्य के नाम कैद की आज्ञा निकाल कर उसे विना अभियोग के कैद कर सक्ता था। लार्ड लोग राजा को प्रसन्न कर के उस के इस अधिकार का भी पूरा लाभ उठाते थे। क्रिश्चियनधर्म के धर्माधिकारियों का भी बड़ा बिगड़ा हुवा हाल था। वे लोग धर्माधिकारी या पादरी तो नाम के ही थे, उन का मुख्य कार्य्य लोगों से धर्म के नाम पर आय का दशांश लेकर उसे अपने उपभोग में खर्च करना था। वे लोग, सर्वसाधारण में सुख की जगह दुःख का प्रचार करने वाले थे। इस सब पर भी अनोखी बात यह थी कि सारा का सारा राजकीय कर निचली श्रेणि के लोगों से लिया जाता था, लार्ड लोग और धर्माधिकारी लोग उन से छूटे हुवे थे।

परमात्मा की सृष्टि में उसी के पुत्रों पर ऐसा अत्याचार होता रहे, यह सम्भव नहीं।

अत्याचार की भी कोई हद होनी चाहिये । बेहद अत्याचार क्रान्ति उत्पन्न किये विना नहीं रह सक्ता । आप फुटबाल में हवा भरते जाइये, वह फूलता जायगा और हवा उस के अन्दर दबती जायगी । किन्तु कोई अवधि आयगी जिस के आगे हवा उस के अन्दर और नहीं दब सकेगी । अगर दबाने का आप यत्न करेंगे तो फुटबाल का चमड़ा फट जायगा । वायु का दबने का धर्म छुप जायगा और दबाने का धर्म प्रादुर्भूत होजायगा । यही मनुष्य प्रकृति की अवस्था है । आप मनुष्य पर अत्याचार कीजिये, वह बहुत देर तक उसे सह सक्ता है । किन्तु उस सकने की भी कोई अवधि है । उस के आगे यदि आप अत्याचार करेंगे तो वह सकने की सीमा से निकल जायगा और मनुष्य की दबने की प्रकृति की जगह उस की दबाने की भयानक शक्ति आप के सामने आकर उपस्थित होगी । उस समय हम कह सकेंगे कि अब उस मनुष्य में क्रान्ति होगई है ।

यही अवस्था थी जब फ्रांस में क्रान्ति की अग्नि, अत्याचारों की घृताहुतियों से बढ़ाई जाकर, और स्वतन्त्रता पूर्ण दार्शनिक विचाररूपी पवन के झोकों से फैलाई जाकर, सारे योरूप की आंखों को चौंधियाने के लिये तय्यार हुवी ।

द्वितीय परिच्छेद ।

राज्यक्रान्ति का फूट पड़ना ।

क्रान्तिरोगः प्रगुणितरयः केन वा वारणीयः ?

मैंने प्रथम परिच्छेद में बताया था कि मनुष्य की सहन शक्ति कभी असीम नहीं हो सकती, उस का कहीं न कहीं अन्त होजाता है । उस अन्त के पहुंचजाने पर, उस सीमा के पार हो जाने पर, या तो वह मनुष्य मर जायगा, या उस व्याधि के दूर करने की चेष्टा करेगा । यदि उसे कोई ऐसा अच्छा वैद्य मिल गया, जिस ने रोग के स्वरूप और निदान को ठीक २ जान कर औषध का प्रयोग किया तो रोगी की चेष्टा सफल हो जायगी, और यदि दुर्भाग्यवश ऐसा वैद्य उसे न मिला तो हन्त ! उस का रोग और भी प्रबल हो कर उसे अशक्त कर देगा और न जाने कितने भविष्यत् वर्षों के लिये उसे चारपाई का अतिथि बना जायगा ।

जो मनुष्य की दशा है वही राष्ट्र की भी समझनी चाहिये । राष्ट्रों के भी अपने रोग होते हैं, जिन से वह समय २ पर पीड़ित होते रहते हैं । वर्तमान काल के राजनैतिक विचारकों की यह सिद्ध करने की ओर बड़ी प्रबल चेष्टा हो रही है कि राष्ट्र एक 'देह' के समान 'अंगी' है । अंगों में विकार हो जाने से अंगी रोगग्रस्त होता है, राष्ट्र भी अपने अंगों के बिगड़ने से ही बीमार पड़ता है ।

जिस समय का यहां वर्णन होरहा है, उस समय फ्रांसदेशीय राष्ट्र बीमारी की हालत में था, वह सर्वथा स्वस्थ न था । चारों तरफ़ फैले हुवे आक्रन्दन और प्रतिनाद, दूर २ देशों तक उस रोगी की रुग्ण दशा को प्रकाशित कर रहे थे । जिन अन्य देशों के यात्रियों ने उस समय फ्रांस को देखा, उन्हों ने मुक्तकण्ठसे यही कहा कि 'जल्दी या देर में—फ्रांस में तूफ़ान अवश्य आने वाला है' । फ्रांसीसी राष्ट्र के अंग विकार युक्त होगये थे, उन में कीड़े लग गये थे । उसे उस समय एक ऐसे वैद्य की आवश्यकता थी जो उस के रोग को पहिचाने और उस का इलाज करे । वह वैद्य आया, वह क्रान्तिरूपी वैद्य फ्रांस देश को रोगमुक्त करने के लिये बड़े ज़ोर शोर से

आया, और उस ने उस के विकृत अंगों की ऐसी सुन्दर काट छांट की कि उसे देख कर संसार चकित होरहा है। जब वह काट छांट हो रही थी तब सारा संसार उस वैद्य को धिक्कारता था, कोसता था, कापुरुषों की न्याई उसे क्रूर कहता था। परन्तु अच्छा वैद्य वही कहाता है जो अपने कार्य्य के समय सारे संसार को भूल जाय और केवल उस रोगी के रोग पर ही ध्यान रक्खे। क्रान्ति ने भी किसी की एक न सुनी, उस ने अपना कार्य्य जारी रक्खा और अन्त में यद्यपि फ्रांसीसी राष्ट्र उस चीर फाड़ की क्रिया से कुछ कमज़ोर होगया, परन्तु इस में सन्देह नहीं कि वह नीरोग भी होगया, उस के विकार जो उसे रोगी कर रहे थे नष्ट होगये।

और वे विकृत अंग कौन से थे? बिना झिझकने के सीधा जवाब यह है—'राजा, बड़े बड़े लार्ड और पादरी लोग ही फ्रांसीसी राष्ट्र के विकृत अंग थे'। क्रान्ति का कार्य्य उन्हें ही काट देना था, वह होजाने पर क्रान्तिवैद्य कृतकृत्य हो कर फ्रांस को छोड़ कर चला गया।

मैंने ऊपर कहा कि उस समय फ्रांस की ऐसी अन्तर्दाहयुक्त दशा थी कि जो कोई भी यात्री वहां आया उस ने यही कहा कि जल्दी में या देर में—फ्रांस में तूफान अवश्य आने वाला है। यही नहीं, फ्रांस के अन्दर भी ऐसे लोग विद्यमान थे जो इस भविष्यद्वाणी को कह रहे थे। यहां तक कि, दुराचारी लम्पट और निर्बल पन्द्रहवां ल्यूई भी जाता हुवा कह गया कि 'हमारे पीछे जलविप्लव होगा'। वह वर्ष १७७४ ई० था जिस में इस जल विप्लव के उठाने वाले मनुष्य ने इस पृथिवी पर से अपने कलंकित शरीर का भार उठा लिया।

राज्यभार सोलहवें ल्यूई के जवान कन्धों पर पड़ा। जिस समय उस का राज्याभिषेक होरहा था, उसी समय दूर से आते हुवे विपत्तियों के घोर बादलों का गर्जन उस के कानों में पड़ रहा था। उस ने भयभीत होकर अपने सहायकों को ढूंढने के लिये चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, किन्तु उस ने देखा कि इस पृथ्वी पर कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उस आते हुवे तूफ़ान से उसे बचा सके, और क्रान्तिरूपी वैद्य के तीक्ष्ण छुरे से उस की रक्षा कर सके। उस समय वह घबरा गया और उस के मुंह से ये शब्द निकल पड़े,—'परमात्मन्! तुम हमारे रक्षक और रहबर बनो, हम अभी इतने जवान हैं कि शासन नहीं कर सक्ते'। ईश्वर ने इस प्रार्थना को सुनकर भी अनसुना कर दिया, क्यों कि उस के अटल नियम के सामने एक व्यक्ति की प्रार्थना कुछ नहीं करसक्ती।

सोलहवां ल्यूई, यदि इस क्रान्ति के समय में उत्पन्न न होता तो शायद संसार के

सर्वोत्तम राजाओं में एक गिना जाता । सदाचारी, मितव्ययी, प्रजाहित को चाहने वाला, दयार्द्र हृदय, स्नेही—इस प्रकार का सोलहवां ल्यूई था । ये सब गुण साधारण समय में एक राजा को बड़ा उत्तम बना सक्ते हैं, किन्तु क्रान्ति के समय में ऐसे राजा कुछ नहीं कर सक्ते । वे देखते हैं कि उन के नीचे से सिंहासन खिसक रहा है किन्तु वे हिलने में असमर्थ होते हैं । ऐसे समयों के लिये ऐसे राजा की आवश्यकता होती है जो या तो बड़े कठोर दबाव से क्रान्ति को कुचल सके, या बड़ी प्रबल मानसिक शक्ति से क्रान्ति का पथदर्शक बन जावे । ये दोनों ही गुण इस राजा में न थे । वह कठोरता न कर सक्ता था, और उस की मानसिक शक्ति बड़ी निर्बल थी । वह झट ही किसी दूसरे के कहने में आ जाता था ।

उस ने राजा बनते ही देखा कि देश की आर्थिक दशा बड़ी बिगड़ रही है । राजकोष खाली पड़ा है । इसका प्रतीकार करने के लिये उसने कई योग्य योग्य मनुष्यों को अपना मुख्य मन्त्री बनाया, किन्तु कोई भी उस दशा को न सुधार सका । उसने कृपापात्र श्रेणि के पुरुषों की एक सभा बुलाई, बड़े २ लार्ड उसमें आये, उन से राजा ने धन सम्बन्धी सहायता मांगी, लेकिन उन कृतघ्नों की ओर से सूखा जवाब मिला, किसी ने एक कानी कौड़ी देने की कृपा न की । तब तो तङ्ग होकर राजा ने एक 'साधारण राज सभा' बुलाई, जिसमें लार्डों और पादरियों के अतिरिक्त साधारण के भी प्रतिनिधि बुलाये गये । यह सभा फ्रांस के राजाओं द्वारा पहले भी समय २ पर बुलाई जाती रही थी, किन्तु यह एक विशेष समय था । चिरकाल के अत्याचारों, नये दार्शनिक विचारों और सार्वदेशिक क्रान्ति के सिद्धान्तों से प्रभावित फ्रांस की मध्यम श्रेणि की शिक्षित प्रजा ने यह एक अच्छा अवसर हाथ पाया । इस सभा में लार्डों और पादरियों के तीन२सौ, किन्तु सर्वसाधारण के छैसौ प्रतिनिधि आने को थे । इस सभा का बुलाना मानों अत्याचारों से पीड़ित होकर शस्त्र चलाने की इच्छा रखने वालों के हाथ में स्वयं शस्त्र दे देना था । सर्व साधारण को ज्यों ही अपनी शिकायतें सुनाने का अवसर मिला त्यों ही उन्हों ने उस अवसर को हाथ से न खोने की मन में ठानी ।

१७८९ ईस्वी के मई मास की पञ्चम प्रविष्टा के दिन 'साधारण राज सभा' की बैठक प्रारम्भ हुई । प्रारम्भ में ही 'कृपापात्र श्रेणि के लोगों' (पादरियों और लार्डों) से सर्व साधारण के प्रतिनिधियों का झगड़ा शुरू होगया । कृपा पात्र लोग चाहते थे

कि तीनों श्रेणियों के लोग हर एक प्रश्न पर पृथक् २ स्थानों में विचार करें। तीनों के पृथक् २ निश्चय से जो परिणाम निकलें उनमें देखा जाय कि दो श्रेणियें क्या चाहती हैं ? जो वे चाहें वही हो और एक श्रेणिका अल्प मत न माना जाय। किन्तु सर्वसाधारण इस तरीके को ठीक न समझते थे। वे चाहते थे कि तीनों श्रेणियों के प्रतिनिधि एक ही जगह विचार करें, और जिस पक्ष में सारों में से अधिक प्रतिनिधि हों वही पक्ष स्वीकार किया जाय । कृपापात्र लोग सर्वसाधारण के संस्याबहुत्व का लाभ उड़ाना चाहते थे और सर्व साधारण उसे रखना चाहते थे। विवाद यहां से उठा और परिणाम यह निकला कि सर्व साधारण के प्रतिनिधियों ने तंग आकर अपने आपको ही 'साधारण राज सभा' की जगह 'राष्ट्रीय' परिषद् में परिणत किया और समस्त राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। कृपापात्र श्रेणियों के कई और लोग भी 'राष्ट्रीय परिषद्' में आ शामिल हुवे ।

राजा तथा उसके आगे पीछे चलनेवाले कृपापात्र, 'साधारण राज सभा' के इस साहसिक आक्रमण पर बड़ी घबराहट में पड़े। राजा ने 'राष्ट्रीय परिषद्' का राजकीय भवन में होना बन्द कर दिया। किन्तु राष्ट्रीयपरिषद्, विश्वास तथा धैर्य के साथ एक टेनिस-कोर्ट में मिली, सब प्रतिनिधियों ने खड़े होकर प्रतिज्ञा की कि जब तक वे फ्रांस की राजकीय संस्था को सुधार न लेंगे कभी भी एक दूसरे से जुदा न होंगे । इधर 'राष्ट्रीय परिषद्' में यह हो रहा था और उधर पेरिस में कुछ और ही गुल खिल रहे थे। पेरिस के लोगों ने जब सुना कि राजा में तथा परिषद् में विरोध चल रहा है, और राजा परिषद् से तंग आकर अपनी रक्षार्थ बहुत सी सेनायें अपने चारों ओर एकत्रित कर रहा है, तब उन्हें अपनी जान का भी खतरा पड़ा । उन्हें डर हुवा कि कहीं इस एकत्रित सेना द्वारा राजा पेरिस तथा परिषद् को दबाने का कार्य न प्रारम्भ करे। इस विचार के साथ जितने मुंह उतनी बातें होने लगीं। एकने कहा कि आज रात को राजा की सेना पेरिस और परिषद् पर धावा करेगी, दूसरे ने इस में और मिलाकर इस बात को तीसरे से कहा कि रात को परिषद् के सब प्रतिनिधि कैद किये जायंगे। इस प्रकार के सन्देह डर तथा अविश्वास के समय में, पेरिस में शान्ति स्थापनाके लिये उसके प्रधान प्रधान जन नेताओं ने एक समिति बनाली और उसको 'क्रान्तीय नगर प्रबन्धकर्त्री' सभा के नाम से पुकारा गया। वह वहां शान्ति तथा रक्षा का काम करने लगी। उसके नीचे काम करने के लिये नगरस्थ देश भक्तों ने अपनी एक सेना भी तय्यार करली और इसका नाम 'राष्ट्ररक्षकसेना' हुवा। इस प्रकार, इन दो ऐसी

संस्थाओं की बुनियाद स्वयमेव पड़ गई, जिन से सारी क्रान्ति में एक बड़ा भारी कार्य्य किया जाने को था।

दुर्भाग्यवश उस साल फ्रांस में अन्न भी थोड़ा ही हुवा; कुछ दैव का कोप रहा; कुछ लोग राजनैतिक झगड़ों में पड़े रहने से ठीक तौर पर खेती बाड़ी का काम न कर सके। इस का परिणाम यह हुवा कि अन्न का टोटा पड़ने लगा। पेरिस को इसका प्रभाव विशेषतया अनुभूत हुवा क्योंकि इधर उधर के भी बहुत से लोग अन्न की कमी से वहीं आ कर आश्रय लेने लगे। लेकिन उन्हें खाने को कौन दे? वे परिषद् में जाकर चिल्लाये, उन्होंनें नगरप्रबन्धकर्त्री सभा में फर्याद की, पर उन्हें कोई अन्न कहां से निकाल कर दे? एकाएक अशान्त जन समूह में शोर मच गया कि हमारे लिये अन्न का प्रबन्ध करने वाली राष्ट्रीयपरिषद् को जिसने एकत्रित करने की सलाह दी थी, राजा का वह मन्त्री 'नैकर' पदच्युत कर दिया गया है; इस शोर ने जलती हुवी आग में आहुति डाल दी। हरएक आदमी के मन में यही आया कि उस समय वह किसी तरह इस चेष्टा का बदला निकाले। सब के मनों में जोश भरा देख, एक दिलचले ने चिल्ला कर कहा कि आज उस राजकीय महादुर्ग का ध्वंस करना चाहिये, जिस में राजा कैदियों को स्वेच्छया बीसों बरसों तक कैद रखता है। उस महादुर्ग का नाम 'बैस्टाईल' था। बैस्टाईल नाम ने बिजली की तरह सब लोगों पर असर किया और जुलाई की चौदहवीं प्रविष्टा के दिन, तीस चालीस हज़ार आदमी उस पुराने तोपों से सुरक्षित दुर्ग पर उमड़ पड़े। दुर्ग ले लिया गया, उसका प्रबन्धकर्त्ता मारा गया, और वह बेलगाम खल्कत, राजा की शक्ति के सब से बड़े निशान की दीवारें पृथ्वी पर बिछा कर पेरिस को लौट आई।

जब इस प्रकार, जनसमूह ने अपना बाहुबल दिखाया, तब राजा तथा राजकृपापात्र श्रेणि के लोग (लार्ड तथा पादरी) चिन्ता में पड़े। राजा ने सर्व साधारण के शान्त करने का अन्य उपाय न देख कर लार्डों तथा पादरियों को आज्ञा दी कि वे भी राष्ट्रीय परिषद् में जा मिलें। इस चेष्टा से उसने समझा कि उसने अपने सिर पर से बला टाल दी। उधर लार्ड तथा पादरी भी जानते थे कि कुछ कारगुज़ारी दिखाये बिना अब जनसमूह से पीछा नहीं छूट सक्ता। उन्होंने भी राष्ट्रीयपरिषद् में खड़े हो हो कर अपने परम्परागत भूमिकर तथा दशांश सम्बन्धी अधिकार छोड़ने शुरू किये। उस दिन अगस्त की चौथी प्रविष्टा थी। एक राजा को छोड़ कर, उस दिन की परिषद् ने, और सब फ्रांस निवासियों को एक ही तल पर ला रक्खा। यह क्रान्ति

का प्रथम महाविजय था । इस महाविजय के बाईस दिन पीछे परिषद् ने मनुष्य के अधिकारों का आघोषणापत्र प्रकाशित किया, जिस के द्वारा सब मनुष्यों की समानता तथा स्वतन्त्रता स्वीकार की गई और साथ ही यह भी बतलाया गया कि वास्तविक राज शक्ति का केन्द्र राष्ट्र में होना चाहिये—किसी व्यक्ति विशेष में नहीं । अतएव राजनियम, राष्ट्र की सम्मति के प्रकाश के सिवा और कुछ नहीं हो सकते ।

परिषद् में यह सब कुछ हो रहा था किन्तु भूखा पेरिस रोटी के लिये तरस रहा था । जब भूखे लोगों ने देखा कि हमें और कहीं से अन्न की आशा नहीं रही तब वे भूखे कुत्तों की न्याईं राजा के महलों पर टूट पड़े । राजा की सारी रक्षा को पददलित कर के वे सीधे राजा के पास पहुंचे और उस को परिवार सहित गाड़ी में बिठा कर पेरिस में ले आये। जन समूह की इस साहसिक चेष्टा से फ्रांस के राजा का राजसिंहासन एक दम डांवाडोल हो गया। खलकत की इस साहसिक चेष्टा को सुन कर सब कृपापात्र-श्रेणि के लोग एक दम स्तम्भित हो गये । वे लोग एक दम डरगये । जब उनका आश्रय ही उनके पास से चला गया, तो वे फ्रांस में किस आसरे पर रहते? बस, लार्ड और पादरी जोक दर जोक फ्रांस की हद को पार करने लगे। सब को अपनी जान बचाने का फ़िक्र पड़ गया, जिसे जिधर रास्ता मिला वह उधर ही भाग निकला । परिषद् ने भी ऐसे मौके को हाथ से न जाने दिया। चर्च की सारी ज़मीन, जो पहले पादरियों के अधिकार में थी, राष्ट्र के आधिपत्य में ले ली गई; और बचे हुवे स्वतन्त्र विचारक पादरियों के गुज़ारे के लिये राजकोष से प्रबन्ध कर दिया गया । जो लार्ड लोग भाग गये थे, उनकी सम्पत्ति भी राष्ट्र की सम्पत्ति में मिला ली गई ।

इन सब छोटे २ परिणामों के पीछे आखिर (१७९१) सितम्बर की १४ वीं प्रविष्टा के दिन राष्ट्रीय परिषद् ने फ्रांस देश की सम्पूर्ण राजकीय संस्था बना कर प्रकाशित की । इस नई संस्था के अनुसार, राजा यद्यपि देश का प्रधान शासक रहा तथापि एक नियामक परिषद् बनाई गई जो सारे राजनियमों के बनाने वाली तथा सर्व-साधारण की सम्मति को प्रकाशित करने वाली थी । इस नई संस्था को बना कर क्रांति की नेत्री राष्ट्रीय परिषद् टूट गई । और यहीं तक पर फ्रांस की राज्य क्रांति की पूर्व पीठिका समाप्त होती है ।

तृतीय-परिच्छेद ।

भीषण-हत्या-काण्ड ।

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः । हरिः ।

पुरानी राष्ट्रीय परिषद् समाप्त हुवी और नई नियामकपरिषद् ने अपना कार्य्य प्रारम्भ किया । नई संस्था में यह नियम कर दिया गया था कि नियामकपरिषद् में राष्ट्रीयपरिषद् के सभासदों में से कोई न लिया जावे । इस लिये, जब नियामक परिषद् ने अपना कार्य्य शुरू किया तब वह नये विचारों से युक्त नौजवानों से भरपूर थी । इन जोशीले नौजवानों के विचार भी दो स्रोतों में बंटे हुवे थे । एक तरह के विचार वाले तो नई संस्था के पक्षपाती थे और चाहते थे कि फ्रांस का असली राज्य राजा और नियामकपरिषद् के सम्मिलित अधिकार में रहे । दूसरी तरह के विचार वाले लोग 'गिरौण्डिस्ट' कहाते थे, और उन का मत था कि फ्रांस की शासन संस्था अमेरिका की न्याई प्रजा के प्रतिनिधियों के अप्रतिहत अधिकारों से युक्त होनी चाहिये, राजा के मुख्य रहने की कोई आवश्यकता नहीं । यद्यपि, इस प्रकार, इन दो दलों के विचारों में परस्पर बहुत कुछ मौलिक भेद विद्यमान थे, और अतएव आपस के जङ्ग के सामान पहले से ही परिषद् में रक्खे हुवे थे तथापि आरम्भ २ में इन विचारभेदों ने कोई स्पष्ट रूप धारण नहीं किया । इस का प्रथम कारण तो यह था कि घर में अभी क्रान्ति के विरोधी ही इतने थे कि परिषद् परस्पर के झगड़े से डरती थी । अभी तक बहुत से ऐसे लार्ड फ्रांस के अन्दर विद्यमान थे जो राजा के लिये अपनी जान तक देने को तय्यार थे; राजा भी राजधानी में ही विद्यमान था । इस आन्तरिक शत्रुओं के डर के साथ, बाह्य आक्रमण का और भी प्रबल डर मिला हुवा था ।

जिस क्षण से फ्रांस में राजाओं के अनुचित अत्याचारों के दलन करने वाली राज्यक्रान्ति का प्रारम्भ हुवा, सारे के सारे यूरोप के राज्यों के कान उसी क्षण से खड़े होगये थे । अपने प्रभाव की रक्षा करने की इच्छा रखने वाले किन्तु भय से कांपते हुवे हृदयों से, वे इस सारे घटनाओं के क्रम का निरीक्षण सावधानतापूर्वक कर रहे थे । वे जानते थे कि फ्रांस में राजा का गिरजाना, यूरोप के सब सिंहासनों के गिराने का

कारण होगा । वे खूब अच्छी तरह समझते थे कि एक देश में, प्रजा का राजा के प्रति विरोध यदि फलीभूत हो जाय तो अन्य देशों की प्रजा का उस क्रिया के लिये साहस कितना बढ़ जायगा । इस लिये वे सोलहवें ल्यूई की रक्षा से अपनी रक्षा, और उस के पराजय से अपना पराजय मानते थे ।

अब, जब कि राजा का पेरिस में कैद होना प्रसिद्ध होगया, तो योरप भर के राजासिंहासन हिल पड़े । आस्ट्रिया ने प्रशिया के साथ मिल कर फ्रांस पर आक्रमण किया । परिषद् ने भी (२० अप्रैल १७९२) इन दोनों शक्तियों के विरुद्ध युद्ध की आघोषणा देदी और लाफेयट (Lafayette) आदि वीर सेनापतियों को सेना सहित उन के साथ समरभूमि में मुठभेड़ करने के लिये प्रस्थित किया । परन्तु शुरू २ में फ्रांस की सेना अपने स्थान पर स्थिर न रह सकी और शत्रुओं के बड़े दल से पदे पदे हार खाती हुवी राजधानी की ओर को लौटने लगी । शत्रुओं के सेनापतियों का उत्साह इस विजय से बहुत बढ़ गया । अब फ्रांस को अपने चुंगल में दबा समझकर, उन्होंने फ्रांस के निवासियों का अपमान करना तथा घोषणाओं द्वारा उन्हें धमकाना शुरू किया । उन्हें अपने घोषणा पत्रों में विजित जाति की तरह याद किया, और उन के नाम आज्ञायें निकालनी प्रारम्भ की । गर्व युक्त व्यवहार ने प्रत्येक देशभक्त फ्रांसीसी के नसों में एक प्रकार की रूह फूंक दी । एक विदेशी सेनापति ! फ्रांसीसी राष्ट्र का अपमान करे ! यह फ्रांसीसियों द्वारा सह्य नहीं हो सक्ता था । उन का जोश उबल पड़ा, वे आपे से बाहिर हो गये, और इस जोश में अन्धे होकर उन्हों ने जो कुछ किया उसे याद कर शरीर के रोंगटे खड़े होजाते हैं । सर्वसाधारण लोगों ने यह देख कर कि वे शत्रुओं की सेना का कुछ नहीं बिगाड़ सक्ते, अपना रोष शत्रुओं के आन्तरिक पक्षपातियों पर निकालने की ठानी । १० अगस्त (१७९२) के दिन पेरिस के बाज़ारों में इकट्ठे हुवे फ्रांस के सब प्रान्तों के लोगों के समूह ने मिल कर राजा के निवासस्थान पर धावा किया । राजा के सारे रक्षक मारे गये, और राजा ने अपने आप को निराश्रय तथा अकेला पाकर, परिवारसहित नियामकपरिषद् के घर में शरण ली । परिषद् ने राजा को शरण तो दे दी, किन्तु उसे उस के अधिकारों से कुछ देर के लिये च्युत कर के बन्दीगृह में डाल दिया और शासनसंस्था को फिर से बदलने के लिये देश के प्रतिनिधियों की एक विचारसभा बुलाई । इसी अन्तर में शत्रु राजधानी के और भी पास पहुंचगया; लोगोंका जोश दुगना होगया और वह क्रूरता जो आदमी में प्रायः जान पर आ बनने पर आजाती है, उन में आ-

गई । उस समय सर्वसाधारण ने वह घोर पाप किया जिसे इतिहास सेप्टेम्बर के सर्ववध के नाम से याद करता है ।

सेप्टेम्बर का हत्याकांड राजनैतिक संसार के जीवन में एक बड़ा भारी रुधिर से भरा हुवा धब्बा है। उस में जोश से अन्धे हुवे हुवे पेरिस के जनसमूह ने वह घोर जनघात किया, जिसे याद करके आज भी शरीर के रोंगटे खड़े होजाते हैं । उस दिन की घटना ने यह भली प्रकार से सिद्ध कर दिया कि साधारणयोग्यता वाले किन्तु सर्वसाधारण को भड़काने की शक्ति रखने वाले लोग जितना घोर अत्याचार संसार में कराना चाहें करा सक्ते हैं । मारा नाम का एक पत्रसम्पादक, जिस की जिह्वा आग की शिखा और हृदय एक बड़ी भट्टी के समान थे, पेरिस के लोगों को उत्साहित करता फिरता था । सब कारागारों में से निकाल २ कर उस दिन कुलीन कैदियों के गले काटे गये । जिस पर ज़रा सन्देह हुवा, उस का सिर धड़ से पृथक् किया गया । कहते हैं इस घोर हत्याकांड में कम से कम १४ सौ मनुष्यों का वध किया गया। और यह सारा-वध किस के नाम पर किया गया? स्वतन्त्रतादेवी के नाम पर ! स्वर्ग के नाम पर पशु वध इसी को कहते हैं ।

इस सेप्टेम्बर के हत्याकाण्ड ने न केवल फ्रांस में, अपितु सारे योरप में एक प्रकार की कँपकँपी फैला दी । विदेशी राज्यों के सिंहासन जड़ से हिलने लग गये, विचारकों के दिलों में क्रान्ति से घृणा उत्पन्न हो गई । फ्रांस में इस हत्या का परिणाम यह हुआ कि राजपक्षपातियों की सब चेष्टायें सर्वथा दब गईं । उन लोगों की चित्त-वृत्तियें सर्वथा भयभीत हो गईं । चारों ओर बीभत्स रस का संचार हो गया । इसी बीभत्स रस को देखकर, राष्ट्रीय शासक समिति के कई सभासदों को भी इस भय-राज्य से घृणा उत्पन्न होने लगी ।

इस घोर हत्याकांड के पश्चात् देश की भाविनी राज्यसंस्था को स्थिर करने के लिये एक राष्ट्रीयविचारसभा बुलाई गई । इस राष्ट्रीय विचारसभा को बुलाकर नियामक समिति समाप्त हो गई । विचार सभा २० सेप्टेम्बर (१७९२) के दिन स्थापित हुई और उस ने विचार प्रारम्भ किया । विचार के अनन्तर उस ने निश्चय किया कि फ्रांस में प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना की जाय और एकतन्त्रराज्य को सर्वथा उठा दिया जाय । जिस दिन इस प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई, उस दिन से नया वर्ष शुरू किया गया और उसे स्वतन्त्रता के प्रथम वर्ष के नाम से पुकारा गया ।

इतनी कार्य्यवाही करके, वह विचारसभा एक और घोर कार्य्य करने के लिये

उद्यत हुई । फ्रांस के कैदी राजा ने बीच में एक बार कैद से निकल कर भाग जाने की चेष्टा की थी । किन्तु फ्रांस की भूमि छोड़ने के प्रथम ही, वह पकड़ लिया गया। उसे पेरिस में फिर से बंद किया गया । अब उस के भाग्यनिश्चय का समय आया । प्रथम प्रश्न यह उठा कि क्या यह राष्ट्रीय विचारसभा राजा के अपराध पर विचार कर सक्ती है ? विचार सभा ने स्वयं ही निश्चय कर लिया कि वह राजा पर मुकद्दमा चलाने का और फैसला देने का अधिकार रखती है । तब राजा को सभा में बुलाकर एक अपराधी की तरह खड़ा किया गया और उस से कई एक प्रश्न किये गये। राजा ने तथा राजा के पक्षपाती वकीलों ने राजा को निरपराधी सिद्ध करने का भरपूर प्रयत्न किया । उन्हों ने न्याय और मनुष्यता के नाम पर सभा से अपील की । किन्तु वह विचारसभा, साधारणसम्मति के अत्याचार का नमूना थी । वह मनुष्यता या न्याय का नाम ही न जानती थी । वह जानती थी कि राज्य की रक्षा के साथ उस की मृत्यु बँधी हुई है । अतः उस सभा ने एक लम्बे विवाद के पश्चात् राजा को फांसी चढ़ाये जाने का हुक्म दिया । तदनुसार, इस सच्चे किन्तु निर्बल राजा सोलहवें ल्यूई का दुःखमय अन्त हुवा ।

सेप्टेम्बर के हत्याकाण्ड का दृश्य देखकर भी यदि कुछ विचारशील लोग क्रान्ति के पक्षपाती रह गये थे, तो राजा का वध सुनकर उन के भी दिल घृणा से ऊब गये । इस बीभत्सकृत्य की लीला को देख कर, प्रत्येक दयायुक्त मनुष्य का हृदय घृणायुक्त हो गया । अनन्त काल से स्थिर हुई राजशक्ति की चिता को फ्रांसरूपी श्मशान भूमि में भस्मीभूत होता हुआ देखकर, सारे यूरप के सम्राटों के दिल दहल गये । फ्रांस की चारदीवारी के बाहिर क्रान्ति के पक्षपाती दोचार ही रह गये । भागे हुए लार्ड तथा ठाकुर लोगों ने इस अवसर को दैवलब्ध समझ कर राजाओं को क्रान्ति के दमन करने के लिये प्रोत्साहित करना, तथा सेना इकट्ठा करना प्रारम्भ किया । इंग्लैण्ड, प्रशिया, आस्ट्रिया और अन्य कई छोटे राज्यों की सरकारों ने मिल कर फ्रांस की राजधानी पेरिस को अपने वश में करने, और क्रान्ति की मृत्युदुन्दुभि बजाने का निश्चय किया । इधर बाहिर वालों का क्रान्ति पर दबाव देख कर फ्रांस में रहने वाले राज पक्षपातियों ने भी कुछ कुछ सिर उठाना शुरू किया ।

बाहिर और अन्दर-दोनों ओर से दबाये जाकर-क्रान्ति ने और भी भयानक रूप धारण किया । चारों तरफ़ से निराश हो कर-सब को शत्रु ही शत्रु पाकर-मनुष्य की जैसी 'शरीरं वा पातयेयम्—कार्य्यं वा साधयेयम् ' वाली साहसिक हालत हो जाती

है—फ्रांस की क्रान्ति की भी उस समय वैसी ही हो गई । जब उसे अपनी जान के लाले पड़ गये, तब वह औरों के रुधिर की क्या कीमत समझने लगी ? इस लिये, चारों ओर से दबाव पड़ने पर, विचार-सभा (Convention) ने दो उपसभायें बनाई । अन्दर के राजपक्षपातियों को दबाने के लिये एक क्रान्ति-न्यायालय (Revolutionary tribunal) और अन्य खुले शत्रुओं का सामना करने के लिये लोकरक्षक—उपसभा (Committee of Public Safty) बनाई गई । क्रान्तिन्यायालय, न्यायालय काहे का था—वह तो यमालय था । पांच २ मिनट में वह एक २ दोषी के दोषों का निर्धारण कर देता था । दोषी के आने पर जजों में से एक पूछता ' क्या तुम किसी कुलीन (Aristocrat) के पुत्र हो ? ' वह उत्तर देता ' हां ' । 'पर्य्याप्त है' कहकर मुख्य जज कहता कि ' फांसी दी जाय । अगला अपराधी लाया जाय ' और बस, उस बेचारे दोषी का भाग्यनिश्चय हो गया । एक २ दिन में सौ २ कल्पितदोषियों को फांसी पर चढ़ाया जाता था ।

जब कोई राष्ट्र अन्धा हो जाता है, तब वह जिन अत्याचारों को कर सक्ता है, उपर्य्युक्त बीभत्सलीलायें उन के उदाहरणमात्र हैं । राष्ट्ररूपी सिंह देर में क्रुद्ध होता है; किन्तु जब वह क्रुद्ध हो जाता है, तब सारी पार्थिव और दिव्य शक्तियें मिल कर भी उसे शान्त नहीं कर सक्तीं । राष्ट्ररूपी सिंह का न रुसाना ही अच्छा है, उसे शान्ति से अपनी उन्नति करने देना ही भला है । एक बार भी उस की गति को रोको—एक वार भी उस की प्राकृतिक चाल में बाधा डालो—और वह रुष्ट हो जायगा । राष्ट्रों का रोष कोई छोटी मोटी घटना नहीं है । रोषयुक्त राष्ट्रों की अत्याचार तथा ओज से भरी हुई चेष्टा के सामने, गगनभेदी पर्वत और दिगन्तविस्तारी समुद्र कुछ चीज़ नहीं । एक रुष्ट हुवे हुवे राष्ट्र के सामने सौ मिले हुए देशों के राजा भी तृण के समान हैं—एक अकिंचन कीट के समान हैं । उस समय जो राष्ट्र के रोषरूपी अनल के सामने आया वही भस्मीभूत हुवा ।

सेप्टेम्बर के हत्याकांड और राजवध के घोर कर्म्म से, कई विचारसभा के नेता भी खिन्न होगये । वे भी इन अत्याचारों से घबरा गये । उन्हों ने इन अत्याचारों के तथा नये न्यायालय और लोकरक्षक उपसभा के विरुद्ध शब्द उठाया । क्रोध से भरे हुए राष्ट्र ने और अंधे हुए हुए पेरिस के जनसमूह ने—और उन के प्रतिनिधि **रोबस्प्येर** आदि क्रान्ति के गर्म नेताओं ने—इस नर्म पार्टी को अपने स्थान से गिरा दिया । इस नर्म पार्टी के सारे नेता चुन २ कर फांसी चढ़ा दिये गये । अत्याचार पर तुले हुए

राष्ट्र के सामने शान्ति की बात ! यह असम्भव था । नर्म पार्टी ने, जिसे उस समय गिरौंड पार्टी कहा जाता था, असम्भव करने का यत्न किया और वे समाप्त होगये । किन्तु इस में दोषी कौन था ? इन हत्याओं का पाप किस के सिर चढ़ा ? निःसन्देह उन के सिर, जिन के दबाव ने इस क्रान्ति को उत्पन्न किया तथा भीषण रूप धारण कराया ।

नर्मपार्टी का घात कर के गर्मपार्टी ने अपना अबाध राज्य प्रारम्भ किया । सब से प्रथम कार्य्य, जो गर्म विचारसभा ने किया, रानी का बध था । रानी का बध कर के, दूसरा कार्य्य क्रिश्चियन धर्म का उड़ाना था । विचारसभा की आज्ञा से क्रिश्चियन मन्दिरों में से मूर्तियें उठा दी गईं । विचारसभा ने तो इतना ही किया, पेरिस के जन समूह ने शेष कार्य्य समाप्त किया । पादरियों ने अपने २ पदत्याग कर दिये । 'पार्थिव राजा के साथ स्वर्ग के राजा का भी क्षय होना चाहिये' यह नाद था जो चारों ओर फैल गया। और इस घटना—इस घातक घटना—के होने पर क्रान्ति का भयानकतम और नीचतम रूप प्रकट हो गया। जहां क्रिश्चियन देवों की पूजा होती थी, वहां तर्कदेव स्वतन्त्रतादेवी और समानतादेवी की पूजा होने लगी । इन्हीं की मूर्तियें चारों ओर पुजने लगीं ।

गर्म विचारसभा का तीसरा कार्य्य विचार सभा के उन सभ्यों को फांसी चढ़ाना था जो कुछ कम गर्म थे, जो कुछ २ शान्ति की ओर झुक चले थे, और जिन की सम्मति थी कि अब पर्य्याप्त हत्यायें हो चुकीं, क्रान्ति रूपी काली देवी की उदर पूर्ति के लिये काफ़ी रुधिर बह चुका, अब शान्ति होनी चाहिये । इस समय विचार सभा में केवल अत्यन्त तीव्रप्रयोगी सभासद् ही शेष थे । जिन में ज़रा भी दया का लेश था वे सब देशद्रोही कह कर फांसी पर चढ़ा दिये गये । शेष सभासदों का नेता रोबस्प्येर था । जब सब प्रति द्वन्द्वी मरगये तब उस ने अपना विजयदिन मनाया। उस की पेरिस में पूजा हुवी । उस ने अपने आप को फ़्रांस का राजा ख्याल किया ।

'अत्याचारों की परा काष्ठा हो चुकी, अब शांति होनी चाहिये' । यह नाद था जो अब चारों ओर गूंजने लगा । कई एक भागों को छोड़ कर, सब स्थानों में शान्ति और स्थिरता के लिये इच्छा प्रकट होने लगी । मनुष्यप्रकृति आखिर मनुष्य प्रकृति ही है, वह सदा राक्षसप्रकृति का रूप धारण किये नहीं रह सकती । चारों ओर उलटी लहर चलने लगी । क्रान्तिन्यायालय, लोकरक्षकसभा, और विचारसभा के गर्म नेता, लोगों में अप्रिय होने लगे । इस उलटी लहर का प्रथम परिणाम यह हुवा कि

गर्मों का नेता रोबस्प्येर भी उसी गति को प्राप्त हुवा, जिस को उस से पूर्व सैकड़ों लोग उसी के कारण प्राप्त हो चुके थे । उलटी लहर का दूसरा परिणाम यह हुवा कि विचारसभा ने नई गवर्नमेण्ट का एक ढांचा तय्यार किया, जिस में शासन कार्य्य में लोकसत्ता का उतना असर न था, जितना पहले क्रान्तिसमय के ढांचों में होता था । इस नये ढांचे द्वारा शासन का मुख्य कार्य्य एक डायरक्टरी को सौंपा गया । उस के पांच सभासद् नियत हुवे । उन की सहायता, तथा उन की शक्तियों के प्रतिबन्धार्थ दो और सभाएं बनाई गईं, जिन में से एक का नाम 'पांचसौ की समिति' और दूसरी का नाम 'वृद्धों की समिति' रक्खा गया । इन दोनों सभाओं का सम्बन्ध ऐसा स्थिर किया गया, जिस द्वारा ये एक दूसरे का भी प्रतिबन्ध करें और डायरक्टरी का भी । साथ ही, विचारसभा ने यह भी निश्चय कर दिया, कि नई नियन्त्री प्रतिनिधि सभा के दो तिहाई सभासद् वे ही हों जो पहली नियन्त्री सभा के थे ।

इस नये ढांचे की घोषणा होते ही, फ्रांस के लोक समूह में आग लग गई । उन्होंने कहा कि यह विचारसभा भीषणक्रान्ति का फिर से विस्तार करना चाहती है । नई नियामक सभा के दो तिहाई पुराने सभासद् निश्चित कर के, विचारसभा अत्याचारों को जारी रखना चाहती है ।

इस बात के फैलते ही पेरिस के जन समूह ने विचारसभा पर आक्रमण कर के उस का विध्वंस कर देने का विचार किया । पेरिस की बस्तियों के भी लोग इकट्ठे हो-गये । कोई ८०००० लोगों ने मिल कर विचारसभा के मकान पर आक्रमण प्रारम्भ किया ।

यह समाचार जब विचारसभा को मिला, तब उस में बड़ी खलबली मची । पहले तो सभासद् बहुत डर गये, किन्तु पीछे से उन्होंने निश्चय किया कि चाहे कुछ हो हम अपने स्थानों को न छोड़ेंगे । सत्य के लिये प्राण भी जायं तो परवा नहीं । तब विचारसभा ने अपनी रक्षा के लिये सेनापति को बुलाया, तथा सभा की रक्षार्थ सन्नद्ध होने के लिये कहा । सेनापति घबराया हुवा था । उस ने कहा, उसे यह विश्वास नहीं कि उस की सेना पेरिस के लोगों पर शस्त्र प्रहार करेगी, अतः वह उस का आश्रय नहीं ले सकता । हां एक साधन है, और वह यह कि मैं एक कोर्सिका के नवयुवा को जानता हूं, यदि वह इस समय विचारसभा की रक्षा के लिये तत्पर हो, तो कर सकता है । सिवाय उस के, इस भय से और कोई हमें नहीं बचासकता ।

वह नवयुवा आया, उस ने विचार सभा की आज्ञा ली और रक्षा का प्रण कर के चला गया । थोड़ी सी सेना तथा थोड़े से अस्त्रों का सहाय्य लेकर, उसने ८० हज़ार राजविद्रोहियों का सामना किया । उस की तोपों का निनाद चारों ओर गूंज गया—और उस गूंज में से एक ही शब्द निकलता था और वह शब्द था—

नैपोलियन बोनापार्ट ।

यह नवयुवक कौन था—इस का वृत्तान्त अगले पृष्ठों में पढ़िये ।
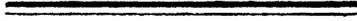
द्वितीय-भाग ।

बालसूर्य्य का उदय ।

प्रथम परिच्छेद ।

शैशव ।

मातृमान्पितृमाना चार्य्यवान्पुरुषो वेद ।

फ्रांस देश के इतिहास के स्रोत को छोड़ कर, अब हम नेपोलियन के चरित का अनुशीलन प्रारम्भ करते हैं, जिस से उपर्य्युक्त प्रकार से हम परिचित हो चुके हैं । नैपोलियन के पूर्वपुरुषा कई पीढ़ियों से कोर्सिका द्वीप के एजेकियो नामक मुख्य नगर में निवास करते थे । पहले यह द्वीप इटली के राज्य में था, किन्तु १७६७ में फ्रांस की सेना ने इस पर आक्रमण किया । प्रसिद्ध कोर्सिकन सेनापति पियोली ने देशभक्तों के एक बड़े जत्थे की सहायता से बहुत चेष्टा की कि वह फ्रांस के पंजे में न फंसे, परन्तु अन्त में फ्रांस की सेना का विजय हुवा और कोर्सिका में फ्रांस के तरीके का राज्य प्रचलित होगया । कुलीनों पादरियों और सर्व साधारण के प्रतिनिधियों की बनी हुवी प्रान्तीय शासन सभा उसे प्राप्त होगई, किन्तु वास्तविक राज्य बारह कुलीनपुरुषों को सौंपा गया । इस उच्च न्यायालय का एक वकील था, जिस का नाम चार्लस बोनापार्ट था । यह चार्ल्स, जोज़फ़ बोनापार्ट के तीन लड़कों में सब से बड़ा लड़का था । चार्लस बोनापार्ट को अपने पिता से कुछ सम्पत्ति प्राप्त हुवी थी, परन्तु वह बहुत अधिक न थी । एक घर एजेकियो में और थोड़ी सी ज़मीन्दारी द्वीप के किनारे पर उसे मिली थी, जिन में से अन्तिम में वह गर्मी के दिनों में निवास करता था ।

जब वह उन्नीस बरस का था, उसी समय उस का लैटीशिया रोमिलिनो नाम की लड़की से विवाह होगया । लेटिशिया रोमिलिनो सारे कोर्सिका द्वीप की सौंदर्य्य की देवी थी, और जैसी ही वह सुन्दर थी वैसी ही धीर तथा बुद्धिमती भी थी । १७७९ में कुलीनों की समिति ने चार्लस को फ्रांस के राजदर्बार में अपनी ओर से प्रतिनिधि निश्चित करके भेजा । कार्य्यवश चार्लस को बहुत वार फ्रांस की यात्रायें करनी पड़ती थीं । यद्यपि उसे इन यात्राओं के लिये व्यय का एक बड़ा भाग राज्य की ओर से प्राप्त होता था, तथापि वह व्यय इतना अधिक था कि उस के अवशिष्ट भार

से चार्ल्स की आर्थिक दशा बहुत खराब होगई । इसी दीन अवस्था में, (१७८५ में) उस का देहान्त होगया, जिस का कारण उदरगत फोड़ा कहा जाता था । चार्ल्स की मृत्यु पर, उस के सब पुत्रों तथा उन की माता का भार, चार्ल्स के छोटे भाई ल्यूशियन बोनापार्ट के कन्धे पर पड़ा । वह एजैकियो में मुख्य धर्माचार्य्य था ।

चार्ल्स बोनापार्ट मरता हुवा अपने पीछे पांच लड़कों और तीन लड़कियों को छोड़ गया । सब से बड़े का नाम जोज़फ़ था । दूसरा इस चरित का नायक नैपोलियन बोनापार्ट था । जिस समय नैपोलियन का जन्म हुवा, उस समय उस की माता रणक्षेत्र में अपने पति के साथ गई हुवी थी । वहीं पर एक झोंपड़ी में लैटिशिया ने नैपोलियन को जन्म दिया । कहते हैं कि जिस समय नैपोलियन उत्पन्न हुवा, उस की माता ने एक चादर ओढ़ी हुवी थी जिस पर इलियड के युद्ध के चित्र थे । नैपोलियन ने इस संसार में श्वास लेते ही, यदि कुछ देखा तो युद्धसम्बन्धी चित्रों से चित्रित पट, और यदि कुछ सुना तो युद्धक्षेत्र में तोपों का निनाद । जिस नैपोलियन का संसार में आगमन ही ऐसा हुवा था, उस का भविष्यत् स्वयमेव अनुमित हो सक्ता है ।

नैपोलियन की माता एक आदर्श माता कहे जाने के योग्य थी । वह अपने बच्चों के लिये यथोचित कठोर और यथोचित मृदु थी । जैसी ताड़ना और जैसी लालना बालकों की करनी चाहिये, नैपोलियन की माता उन सब को ठीक २ जानती थी। जब नैपोलियन अपने गौरव के शिखर पर पहुंच चुका था, तब वह कहा करता था कि मैं जो कुछ बना हूं, अपनी माता के किये ही बना हूं । उस की सम्मति थी कि 'मनुष्य के बनाने में सब से बड़ा भाग उस की माता का होता है' । इसी लिये हमारे प्राचीन ऋषियों ने मनुष्य के तीन शिक्षकों में से, सब से प्रथम पद माता का रक्खा है—

'मातृमान् पितृमान् आचार्य्यवान् पुरुषो वेद'

माता चाहे तो अपने पुत्र को स्तन्य के साथ ही सुगुणामृत का पान करा सक्ती है, और चाहे तो उसे दुर्गुणविष का घड़ा बना सक्ती है । नैपोलियन की माता ने उसे बाल्यावस्था से ही स्तन्य के साथ वीरोचित तथा महापुरुषोचित गुणों का पान करा दिया था । नैपोलियन के सब भाई बहिन भी, अपने जीवनों के अन्त तक अपनी माता की स्नेह किन्तु शिक्षा और ताड़ना से भरी हुवी दृष्टि को नहीं भूले थे । नैपोलियन जब अभी छोटा था, तभी वह अपनी माता की गोद में बैठ कर युद्धों

और साहसिक कार्य्यों की कथायें सुना करता था। उस की माता, आपबीती घटनाओं के सुनाने में खूब प्रवीण थी। पयोली की अध्यक्षता में वह अपने पति के साथ रणक्षेत्र में घूमती थी, उस ने संग्राम की कालीदेवी की बहुत सी खेलें देखीं थीं। जब वह उन सब कथाओं को क्रमशः अपने पुत्रों में से योग्यतम पुत्र को सुनाती, तब वह आंखों में आंसू भरे हुवे बड़े ही मनोयोग के साथ उन्हें सुनता। कोई उस समय नहीं कह सक्ता था कि वे आंसू सच्चे हैं या झूठे? किन्तु नैपोलियन का हृदय बाल्यावस्था से ही बड़ा अनुभावी था। वह अनुभव करना जानता था और इन्हीं अनुभवों ने उस के जीवन को ऐसे ढांचे में ढाल दिया कि उसे देख कर आज सारा संसार चकित होरहा है।

नैपोलियन शैशव अवस्था में बड़ा चुप चाप रहता था। उसे खेलने कूदने से विशेष प्रेम न था। जब उस के और सब भाई बहिनें हरे घास से शोभित मैदान में आंखमिचौनी खेलते, तब वह कहीं एकान्त में एक पत्थर पर बैठ कर कुछ मन ही मन में सोचा करता या समुद्र के तट पर बैठ कर उस की उठती गिरती हुवी लहरों का निरीक्षण किया करता। उस का प्रसिद्ध खिलौना एक पीतल की छोटी सी तोप थी। जब कभी उसे अपने मन के साथ बात चीत करने से अवकाश मिलता, तब वह इस तोप के साथ खेला करता था।

पहले से ही नैपोलियन का स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा था। बहुत शीघ्र ही उसे क्रोध आजाता था। साथ ही वह मानी भी था। वह किसी का प्रतिबन्ध नहीं सह सक्ता था। एक वार निरपराध ही उसे उस की माता ने कुछ दण्ड दिया। नैपोलियन ने उस समय अपनी वकालत नहीं की। चुपके से वह दण्ड सह लिया। पीछे से भी बराबर तीन रोज़ कुछ खाये पिये विना ही बिता दिये। तब उस की माता को पता लगा कि वह निरपराधी था। उस ने अपने पुत्र को प्यार देकर मना लिया और नैपोलियन ने तब खाना पीना शुरू किया।

छोटी अवस्था में, नैपोलियन को एक कन्यापाठशाला में प्रविष्ट किया गया। फिर वहां से वह ब्रीने की पाठशाला में पढ़ता रहा। नैपोलियन का विद्यार्थिजीवन आदर्श था। वह जो कुछ करता था, उस में सर्वोत्तम रहना उस का स्वभाव था। वह यह नहीं सह सकता था कि श्रेणी में कोई उस से आगे रहे। वह आराम के समय भी पढ़ता था, रात को भी बहुत कम सोता था और दिन का पाठ याद करता था। इस का परिणाम

यह हुवा कि वह अपनी श्रेणी में प्रायः प्रथम रहता था। उसे विशेष प्रेम गणित इतिहास और भूगोल से था। ये तीनों विद्याएं उस के भविष्यत् जीवन में विशेषतया काम आने वाली थीं। यह गणित का ही प्रभाव था कि वह अपने पृथुविस्तार वाले साम्राज्य का धनसम्बन्धी प्रबन्ध करवद्रवत् रखता था। इतिहास के अनुशीलनने ही उसे इस योग्य बनाया था कि वह इतिहास बनासके; और भूगोलके अध्ययनका तो कहना ही क्या है? युद्ध के समय में शत्रु के देश में जाकर वह ऐसे युद्धोपयोगी स्थान निकाल लेता था, जिन्हें शत्रु स्वयं भी नहीं जान सकता था। एक बड़े भारी युद्धविद्याविज्ञ की सम्मति है कि नैपोलियन की सांग्रामिक गुरुता का कारण उस का अगाध भौगोलिक ज्ञान ही था।

१७८९ में फ्रांस उस क्रान्ति रूपी आंधी से घिर गया, जिस का वृत्तान्त पहले परिच्छेदों में आचुका है। उस समय नैपोलियन फ्रांस को छोड़कर अपनी जन्मभूमि कोर्सिका में ही आगया। वह और उस के सब भाई क्रान्ति के बड़े भारी पक्षपाती थे। नैपोलियन का छोटा भाई ल्यूशियन 'क्रांति का वक्ता' प्रसिद्ध था। वह अपनी जन्मभूमि में क्रांतिविषयक वक्तृतायें खूब दिया करता था। १७९२ में कोर्सिका के राष्ट्रीय दल का नेता पियोली इंग्लैंड से लौटकर वहां पर आया। कोर्सिकावासी पियोली की गुरु तथा देव के समान पूजा करते थे। नैपोलियन और उस के भाई भी उस के बड़े भक्त थे। कोर्सिका के पार्वतीय लोग विशेषतया उस से प्रेम रखते थे। अतः, पियोली के आने पर कोर्सिका में खूब खुशियें मनाई गईं।

किन्तु कुछ ही दिनों में वे खुशियें कुछ कम रह गईं। फ्रांस में, वहां के राजा १६ वें ल्यूई के फांसी चढ़ाये जाने का समाचार चारों ओर फैल गया। किसी ने उसे प्रसन्नता से सुना और किसी ने शोक से। पियोली दूसरी तरह के मनुष्यों में से था। उसने इस समाचार को सुनते ही बड़ा भारी रोष प्रकट किया और कहा कि फ्रांस के अत्याचारों के नीचे रहने की अपेक्षा वह इंग्लैंड के नीचे आना अच्छा समझता है। पियोली उस तरह के विचारकों में से था, जो इंग्लैंड की शासन-प्रथा को सर्वोत्तम मानते थे। पियोली की सम्मति को सुनते ही सारे बोनापार्ट उस से विरक्त हो गये। सारे कोर्सिकाद्वीप ने पियोली की सम्मति तथा आज्ञा के अनुकूल क्रांति के त्रिवर्ण झंडे गिरादिये, किन्तु बोनापार्टों के नगर एजैकियो ने अन्त तक क्रांति के केतु के गिराने से निषेध किया। इस कारण पियोली तथा बोनापार्ट परिवार में विरोध उत्पन्न हुआ। पियोलीने अपने अनुयायियों द्वारा नैपोलियन

के सारे भाई बन्धुओं को कैद करने का विचार किया । किन्तु, नैपोलियन की माता को पियोली के इस विचार का पता लग गया । वह अपने सब पुत्रों सहित एक छोटे से बोट में चढ़ कर कोर्सिका द्वीप से रात के समय विदा हुवी । वह योरप के भावी नरेशों से भरी हुवी छोटी नौका मार्सेल्स बन्दर पर आलगी ।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इन सब साहसिक कार्य्यों में मुख्य चलाने वाली कल नैपोलियन था । यद्यपि जोज़फ़ नैपोलियन से आयु में बड़ा था तथापि बुद्धि और सलाह में नैपोलियन से सदा दबा रहता था । नैपोलियन का चचा उस की माता से सदा कहा करता था, कि यद्यपि आयु में बूढ़ा जोज़फ है तथापि बुद्धि में वृद्ध नैपोलियन ही है । कवियों की तरह, महापुरुष भी उत्पन्न होते हैं—वे बनाये नहीं जाते । जिस आत्मा में बड़े कार्य करने की शक्तियें होती हैं—वह पहले से ही अपनी शक्तियों को प्रकट करता रहता है । बालसूर्य की किरणें भी पर्वतों के मस्तकों पर ही पड़ती हैं, चरणों पर नहीं गिरतीं । इसी प्रकार महान् आत्मायें सभी अवस्थाओं में मुख्यता को प्राप्त होजाती हैं ।

नैपोलियन के बाल्यकाल के अनुशीलन करते समय, एक और बात पर भी ध्यान रखना चाहिये । वह रणक्षेत्र में उत्पन्न हुआ, उस की माता उस के जन्मकाल में युद्धचित्रों से चित्रित पट को ओढ़े पड़ी थी । और उस ने शैशव में कथाएं भी युद्ध की ही सुनी थीं । तब उस के दिल में युद्धप्रेम का उदित हो जाना स्वाभाविक था । यह सब विचारकों का माना हुआ सिद्धान्त है कि जैसे कच्चे घड़े में किया हुवा चिन्ह कभी भी नहीं मिटता, इसी प्रकार बाल्यावस्था में आत्मा पर पड़े हुवे असर कभी दूर नहीं होते । नैपोलियन पर भी, जो बाल्यावस्था में युद्ध कथाओं के प्रभाव पड़े, उन से उस का भविष्यत् जीवन बहुत कुछ युद्ध की ओर ढल गया । यद्यपि उस के युद्ध की ओर ढलने के अन्य भी कई कारण थे और उन का वृत्तान्त आगे आयगा तथापि इस में सन्देह नहीं कि उस के भावी आत्यन्तिक युद्धप्रेम के हेतुभूत यही बाल्य के संस्कार थे ।
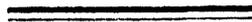
द्वितीय परिच्छेद ।

टउलन का विजय ।

बालस्यापि रवेः पादाः पतन्त्युपरि भूभृताम् ।

क्रांति अपनी युवावस्था को प्राप्त हुई। फ्रांस एक भयानक शासन से शासित होने लगा। रौद्रमूर्ति रोबस्प्येर का विजय डंका चारों ओर बज निकला। घोर से घोर अत्याचारों ने अपना अधिकार जमा लिया। लोकरक्षकसमिति ने राजपक्षपातियों को चुन २ कर गिलोटीन पर चढ़ाना शुरू किया, एक २ दिन में सैकड़ों क्या हज़ारों लोगों का वध होने लगा, नैपोलियन के भाई ल्यूशियन के समान जोशीली वक्तृता देने वाले अठारह २ वर्ष के बालक भी नगरों और प्रान्तों के अध्यक्ष बनकर अत्याचार का दौरदौरा मचाने लगे। सारांश यह कि सारा फ्रांस एक वधकर्ता हुई आग से व्याप्त होगया।

राजपक्षपाती नगर इन अत्याचारों से तंग आकर विद्रोह करने लगे—वे क्रान्ति से बिगड़ने लगे। लियोन नगर ने क्रांति के विरुद्ध झण्डा खड़ा किया, किन्तु उस के उत्तर में, क्रांति के नेताओं ने उस के सब सम्भ्रान्त घरों को उजाड़ बीयाबान कर दिया और आदमियों को चुन २ कर नदी में बहा दिया। दूसरा नम्बर टउलन नगर का था। टउलन नगर दैवयोग से बन्दरगाह भी था। इस लिये, वहां के राजपक्षपातियों ने सीधे ब्रिटिश सरकार को सहायता के लिये लिखा। इस प्रार्थना के उत्तर में, ब्रिटिश सरकार ने लार्डहुड को एक जबर्दस्त सामुद्रिक सेना के सहित टउलन भेजा। लार्डहुड ने वहां पर आकर विजय का क्षेत्र तय्यार पाया। बन्दरगाह के द्वार उस के लिये खुले हुवे थे, वह उन में प्रविष्ट हो गया।

ब्रिटिश सरकार पहले दिन से ही फ्रांस की क्रान्ति के विरोधियों की सहायता करने पर तुली हुवी थी। इस विरोध का कारण ढूंढ़ना ज़रा कठिन काम है। इस विषय में लोगों के बहुत मतभेद हैं। कई कहते हैं कि फ्रेंचजाति और अंग्रेज़जाति का नैसर्गिक विरोध ही इस में कारण था। अन्यों की सम्मति में, इंग्लैण्ड का क्रान्ति से सच्चा डर ही इस में निमित्त था। मेरी सम्मति में यहां मुख्य कारण वही था जो प्रो. सीले ने अपने 'इंग्लैण्ड का विस्तार' नामक पुस्तक में लिखा है। वह कारण यह है कि उस समय ये दोनों देश, उपनिवेश प्राप्ति के लिये, तथा साम्राज्य के

बढ़ाने के लिये यत्न कर रहे थे। इंग्लैण्ड को निश्चय था कि फ्रांस का विजय और इंग्लैण्ड का पतन समानार्थक शब्द हैं। उस ने फ्रांस की क्रान्ति को जीतते हुवे देखा और उस से भय खाकर उस ने उस का विरोध शुरू किया। इस में इतिहास साक्षी है कि इंग्लैण्ड की सरकार ने क्रान्ति के दबाने में नख से शिखा तक ज़ोर लगाया। इस का परिणाम क्या हुआ? इस प्रश्न का उत्तर पेचदार भ्रमजाल में पड़ा हुआ है—उस का निकालना कठिन है।

अलमप्रसंगेन। लार्ड हुड अपने दलबल सहित टउलन की बन्दरगाह में आ विराजे। क्रान्तिमयी गवर्न्मेण्ट को इस की सूचना मिली और उस ने जनरल कार्ट्यू को २० सहस्र सेना के साथ ब्रिटिश शक्ति को निकाल कर बाहर करने के लिये भेजा। जनरल कार्ट्यू टउलन तक पहुंच तो गया किन्तु अपनी अशक्ति के कारण कुछ कर न सका। जब वह कुछ दिन निकम्मे बिता चुका तो रिपब्लिक ने ड्यूगोमियर को उस का स्थान लेने के लिये भेजा। सरकार के मुख्य सेनापति कार्नो ने ड्यूगोमियर को टउलन के विजय के लिये एक मानचित्र भी बना दिया था, जिस के अनुसार कार्य्य करने से वह विजय पा सक्ता। किन्तु 'हरेरिच्छा बलीयसी'। वह भी अपने पूर्ववर्ती की तरह आलस्य की मूर्ति ही था। उस ने वहां आकर स्वयं कुछ भी कार्य्य न किया। हां, एक अक्ल की बात अवश्य की, कि बन्दरगाह को सर करने का काम एक क्रियाशील नवयुवक को सौंप दिया जो उस के नीचे तोपों का एंजिनियर था।

इस नवयुवक सेनापति ने, कार्य्य का भार संभालते ही, पोताश्रय को वश में करने के लिये, एक नया ही उपाय घड़ा। उस के पहले बन्दर को जीतने का यह उपाय अवलम्बित किया गया था कि सीधा ब्रिटिश जहाज़ों पर गोला चलाया जाय और उन्हें भगा दिया जाय। किन्तु, चिन्ताशील नवयुवक ने, इस उपाय की निःसारता को शीघ्र ही समझ लिया। जब तक एक पक्ष ऐसी स्थिति में अपने तोपखाने को न जमा ले, जहां पर से उस का प्रहार तो शत्रु पर होसके, किन्तु शत्रु वहां तक अपना गोला न पंहुचा सके, तबतक युद्ध में दोनों पक्षों को बड़ी भारी हानि रहती है। दोनों पक्षों के बल का रुधिर विना प्रयोजन के बहता है। इस लिये, सब से प्रथम, यह आवश्यक है कि जीत चाहने वाला पक्ष, ऐसे स्थान को काबू करे जिस पर शत्रु का अस्त्र-प्रहार असर न कर सके। इन सब बातों को विचार कर, और सांग्रामिक नीतिमत्ता का पूरा २ आश्रय लेते हुए, नैपोलियन बोनापार्ट ने—वह नवयुवक सेनापति बोनापार्ट ही था—बन्दरगाह पर आक्रमण करने के स्थान पर, 'छोटाजिबराल्टर' नाम के एक

दुर्ग को काबू करने का निश्चय किया, क्योंकि उपर्युक्त गुणों से युक्त दुर्ग यही था । वहां से शत्रु के जहाज़ों का ध्वंस किया जा सक्ता था, किन्तु शत्रु वहां पर अपना अस्त्रप्रहार न कर सक्ता था ।

हम यहां पर अपने चरितनायक नैपोलियन को फिर से आ मिले हैं । हम ने उसे मार्सेल्स में छोड़ा था । वहां पर वह अपने सब भाइयों तथा माता के साथ कोर्सिका से भाग कर आया था । बहुत दिन तक वह विना किसी कार्य्य के घूमता रहा । उस का बड़ा भाई जोज़फ़ कुछ कमा कर परिवार का पालन करता था । छोटा भाई ल्यूशियन सेण्टमेक्सिमिम नाम के एक ग्राम में रिपब्लिक की ओर से अधिकारी निश्चित होकर चला गया । इस बोनापार्टी के भविष्यत् शाही परिवार ने कई दिन इसी हालत में बिताये । इसी तरह निकम्मे दिन बिताते २ नैपोलियन पेरिस की गलियों में पहुंच गया और वहां पर सेना में भर्ती हो गया । जिस सेना में वह भर्ती हुआ, वह थोड़े ही दिनों पीछे टउलन को भेजी गयी—नैपोलियन भी उस के साथ था और वहीं पर अब हम उस से मिल गये हैं ।

नैपोलियन बड़े ज़ोर शोर से युद्ध की तय्यारियों में लग गया । यह कहने की आवश्यकता नहीं कि दिन और रात नैपोलियन घोड़े पर सवार रहता था । उसे कार्य्य के सामने विश्राम कुछ चीज़ न दीखती थी । दिन भर स्थानों की देख भाल करना, उस स्थान के मानचित्र देखना, शत्रु के बल की परीक्षा करना—बस यही उस का कार्य्य था । जिन लोगों ने उसे उस समय देखा था, वे कहते हैं कि उसे सोने के लिये समय न था । इसी तरह के अनवरत परिश्रम से, उस ने तोपख़ाना इकट्ठा किया और छोटे जिबराल्टर को लेने के लिये प्रयाण शुरू किया ।

आधी रात का समय है । आंधी और तूफ़ान ने चारों दिशाओं को रुद्ररूप धारण करा रक्खा है । प्रलयकाल उपस्थित हुआ दीख पड़ता है । घर से बाहर निकलने की कौन कहे—अन्दर बैठे हुए भी मन में शान्ति नहीं होती । ऐसे समय में टउलननगर के निवासी भी अपने २ घरों के अन्दर बैठे हुए अंगीठियें सेक रहे हैं । एकाएक घोर नाद सुनाई देता है । घोरनाद के साथ ही फटने की आवाज़ होती है और उस के पीछे चिल्लाने और रोने का करुणाजनक शब्द सुनाई देता है । एक, दो, और तीन । निरन्तर यही क्रम चल रहा है । अशान्त प्रकृति में यह और अशान्ति मच गई है । नगर पर धड़ाधड़ तोप के गोलों की वर्षा हो रही है । घर में आग और बाहर आंधी । एक तरफ़ सांप और दूसरी तरफ़ कुवां । बेचारे टउलन के निवासी

बुरी विपात्ति में पड़े हैं । उन की अवस्था देखकर तरस आता है । किन्तु प्रिय पाठक ! आप भी कहीं तरस करने न बैठ जावें, क्यों कि जो नगर अपने देश और राष्ट्र के विरुद्ध दूसरों के साथ जा मिलता है, उस को ऐसा ही फल मिलना चाहिये ।

टउलन नगर का ध्वंस करने वाले तोप के गोले नैपोलियन की फ़ौज के छोड़े हुए हैं । आधीरात के समय नैपोलियन ने छोटे जिबराल्टर को सर करने के लिये कूच बोल दिया । आंधी और पानी कूच के विरुद्ध प्रस्ताव कर रहे थे । किन्तु नैपोलियन इन प्रस्तावों की परवा न करता था । वह उस मसाले से न घड़ा गया था, जो प्रस्तावों और संशोधनों के सामने दब जाता है । वह उन फ़ौलाद के टुकड़ों से बना हुआ था जिन्हें आंधी उड़ा नहीं सक्ती और जिन्हें पानी गला नहीं सक्ता । सो विना किसी रोक के विचार किये, इस चौबीस वर्ष के युवा ने सेना को आक्रमण करने की आज्ञा दी । पहाड़ आंधी के सामने झुक जावे, किन्तु सच्चा क्षत्रिय प्राकृतिक विघ्नों के सामने नहीं झुकता । सूर्य्य और चन्द्र ईश्वर की आज्ञा को तोड़ दें, किन्तु सच्चा वीर कभी सेनापति की आज्ञा को नहीं तोड़ता । नैपोलियन की सेना भी क्षणभर में आक्रमण के लिये उद्यत होगई ।

जिबराल्टर पर जो ब्रिटिश फ़ौज थी, उस ने बड़ा कठोर सामना किया । फ्रैंच सेना ने धावा किया। ब्रिटिश सेना की तोपों ने गोलों से उस का उत्तर दिया । फ्रैंच सेना की पहली कतार गोलों से भुन कर गिर पड़ी । पिछली कतारें आगे बढ़ने लगीं । गोलों की बाढ़—और फिर एक कतार भूतलशायिनी हुई । पिछली कतारों ने फिर बढ़ना शुरू किया । दुर्ग की खाई तक जहां पिछली सेना पहुंची, वहां गोलों की वर्षा से फिर उस का स्वागत हुआ । अगली श्रेणी भुन गई, किन्तु उन के चीथड़ों से खाई भर गई । पुर हुई हुई खाई पर से होती हुई फ्रैंच सेना फिर आगे बढ़ने लगी । अन्त को किर्चों और छूरों की लड़ाई शुरू हुई। एक युवा से चलाई हुई फ्रैंच सेना मुड़ना नहीं जानती थी ।

इस आक्रमण में नैपोलियन सब जगह विद्यमान था। क्षणभर में उस की पतली सी पीली मूर्ति सेना के आगे और क्षणभर में पीछे दिखाई देती थी । उसे अपने कर्तव्य पालन के सामने प्राण एक तिनके के बराबर भी न दीखते थे । जब सेनापति को अपने प्राणों से प्यार न हो तो सेना क्यों मुड़ने लगी ? छोटे जिबराल्टर की दीवारों पर फ्रैंच सेना जा पहुंची । उसी समय नीचे बन्दरगाह के जहाज़ों में हलहल होनी शुरू हुई । लार्ड हुड ने छोटे जिबराल्टर पर फ्रैंच सेना की तोप का नाद सुनते ही जहाज़ों को इंगलैंड भागने की आज्ञा दी ।

नैपोलियन ने अपने हाथ से फ्रांस का त्रिवर्ण झंडा, जिबराल्टर की दीवार पर खड़ा किया और उस के साथ ही नैपोलियन बोनापार्ट का भावी कीर्तिकेतु उस तूफ़ान के मध्य में लहराने लगा ।
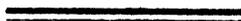
तृतीय-परिच्छेद ।

घोर अन्धेरा और चमक ।

त्वं सिञ्चन्नमृतेन तोयद ! कुतोऽप्याविष्कृतो वेधसा । जगन्नाथः ।

टउलन के विजय के पश्चात् नैपोलियन कुछ दिनों तक वहीं समुद्रतट पर रहा । पेरिस की लोकरक्षकसमिति ने उसे चतुर तथा उद्यमी पाकर, तट की रक्षा के लिये दुर्गबन्दी के काम पर लगाये रक्खा । वह बहुत दिनों तक अपने नैसर्गिक परिश्रम तथा यत्न के साथ उस कार्य्य को करता रहा । टउलन के विजय के दिनों में, तथा पीछे की रक्षा के इन दिनों में, उस का दो सैनिकों से परिचय हुआ । इस समय यह परिचय साधारण था, किन्तु भविष्यत् में यह बड़े बड़े फल उत्पन्न करने वाला था । उस का प्रथम परिचय एक नवयुवा से हुवा । एक दिन की बात है, कि नैपोलियन घोड़े पर सवार हुवा हुवा, अपने तोपखाने को शत्रु के ऊपर धावा करने के लिये प्रेरित कर रहा था । अकस्मात् उसे एक आज्ञा लिखाने की आवश्यकता पड़ी । उस ने पीछे देखकर कहा कि यदि कोई अच्छा लिखना जानने वाला हो तो वह आगे आ जाय, ताकि मैं उसे आज्ञा लिखा सकूं । यह सुनकर एक सिपाही ने आगे बढ़कर प्रणाम किया । नैपोलियन ने उसे लिखाना शुरू किया । एक दम शत्रु की तोप का गोला दोनों के समीप ही आकर फटा, और मट्टी का बादल उन के चारों ओर चक्कर लगाने लगा । वह नवयुवा सिपाही अकस्मात् बोल उठा—'वाह वाह अच्छा हुवा ! अब काग़ज़ की स्याही को सुखाना न पड़ेगा । ' इतना धैर्य्य देखकर नैपोलियन आश्चर्यित हो गया । उस ने उस नवयुवा को, जिस का नाम ज्यूनो था, कहा कि ' युवक ! मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं ? ' युवा ने सिर झुकाये हुए कहा कि ' सब कुछ ! आप मेरे लिये सब कुछ कर सकते हैं ' उस समय नैपोलियन सब कुछ न कर सकता था । हां ! वह दिन भी आखिर आया जब नैपोलियन सब कुछ करने के योग्य हो गया । उस दिन उस ने अपने वचन का पालन किया, और यही निर्धन सैनिक ज्यूनो फ्रांस के राज्य स्तम्भों में से एक हो गया और ड्यूक आव एबरण्टीज़ बनाया गया ।

दूसरा परिचय उस का ड्यूरोक से हुआ। वह भी एक नवयुवा था, जिस की कीर्तिदुन्दुभि भविष्यत् में दिग्दिगन्त को गुंजाने वाली थी।

टउलन का प्रबन्ध करने के अनन्तर, नैपोलियन को इटली में गई हुई फ्रेंच सेना के साथ भेजा गया। यह फ्रेंच सेना **ड्यमाबियन** नाम के सेनापति के अधीन एल्प्स पहाड़ के रास्ते से इटली पर धावा करने के लिये भेजी गई थी। कारण इस का यह था कि उस दिशा से आस्ट्रिया आदि देशों की सेनाओं का आक्रमण सम्भावित था। उस आक्रमण की लहर को वहीं पर बन्द कर देना इस सेना का उद्देश्य था। नैपोलियन को भी इसी सेना के साथ भेजा गया। उस ने अपनी स्वाभाविक चतुरता सूक्ष्मदर्शिता तथा आयासिता से कार्य्य शुरू कर दिया। सेनापति **ड्यमाबियन** बूढ़ा हो गया था। उस ने इतने परिश्रमी सहायक को पाने में अपना सौभाग्य समझा। सारा कार्य्य उस के युवक कन्धों पर रख कर अपने आप छुट्टी पा ली। नैपोलियन ने अपरिश्रान्त परिश्रम के साथ सेना की स्थिति को दृढ़ करना शुरू किया। कोई घाटी कोई रास्ता और कोई कन्दरा उस ने बिना खोजे न छोड़ी। दिन और रात वह स्थानों की देख भाल और पुस्तक पाठ में लगा रहता था।

एक रात, दो बजे के समीप वह सेना के कार्य्य से निवृत्त होकर अपने विश्रामोपनिवेश में गया। चार बजे उस का एक मित्र, जो अभी तक कारण विशेष से सोया न था, उस के उपनिवेश में आया। आकर देखा तो नैपोलियन दिया जलाये बैठा है और देशों के मानचित्रों और पुस्तकों के पत्र उलट रहा है। उस के मित्र ने अचम्भे में आकर पूछा कि 'नैपोलियन! यह क्या? अभी तक सोये क्यों नहीं?' नैपोलियन ने उत्तर दिया कि 'मैं सो चुका'

मित्र ने कहा 'अभी सो चुके? अभी दो बजे तो सोये ही थे'। नैपोलियन ने उत्तर दिया कि 'एक मनुष्य के लिये दो घंटे की गाढ़ी नींद पर्याप्त है'।

रात को दो दो घंटे सो कर ही नैपोलियन ने वह तेज और बुद्धिमत्ता पाये थे जिन्हों ने उसे अदम्य और अप्रतिवार्य बना दिया। किन्तु ज़रा हम लोगों पर भी दृष्टि डालिये जो दिन रात में २४ घंटे ऊंघा करते हैं, और चाहते हैं कि नैपोलियन जैसे बन जांय।

जिस समय नैपोलियन इटली की सेना में अपनी शक्तियों का परिचय दे रहा था, उसी समय पेरिस में भीषण क्रान्ति का सांप फुंकारें मार रहा था। उस समय पेरिस

की क्रान्ति उस दशा में थी जिस में रौबस्प्येर ने अपना सिक्का जमाया हुवा था । उसी नृशंस किन्तु शुद्धाचारी रौबस्प्येर का छोटा भाई इटली की सेना के साथ लोकरक्षकसमिति की ओर से प्रतिनिधि निश्चित था । उस के साथ नैपो-लियन की मित्रता हो गई । वह और नैपोलियन दोनों ही इकट्ठे घाटियों और नदियों के तटों पर घूमा करते थे। छोटा रौबस्प्येर नैपोलियन को प्रायः पेरिस के समाचार सुनाया करता था । सारा संसार रौबस्प्येर को क्रूर और नृशंस कहता था । किन्तु उस का छोटा भाई रौबस्प्येर उसे ऐसा न समझता था । वह उसे सच्चा देश प्रेमी किन्तु तीव्र स्वभाव का आदमी मानता था । नैपोलियन के सामने वह अपने भाई का ऐसा ही चित्र खींचा करता था । नेपोलियन भी बड़ी आशाएं रखने वाला नौजवान था । वह फ्रांस की सरकार के प्रधान पुरुष के भाई के साथ मेल रखने को अपने उदय का हेतु समझता था । छोटा रौबस्प्येर प्रायः नैपोलियन को पेरिस जाने के लिये कहा करता था । उस का विश्वास था कि नैपोलियन को वह अपने भाई की सहायता से पेरिस की रक्षिका सेना का अधीश बनवा सकेगा ।

किन्तु नैपोलियन को ऐसा विश्वास न था । वह समझता था कि पेरिस की सेना का अध्यक्ष बनने के लिये पर्याप्त आयु तथा अनुभव अभी उस में नहीं हैं । इस लिये वह अपने मित्र के उत्तर में निम्नलिखित वाक्य कहा करता था । इस वाक्य में बहुत सा भविष्यत् वाणी का भी अंश विद्यमान था ।

वह कहता था 'अभी मैं सेना में ही अच्छा हूं—पेरिस में जाने की मुझे ज़रूरत नहीं । हां, वह भी दिन आयगा जब मैं पेरिस की सेना का अध्यक्ष बन जाऊंगा ।

किन्तु सब दिन एक से नहीं रहते । रौबस्प्येर परिवार पर भी पेरिस में आपत्ति आई । उस आपत्ति का कुछ वर्णन प्रथम भाग के तृतीय परिच्छेद में हो चुका है। दोनों भाई इकट्ठे फांसी चढ़ाये गये । नैपोलियन भी रौबस्प्येर का मित्र था । नई सरकार की कुदृष्टि उस पर भी पड़ी । उस कुदृष्टि के बढ़ाने में एक और भी कारण हुवा । जिन दिनों अभी वह समुद्र तट की रक्षार्थ दुर्गबन्दी कर रहा था, तभी उस ने वहां एक पुराना टूटा फूटा दुर्ग खण्डरात की दशा में पाया । नैपोलियन छोटी से छोटी चीज़ से भी उपयोग लेना जानता था.। बड़ी आत्माओं का यह एक स्वा-भाविक गुण होता है । वे छोटी से छोटी चीज़ को भी उपयोग में लाये विना नहीं छोड़ते। उस ने उस टूटे फूटे पुराने दुर्ग की मरम्मत शुरू करवादी । मरम्मत शुरू करवा कर वह इटली की सेना में जा मिला । वह दुर्ग ठीक होता रहा । नैपोलियन

के किसी द्वेषी ने पेरिस की लोकरक्षकसमिति के पास रिपोर्ट भेज दी कि नैपोलियन बैस्टाईल के किले को फिर से स्थापित करना चाहता है । समिति के लिये इतना सुनना पर्याप्त था । नैपोलियन को एक दम गिरिफ्तार करने की आज्ञा दी गई। क्षणभरपूर्व का सच्चा देश भक्त, घोर विद्रोही के रूप में परिणत होगया । नैपोलियन कोई १९ दिनों तक कैद में रहा । अन्त में, उस के उपकृत मित्र ज्यूनो के यत्न से, उस की निर्दोषता सिद्ध हो गई । सामिति को निश्चय हो गया कि वह निरपराध है । नैपोलियन कैद से छोड़ दिया गया ।

कैद से तो वह छूट गया, किन्तु सेना में से उस को अपना पद छोड़ना पड़ा। कइ-यों की सम्माति है कि उसे समिति ने निकलवादिया, और कइयों का कहना है कि उस ने सामिति के कार्य्य से अप्रसन्न हो कर स्वयं पदत्याग कर दिया । चाहे जो कुछ हो; इस में सन्देह नहीं की समिति उस से अप्रसन्न हो गई और वह समिति से अप्रसन्न होगया । नैपोलियन सेना से पदत्याग कर के कोई वृत्ति ढूंढने पेरिस को चल दिया । पेरिस उस का स्वागत करने के लिये उद्यत नहीं था । पेरिस एक ऐसे मनुष्य का स्वागत कैसे करता, जो रौबस्प्येर जैसे क्रूर मनुष्य के साथियों में से गिना जाता था । वह अपने पुराने मित्रों के पास गया, उन में से कई एक उस समय अच्छे २ अधिकारों पर थे । किन्तु उन सब ने टके सा कोरा और मरुस्थल सा सूखा उत्तर दिया । नैपोलियन ने जिन के साथ किसी दिन भला किया था—उन की ड्योढ़ियें भी देखीं—किन्तु चारों ओर से उसे वही रूखे नेत्रों की माला दिखाई दी । संसार का यही रास्ता है ।

चारों ओर से निराशाजनक उत्तर पाकर नैपोलियन का मन—वह दृढ़ मन जो बड़े से बड़े सांग्रामिक भय के उपस्थित होने पर भी रंचमात्र न हिलता था—वह वज्र समान मन जिस को सहस्रों अवलाओं का आक्रन्दन और सैकड़ों कुलों का क्रन्दन भी अपने उद्देश्य से न हिला सकता था—वही मन आज अधीर हो उठा । नैपोलियन एक दम उस अन्धतामिस्र के गढ़े में गिर पड़ा जिस में हर एक बड़े आत्मा को अपने जीवन के किसी न किसी भाग में गिरना पड़ता है । वह राणाप्रताप भी—जिन की दृष्टि के सन्मुख बड़े से बड़े छत्रपतियों की प्रचण्ड सेनायें भेड़ बकरियों से अधिक की मत न रखती थीं—एक वार अपने बच्चे के हाथ से बिल्ली द्वारा रोटी का टुकड़ा छिन जाने पर अधीर हो गये थे । इसी महापुरुषों की परम्परागत

अधीरता ने नैपोलियन के हृदय को आ दबाया। इस पिशाची के वशीभूत हो कर, उस ने अपने शरीर को सोन नदी में गिरा कर, इस उपद्रवमय संसार से छुटकारा पाने का संकल्प किया । 'परमात्मा की दयालुता आज कहां है ? क्या वह मेरी आपत्ति को नहीं देखता ? तब उस की दयालुता झूठी है । जब वह दयालु नहीं तो उस के अत्याचारी संसार में जीने से क्या लाभ ?' इस प्रकार के विचार करते हुवे नैपोलियन ने अपने देह को नदीसात् करने की ठानी । किन्तु नैपोलियन ! तू मत समझ कि एक तेरी इस वेदना से परमात्मा की दयालुता की सत्ता का निषेध हो जायगा । परमात्मा दयालु है, और उस की दयालुता का पारावार नहीं। जब रात्रि के समय चारों ओर से श्याम वर्ण मेघमण्डल उमड़ कर आकाश को ढांप लेता है, चारों ओर अंधकार का राज्य हो जाता है, जी घबराने लगता है, तब हम देखते हैं, कि पश्चिम दिशा से एक वायु का झोंका उठता है और मेघ मण्डल को छिन्न भिन्न कर के चन्द्र की चकोरचर्चित चांदनी का विकाश कर देता है । ऐसे दृश्य दिन और रात हमारे सामने उपस्थित होते हैं। किन्तु फिर भी धिक्कार है हमारी अज्ञता को, जिस के वशीभूत हो कर हम निराश हो बैठते हैं, और ईश्वर पर से भरोसा तोड़ देते हैं। ऐ नैपोलियन ! यदि इस सिद्धांत में तुझे विश्वास न हो तो वह देख तुझ से दस कदम की दूरी पर खड़ा हुआ तुझे कौन आवाज़ें दे रहा है ? वह तेरे एक पुराने परिचित मित्र के सिवा और कोई नहीं ।

जिस समय नैपोलियन अपने शरीर को नदी में गिराने के लिये कमर कस रहा था, उसी समय उस का एक मित्र उस से कुछ दूरी पर खड़ा उस की अवस्था को देख रहा था । नैपोलियन की आंख पहले उस ओर नहीं फिरी, किन्तु ज्यों ही उस ने उस ओर देखा, त्यों ही वह अपने मानसिक भावों को दबाकर उस मित्र के पास पहुंचा । नैपोलियन के मित्र ने उस से कहाः-

"नैपोलियन ! मैं तुम्हें देख कर बहुत प्रसन्न हुवा हूं" । इतना कह कर वह जाने लगा, किन्तु अकस्मात् रुक कर फिर उस ने कहा कि 'यह क्या ? तुम्हारा क्या हाल है ? तुम मेरी बात नहीं सुनते हो ? तुम मुझे देख कर प्रसन्न नहीं हुवे इस का क्या कारण है ? तुम्हारी सूरत इस समय ऐसी होरही है जैसी आत्मघात करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य की होती है । वास्तविक बात क्या है ?" नैपोलियन के पास और कोई उत्तर न था, उस ने अपनी सारी कथा आदि से अन्त तक कह सुनाई । उस की वेदनाओं और मुसीबतों का हाल सुनकर नैपोलि-

यन के मित्र ने कुछ देर सोचा और बगल में से एक थैली निकाल कर नैपोलियन के हाथ में देकर कहा कि 'बस इतनी बात के पीछे ही घबरा रहे हो । इस थैली में छै सहस्र डालर हैं । उन्हें उपयोग में लाओ । अपनी माता के कष्ट दूर करो । मुझे इन डालरों के देनेसे कोई हानि न होगी'। नैपोलियन ने अज्ञान से थैली पकड़ ली । किन्तु उपर्युक्त बात सुन कर उस ने ऊपर को आंख उठाई । पहले इस के कि नैपोलियन आंख उठा कर देखता, उस का मित्र वहां से चम्पत होगया । नैपोलियन ने वह पाया हुवा धन एक दम अपनी माता के पास मार्सेल्स को रवाना किया और अपने उदार सहायक की खोज प्रारम्भ की । कई दिनों और रातों तक, नैपोलियन पागलों की तरह पेरिस की गलियों में, अपने सहायक मित्र को पाकर उसका धन्यवाद देने के लिये घूमता रहा । किन्तु उस का मित्र न मिला । क्यों नैपोलियन ! क्या अब भी तुझे ईश्वर की सहायता पर भरोसा हुवा या नहीं ?

इस आपत्ति से छुटकारा पा कर नैपोलियन का दिल कुछ हल्का हुवा । उस ने विश्राम पाते ही अपने ग्रन्थानुशीलन में मन दिया । उस के भाग्यों का पलड़ा फिर भारी होने लगा; अच्छे कर्मों का परिणाम सामने आने लगा । वह इस अधम दशा को छोड़ कर उन्नति करने लगा । वह उन्नति उसने कैसे की, इस का स्मरण कराने के लिये हम आप को प्रथम भाग के तृतीय परिच्छेद में ले जाते हैं।

फ्रांस की विचारसभा नई शासन संस्था बनाकर बैठी हुई थी, जब उस ने सुना कि पेरिस नगर में ८० सहस्र मनुष्य उस पर आक्रमण करने की तय्यारियां कर रहे हैं । विचारसभा ने घबरा कर पेरिस सेना के अध्यक्ष **बारा** को अपनी रक्षार्थ यत्न करने के लिये कहा । बारा ने पहिले तो रक्षा करने में अपनी अयोग्यता बताई, किन्तु पीछे से उस ने एक नवयुवा का निर्देश किया जो विचारसभा की रक्षा के योग्य था । विचार सभा के प्रधान ने आज्ञा दी कि उस नवयुवा को हमारे सामने लाया जाय । जिस कार्य को **बारा** जैसा अनुभवी योद्धा नहीं कर सकता, जो नव युवा उस कार्य्य को कर सकेगा—वह अवश्यमेव बड़ा लम्बा चौड़ा राक्षसरूपी जवान होगा, ऐसी आशा से सारी विचारसभा द्वार की ओर दृष्टि लगाये प्रतीक्षा करने लगी । आप उन के आश्चर्य्य का अनुमान करसक्ते हैं, जब उन्हों ने एक नाटे कमजोर से शरीर को दरवाज़े में से घुसकर प्रणामानवत होते हुवे देखा । जो नवयुवा इस समय सभा के सन्मुख उपस्थित हुआ, उस का शरीर कृश था, मुख का रंग कुछ सांवला तथा पीला था, गालें अन्दर को घुसी हुवी थीं, हाथ पतले और बड़े ही नर्म थे, किन्तु सिर शरीर के अनुपात

से बहुत बड़ा था और आंखें तेज और ओज का पुंज थीं। उस नवयुवा ने सभा के सन्मुख खड़े होकर प्रणाम किया । सभा के प्रधान ने पूछा—

'क्या तुम विचारसभा की रक्षा का भार अपने ऊपर लेने को तय्यार हो ?' उत्तर मिला—'हाँ' सभापति ने फिर पूछा 'क्या तुम जानते हो कि तुम कितने बड़े भयानक उत्तरदातृत्व को सिर पर ले रहे हो ?' वही गम्भीर शान्त तथा दृढ़ शब्द बोला 'बहुत अच्छी तरह । जिस कार्य्य के करने में मेरी शक्ति न हो, उसे अपने ज़िम्मे लेने की मेरी आदत नहीं, किन्तु एक अति आवश्यक बात है कि सारी सभा को मेरा कथन स्वीकार करना होगा ।' इन वाक्यों में कुछ ऐसी दृढ़ता भरी हुवी थी कि उस कोमल तथा बालोपम काय को देखते हुए भी सब ने उस पर ही अपनी रक्षा का भार सौंपना उचित समझा । सभा की अनुमति पाते ही नैपोलियन बोनापार्ट अपनी स्वाभाविक चतुरता तथा लगन के साथ, रक्षा के कार्य्य में प्रवृत्त हुआ ।

रात भर वह तय्यारियों में लगा रहा । प्रभात के समय पेरिस के लोग धावा करने वाले थे । उस समय से पूर्व ही, उस ने विचारसभा के गृह को चारों ओर से अपने थोड़े से शस्त्रों तथा सैन्यों से खूब सन्नद्ध कर लिया । जितने रास्ते तथा पुल थे, उन की ऐन सीध में उस ने तोपें जमा दीं । सभा के प्रत्येक सभासद् को भी एक २ बन्दूक तथा कई २ गोलियें बांट दी गईं । अन्त को प्रभात का समय हुआ । सारा पेरिस लोगों के आवेशनाद से परिपूरित हो गया । भीषण युद्ध दुन्दुभि बजने लगी । देखते ही देखते ८० सहस्र मनुष्यों का समूह समुद्र की तरह उमड़ता हुआ, विचारसभाभवन की ओर को बढ़ चला । इन धावा करने वाले लोगों को निश्चय था कि सभा की सेना कदापि हमारे ऊपर शस्त्र प्रहार न करेगी । पहले कई वार पेरिस का जनसमूह राष्ट्रीय समिति को धमका चुका था, उस ने समझा कि अब भी वही समय है । किन्तु उसे नहीं पता था, कि अब फ्रांस के आकाशमण्डल में एक नई दीप्ति का उदय हुआ है, एक नये जादूगर का आगमन हुआ है, जो सारी सेना को मन्त्र बद्ध करके जो चाहेगा करा लेगा । खुशी से भरा हुआ जनसमूह सभाभवन के पास पहुंचने लगा । सामने देखा, विचारसभा की सेना खड़ी है । उस ने समझा यह भाग जायगी—किन्तु नैपोलियन के मन्त्रादेश के वशीभूत सेना न हिली । जनसमूह ने उस पर बन्दूकों के मुंह खोल दिये । नैपोलियन के लिये इतना पर्य्याप्त था । वह प्रथम प्रहार का अभ्यासी न था—रक्षा में ही शस्त्र

उठाने को वह अच्छा समझता था । पहल विद्रोहियों ने की, नैपोलियन के लिये यह काफ़ी था । क्षण भर में सभाभवन अपने सहस्त्रों मुखों से, काल के गोलों की धांय धांय वर्षा करने लगा । एक दम सारे तोपखाने का मुंह खोल दिया गया । तोप के सामने विद्रोहियों की दाल क्या गलनी थी ? चार पांच मिनट के कदन से ही उन के पैर उखड़ गये । वे भागे । नैपोलियन के सिपाही किर्चें चढ़ाये उन के पीछे हो लिये । घण्टों तक विद्रोहियों का पीछा करके उन्हें तितर बितर कर दिया गया । विचारसभा की रक्षा हो गई । नैपोलियन की विजय और कीर्ति की पताका फ्रांस के आकाशमण्डल में बड़े ज़ोर से फहराने लगी ।

---

१. नैपोलियन की कृशता के विषय में एक बड़ी मज़ेदार कथा प्रसिद्ध है । विचारसभा की रक्षा के अनन्तर जब नैपोलियन अपनी सेना के कुछ सिपाहियों के साथ पेरिस की गलियों में घूम रहा था, तब एक जगह बहुत से लोग एकत्रित थे । उन में से एक मोटी ताज़ी स्त्री सिपाहियों की ओर को देख कर बोली कि ' भला इन सिपाहियों को हम लोगों की दीन दशा से क्या मतलब ? जब तक इन के उदर भरे रहें ये हमारी क्या परवा करने लगे ' । नैपोलियन ने यह सुन लिया । उस ने झट उस स्त्री के सन्मुख हो कर कहा कि " ऐ कुलीन महिले ! मेरी ओर देख, और फिर बता कि हम दोनों में से कौन अधिक कृश है ?" वह स्थूलकाय स्त्री इस उचित उत्तर को सुन कर कुछ शर्मिन्दी सी होगई-और असन्तुष्ट मनुष्यसमूह भी हंसता हुआ इधर उधर बिखर गया ।

चतुर्थ परिच्छेद ।

इटली में प्रथम विजय ।

लोदी का युद्ध ।

अणुरपि मणिः प्राणत्राणक्षमो विषभक्षिणां—प्रकृतिमहतां जात्यं तेजो न मूर्तिमपेक्षते ।

विचारसभा की रक्षा ने नैपोलियन बोनापार्ट का नाम चारों दिशाओं में प्रसिद्ध कर दिया । हर एक फ्रांसनिवासी पूछने लगा कि यह नया आदमी कौन सा है जिस ने पेरिस के अदम्य जनसमूह का दमन किया ? यदि विचार किया जाय तो प्रतीत होता है कि निःसन्देह नैपोलियन इस समय एक बड़ी ही आश्चर्योत्पादक अवस्था में विद्यमान था। वह अभी केवल २६ वर्ष का था । इस अवस्था में साधारण पुरुष अपने विद्यालय के कार्य्य को भी समाप्त नहीं कर पाते । अभी वे अध्यापकों के सामने कांपते हुए पाठ सुना रहे होते हैं। नैपोलियन ने इसी अवस्था में न केवल सेना में उच्च पद प्राप्त कर लिया, साथ ही दिगन्तव्यापिनी कीर्ति भी प्राप्त कर ली[1] ।

विचारसभा की बनाई हुई नयी शासनसंस्था स्थापित होगई । पांच डायरेक्टर नियत हुए । उन डायरेक्टरों ने, शासन का कार्य्य, दो सभाओं के साहाय्य से प्रारम्भ किया । उन्हों ने कार्य्यप्रारम्भ करते ही जब देश की सीमाओं पर दृष्टि डाली, तब उन्हें पता लगा कि उन का देश बड़े संकट में है । शत्रुओं ने देश को चारों ओर से घेर रक्खा है । विशेषतया इटली की ओर इटली तथा आस्ट्रिया की सेनाएं अपने दुर्ग बांधे पड़ी हुई थीं । उन का सामना करने के लिये जो फ्रेंच सेना भेजी गई थी, वह सर्वथा निश्चेष्ट पड़ी हुई थी । शत्रु आगे को बढ़ रहा था, किन्तु उसे रोकने वाला कोई न था । डायरेक्टरी ने किसी सहायक की खोज के लिये नज़र उठाई—और उन्हें बालसूर्य्य नैपोलियन बोनापार्ट के सिवाय कोई और दृष्टिगोचर न हुआ । तदनुसार, नैपोलियन को इटली की सेना का अध्यक्ष बनाया गया । २६ वर्ष का नवयुवा, जिस के मुंह पर अभी तक अच्छी तरह से मूछें भी न आई थीं, बूढ़े २ और अनुभवी सेनापतियों की अध्यक्षता करने के लिये रवाना हुआ । नैपोलियन की इस यात्रा के साथ उस विजयमाला का प्रारम्भ हुआ, जिस से २०

---

१. इसी वर्ष नैपोलियन ने जैसोफाईन नाम की एक योग्य विधवा से विवाह कर लिया था ।

वर्ष तक चकाचौंध हुआ हुआ सारा योरप अचम्भे और आश्चर्य्य से केवल एक मनुष्य के साथ अकृत्यकृत्य संग्राम करता रहा ।

एक बालक को सारी सेना का अध्यक्ष होते हुवे देख कर, एक बूढ़े सेनानी ने उस से कहा कि 'तुम अभी बहुत बालक हो' नैपोलियन ने उत्तर दिया कि 'जनाब ! आप एक वर्ष के पीछे या तो मुझे बूढ़ा पायेंगे, या मैं इस संसार से बिदा हो गया हूंगा ' । वह वृद्ध सेनापति उस समय इस वाक्य को न समझा, किन्तु एक वर्ष के पीछे वह एक वृद्ध ही क्या, संसार भर के वृद्धों की समझ में वह वाक्य आगया। पहले तो सेना के वृद्ध लोग नैपोलियन के से बालक को अपने ऊपर प्रधान देख कर बहुत घबराये । बूढ़ा सेनानी औगीरियो, जिस ने कई रिपब्लिकन युद्धों में अपनी तल्वार के जौहर दिखाये थे, पहले पहल बड़ा शोर मचाता रहा, किन्तु थोड़े ही दिनों में वह ठण्डा पड़ गया । नैपोलियन ने जब सेना में पहुंचते ही अपनी स्कीम के अनुसार काम करना शुरू किया, तब एक बूढ़ा सेनापति उस के पास आया और कहने लगा कि 'सेनानी ! यद्यपि तुम मेरे अध्यक्ष हो, तथापि मैं इतना कह देना चाहता हूं कि तुम युद्ध की कला के विरुद्ध कार्य्य कर रहे हो, इस तरह शत्रु न जीता जा सकेगा ' नैपोलियन ने उत्तर दिया कि ' महाशय ! आप धीर रहिये । थोड़े ही दिनों में आप देखेंगे कि आस्ट्रियन लोग युद्धकला की सब पुस्तकों को अग्नि देवता के अर्पण कर देंगे, और उन्हें पता भी न लगेगा कि वे क्या करें ! '

वस्तुतः बात यह थी कि नैपोलियन की युद्धकला निराली ही थी । पुरानी युद्ध-कला को वह जर्जरित समझता था । गति की तीव्रता, प्रहार की घनता और दृढ़ता को ही वह विजय का कारण समझता था । पुराने ढर्रे के युद्ध के नियमों पर उस का विश्वास न था । जब नैपोलियन ने अपनी तीव्र गति से आस्ट्रिया के बूढ़े २ सेनापतियों के नाकों में दम कर दिया, और थोड़े ही दिनों में उन के छक्के छुड़ा दिये, तब एक आस्ट्रिया का सेनापति कहता हुआ सुना गया कि ' यह लड़का युद्धविद्या के नियमों को कुछ भी नहीं जानता । युद्धविद्या के नियमों का जैसा यह भंग करता है—उसे देख कर ऊब उत्पन्न होती है । अगर आज सवेरे वह हमारे आगे है, तो शाम को हमारे पीछे आ छापा मारता है । कल देखो तो हमारी दाईं ओर और परसों फिर सामने आ धमकता है । युद्धविद्या के नियमों का ऐसा भंग अक्षम्य है ।' पुराने युद्धविद्या के नियमों का ऐसा ही भंग था, जिस ने विजय देवता का चमकीला हाथ नैपोलियन के सिर पर धर दिया ।

सेनापति बनते ही, विना कुछ समय खोने के, नैपोलियन अपनी सेना में आ मिला। फ्रांस की सारी सेना, जो इटली में विद्यमान थी, ३६००० थी। उनका सामना करने के लिये २०००० पीडमौण्ट की सेना **कौली** की अध्यक्षता में और ३८००० आस्ट्रियन सेना **ब्यूलियो** की अध्यक्षता में जमी हुवी थी। नैपोलियन ने जाकर जब अपनी सेना की दशा को देखा तो उसके रोंगटे खड़े हो गये। सेना के सिपाही क्या थे, चीथड़ों के ढेर थे। सब के जूते टूटे हुवे, कपड़े फटे हुवे, शस्त्र बिगड़े हुवे—यह उस सेना की दशा थी, जिससे नैपोलियन योरप की सब से उत्तम सेना के दांत खट्टे करने के लिये तय्यार हुवा था। पहुंचते ही नैपोलियन ने एक घोषणापत्र सेना में आघोषित कराया। घोषणापत्र में लिखा था—

'सिपाहियो! तुम भूखे और नंगे हो, गवर्नमेण्ट ने तुम्हारा बहुत कुछ देना है, किन्तु वह कुछ दे नहीं सक्ती। इतने कष्टों में तुम्हारा धैर्य्य और उत्साह सराहनीय है, किन्तु इस से तुम्हारे शस्त्रों की कीर्त्ति नहीं होती। मैं तुम्हें उन स्थानों में ले जाने आया हूं, जिन जैसा शस्यधान्ययुक्त स्थान संसार में और नहीं है। धनी प्रान्त और माल्दार नगर, थोड़े ही समय में तुम्हारे चरणों पर आ पड़ेंगे। वहां तुम बहुत अनाज नामवरी और कीर्ति पाओगे। इटली के सिपाहियो! क्या तुम इस अवसर में पीछे रह जावोगे'। इस घोषणापत्र का असर सिपाहियों पर विजली का सा पड़ा। उन के अन्दर एक दम क्रियाशक्ति उत्पन्न हो गयी। सारा कैम्प अग्नि से प्रज्वलित हो गया।

नैपोलियन ने अपने शत्रुओं की स्थिति पर विचार किया। उन में से **कौली** का उद्देश्य पीडमौण्ट की रक्षा करना था, और **ब्यूलियो** का उद्देश्य, लम्बार्डी को बचाना था। नैपोलियन ने सब से प्रथम यह उचित समझा कि किसी तरह इन दोनों सेनाओं को आपस में मिलने न दिया जाय और उन्हें फाड़कर अलहदा २ कर डाला जाय। इसी विचार के अनुसार उस ने दोनों सेनाओं के बीच में प्रहार करने का निश्चय किया।

दोनों को पृथक् २ फाड़ कर मौण्टिनोट पर उसने पहलीवार आस्ट्रिया की सेना को पराजित किया और फिर **कौली** को मिल्लेसिमो पर घोर शिकस्त दी। मौण्टिनोट नैपोलियन का पहला बड़ा युद्ध था। पीछे से वह कहा करता था कि 'मौण्टिनोट में पहले २ मुझे समाज में उच्चपद प्राप्त हुवा' समय न खोकर उसने एक दम आस्ट्रिया का पीछा शुरू किया, और पहले इस के कि वे अपने युद्ध में लगे हुवे घावों

को धो सके, **डीगो** पर उन्हें आ दबाया। आस्ट्रिया को यहां ठीक करके फिर बड़ी फुर्ती से वह पीडमौण्ट की सेना के पीछे हुवा और उन्हें केवा और मौण्डावी पर अन्तिम पराजय दिया। पीडमौण्ट के राजा ने पराजय के पश्चात् नैपोलियन से युद्ध बन्द करने के लिये सन्धि करली और नैपोलियन अब अकेली आस्ट्रिया की सेना का सामना करने के लिये स्वतन्त्र हो गया।

इस युद्ध में एकवार नैपोलियन ऐसा फंस गया था कि यदि वह अपनी आत्मिक शक्ति से काम न लेता तो उसका बचना कठिन था। एक दिन वह कोई सौ एक सिपाहियों के साथ, लोनेटी नाम के गांव में से गुज़र रहा था। अकस्मात् वह गांव आस्ट्रिया के दो सहस्र योद्धाओं से घिर गया। आस्ट्रियन सेनापति ने, नैपोलियन के पास शस्त्र फैंककर कैदी बन जाने का सन्देशा भेजा। नैपोलियन के पास वार्ता-हर आंखें बांध कर लाया गया। उसकी आंखें खुलीं तो उसने नैपोलियन को सामने खड़ा पाया। नैपोलियन ने गर्ज कर कहा कि 'अपने सेनानी के पास लौट जावो। उसे कहदो कि मैं उसे शस्त्र रख देने के लिये ८ मिनट की मोहलत देता हूं। वह फ्रेंच सेना के बीच में घिर गया है—उसे अब बचने की सब आशा छोड़ देनी चाहिये।' कांपते हुवे सन्देशहर ने लौट कर अपने सेनानी को नैपोलियन का सन्देशा सुना दिया, और आठ मिनट के पूर्व ही २००० आस्ट्रियन सेना नैपोलियन की बन्दी हो गई।

नैपोलियन के एक सेनानी के साथ भी एकवार ऐसा ही मामला हुवा। सेना-नी का नाम लेनस था। लेनस बड़ा ही वीर योद्धा था। एक वार वह केवल दो अफ़सरों तथा दस या बारह सिपाहियों के साथ जा रहा था। आगे देखा तो ३०० रोम के घुड़सवार उस पर प्रहार करने आ रहे हैं। लेनस आगे बढ़ा और घुड़सवारों के सेनापति को धमकाकर कहा 'तुम यहां क्या कर रहे हो? तलवारें म्यान में क्यों नहीं डालते' डरे हुवे रोमन सेनापति ने कहा 'बहुत अच्छा' लेनस ने फिर डपटकर कहा 'अपने लोगों को कहदो कि वे सब घोड़ों पर से उतर जांय और मेरे उपनिवेश में उन्हें छोड़ आंय' रोम की सेना के अफ़सर ने आज्ञा पालन की और ३०० घोड़े लेनस के उपनिवेश में पहुंचा दिये।

नैपोलियन अभी नवयुवा था—उस के नीचे बड़े २ बूढ़े सेनापति थे। नैपोलियन को आज्ञा पालन कराने के लिये यह आवश्यक था कि वह पहले अपने आप को सब से आदृत करवाता। इस लिये, नैपोलियन इस समय वस्तुतः मुनितुल्य वृत्ति से

निर्वाह करता था । राग रंग और शराब का पीना, जो सारे सिपाहियों का साधारण धर्म है—उस से नैपोलियन कोसों दूर रहता था । हंसी ठट्ठे में या खेल तमाशे में वह कभी भी सम्मिलित न होता था । खुलकर वह कभी न हंसता था । कइयों की तो सम्मति है कि वह कभी खुलकर हंस ही न सक्ता था। अपने जीवन में कहीं भी वह हंसता हुवा नहीं सुना गया । वह केवल मुस्कराता था-किन्तु उस का मुस्कराना एक विशेष आकर्षण शक्ति से भरा हुवा था । वह पत्थर से पत्थर दिल को भी आकर्षण कर लेता था । बड़े आदमियों का मुस्कराना प्रायः चुम्बक की शक्ति रखता है । मुस्कराने के सिवाय अन्य समय में नैपोलियन का मुंह बन्द रहता था—उसके होंठ भिचे हुवे रहते थे । उन होठों को देखते ही पता लगता था वे अभी आज्ञा देने के लिये खुले और अभी खुले । उस का मुख आज्ञा देने के लिये ही बना था—हंसने के लिये नहीं । नैपोलियन के नेत्रों में दो वस्तुओं का ही निवास था—या आकर्षण शक्ति का या मृत्यु का ।

नैपोलियन की आंखों में से कैसा भीषण भय निकलता था, इसका एक उदाहरण प्रसिद्ध है । उस के छोटे भाई ल्यूशियन का एक चित्रकार बड़ा ही मित्र था । उन दोनों की बड़ी दोस्ती थी । वे आपस में खूब मखौल किया करते थे । एक वार नैपोलियन एक कमरे में ल्यूशियन से बात चीत कर रहा था । ल्यूशियन का मित्र उसे मिलने आया । उस ने यह नहीं देखा कि ल्यूशियन किससे बातें कर रहा है ? वह बड़ी चालाकी से छुप २ कर ल्यूशियन के पीछे आया और एक दम उस पर कूद पड़ा । किन्तु पीछे ज्योंही नजर उठा कर देखा तो नैपोलियन की आंखें उसकी ओर देख रही थीं । उन भयानक आंखों में न जाने क्या भरा था कि वह चित्रकार उन्हें देखते ही वहां से भगा । भगता हुवा वह बाग़ में आया, बाग़ से भगता हुवा शहर में पहुंचा, वहां से फिर भगा और एक जङ्गल में घुस गया । फिर कई दिन तक उसने उस तरफ़ को मुख नहीं मोड़ा ।

इस विषयान्तर को छोड़ कर फिर हम नैपोलियन की विजयमाला का साथ करते हैं । पीडमौण्ट की सेना को शान्त करके नैपोलियन आस्ट्रिया के पीछे हुवा । जब तक वह पीडमौण्टकी सेनाके साथ भिड़ता रहा, तबतक आस्ट्रिया की सेना दृढ़ होती रही । पहले आस्ट्रिया की सेना का ब्यूलियो सेनापति था—अब उस के ऊपर एक बड़ा बूढ़ा **वर्म्सर** नाम का सेनापति निश्चित किया गया । वर्म्सर ने भी बड़ी दृढ़ता से युद्ध आरम्भ किया । सब से प्रथम, नैपोलियन चक्कर काटता हुवा, एक लकड़ी के पुल पर से पो नामक नदी को पार

करके उसी मैदान में आगया जिस में **वर्म्सर** अपनी सेना लिये हुवे पड़ा था। वर्म्सर बूढ़ा था—नैपोलियन जवान था । वर्म्सर नैपोलियन की गति को न पासक्ता था। नैपोलियन की सेना की गति अद्भुत थी । आज तक कोई सेना इतनी तेज़ गति से चलती हुई नहीं सुनी गई । कभी २ एक रात में नैपोलियन की सेना तीस २ मील तक रास्ता तय कर जाती थी । नैपोलियन की सेना आस्ट्रियन सेना को आमिली। आस्ट्रिया की विच्छिन्न सेना आगे हुवी और नैपोलियन उन के पीछे २ चला । अन्त को आस्ट्रियन सेना लोदी नाम के गांव में पहुंची। वहां से भी नैपोलियन ने उन्हें भगा दिया । लोदी गांव **ऐडा** नाम की नदी के किनारे पर है। आस्ट्रियन सेना ऐडा को एक तङ्ग लकड़ी के पुल से पार कर गई, और उसने दूसरे पार एक ऊंचे किले में अपना अड्डा जमा दिया । वह दुर्ग ऐसी जगह था कि उस पर से तोप की सीधी मार पुल पर पड़ती थी । अतः आस्ट्रियन सेनापति ने उस पुल को उड़ाने की आवश्यकता न समझी । उस ने तो उल्टा यह विचारा कि यदि नैपोलियन उस पुल पर से पार उतरने की चेष्टा करेगा तो फिर उस की मृत्यु में सन्देह ही क्या है ? उस पुल पर से दो तीन आदमी भी एक साथ न निकल सक्ते थे , फिर तोपों की सीधी मार । उस से बचना मनुष्य का कार्य्य नहीं । यह सोच कर वह पुल वैसा ही बना रहने दिया गया ।

नैपोलियन ने अपनी सेना को लोदी गांव में टिकाया। उस ने इतिकर्तव्यता पर विचार किया, और सेनापतियों से भी सम्मतियें पूछीं । सब ने यही कहा कि इस पुल पर से पार उतरने की चेष्टा करना अपने हाथों अपने जीवन को बेचना है । किन्तु नैपोलियन को किसी की सलाह पसन्द न आई । उस ने उसी पुल पर से पार होने का निश्चय किया । एक सेनापति नैपोलियन के इस विचार को सुन कर चिल्ला उठा कि 'इतनी तोपों की मार के रहते हुवे कोई मनुष्य इस पुल पर से जा-सके—यह असम्भव है' । नैपोलियन ने शान्ति से उत्तर दिया 'क्या कहा ! अ-सम्भव है ! असम्भव शब्द तो मैंने फ्रेंच भाषा में नहीं पढ़ा' । वस्तुतः नैपोलियन किसी दूसरे की सम्मति की परवा न करता था । एक बार नैपोलियन के असाधारण विजयों से डर कर डायरक्टरी ने, इस के साथ ही एक और सेनापति इटली में भेजना चाहा—नैपोलियन ने उत्तर में अपना अस्तीफ़ा भेज दिया, और साथ ही लिख भेजा कि रण-क्षेत्र में एक ही मग़ज़ काम करसक्ता है—दो नहीं ।

नैपोलियन ने उस पुल के इस तरफ़, अपनी तोपों की एक कतार ऐसी अवस्थिति में रखदी जिस में शत्रु के आदमी आकर पुल को न उड़ा सकें । फिर पुल के पास

॥ लोदी का युद्ध ॥

फ्रेंच सेना की ओर मुड़कर नैपोलियन ने कहा 'अपने सेनापति के पीछे चलो' पृ० ४९.

ही एक बाज़ार के बीच में उस ने अपनी सारी सेना खड़ी करदी। आज्ञा दी गई और ढोल बजने शुरू हुवे। चक्कर काट कर फ्रेंच सेना के वीर योद्धा पुल पर चढ़ने लगे। एक दम वज्राघात का सा नाद हुवा और तोपों के मुखों में से गोलों की वर्षा होने लगी। फ्रेंच सेना का अगला भाग भुनकर गिर पड़ा। पिछले सिपाही अगलों की लाशों पर चढ़कर आगे बढ़ने लगे। फिर गोलों की एक बाढ़ छूटी और अगले सिपाहियों के शरीर भुन गये और वे भी वहीं सेतुशायी हुए। शरीरों से निकलते हुवे लहू से सारा पुल भर गया। लहू नदी में चू गया—और नदी भी लाल होगई। भयानक दृश्य उपस्थित हुवा। भीति खाये हुवे फ्रांसीसी सिपाही पीछे को मुड़ने लगे। आगे बढ़ने का साहस टूटने लगा।

नैपोलियन यह न देख सका। वह घोड़े पर से उतर पड़ा और एक झण्डा हाथ में लेकर घोर अग्निवर्षा के अन्दर कूद पड़ा। चारों ओर—आगे और पीछे दायें और बायें—अग्नि की वर्षा होरही थी, बीच में एक छोटा सा शरीर झण्डा हाथ में लिये आगे बढ़ा। नैपोलियन के बड़े २ सेनापति **लैनस, मैसेना, बर्दियर** उस के पीछे हुवे। फ्रेंच सेना की ओर मुड़ कर नैपोलियन ने कहा 'अपने सेनापति के पीछे चलो'। वहां एक भी मनुष्य ऐसा न था, जो इस अवस्था में पीछे कदम रखता। सारी फ्रेंच सेना अपने अमानुषिक सेनानी के पीछे २ भागती हुई अग्नि के समुद्र में घुस गई। फिर किसी ने नहीं देखा कि कितने मरे और कौन मरे। एक मिनट भर में **लैनस** और उस के पीछे २ नैपोलियन पुल के पार हुवे। उन के साथ ही फ्रांस की सेना के सिपाही धड़ाधड़ पुल से कूद पड़े।

इस समय, सेनापति **लैनस** ने बड़ा ही असाधारण शौर्य्य दिखाया। वह आवेश में भरा हुवा अकस्मात् कई आस्ट्रियनों के जत्थे में घुस गया। चारों ओर से उस पर शस्त्र प्रहार होने लगे। उस के घोड़े के भी गोली लगी। किन्तु **लैनस** ने देरी नहीं लगाई। वह अपने घोड़े पर से कूदा और एक आस्ट्रियन सवार के पीछे जा बैठा। तलवार से उस सवार को काट गिराया और उसी घोड़े पर कई आस्ट्रियन सिपाहियों को काटता हुवा अपनी सेना में आमिला।

नैपोलियन के पार होते ही आस्ट्रियन सेना के कदम उखड़ गये। कई सिपाही कैदी किये गये। बहुत सा युद्ध का सामान भी नैपोलियन के काबू आया। इस प्रकार से यह इतिहासप्रसिद्ध विजय नैपोलियन को प्राप्त हुवा। इस अद्भुत तथा आश्चर्य्य-

दायक विजय को देख कर, सारी फ्रेंच सेना ने नैपोलियन को देवता समझना शुरू किया। 'सेना को मृत्यु के मुख में से निकाल कर विजयपर्वत पर चढ़ाने की शक्ति नैपोलियन में ही थी। नैपोलियन को भी इस विजय से अपनी असाधारण शक्तियों का पता लग गया। वह पीछे से कहा करता था कि 'लोदी के संग्राम के पीछे मैं अपने अन्दर एक असाधारण शक्ति का भान करता था—मैं अपने आप को और सब लोगों से बहुत ऊंचा समझने लग गया था—मैं अपने आप को वायु में चलता हुवा प्रतीत होता था।'

सारी सेना के मन में भी इस युद्ध के पीछे नैपोलियन के लिये बड़ी देवबुद्धि हो गई। सेनानियों ने मिल कर अपनी ओर से नैपोलियन को 'छोटा सेनाध्यक्ष' की उपाधि दी। लोदी के संग्राम के पीछे, विजेता नैपोलियन, राजधानी **मिलान** में दाखिल हुवा। इटली के देशभक्तों ने नैपोलियन का खुले दिल से स्वागत किया। उन्हों ने उस को अत्याचारों से छुड़ाने वाला रक्षक पाया। नैपोलियन ने वहां आते ही रिपब्लिक (प्रजातन्त्र राज्य) आघोषित कर दिया, और त्रिवर्ण झण्डा **मिलान** के घरों पर फहराने लगा। **मिलान** के राजगृह पर एक फट्टा लगा दिया गया। उस पर लिखा हुवा था 'यह मकान किराये पर चढ़ सक्ता है। जो लेना चाहे वह फ्रेंच सेनापति से प्रार्थना करे' राजतन्त्र शासन को उड़ाकर प्रजातन्त्र शासन की बुनियाद डालदी गई।

इन संग्रामों में नैपोलियन ने खूब लूटमार मचाई थी। उसके सिपाही भूखे नंगे थे, उन्हें खाने पीने और वस्त्रों की आवश्यकता थी, अतः नैपोलियन ने भी लूटमार करने से उन्हें विशेष न रोका। यद्यपि संग्रामों के पहले विस्तृत की गई घोषणाओं में साफ़ शब्दों में उस ने वहां के निवासियों के लूटने का निषेध कर दिया था—तथापि थोड़ी बहुत लूट का सब सेनाओं को अधिकार है। कौनसी सभ्य सेना है जिसने आक्रमण करते हुवे विजयी हो कर लूट नहीं मचाई? चीन के युद्ध में सारे योरप के सिपाहियों ने जो गुल खिलाये थे, उन्हें कौन नहीं जानता? जितनी लूट सब सेनाओं के लिये आज्ञापित है, नैपोलियन की सेना ने उस से अधिक न मचाई थी। किन्तु नैपोलियन के शत्रु, जो उस की निन्दा करने में सच झूठ में भेद करने को पाप समझते हैं, यह शोर मचाते हुवे नहीं थकते कि नैपोलियन की सेना लुटेरी थी और उस ने बहुत लूटा।

मिलान में नैपोलियन ने अपनी सेना को खूब तय्यार करना शुरू किया। कई रातें और दिन उस ने घोड़े की पीठ पर गुज़ारे। जब रणक्षेत्र के पास पहुंचने का

समय होता था, तब नैपोलियन की नींद कहीं भाग जाती थी। किन्तु जहां संग्राम शुरू होगया, नैपोलियन के बताये हुवे उपायों से सेना ने लड़ना शुरू किया, वहां वह निश्चिन्त हो जाता था और उस की निद्रा लौट आती थी। समर भूमि में कभी कभी घोड़े पर और कभी नीचे उतर कर वह सो जाता था। सेना का नैपोलियन से अगाध प्रेम था। प्रेम होता भी क्यों न? वह उन से वर्त्ताव ही ऐसा करता था। एक वार **मिलान** में नैपोलियन घोड़े पर चढ़कर घूम रहा था। एक सन्देशहर सिपाही ने सामने से झुककर कुछ आवश्यक काग़ज़ उस के हाथ में दिये। नैपोलियन ने उन्हें पढ़ा और मौखिक उत्तर देकर उसे बहुत शीघ्र लौटने को कहा। सिपाही ने कहा कि मेरे पास कोई घोड़ा नहीं है। एक था, वह भी ज़ोर से भागने के कारण अभी आप के द्वारपर मर गया है। नैपोलियन ने उत्तर दिया 'तो तुम मेरा घोड़ा ले जाओ।' और ऐसा कहकर वह घोड़े पर से उतर पड़ा। सिपाही सेनापति का घोड़ा लेने से घबराया। यह देखकर नैपोलियन कहने लगा 'शायद तुम मेरे घोड़े को बहुत ही उत्तम और बहुमूल्य समझते हो। किन्तु यह तुम्हारी भूल है। फ्रांस के सिपाही के लिये कोई चीज़ भी बहुमूल्यवती नहीं।' ऐसी बातें झट सारी सेना में प्रसिद्ध हो जाती थीं, और नैपोलियन को सारी सेना अधिक प्यार करने लगती थी।

मिलान में सेना को ख़ूब तय्यार करके नैपोलियन आस्ट्रियाकी सेना के पीछे हुवा। इसी समय पेविया और मिलनीज़ में, नैपोलियन के जीते हुवे लोगों ने, फिर से सिर उठाया। वहां ठहरी हुई फ्रांसीसी सेना को घेर लिया और नैपोलियन के विरुद्ध घोषणा देदी। नैपोलियन पहले उधर ही को मुड़ा और ऐसी क्रूरता तथा दृढ़ता से उन को दबाया कि फिर उन्हों ने (और न किसी अन्य नगर में) विजेता का सामना करने का यत्न किया। कई लोगों को नैपोलियन की इस क्रूरता पर बहुत आशंका है। उन का कथन है कि यहां पर उसे मृदुता से काम लेना चाहिये था। किन्तु ऐसे लोगों की आशंका वृथा है। विजेता जिस स्थान को जीत जाता है, यदि उस में वह दृढ़ता से शान्ति की स्थापना न रक्खे तो उसका सारा विजय निष्फल होजाय। युद्ध शान्ति से किया जा सकता है, किन्तु विद्रोह शान्ति से नहीं बिठाया जा सक्ता।

इन विद्रोहियों को शान्त करके, नैपोलियन अपनी छोटी सी किन्तु अंकुशसमान सेना को लेकर, आस्ट्रिया की गजसमान वृहदाकार सेना का दमन करने के लिये प्रस्थित हुआ। उस ने आस्ट्रिया के सेनापति को कास्टिगालिथान पर से हटाकर **मेण्चुआ** नाम के नगर पर घेरा डाल दिया। **बर्म्सर** को भी वस्सेनों के युद्ध में हटाकर **मेण्चुआ** नगर में

बघेल दिया । इस घेरेको तोड़ने के लिये अल्विंज़ी नामके सेनापति ने नैपोलियन पर आक्रमण करना चाहा । उस ने अपने आक्रमण का सारा विचार, विस्तार पूर्वक, एक पतले कागज़ पर लिखा। उसे मोड़ कर एक छोटे से मोम के गोले में धर दिया । वह मोम का गोला एक किसान के सुपुर्द किया गया। वह किसान उसे मेन्तुआ में बन्द पड़े हुवे वर्म्सर के पास ले चला । रास्ते में वह किसान पकड़ा गया । पकड़े जाते ही, उस ने वह गोला मुंह में डालकर पेट तक पहुंचा दिया । नैपोलियन ने औषधों द्वारा उस के पेटको बाधित कर दिया कि वह उस मोम के गोले को छोड़ दे । मोम का गोला निकलते ही अल्विंज़ी की पोल खुल गई । नैपोलियन सारी चालाकी को जान गया। वह अपनी सेना का थोडासा हिस्सा लेकर **अडीगे** नदी को पार करता हुआ ऐसा घूम गया, कि दूसरी रात को वह अल्विंज़ी की सेना के पीछे जा जमा ।

जहां पर नैपोलियन ने अपनी सेना को जमाया, वह स्थान एक दलदल के बीच में था । सामने आस्ट्रिया की सेना पड़ी थी। बीच में **आर्कोला** नाम का गांव था । गांव तथा नैपोलियन की सेना के बीच में, एक छोटासा नाला था। उस पर एक लकड़ी का पुल था । ग्राम को जीतने के लिये उस पुल पर से उतरना आवश्यक था । आस्ट्रिया की सेना की तोपें सामने जमी हुई थीं । सेना ज़रा सी झिझकी । नैपोलियन के लिये यह पर्य्याप्त था । वह घोड़े पर से उतरा, और एक झण्डे को हाथ में लेकर आगे हो लिया। सेना की ओर देखकर उस ने कहा 'लोदी के विजेताओ ! अपने सेनापति के पीछे आओ' । बस फिर क्या था ? एक भी कायर या भीरु वहां न था । युद्ध एक दिन तथा थोड़े से प्रतिरोध के साथ रात भर और फिर दूसरे दिन भी होता रहा । नैपोलियन की सेना आस्ट्रिया की सेना से आधी थी, किन्तु नैपोलियन के फ़ौलाद के सामने वज्र भी क्या चीज़ था ? आस्ट्रिया की फ़ौज के पैर उखड़ गये । वह भागी— किन्तु नैपोलियन उन के पीछे था । दूसरे दिन **रिवर्वेला** पर आल्विंज़ी ने अपने हथियार रख दिये ।

आर्कौला का विजय बड़ी ही असाधारण घटना समझी जाती है । बड़े २ युद्ध नीतिविज्ञ भी कहते हैं कि उस विजय में नैपोलियन ने असम्भव कर दिखाया । युद्ध के प्रथम, सब को निश्चय था कि अब इस उगते हुए सितारे के डूबने का दिन आगया, किन्तु इस युद्ध के पीछे सब ने उस छोटे से सितारे को बड़े भारी दिवाकर के रूप में परिणत होते हुवे पाया । क्या धनी और क्या दीन, सब के मुख से नैपोलियन

के लिये प्रशंसासूचक शब्द निकले। नैपोलियन ने पीछे से कई वार कहा था कि उसे अपने भाग्यों पर पूरा भरोसा आर्कोला के युद्ध से ही हुवा है। इसी युद्ध में, नैपोलियन की भाग्यपरीक्षा का एक और अवसर भी उपस्थित हुवा। नैपोलियन, घोड़े पर सवार, सेना की गति को देख रहा था कि अकस्मात् एक तोप का गोला आकर उस के पास फटा। उस का घोड़ा चारों ओर से बिध गया। घबरा कर वह भागा। घोड़ा ऐसे जोश में था कि नैपोलियन उसे थाम न सका। भागता भागता वह दलदल में जा पड़ा, और पड़ते ही मरगया। नैपोलियन भी दलदल में फंसगया। उस ने निकलने की चेष्टा की तो वह और भी अन्दर को धसने लगा। आखिर वह गरदन तक दलदल के बीच में जारहा। चारों ओर आस्ट्रियन सेना थी—बस किसी सिपाही की दृष्टि पड़ने की देर थी, या गर्दन से ऊपर के हिस्से की भी दलदल में घुसने की देर थी। दोनों में से कुछ होते ही, चमकता हुवा सितारा एक दम गुम हो जाता। किन्तु भाग्यों का फेर देखिये कि अकस्मात् एक फ्रांसीसी सिपाही की ही दृष्टि उस पर पड़ गई। बस फिर क्या था—सारी सेना नैपोलियन की रक्षार्थ उपस्थित होगई, सदा के लिये भूल जाने से एक मिनट पूर्व ही नैपोलियन दलदल से निकल कर अपनी सेना का नियमन करने लगा। बहुत से विग्रह के बाद, **वर्म्सर** ने मेम्चुआ नगर भी २तीय फेब्रुवरी के दिन नैपोलियन के अधीन कर दिया। जब कोई सेनापति शत्रु के सामने हथियार रख दे, तब उस की खड्ग लेली जाती है। प्रायः एक सेनापति ही दूसरे सेनापति की तलवार ले सक्ता है। वर्म्सर बूढ़ा था; नैपोलियन लड़का था। यदि नैपोलियन अपने हाथ से वर्म्सर की तलवार लेने जाता तो वर्म्सर को बहुत शर्म आती। इस लिये, नैपोलियन ने अपने अधीन सेनापतियों में से एक बूढ़े को भेज कर उस द्वारा वर्म्सर की तलवार मंगाली। इस तरह आस्ट्रिया की यह बहुत भारी सेना, नैपोलियन की बुद्धि तथा प्रतिभा के सामने धूल में मिल गई। अब केवल आस्ट्रिया की एक सेना रह गई। आर्कड्यूकचार्लस, जो आस्ट्रिया के महाराज का भाई था, एक बड़ी सेना के साथ, सामने पड़ाहुआ था। नैपोलियन ने उस का पीछा किया। आर्कड्यूक भी पीछे को हटने लगा। हटते २ वह आस्ट्रिया की राजधानी **वीना** के पास पहुंच गया। तब तो आस्ट्रिया के महाराज और उस के भाई बहुत घबराये। घबराकर उन्हों ने जो कुछ किया उसे अगले परिच्छेद में पढ़िये।

पञ्चम परिच्छेद।

कैम्पोफ़ोर्मियों की सन्धि।

शूरं कृतज्ञं दृढविक्रमञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।

वार वार नीचा देख कर और पराजय पर पराजय खा कर आस्ट्रिया के महाराज का भय बहुत बढ़गया। उस गर्वित जाति के गर्वित मुख्य पुरुष का भी मद लुप्त हो गया। नैपोलियन **वीना** से कुछ दूरी पर सेना लिये पड़ा था। तब आस्ट्रिया के महाराज ने सन्धि के लिये प्रार्थना भेजी। नैपोलियन ने इस से पूर्व ही, महाराज के भाई और सेनापति आर्कड्यूकचार्ल्स के पास लिखा था कि यह तो निश्चित ही है कि तुम्हारा पराजय होगा— तब तुम शान्ति ही क्यों नहीं कर लेते? किन्तु तब चार्लस ने, इस सन्धि की ध्वजा का ग्रहण करना, अपने महत्व से नीचे समझा था। अब उन्हें स्वयं सन्धि के लिये प्रार्थना करनी पड़ी। कहते हैं कि उस समय तक कभी किसी भी शत्रु ने इटली के रास्ते से वीना में प्रवेश नहीं किया था, अतः सारा नगर बहुत ही डर गया था। थोड़ी देर के लिये दोनों ओर से युद्ध बन्द कर दिया गया—और सन्धि के नियम कैम्पोफ़ोर्मियो नाम के एक ग्राम में निश्चित होने लगे। वहां पर आस्ट्रिया के महाराज के कुछ एक प्रतिनिधि एक ओर बैठे और नैपोलियन दूसरी ओर बैठा।

सन्धि के नियमों पर विवाद शुरू हुआ। आस्ट्रिया के प्रतिनिधियों ने ऐसी शर्तों का प्रस्ताव करना शुरू किया, जिन्हें नैपोलियन फ्रांस की सरकार के लिये मानहानि करने वाला समझता था। तब भी नैपोलियन चुप बैठा रहा। नैपोलियन की चुप को देख कर तो आस्ट्रिया के प्रतिनिधि शेर हुए। एक बोला कि यदि हमारी पेश की हुई सन्धि की शर्तें न मानी जायंगी, तो रूस की सेना के साथ मिल कर, हम फ्रांस को उन शर्तों के मानने के लिये बाधित करेंगे। दूसरा बोला कि उस मनुष्य को धिक्कार है, जो केवल अपनी युद्धाकांक्षा को पूरा करने के लिये अन्य देशों की शान्ति की परवा नहीं करता। इन सब अपमानजनक शब्दों को, विजेता नैपोलियन शान्ति तथा गम्भीरता से सुनता रहा।

जब आस्ट्रिया के प्रतिनिधियों की सब हवा व्ययित हो चुकी, तब बड़ी फ़ुर्ती से नैपोलियन उठ खड़ा हुआ। उस के पास ही एक बहुमूल्य प्याली पड़ी हुई थी।

वह किसी विजित नरेश ने उसे भेंट में दी थी । नैपोलियन ने उसे हाथ में उठा लिया, और शान्ति किन्तु बल से भरे हुए शब्दों में कहा कि ' महाशय ! जो शान्ति हुई थी, वह टूट गई । अब से युद्ध फिर प्रारम्भ होगा । किन्तु याद रक्खो, कि तीन महीनों में मैं तुम्हारे सारे साम्राज्य को ऐसे ही छिन्न भिन्न कर दूंगा, जैसे इस समय इस प्याली को छिन्न भिन्न करता हूं । ' इतना कह कर उस ने वह प्याली फ़र्श पर दे मारी और चारों प्रतिनिधियों के सन्मुख कुछ झुक कर उस कमरे से बाहिर हो गया । बाहिर आते ही एक गाड़ी में बैठ कर, वह अपनी सेना की ओर को रवाना हुआ । आस्ट्रिया के प्रतिनिधि यह दृश्य देख कर अवाक् रह गये । वे समझते थे कि नैपोलियन लड़ तो सक्ता है किन्तु नीति में उसे हम यूंही जीत लेंगे । अब उन्हों ने देखा कि यहां भी नैपोलियन बाज़ी मार गया । यह सब नाटक उस ने जान बूझ कर ही किया था । आस्ट्रिया के प्रतिनिधि स्वयं नैपोलियन के पास आये और जैसे सन्धि के नियम उस ने लिखाये वैसे ही उन्हें स्वीकार करने पड़े ।

इस सन्धिद्वारा फ्रांस की सत्ता र्‍हाईन तक बढ़ा दी गई । **सिसैल्पाइन** रिपब्लिक को स्वीकार किया गया और वेनिस के कई एक प्रदेश आस्ट्रिया को दे दिये गये । इस सन्धि से कुछ देर पहिले, फ्रांस की डायरेक्टरी ने नैपोलियन को लिखा था कि वह आस्ट्रिया से सन्धि न करे, क्योंकि क्रान्ति का राज्य कभी भी एक सत्ताक राज्य के साथ सन्धि नहीं कर सक्ता । किन्तु नैपोलियन ने जिस दिन से इटली में पैर रक्खा था—उसी दिन से उस ने डायरेक्टरी की कोई परवा नहीं की थी । वह प्रायः कहा करता था कि मैं इन गद्दों पर बैठे हुए वकील—पिशाचों से शासित नहीं हो सक्ता । सेना की अध्यक्षता जब से उस ने स्वीकार की, तभी से अपने आप को सर्वथा डायरेक्टरी से पृथक् समझ लिया था । विशेषतया **लोदी** के पुल की लड़ाई जीत कर तो उसे यह अनुभव होने लग गया था कि सारा संसार उस के नीचे विचर रहा है और वह आकाश में उड़ रहा है । उसे **लोदी आर्कोला** और **रिवोली** के युद्धों में विजय पाकर, अपनी असाधारण शक्तियों पर विश्वास ही नहीं किन्तु पूरा भरोसा हो गया था ।

इस सन्धि के साथ नैपोलियन के प्रथम चमकीले विजय का अन्त हुआ । इस विजय के साथ उपमा रखने वाली और विजय इतिहास में मिलनी कठिन है । यह विजय एक मनुष्य ने पाई—यह मानने की इच्छा नहीं करती । केवल पचास सहस्र

सेना की सहायता रखते हुए, फ्रांस की सीमा से लेकर वीना तक जीत लेना—और आस्ट्रिया जैसे समृद्ध तथा पुराने देश के सब सेनापतियों के शस्त्र रखवा लेना कोई छोटी बात न थी । इन आश्चर्यमय, किन्तु सत्य विजयों के हेतु क्या थे ?

निःसन्देह इन विजयों में कारण नैपोलियन के आत्मिक तथा शारीरिक गुण थे । उस की प्रतिभा विचित्र थी—वह बड़ी ही शीघ्रगामिनी, अनथक, और विस्तारिणी थी । कोई भी ऐसी बात न थी, जिसे नैपोलियन की प्रतिभा ग्रहण न कर सक्ती थी । उस के एक सचिव का कथन है कि उस ने किसी समय भी, नैपोलियन के मन को थके हुए नहीं पाया । वह दिनों तक कार्य्य करता था—संग्राम के लिये तय्यारियें करता था—और फिर जब कभी भी कोई विषय विचार योग्य आ जाय—तब भी वह कभी उस पर विचार करने से पीछे न हटता था ।

उस की सेना की फुर्ती और दृढ़ता, उस के विजय के मुख्य कारणों में से एक थी । वह विद्युत् कीसी तीव्र और आकर्षण शक्ति की तरह निश्चित थी । शत्रु उस की गति को पा नहीं सक्ते थे । पहले उस के कि वे यह जानते कि नैपोलियन की सेना चल पड़ी है—वह उन के ऊपर आ पड़ता था । कभी कभी जब शत्रु समझता था, कि उस ने नैपोलियन को सर्वथा घेर कर अशक्त कर दिया, उसी क्षण में वह देखता था कि नैपोलियन की तीव्रता तथा प्रतिभा ने उसे ही घेर लिया है । आर्कोला के युद्ध से पूर्व उस ने एल्विज़ी को जैसा छकाया था—वह पीछे आ चुका है । कहते हैं कि रोमन लोग सब से बड़े योद्धा थे, किन्तु नैपोलियन की सेना की चाल के सामने उन की चाल भी मध्यम पड़ जाती थी ।

नैपोलियन को जिताने वाला सब से बड़ा गुण उस का अपना साहस था । और उस का दूसरा बड़ा गुण यह था कि वह अपना साहस दूसरे में फूंक सकता था । बस फिर क्या था । समुद्र और आंधी उस मनुष्य के सामने तृण समान भी नहीं, जिस में साहसरूपी अग्नि विद्यमान है । नैपोलियन का साहस लोदी और आर्कोला के युद्धों में अपनी पराकाष्ठा को पहुंच गया था । जिस स्थान में चारों तरफ़ से अग्नि की घोर वर्षा हो रही हो—वहां हाथ में झण्डा लेकर कूद पड़ना—यह उन्हीं लोगों के भाग्यों में लिखा हुआ है, जो नैपोलियन और सीज़र की तरह संसार को कंपाने के लिये आते हैं । वह अपने साहस को सेना में किस तरह फूंक देता था—इस में उस के घोषणापत्र प्रमाण हैं । उस ने इटलीविजय का प्रारम्भ ही एक ऐसे घोषणापत्र से किया था । एक वार की बात है कि उस की सेना निरन्तर

दो रात तक चलती रही और दो दिनों में चार संग्राम लड़ चुकी—इतना कुछ करके उस ने विश्राम लेने का विचार ही किया था जब उस ने सुना कि शत्रु उस पर पीछे से आक्रमण कर रहा है । नैपोलियन ने देखा कि उस की सेना थकी पड़ी है । उस ने एक घोषणापत्र निकाला, जिस में अपनी सेना की वीरताओं का वर्णन करते हुए उसे ऐसा उत्साह दिया कि सारी की सारी सेना फिर वैसे ही अग्निवत् उद्दीपित हो गई, जैसी पहले थी ।

ऐसे २ कई कारण थे जिन से नैपोलियन ने इन असाधारण विजयों को प्राप्त किया । वह अपनी सेना के सब सिपाहियों की मूरतों को पहिचानता था । जब किसी सिपाही के चोट लगती, तो वह कभी २ अपने हाथ से उसके पट्टी बांधता था । एक वार बराबर तीन दिन के गुत्थम गुत्था के पीछे, उस की सेना विश्राम करने के लिये ठहरी । रात का समय था, किन्तु नैपोलियन को विश्राम कहां था । वह अपने उपनिवेश के चारों ओर घूमता हुआ पहरेदारों की देख भाल कर रहा था । एक स्थान पर आकर उस ने देखा कि एक सिपाही पहरा देते २ सो गया है और उस की बन्दूक पास पड़ी है । वह बन्दूक उठा कर उस की जगह स्वयं पहरा देने लग गया । थोड़ी देर में पहरेदार की जाग खुली । पहरेदार ने ज्यों ही सेनापति को देखा, उस के तो होश हवास उड़ गये । किन्तु नैपोलियन ने उस के पास आकर, सांत्वना देते हुए कहा कि ' मैं नींद के लिये तुझे दोष नहीं देता, क्योंकि मैं जानता हूं कि तीन दिन की थकावट एक लौहकाय को भी थकाने के लिये पर्य्याप्त है, किन्तु तो भी आगे से पहरे पर सावधान रहना अच्छा है ।' वह पहरेदार इस दया से नैपोलियन का कितना कृतज्ञ हुआ होगा—इस का आप ही अनुमान कर सक्ते हैं । ऐसी घटनाओं से सारी सेना अपने ' छोटे सेनापति ' से बड़ा ही प्यार करती थी । आर्कोला के पुल पर आज्ञा देते हुए एक वार नैपोलियन ऐसी जगह खड़ा हो गया, जहां चारों ओर से तोप के गोलों की सीधी मार थी । एक सिपाही ने नैपोलियन के इस खतरे को देख लिया और उसे वहां से हटने के लिये कहा । नैपोलियन हटने में ज़रा झिझका—किन्तु उस सिपाही ने ज़ोर से उसे पीछे को धक्का देकर कहा कि 'यदि तू मारा जायगा तो हमें इस इन्द्रजाल से कौन निकालेगा? तब नैपोलियन को पीछे हटना पड़ा ।

नैपोलियन के विजय के ये सब कारण थे । इन्हीं कारणों से, जब नैपोलियन झण्डा हाथ में लेकर, सेना के आगे होता था, तब सेना के मरे हुवे सैनिकों के अन्दर भी

प्राण फुंक जाते थे, और उन के लिये जीना और मरना एकसा हो जाता था। किन्तु नैपोलियन के इन प्रथम विजयों का उद्देश्य क्या था? वह किस लिये इन सब संग्रामों को कर रहा था? इन प्रश्नों का उत्तर देना यद्यपि कठिन है, तथापि असम्भव नहीं। यद्यपि यह प्रश्न विचार साध्य है, तथापि उस में प्रयुक्त विचार दुष्प्रयुक्त होगा।

इस में ज़रा भी सन्देह नहीं कि जब वह पहले पहल इटली की सेना का सेनापति बना, तब उस की कोई बड़ी उन्नत अभिलाषायें न थीं। यद्यपि, टउलन विजय तथा डायरेक्टरी की रक्षा से उस को अपने शस्त्रों पर बहुत कुछ भरोसा होगया था, तथापि अभी वह अपने आप को असाधारण पुरुष न समझने लगा था। अभी वह अपने आप को आकाश में उड़ता हुवा नहीं पाता था। तब उस के अन्दर वही कर्त्तव्य का भाव काम कर रहा था, जो एक अच्छे सेनापतिमें होना चाहिये। वह डायरेक्टरी का नौकर था, अतः रिपब्लिक अर्थात् प्रजातन्त्र राज्य का पक्षपाती था; किन्तु, वस्तुतः उस के सिद्धान्त प्रजातन्त्र राज्य की ओर न झुकते थे। बाल्यावस्था से ही वह क्रान्ति के अत्याचारी नियम से डरता था, उसे खलक़त के राज्य से घृणा थी। जब पेरिस के बाज़ार क्रान्ति की आग से धधक रहे थे, तब नैपोलियन उन में दुःखित दिल से घूमता था—वह ऐसी क्रान्ति को बहुत ही पसन्द न करता था। अतः उस की सम्मतियें डायरेक्टरी की सम्मतियों से सर्वथा विरुद्ध थीं। किन्तु, एक अच्छे सेनापति की तरह वह अपने स्वामी की आज्ञा के अनुकूल चलता था।

नैपोलियन उस सिद्धान्त के लिये न लड़ता था, जिस के लिये क्रान्ति के अन्य सेनापति लड़ते रहे थे। वह स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृता के लिये न युद्ध करता था। उस के युद्ध के उद्देश्य वे थे—जो उस ने इटली में आते ही, अपनी सेना के सामने एक घोषणापत्र में रक्खे थे। उस ने घोषणापत्र में कहा था कि 'तुम्हें इटली के जीतने पर आदर और कीर्ति प्राप्त होंगे'। वह कीर्ति और आदर के लिये युद्ध करता था। किन्तु इस धावे के शुरू २ में वह स्वतन्त्र इच्छा से कार्य्य न करता था। लोदी के विजय ने उस को परिवर्तित मनुष्य बना दिया; उस समय से उसे अपनी गुप्त शक्तियों का भान होने लगा; तब उसे पता लगा कि वह एक साधारण मनुष्य नहीं है, किन्तु मनुष्यों का अधीश्वर है। तब उसे प्रतीत हुवा कि वह स्वयं क्या कुछ कर सक्ता है और औरों से भी क्या कुछ करा सक्ता है?

इस प्रतीति के होते ही उस के वास्तविक भाव और वास्तविक सिद्धान्त बाहिर आने लगे। उस के विजय और उस की सन्धियें—सब आदर और मान के लिये थे, वे क्रान्ति के प्रचार के लिये न थे।

इसी समय एक घटना और होगई, जिस ने नैपोलियन को डायरेक्टरी की अधीनता से बहुत ही स्वतन्त्र कर दिया। डायरेक्टरी को नैपोलियन की अरुद्ध विजयों से भय प्रतीत हुवा, अतः उस ने एक और सेनापति को सेना का आधिपत्य बांटने के लिये भेजा। नैपोलियन ने अपना मुक्तिपत्र भेज दिया। तब डायरेक्टरी को चिन्ता पड़ी क्योंकि वह नैपोलियन को कदापि न छोड़ सक्ती थी। वह अब तक, अन्य सेनापतियों की अपेक्षा नैपोलियन के गौरव को खूब समझ गई थी। वह देख चुकी थी, कि जहां डेढ़ लाख से अधिक सेना के साथ **जोर्डन** और **मोरियो** इधर उधर मारे २ फिर रहे थे, वहां नैपोलियन अपने ४० सहस्र आदमियों को लेकर अचम्भे दिखा रहा था और सारे योरप को मन्त्रमुग्ध कर रहा था। डायरेक्टरी ने नैपोलियन की सेनाध्यक्षता को बांटने का प्रस्ताव उठा लिया। इस के साथ ही नैपोलियन वस्तुतः डायरेक्टरी से ऊपर होगया—वह डायरेक्टरी का स्वामी बन गया।

इस के पीछे नैपोलियन जो कुछ करता था, फ्रांस की और अपनी कीर्ति के लिये करता था। वह सांग्रामिक कीर्ति को ही कीर्ति समझता था। यह भी वह जानता था कि फ्रांस की कीर्ति और उस की कीर्ति साथ मिली हुई हैं; उस का विजय फ्रांस का विजय है और फ्रांस का विजय उस का विजय है। यह कहना असम्भव है कि इन दोनों में से उस के अन्दर प्रधानता किस की थी? बहुतों की सम्मति है कि उसे फ्रांस की अपेक्षा अपनेआप से अधिक प्रेम था। किन्तु मैं ऐसी सम्माति रखने वालों के कथन को सर्वथा निष्प्रमाण समझता हूं—और उन से अपने पक्षसाधन में युक्ति देने के लिये प्रार्थना करता हूं।

नैपोलियन सब कुछ फ्रांस की और अपनी कीर्ति के लिये करता था। शायद उस का कीर्ति का भाव ठीक न था—ऐसा कहा जा सक्ता है। इसी लिये, वह मनुष्यों और देशों को विजय के सामने कुछ न समझता था। मनुष्यों को वह केवल शतरंज के मोहरे समझता था—और अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये उन्हें जहां चाहे रखने में कोई अशुद्धि न मानता था। भूमि को वह केवल एक कपड़े के थान के

समान देखता था; उस के टुकड़े फाड़ २ कर जिन्हें चाहता था बांट देता था । ये सारे विजय तथा कीर्ति के साधन कहां तक आचार शास्त्र से अनुमोदित थे? यह प्रश्न और है—किन्तु नैपोलियन के ये उद्देश्य और ये साधन सदा ध्यान में रखने चाहियें ।

षष्ठ परिच्छेद ।

पेरिस में वैज्ञानिक जीवन ।

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः । भवभूति ।

विजय का सेहरा सिर पर रक्खे हुवे, और सहस्रों नरनारियों के अभिनन्दनों का हृदय से ग्रहण करते हुवे, नेपोलियन ७ दिसम्बर (१७९७) के दिन फ्रांस की राजधानी पेरिस में आ पहुंचा । लग भग एक वर्ष पूर्व, वह उस स्थान से इटली का सेनापति बन कर गया था । जब वह गया था तब में और अब में बड़े भेद हो गये थे । न केवल नैपोलियन ही बदल गया था, फ्रांस का शासन भी सर्वथा परिवर्तित होगया था । डायरेक्टरी, जिस की नैपोलियन ने ही रक्षा की थी, इस समय बहुत ही अलोकप्रिय हो रही थी । विशेषतया पांच सौ प्रतिनिधियों की सभा तो उन के बहुत ही विरुद्ध हो चुकी थी । नैपोलियन एक साधारण सेनापति से, फ्रांस का रक्षक और अनुपम योद्धा बन चुका था । जब इटली से लौट कर आया, तब वह फ्रेंच लोगों का पूज्यदेव बना हुवा था । प्रतिपदा के चन्द्रमा की तरह, हर एक मनुष्य की उंगली उस की ओर को ही उठती थी । जहां वह जाता था, सारे लोग उस के देखने के लिये उतावले हो जाते थे, और उस का बड़ा ही गौरवयुक्त स्वागत होता था । ये अभिनन्दन—ये स्वागत—एक छोटे दिल के मनुष्य के ज्ञान चक्षुओं के अन्धा करने के लिये पर्य्याप्त होते; किन्तु नैपोलियन मनुष्य-प्रकृति के ज्ञान में पूरा २ 'गौतम मुनि' था । वह इन सब लोकोत्सवों का मूल्य जानता था । उस के मित्र तथा निजमन्त्री **बुरीने** ने उस से कहा कि 'इन सब उत्सवों तथा सजावटों को देख कर तुम्हें अवश्य हर्ष होता होगा' नैपोलियन ने उत्तर दिया—'वाह ! यह अविचारशील जनसमूह, मेरे पीछे उस अवस्था में भी ऐसे ही लग जाय, जिस अवस्था में, मुझे शूली पर चढ़ाने के लिये भेजा जा रहा हो ।'

पेरिस को जाते समय उसने अपनी सेना को निम्नलिखित शब्दों से सम्बोधन किया था—

"सैनिको ! मैं कल तुम्हें छोडूंगा । तुम्हें छोड़ते हुवे भी, मुझे यह सन्तोष है—कि

मैं शीघ्र ही फिर तुम्हें मिलूंगा, और फिर तुम्हारे साथ साहसिक कार्य्यों में लगूंगा। सैनिको ! जब तुम आपस में जीते हुवे नरेशों और विजित जातियों के विषय में बातचीत किया करना, तो यह भी कहा करना कि 'आगामी दो बरसों में हम इससे भी अधिक विजय पायंगे' ।"

नैपोलियन ७ दिसम्बर को पेरिस में पहुंच गया । वहां उसका जो स्वागत हुआ, वह और स्थानों से कहीं बढ़कर था । पेरिस के जिस किसी भी बाज़ार में से नैपोलियन की बालसमान छोटी सी मूर्ति निकल जाती थी, वही बाज़ार स्वागत-सभा का रूप धारण कर लेता था । इस साधारण अभिनन्दन के अतिरिक्त, और पेरिस के बड़े २ आदमियों ने भी नैपोलियन के आने के उपलक्ष में बड़े उत्सव कराये। डायरेक्टरी इस समय बड़ी कठिनता में पड़ी । नैपोलियन के विजयों को देखकर ही वह ईर्ष्याग्नि से तप रही थी, पेरिस का अभिनन्दन देख कर तो वह जल उठी । अतः वह उसका विशेष स्वागत करने को तय्यार न थी । किन्तु, लोकमत बड़ा प्रबल गुरु है; वह न पढ़ने वाले विद्यार्थी के अन्दर भी अभीष्टपाठ डाल ही देता है । इस लिये, डायरेक्टरी के सभासदों को भी नैपोलियन के स्वागत के लिये सभा करनी पड़ी ।

एक बड़ा भारी पंडाल बनाया गया । उसमें एक ऊंचे और सुसज्जित आसन पर, डायरेक्टरी के पांचों सभ्य बड़ी शान के साथ विराजमान हुवे । चारों ओर दर्शकों की भीड़ थी । सारी सभा की दृष्टि द्वार की ओर लग रही थी । एक भी शब्द सारे पण्डाल में नहीं सुनाई देता था । द्वार में से एक छोटी सी और कृश, किन्तु शान्त और गम्भीर मूर्ति प्रविष्ट हुई । उसके साथ विदेशीयसचिव लंगड़ा **टेलीरेंड** था । ज्योंही वह मूर्ति दिखाई दी, त्योंही सारा मंडप तालियों से गूंज उठा। तब वे दोनों प्लेटफार्म पर पहुंचे । **टेलीरेंड** ने, ऊंचे शब्द से सब को सम्बोधन करके, नैपोलियन का परिचय दिया और साथ ही कहा कि 'पहले पहले, इस व्यक्ति के इतने अनुपम कारनामों को देखकर मैं डर गया था। मैंने सोचा था कि कहीं यह समानता के नाश का साधन न हो, किन्तु मुझे पता लगा कि मैं भूल पर था । व्यक्तिगत गौरव, यदि राष्ट्रीयसेवा में निस्स्वार्थभाव से प्रयुक्त किया जाय, तो निस्सन्देह राष्ट्र के लिये अमृत है ।'

इन प्रशंसा तथा प्रेम से भरे हुवे शब्दों का उत्तर देते हुवे, नैपोलियन ने कहा 'देश वासियो ! इस वाक्य के अन्तिम शब्द निःसंदेह एक भविष्यत् वक्ता की वाणी

के योग्य थे। फ्रांस के निवासियों को स्वाधीन होने के लिये, राजाओं से युद्ध करने पड़ते हैं। तर्क पर आश्रित राजसंस्था की स्थापना के लिये उन्हें हज़ारों वर्षों से गड़ी हुई वासनाओं का सामना करना पड़ता है....। वह सन्धि, जो तुमने अभी की है, प्रतिनिधिसत्तात्मकराज्य का प्रारम्भ समझना चाहिये।....मुझे तुम्हारे सामने, कैम्पोफ़ोर्मियो की सन्धि रखने का आदर प्राप्त हुवा है। शान्ति से स्वतन्त्रता, सम्पत्ति और कीर्ति की प्राप्ति होती है। ज्योंही फ्रांस को स्वतन्त्रता और विश्राम प्राप्त होंगे, त्योंही सारा योरप स्वतन्त्रतारूपी सुधा का पान करेगा।'

नैपोलियन के बोल चुकने पर, डायरेक्टरी के वक्ता **बारा** ने नैपोलियन को सम्बोधन करके कहा, 'प्रकृति ने बोनापार्ट के बनाने में अपनी सारी शक्तियों का व्यय कर दिया है। बोनापार्ट! तुम जावो, और जाति के मुखपर से अपमान का प्रक्षालन करके अपने उज्वल जीवन को और भी देदीप्यमान करो। लण्डन की केबिनट को भयाक्रान्त करके उसे दिखादो कि स्वतन्त्र जाति कितनी वीरता दिखा सक्ती है। र्हाईन और पो के जीतने वाली सेना को टेम्स नदी के विजय का यश प्राप्त कराओ'

इस वक्तृता के साथ यह उत्सव समाप्त हुवा। किन्तु, इस वक्तृता के अन्तिम वाक्यों के साथ एक नये युग का प्रारम्भ हुवा। यह नैपोलियन और इंग्लैण्ड की प्रतिद्वन्द्विता का युग था। इस समय से ही उस विरोधिभाव का प्रकाश हुवा, जिस का अन्त सेण्टहेलना में नैपोलियन के देहपात से प्रथम नहीं हुवा। इस समय इस विरोध का प्रकाश हुवा—किन्तु यह प्रतिद्वन्द्विभाव और विरोध था पुराना। इस विरोध का प्रारम्भ, दोनों देशों के इतिहासों के प्रारम्भ के साथ ही होजाता है। किन्तु नैपोलियन के नीचे यह एक विशेष तथा भयानक रूप धारण करने को था। जब अभी नैपोलियन, अस्ट्रिया की सेना का पीछा करता हुवा **वीना** की दीवारों की छाया में जा पहुंचा था, लण्डन की केबिनट के दिल में उसी समय एक श्यामलछाया का संचार हो गया था। उसी समय से, उनको नैपोलियन के छोटेसे देह में ब्रिटिश साम्राज्यरूपी हस्ती का अंकुश दिखाई देने लग गया था। यही विरोधिभाव फैलता हुवा, घोर रूप धारण कर गया। ईजिप्ट का विजय उस विरोधपूर्ण नाटक का प्रथम अङ्क था।

इन सभाओं और उत्सवों के पीछे, नैपोलियन ने अपने जीवन को बहुत ही सादा बना लिया।। सेनापति का वेश उतार कर, उसने एक अच्छे विद्याप्रेमी का

रूप धारण कर लिया । बड़ी २ विद्वत्सभाओं का वह सभासद् बन गया । विद्वानों की सभाओं में भी वह वैसा ही प्रसिद्ध हो गया, जैसा इटली की सेनाओं में था ।

किन्तु, उसे यह शान्त जीवन देर तक व्यतीत न करना मिला । एक विद्वान् के ढीले कपड़े उतार कर, उसे फिर शीघ्र ही बूट और सूट में अपने शरीर को कसना पड़ा । जब तक उसे इस शान्त अवस्था में रहना मिला, वह अपनी नैसर्गिक यत्नशीलता से विद्यासम्बन्धी विषयों में भाग लेता रहा । यद्यपि उसने विद्यालय में बड़ी उच्च शिक्षा न पाई थी, तथापि अपनी असाधारण प्रतिभा के प्रभाव से, वह सर्वथा अपठित विषयों पर भी बड़ी ही सरलता के साथ बातचीत कर सक्ता था । निस्सन्देह इस अवस्था में वह किन्हीं बड़े बनने की इच्छाओं से बहुत दूर था । वह यूं ही असम्बद्ध कामों में भाग लेना न चाहता था, और अपनी वक्तृता में प्रशंसित शान्ति से, सचमुच प्यार करता था ।

किन्तु डायरेक्टरी, राजनैतिक शासकों की सन्देहशीलता से प्रेरित हो कर कभी भी उसे पूरे विश्वास की दृष्टि से न देखती थी । वह उस पर पूरा ध्यान रखती थी, गुप्तचर उस को चारों ओर से घेरे रहते थे और उस की एक २ बात की खबर डायरेक्टरी के पास भेजते रहते थे । नैपोलियन भी यह सब कुछ जानता था । वह सब कुछ जानता हुवा भी, न जानने का सा व्यवहार करता था । केवल इतना ध्यान रखता था कि वह डायरेक्टरी के कार्य्यों में सम्मिलित न हो और उस के साथ एकीभूत न समझा जाय । कहते हैं कि डायरेक्टरी ने एक वार अपने पुलिस विभाग के अध्यक्ष **फूशा** (Fouche) को नैपोलियन के गुप्तघात की आज्ञा दी थी । धूर्त **फूशा** ने उत्तर दिया कि 'नैपोलियन इस अवस्था में तुम्हारे द्वारा वध्य नहीं हो सकता, और न ही **फूशा** नैपोलियन का घातक हो सकता है' । चतुर पुलिस का अध्यक्ष, डायरेक्टरी की अलोकप्रियता और नैपोलियन की लोकप्रियता में अच्छी प्रकार से अन्तर कर सकता था ।

अन्त को डायरेक्टरी ने, नैपोलियन को पेरिस से दूर करने का यही साधन समझा कि उसे सेना के साथ किसी ऐसे स्थान में भेजा जाय, जहां से यातो वह जीता न लौटे—या उन के सब से बड़े शत्रु को मार कर आय । उन्हों ने उसे इङ्गलैण्ड के द्वीपों पर प्रहार करने के लिये निदेश किया । नैपोलियन राष्ट्रीय

रक्षण का कार्य्य करने के लिये तय्यार ही था और उसे यह भी डर था कि कहीं उस का ऐसा एकान्तवास उसे लोगों की दृष्टि में सर्वथा भुला ही न दे। अपने एक मित्र से उसने ये विचार प्रकट भी किये थे। वह समझता था—और उस के बाल्य के संस्कार तथा शिक्षा उसे समझने के लिये बाधित करते थे—कि सांग्रामिक विजय ही कीर्ति का रास्ता है। उस रास्ते में चलने के लिये, वह अपने आप को सर्वथा तय्यार पाता था, अतः वह झटपट फिर से पुस्तक के स्थान में तेग पकड़ने के लिये उद्यत हो गया।

पहले उसे डायरेक्टरी ने सीधा इंग्लैण्ड पर धावा करने के लिये आज्ञा दी। किन्तु वह मूर्ख नहीं था। वह इंग्लैण्ड की अवस्था से ऐसा अज्ञ न था जैसे डायरेक्टरी के आरामकुर्सियों पर लम्बी तानने वाले वकील थे। उस ने इंग्लैण्ड पर सीधा आक्रमण करने की कठिनाइयें उन्हें खूब अच्छी तरह समझा दीं। इंग्लैण्ड का सामुद्रिक बल, उस के निवासियों की देशभक्ति तथा साहस उसे इस कार्य्य के करने से रोकते थे। उस ने डायरेक्टरी को यह बात समझाते हुवे इंग्लैण्ड के पराजित करने का जो नया तथा स्वमूलक उपाय बताया, वह सचमुच उस की विचित्र बुद्धि का परिचायक था। उस ने उन्हें बताया कि यदि इंग्लैण्ड को जीतना है, तो उस पर एशिया में आक्रमण करना चाहिये। उस का पूरा प्रस्ताव यह था कि मेडिटेरेनियन सागर के रास्ते माल्टा मिश्र सीरिया आदि को जीतकर, उसी रास्ते से अंग्रेज़ी भारतवर्ष पर अधिकार जमाया जाय, तथा वहां से अंग्रेज़ों को खदेड़ दिया जाय। उस की सम्मति में ऐसा करने से न केवल अंग्रेज़ों का साम्राज्य ही मलियामेट हो जाता, उस का सामुद्रिक महत्त्व भी विलुप्त हो जाता। नैपोलियन का यह महत्त्वयुक्त प्रस्ताव डायरेक्टरी की समझ में भी आगया। उस ने नैपोलियन को मिश्र देश (ईजिप्ट) की ओर यात्रा करने की आज्ञा दी।

केवल इंग्लैण्ड के मद पर चोट लगाना ही नैपोलियन का उद्देश्य न था। पश्चिम में उस को अपने वीर्य्य तथा शौर्य्य के अनुकूल साम्राज्य स्थापित होता नज़र न आता था। सिकन्दर के पूर्वीयविजय भी उस की आंखों के सामने फिर रहे थे। यह विचार भी उस के मन में काम कर रहा था कि यदि वह अफ्रीका तथा एशिया के असभ्य देशों को सभ्य बना देगा, यदि वह वहां के अत्याचारी राज्यों के स्थान में उदार राज्य स्थापित कर देगा, तो वह मनुष्यजाति के उद्धारकों में से एक समझा जायगा। इन सब विचारों को मन में रखता हुआ नैपोलियन मिश्र के विजय के लिये सन्नद्ध हुआ।

सप्तम परिच्छेद ।

मिस्रदेश में पराक्रम ।

हेतोः कुतोऽप्यसदृशाः सुजनाः गरीयः, कार्य्यांन्निसर्गगुरवः स्फुटमारभन्ते । रत्नाकर ।

चारों ओर किंवदन्ती फैल गई कि लोदी और आर्कोला का विजेता कहीं पर आक्रमण करने वाला—उस की युद्धध्वजा किसी ओर को प्रस्थान करने वाली है। इस के सिवाय और किसी को कुछ पता न था । कोई कहता था कि 'छोटा सेनापति' इंग्लैण्ड के राजा की गद्दी छीनने चला है; कोई कहता था कि यह नया सिकन्दर भारतवर्ष को अपने चरणों पर लिटाने चला है । सारांश यह कि जितने मुंह उतनी बातें सुनाई देने लगीं । नैपोलियन तथा डायरेक्टरी के सिवाय और कोई न जानता था कि वह मिश्र के विजय के लिये सन्नद्ध हो रहा है । नैपोलियन के अधीन सेनापति भी अपने अध्यक्ष के उद्देश्य से अनभिज्ञ थे ।

नैपोलियन अपनी नैसर्गिक चतुरता से इस नये कार्य्य के लिये तय्यार होने लगा । पेरिस के सारे पुस्तकालयों में उसे मिश्र के विषय में जितनी पुस्तकें मिलीं, उन सब को उस ने पढ़ डाला । उधर बन्दरगाह पर बेड़ा तय्यार होने लगा । इधर इटली की सेना को फिर से उस ने नियमबद्ध करना शुरू किया । इस वार सेना में चालीस सहस्र सैनिकों के अतिरिक्त, बहुत से भूगोलादिवेत्ता विद्वान् भी लिये गये । उन का उद्देश्य मिश्र के भौगोलिक तत्त्वों का पता लगाना था । **टउलन** में सारा बेड़ा सन्नद्ध किया गया । निःसन्देह जिस साहसिक कार्य्य के करने के लिये नैपो-लियन तय्यार हुआ था, वह बहुत ही असाधारण था । इंग्लैण्ड का बेड़ा भूखे चीते की तरह समुद्र में घूम रहा था। उस समय मिश्र में उतरना, फिर वहां पर अपनी थोड़ीसी सेना को लेकर रुधिर के पिपासु ममलूकों को पराजित करना--यह कोई हंसी ठट्ठे की बात न थी । किन्तु नैपोलियन का साहसिक मन इन ध्यानों में न फंसता था, वह हर-एक साहस को सम्भव समझता था । असम्भव शब्द उस की सम्मति में फ्रेंच न था।

१९ मई (१७९८) का दिन आ पहुंचा। वह सेना की तय्यारी का दिन था। नैपोलियन अपने थोड़े से मुख्य २ सेनाध्यक्षों के साथ टउलन पहुंचा । वहां सारी

सेना को इकट्ठा करके, उस ने प्रोत्साहक शब्दों से उसे उत्तेजित किया । पुराने विजयों का स्मरण कराते हुए, और रोम की सेना का उदाहरण सामने रखते हुए, उस ने देश की समृद्धि, मनुष्य जाति की प्रसन्नता और अपनी नामवरी के लिये लड़ने की प्रेरणा न की। यह बात यहां पर ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि उस ने अपनी सेना को स्वतन्त्रता, समानता, या भ्रातृता के नाम पर उत्तेजित नहीं किया, तथापि उस ने किन्हीं बहुत नीच भावों का लोभ सेना को नहीं दिलाया । किन्तु इंग्लैण्ड के पत्रों ने, जो नैपोलियन को अभी से अपना प्राणान्त शत्रु समझने लग गये थे , इस वक्तृता की एक विचित्र ही रिपोर्ट प्रकाशित की, जिस में नैपो-लियन के मुख से बड़ी ही नीच बातें कहाई गईं। यदि किसी ने छापा कि नैपोलियन ने सेना को लूट मार का लोभ दिया था, तो किसी ने कहा कि उस ने उन्हें ज़मीन ख़रीद देने के नाम पर उत्साहित किया था, किन्तु उस की वक्तृता में वस्तुतः इन चीज़ों का गन्ध भी न था ।

अस्तु । १९ मई के दिन नैपोलियन का ज़बर्दस्त बेड़ा पोतस्थान से बाहिर हुआ । वह बड़ा भारी गर्जता और चमकता हुआ मेघ समुद्ररूपी वायुमण्डल में विहार करने लगा । समुद्र में भी नैपोलियन वैसा ही कार्य्यव्यग्र था, जैसा वह स्थल पर होता था । बेड़े के सारे निवासियों का समय, कार्य्यों में बंटा हुआ था । सारी सेना नियत समय पर शस्त्र चलाने का अभ्यास करती, समय पर भोजन तथा विश्रामादि करती थी । उस का और उस के अनुयायियों का समय इसी प्रकार बंधा हुआ था, जैसे ऋतुओं का समय वर्ष भर में बंधा रहता है । वह स्वयं भी, सारे के सारे बेड़े की देख भाल के अतिरिक्त, बातचीत करने और पढ़ने लिखने में अपना समय बिताता था । उस का मन मोम का बना हुआ था—वह उसे जिस समय जिस तरह चाहता था, मोड़ लेता था । सेना की स्थिति का प्रबन्ध करते २ क्षणभर में यदि एक भूगोल के पण्डित ने आकर कोई बात छेड़ दी, तो उस में भी नैपोलियन किसी से पीछे न रहता था । कई लोग उस को सर्वज्ञ समझते थे, क्योंकि वह हर एक विषय में, अपनी असाधारण प्रतिभा के बल से, एकसी ही सुलभता से बातचीत कर सक्ता था ।

' ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति ' इस न्याय के अनुसार रास्ते में जाते २ उस ने **माल्टाद्वीप** को भी अपने वश में करके, फिर आगे प्रस्थान किया । रास्ते में कभी २

बेड़े पर से कोई मनुष्य समुद्र में गिर पड़ता था । यह सामुद्रिकपोतों में एक साधारण बात है । किन्तु नैपोलियन के लिये यह एक साधारण बात न थी । वह एक भी प्राणी के निरुपयोगी प्राणहरण को न सह सक्ता था । जहां किसी के गिरने की आवाज़ आई, वहीं 'छोटे सेनापति' के कान खड़े हो जाते थे । सारा बेड़ा खड़ा किया जाता था, और पानी में डूबते हुए व्यक्ति के बचाने का यत्न किया जाता था । जो कोई तैराक डूबते हुए को पकड़ लाता, उस की पांचों उंगलियें घी में थीं; नैपोलियन उसे खूब इनाम दिलवाता था । एक रात बड़ा मज़ाक हुआ । किसी भोज्य पदार्थ का एक टुकड़ा जहाज़ पर से नीचे गिर पड़ा । सब जहाज़ खड़े कर दिये गये । तैराक चारों ओर मूंह २ कर घूमने लगे । अन्त में वास्तविक बात का पता लगा । नैपोलियन ने तैराकों को पहले से भी अधिक इनाम दिया, क्यों कि उस की सम्मति में यदि वह मनुष्य ही गिरा होता तब भी वे ऐसा ही यत्न करते । इनाम परिश्रम तथा सद्भाव का था—न कि निकाली हुई वस्तु का ।

प्रथम जुलाई (१७९८) के सायंकाल के समय, वह शूरों से अधिष्ठित बेड़ा मिश्र की बन्दरगाह **अलेग्ज़ाण्ड्रिया** के कुछ दूर पर आ पहुंचा । वहां आते ही नैपोलियन को पता लगा कि एक दिन पूर्व वहां पर इंग्लैण्ड का बेड़ा उस की तलाश में आया था, और अब फिर मुड़ गया है । वस्तुतः बात यह थी कि जब से नैपोलियन टउलन से चला था, अंग्रेज़ों का बेड़ा तभी से खूनी चर की तरह उस की ढूंढ में फिर रहा था । ढूंढते २ वह नैपोलियन से एक दिन पहिले अलेग्ज़ेण्ड्रिया में आया और उसे वहां न पा कर फिर लौट गया । नैपोलियन की समुद्रयात्रा से इंग्लिश केबिनट के दिल दहल गये थे और दिन रात उन्हें सिवाय 'नैपोलियन' के और कुछ न सूझता था ।

नैपोलियन सायंकाल के समय वहां पहुंचा । रात भर सेनायें किनारे पर उतरती रहीं । प्रातःकाल होते ही सारी सेना सन्नद्ध होगई । **अलेग्ज़ेण्ड्रिया** नगर उसी दिन काबू कर लिया गया । उसे काबू में कर के नैपोलियन ने मिश्र वासियों के नाम एक घोषणा निकाली । उस में उस ने उन्हें बताया कि "मैं तुम्हारे धर्म को नष्ट करने नहीं आया हूं । मैं खुदा की, हज़रतमुहम्मद की, और कुरानशरीफ़ की उन लोगों से अधिक इज़्ज़त करता हूं जो तुम्हारे ऊपर शासन करते हैं । तुम्हारे शासक ममलूक लोग हैं । वे तुमपर अत्याचार करते हैं, मैं तुम्हें उन अत्याचारों से छुड़ाने आया हूं । जो मेरे साथ रहेगा उसे सब सुख प्राप्त होंगे, किन्तु जो मेरा विरोध करेगा

उस का चिन्ह भी इस भूतल पर न रहेगा ।' यह घोषणापत्र मिश्र के निवासियों को, नैपोलियन के झण्डे के तले लाने के लिये पर्याप्त था । बहुधा कहा जाता है कि नैपोलिलन ने यहां पर अज्ञ लोगों को मोहित करने के लिये केवल आडम्बर मात्र रचा था क्योंकि नैपोलियन क्रिश्चियन था, मुसलमान नहीं । किन्तु वस्तुतः बात यह थी कि नैपोलियन ने कभी भी अपने आप को कट्टर ईसाई नहीं कहा । वह ईश्वर में विश्वास रखता था, तथा सभी बड़े धर्म प्रचारकों में उस की श्रद्धा थी। वह धर्म के कई मौलिक सत्यों से प्रेम रखता था—किसी विशेष मत से नहीं । निःसन्देह वह मुहम्मदी धर्म को नष्ट करने वाला न था, तब उस का यह घोषणापत्र छल रूप नहीं हो सक्ता । हां, इस में सन्देह नहीं कि यद्यपि यह पत्र सत्य था, तथापि नैपोलियन इसे खूब अच्छे मौके पर काम लाया । इस लिये, नैपोलियन के घोषणापत्रपर यह दोष दिया जासक्ता है कि उस ने धर्म जैसी पवित्र वस्तु को राजनैतिक विजय का साधन बनाया ।

छै दिन तक नैपोलियन **अलेग्ज़ेण्ड्रिया** में रहा, फिर तीन सहस्र सैनिकों को वहां छोड़ कर उस ने मिश्र की राजधानी **केरो** के विजय के लिये प्रस्थान किया। जाते हुवे उस ने अपने सामुद्रिक सेनापति ब्रयूईस (Brueys) को आज्ञा दी कि वह अपने बेड़े को उस अरक्षित अवस्था से—जिस में वह उस समय पड़ा हुवा था—निकालकर, बन्दर के मध्य में ले आवे, ताकि उस पर आक्रमण करने का किसी शत्रु को साहस न हो सके। नैपोलियन की शेष सेना का प्रस्थान आरम्भ हुवा । जिस रास्ते नैपोलियन को जाना था, वह सारा का सारा रेतीले मैदानों से भरा पड़ा था । रास्ते में पानी और हरियावल का कहीं नाम न था। पांच दिन और पांच रात तक सारी सेना को इसी मरुस्थल में से गुज़रते रहना पड़ा । इन दिनों में, सेना के धैर्य की तथा नैपोलियन के प्रति प्रेम की बड़ी गहरी परीक्षा होगई । इन दिनों ने सिद्ध कर दिया कि सेना के साथ नैपोलियन किन्हीं कच्चे बन्धनों से नहीं जुड़ाहुवा, किन्तु वे बन्धन जो उसे अपनी सेना के साथ जोड़ते हैं फ़ौलाद और वज्र के बन्धनों से कहीं दृढ़ हैं । नैपोलियन भी इन दिनों में अपने घोड़े की पीठ पर से उतर कर छोटे २ कदम रखता हुवा पैदल ही चलता था । नीचे रेत में ही सो रहता था, और सैनिकों का सा ही सादा भोजन करता था । इन बातों ने, उन के बन्धन को और भी दृढ़ कर दिया । इस यात्रा में ममलूक सिपाहियों ने भी फ्रेंच सेना को खूब तंग किया । कभी रात को, कभी दिन को, वे इधर उधर से आकर छापा मार देते और दो चार को मारकर भाग जाते ।

अन्त को इस विपद् का भी अन्त हुवा। छै दिन की निरन्तर यात्रा के अनन्तर, सारी फ्रांसीसी सेना **कैरो** नगर के समीप आगई। नील दरिया के पूर्वीय तटपर कैरो नगर बसा हुवा है, उस के पश्चिमीय तट पर नैपोलियन अपनी सेना लेकर आपहुंचा। वहां मैदान में अपनी सेनासहित खड़े हो कर, जब उस ने चारों ओर देखा, तो उसे मिश्र के बहुत पुराने पिरामिड दिखाई दिये। उन को देखते ही उस के कवितुल्य कल्पनापूर्ण मन में एक दम बड़ाही तेजस्वी भाव उत्पन्न हो आया, और अपनी सेना के सामने से वह यह कहता हुवा गुज़रगया कि 'सैनिको! उन दूरवर्ती पिरोमिडों पर से चालीस शताब्दियें तुम्हारे अद्भुत कार्य्यों को निहार रही हैं।' इन शब्दों ने नैपोलियन की सेना को अलक्तरसितसा कर दिया—और वे अपनी स्वाभाविक वीरता को प्राप्त हो गये। **मुरादबे**—जो ममलूकों का सरदार था—अपने दसहज़ार घुड़सवारों के सामने संसार की किसी भी शक्ति को अधिक न समझता था। दस सहस्र घुड़सवारों की सहायतार्थ २९ सहस्र पैदल सेना थी। इस शक्ति के साथ **मुरादबे** ने नैपोलियन पर आक्रमण किया। उस के पास जितनी ब्रिटिश सरकार की भेजी हुवी तोपें थीं, उन्हें उस ने लकड़ी के आधारों पर नगर के सामने ऐसे गाड़ रक्खा था कि वे मुड़ न सक्ती थीं। नैपोलियन ने दूरसे ही यह ताड़ लिया। अतः सामने का प्रहार छोड़ कर, उसने एक पार्श्व से प्रहार किया। यह देख कर **मुरादबे** को और भी जोश आया। अपने घुड़सवारों को आक्रमण करनें की आज्ञा देते हुवे उसने कहा कि इन कुत्तों को घास की तरह काट दो। निःसन्देह ममलूक घुड़सवारों की बराबरी का और घुड़सवार संसार में मिलना कठिन था। युद्ध हो चुकने पर नैपोलियन ने कहा था कि "यदि मुझे फ्रेंच पैदल सेना के साथ ममलूक घुड़सवार मिल जांय तो मैं सारी पृथ्वी का राजा हो सक्ता हूं।'

ममलूक घुड़सवारों ने प्रहार किया, किन्तु फ्रांसीसी सेना दीवार की तरह खड़ी रही। नैपोलियन के तोपखाने ने भी अपना मुंह खोल दिया। बस फिर क्या था? एक घंटे से भी थोड़ी देर में आधे से अधिक घुड़सवार भुनगये—जो शेष थे वे भाग गये। पैदल सेना भी शहर को छोड़ कर सात नौ ग्यारह हुवी। सेना का एक बड़ा भाग दरिया में डूबगया। नैपोलियन की विजयी सेना **कैरो** नगर की, और साथ ही मिश्र की स्वामिनी हो गई। इस युद्ध का नाम, 'पिरामिडों का युद्ध' रक्खा गया। यह युद्ध नैपोलियन के बहुत प्रसिद्ध तथा भाग्यरक्षक युद्धों में से एक था।

इस युद्ध ने एशिया और अफ्रीका में नैपोलियन के नाम की धाक बांधदी।

पिरामिडों का युद्ध

सैनिको ! उन दूरवर्ती पिरामिडों पर से चालीस शताब्दियें तुम्हारे अद्भुत कार्य्यों को निहार रही हैं

पृ० ७०

उस का नाम 'आग का सुल्तान' पड़ गया चारों ओर यह विजयी नाम प्रसिद्ध हो गया। किन्तु विजय में उदारता दिखाना ही सज्जनता का चिन्ह है। 'ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ' यही सज्जनता का लक्षण है। 'विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषान्नचेतांसिसत एव धीराः।' वही धीर हैं, जिन के मन विकार का कारण प्राप्त होने पर भी विकृत नहीं होते । कारण न प्राप्त हुवे ही जो अपने मन को विकृत रखते हैं, वे तो मनुष्य नाम से कहे जाने योग्य भी नहीं । नैपोलियन ने इस समय क्षमा तथा दया का भाव दिखा कर अपनी सत्पुरुषता तथा महानुभवता दिखाई । मुरादबे की स्त्री **कैरो** में थी । उस का राजपत्नी समान आदर किया । सारे नगर में स्त्रीजाति को सुरक्षित करने की आज्ञा देदी, और साथ ही पुराने अपराधियों को क्षमा कर दी ।

तब नैपोलियन ने मिश्र को सभ्य बनाना शुरू किया । न्यायविभाग का संशोधन उस ने सब से प्रथम किया । रोगियों के लिये औषधालय बनाये। स्थान २ में सांग्रामिक उपनिवेश स्थापित किये । पुरानी इमारतों और मस्जिदों की रक्षा में विशेष ध्यान दिया । अरब लोग नैपोलियन की इस दयापूर्ण तथा सौम्य चेष्टा से आश्चर्यित थे । नैपोलियन की न्यायप्रियता का एक बड़ा अच्छा उदाहरण प्रसिद्ध है। एक दिन वह कई एक शेखों के साथ बात चीत कररहा था, जब उसे सूचना मिली कि कई लुटेरे एक किसान को मार गये हैं। नैपोलियन ने आज्ञा दी कि इसी समय उन लुटेरों को पकड़ लिया जावे । शेख़ लोग, जिन्हें एक किसान के साथ न्याय करना विचित्र प्रतीत होता था, बोल उठे—'क्या वह तेरा सम्बन्धी था जो उस की मृत्यु पर इतना नाराज़ हुवा है' नैपोलियन ने शान्ति से उत्तर दिया—

'वह मेरा सम्बन्धी से भी अधिक था—परमात्माने उस की रक्षाका भार मुझे सौंपा था' आश्चर्यित हुवे हुवे शेख़ ने कहा कि 'अहो! तू तो ख़ुदा के भेजे हुवे की तरह बोलता है ।'

इसी सभ्य करने के पवित्र कार्य में लगे हुवे नैपोलियन ने सुना कि उस का बेड़ा, जो अलेग्ज़ेण्ड्रिया में विश्राम कर रहा था, विध्वस्त हो गया। **लार्डनैल्सिन** ब्रिटिश बेड़े को लिये फ्रांसीसी बेड़े को ढूंढता हुवा फिर रहा था, अन्त को उसने उसे पा लिया। अभी तक सेनापति ब्रूयूइस ने नैपोलियन के कथनानुसार सुरक्षित स्थान का आश्रय न लिया था—अतः नेल्सन ने शीघ्र ही उसके सारे बेड़े को नष्ट कर दिया। **यह समाचार नैपोलियन के लिये बड़ा ही भयानक था, क्योंकि इस बेड़े के ध्वंस से नैपोलियन एक तरह से मिश्र में कैदी हो गया। अब वह किसी तरह भी बाहिर न**

निकल सक्ता था । किन्तु नैपोलियन ने इस समाचार को शान्ति से सुना, और सेना को भी निराश होने से रोकने का यत्न करता रहा ।

इस घटना के कुछ दिनों बाद **मुरादबे** ने, जो कैरो से भागा हुवा था, एक बड़ी भारी गुप्तमन्त्रणा की । कई ममलूक सैनिक इस मन्त्रणा में संमिलित थे । एक दिन निश्चित किया गया, जिस दिन सारे कैरो नगर को घेर कर नैपोलियन को सेना सहित मार दिया जाय । कुछ देर के लिये यह मन्त्रणा कृतकृत्य भी हुई । कई फ्रेंच सिपाही अचानक मारे गये । किन्तु नैपोलियन इन तुच्छ मन्त्रणाओं के काबू में आने वाला आदमी नहीं था । उसने बड़ी ही कठोरता से अपराधियों को दण्ड दिया। और इस समय कठोरता आवश्यक भी थी । वह विजातीय निवासियों के अन्दर पड़ा हुवा था, यदि वह यहां पर कठोरता से इन विद्रोहों को न दबाता तो वह और उसके वीर सैनिकों में से एक भी जीता हुवा न बचता ।

नैपोलियन ने इसी समय सुना कि कुछ सेना इकट्ठी होकर **सीरिया** की ओर से उस पर आक्रमण कर रही है। उस ने यह सुनते ही निश्चय किया कि चाहे कुछ ही हो सीरिया को भी अवश्य विजित देशों में मिला लेना चाहिये। बस फिर क्या था ! सारी सेना को तय्यार करके उसने सीरिया के विजय के लिये प्रस्थान किया । जिस शत्रु के साथ युद्ध करने के लिये नैपोलियन ने प्रस्थान किया था, वह तुर्क लोगों की खूंख्वार सेना थी । उस सेना की सहायता के लिये इङ्गलैण्ड धड़ाधड़ अस्त्रशस्त्र और सिपाही भेज रहा था । रूस के जहाज़ भी अपनी सेनाओं को लिये इधर उधर घूम रहे थे । शत्रुओं की पचास साठ हज़ार सेना का एक विदेश में सामना करने के लिये नैपोलियन कोई पन्द्रह हज़ार सेना लेकर रवाना हुवा ।

शत्रु की सेना को उसने **एकर** नगर के समीपस्थ मैदान में एक बड़ी भारी शिकस्त दी, और उस नगर को चारों ओर से घेर लिया । नगर के अन्दर इङ्गलैण्ड का सेनापति सर सिडने स्मिथ अपनी सभ्य तथा सज्ज सेना को लिये पड़ा हुवा था । नैपोलियन का विचार था कि वह बहुत दिनों तक इसे घेर कर अपने वश में करले। दो मास तक वह निरन्तर घेरा डाले पड़ा रहा। किन्तु, उसके पश्चात् भी स्थान काबू में न आया । इतने पर ही बस न थी । उसी समय अङ्ग्रेज़ों के जहाज़, तुर्कों की सेनाओं को नैपोलियन के साथ लड़ने के लिये निरन्तर सीरिया में उतार रहे थे । इन सब कठिनाइयों को विचार कर, नैपोलियन ने घेरे को छोड़ कर मिश्र को लौटने का ही विचार किया । तदनुसार २० मई के दिन नैपोलियन, **एकर** को अपने भाग्यों पर

छोड़ कर **कैरो** की ओर को लौट पड़ा। तीन महीने की यात्रा के पश्चात् फिर वह अपनी राजधानी से प्रविष्ट हुवा।

इस समय नैपोलियन बड़ी ही कठिन अवस्था में पड़ा हुवा था। उसकी सेना में प्लेग फैलजाने से सिपाहियों की संख्या कम हो रही थी। उधर युद्ध में भी सैनिकोंकी एक बड़ी संख्या गिर चुकी थी। फ्रांस का बेड़ा बिल्कुल तबाह हो चुका था—इस लिये सहायता की भी कोई आशा न थी। इधर तो यह हालत थी, और उधर ब्रिटिश जहाज़ तुर्क सेनाओं को धड़ाधड़ **आबूकिर** की खाड़ी में उतार रहे थे। इस समय इङ्गलैण्ड नैपोलियन के खून का प्यासा हो चुका था—वह नैपोलियन का पराजय करने पर तुला हुवा था। शायद उसे नैपोलियन के विजयी होने पर भारतवर्ष के साम्राज्य खुसने का डर था; शायद वह फ्रांसकी बढ़ती हुई शक्ति को अपनी व्यापिनी शक्ति के लिये घातक समझता था। चाहे कुछही हो—किन्तु वह नैपोलियन के विजयक्रम को बन्द करने पर तुला हुवा था: और मेरी सम्मति में उसका विरोध बहुत अंशों में ठीक तथा आवश्यक था। किसी भी रोक से न रोका गया नैपोलियन न जाने क्या करता? क्या सारा संसार भी उसकी महत्त्वाकांक्षा के सामने तुच्छ न जँचता?

इधर तो इङ्गलैण्ड का ऐसा विरोध और यत्न, उधर फ्रांस में भी बुरा हाल हो रहा था। घर में फूट से और बाहिर पराजयों से फ्रांस की पुरानी कीर्ति धूल में मिल रही थी। इस से भी नैपोलियन बहुत चिन्तित था। इन दोनों कारणों से उसने फ्रांस को लौट जाने का विचार किया, किन्तु लौटना भी कोई सुलभ कार्य्य न था। **आबूकिर** की खाड़ीमें १८ सहस्र तुर्क सेना अपने डेरे डाले पड़ी थी और अधिक सेनाओं के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। ऐसी भयानकविपत्तिरूपी रात में, नैपोलियन के मन में अकस्मात् साहसरूपी चन्द्रमा का उदय हो आया। यह महापुरुषों का एक चिन्ह है। जब चारों ओर निराशा रूपी मेघ घिर जाता है—तब उनके मनों में उत्साहवायु का एक झोंका उठता है जो निराशा के सब मेघों को तितर बितर कर देता है। नैपोलियन के मनमें भी अब ऐसा ही एक विचार उदित हो आया। उसने जितनी जल्दी हो सके, आबूकिर में पड़ी हुवी सेना को काट डालने का निश्चय किया। तत्क्षण सारी सेना **कैरो** को छोड़ कर **आबूकिर** की ओर को प्रस्थित हुई।

मरुस्थल के कठोर रास्ते में दिन और रात चलती हुई नैपोलियन की अनथक

सेना, सात दिन में **आबूकिर** पहुंच गई। नैपोलियन की थकी हुई सेना केवल आठ हज़ार थी, और सामने पड़ी हुई शत्रु की ताज़ी सेना १८ सहस्र से कम न थी, और तो भी, यह अमानुषिकशक्तिसम्पन्न मनुष्य डरना न जानता था। २९ जुलाई के प्रातः काल, जब अभी तुर्कलोग अपने विस्तरों पर लेट लगा रहे थे, नैपोलियन ने एकाएक आक्रमण बोल दिया। तुर्क लोगों को सज्जित होने के लिये भी पर्य्याप्त समय न मिला था कि नैपोलियन की घुड़सवार सेना का अध्यक्ष मूरा अपने अनिवार्य्य सवारों के साथ उनके ऊपर जा पड़ा। मूरा नैपोलियन की घुड़सवार सेना का सब से बड़ा अध्यक्ष था। जब वह जवान अपनी जंगी फौज के साथ वार करता था, तब शत्रु को सारी चौकड़ी भूल जाती थी। उसकी सेनाके प्रहार को रोकना कोई हंसी ठट्ठा न था। जब वह अपने दीर्घकाय घोड़े पर सवार होकर दांये हाथ से तलवार को हिलाता और आक्रमण कर्ताओं के आगे हो जाता था, तब उसकी सेना में राक्षसीलीला का प्रवेश हो जाता था। इतिहास ने कोई भी मूरा का ऐसा धावा नहीं लिखा, जो वृथा गया हो। ऐसा विकटवीर मूरा जब तुर्कों पर जा पड़ा तब फिर उसकी शरण कौन न हो सक्ता था? थोड़े ही समय में वह अट्ठारह हज़ार वीरों का सैन्य शून्यशेष गया। उनके शरीरों के रुधिर से सारी खाड़ी लाल हो गई और उसी लाल खाड़ी के बीच में, नैपोलियन अपने साथ कोई ९ सौ सिपाही लेकर एक नौका में फ्रांस जाने के लिये सवार हुवा।

आबूकिर के युद्ध के अनन्तर, नैपोलियन ने अपनी और अपनी सेना की स्थिति पर वहुत विचार किया। उसके पास कोई जहाज़ी शक्ति न थी—जिससे वह मिश्र से फ्रांस तक पहुंच सक्ता। ३० सहस्र सेना को पार कैसे उतारा जाय?। यह प्रश्न था, जिस पर नैपोलियन को विचार करना था। फ्रांस में डायरेक्टरी स्वयं ही डूब रही थी—वह नैपोलियन की सेना की सहायतार्थ क्या कर सक्ती थी? इस के अतिरिक्त डायरेकृरी नैपोलियन से ईर्ष्या रखती थी। उस ने उसे ईजिप्ट भेजा ही मरने के लिये था। तब वह विपत्ति में उसकी सहायता क्यों करती? इन सब बातों का विचार करके, नैपोलियन ने जितना शीघ्र हो सके स्वयं फ्रांस को लौट कर सेना के फ्रांस तक पहुंचाने के प्रबन्ध करने का निश्चय किया। इस परोपकारभाव के अतिरिक्त एक स्वार्थ का भाव भी था, जो नैपोलियन को शीघ्र ही फ्रांस तक जाने के लिये प्रेरित कर रहा था। वह जानता था कि फ्रांस में डायरेक्टरी की सत्ता निर्बल हो रही है। इस लिये उसे यह निश्चय था कि थोड़े ही दिनों में फिर शासन संस्था में

परिवर्तन आयगा । तब ऐसे परिवर्तन के समय वहां उपस्थित होना वह आवश्यक समझता था । वह अपनी शक्ति और लोकप्रियता से परिचित था, अतः इस अमूल्य अवसर को हाथ से निकलने न देना चाहता था ।

अपने इस निश्चय का विशेष परिचय उसने कुछ एक विश्वासपात्रों को छोड़ कर और किसी को न दिया । २२ अगस्त के दिन १० बजे के समीप वह अपने ५०० साथियों सहित नौका में सवार होकर फ्रांस के लिये रवाना हुआ । जीवन भर में नैपोलियन ने जितने साहासिक कार्य्य किये, उनमें से इस कार्य्य का पद बहुत ही ऊंचा है । जिस समय नैपोलियन अपने इस क्षुद्रपोत में समुद्र तल पर बैठा, उस समय **लार्ड नैल्सन** अपने अदम्य बेड़े को लिये मेडिटरेनियन सागर की रक्षार्थ घूम रहा था । नैपोलियन भी इस रक्षा के यत्न से अनभिज्ञ न था । किन्तु नैपोलियन जिस साहस के आश्रय पर नैपोलियन बना, वह जब तक उसके पास था तब तक वह पृथ्वी और आकाश में किसी भी शक्ति से न डरता था । नैपोलियन की प्रतिभा, इस छोटे से बेड़े को सुरक्षित दशा में फ्रांस के पोतस्थान पर ले गई । नैल्सन हक्का बक्का सा देखता ही रह गया ।

इस प्रकार से नैपोलियन की यह असाधारण तथा स्मरणीय विजययात्रा समाप्त हुई । इस यात्रा के सम्बन्ध की दो ऐसी बातें हैं जिन्हें हम इस परिच्छेद को समाप्त करने से प्रथम लिख देना आवश्यक समझते हैं । जिस समय वह सीरिया के विजय के लिये जा रहा था, उसने शत्रु के दो सहस्र सिपाहियों को घेर लिया । सिपाहियों ने शस्त्र रख दिये । नैपोलियन ने विजयी के योग्य उदारता दिखाते हुवे उन्हें स्वतन्त्रतया जाने की आज्ञा देदी । किन्तु वे सिपाही, अपनी प्रतिज्ञा में बद्ध होकर रहने की जगह फिर अपनी सेना में जा मिले । **जाफ्फ़ा** नगर को जब नैपोलियन ने घेरा तो वेही सिपाही फिर लड़ने वालों में शामिल थे । नैपोलियन ने उनके पास एक दूत भेजा जो उन्हें लड़ने से बन्द करे । उन्हों ने उस दूत का सिर काट कर वृक्ष से टांग दिया । नैपोलियन की सेना को इस पर क्रोध आया और थोड़ी देर में वे दो सहस्र सिपाही फिर पकड़ लिये गये । उन्हें कैदी तो कर लिया गया, किन्तु उनके खाने पीने और रहने के लिये नैपोलियन के पास सामान न था । उसकी सेना स्वयं मुश्किल में थी—तब वह उन्हें कैसे पालता । दूसरी सूरत यह थी कि उन्हें छोड़ दिया जाता । किन्तु यह असम्भव था । जो सिपाही एक वार प्रतिज्ञा तोड़ चुके हों, वे फिर शत्रु से न जा मिलेंगे, इस में प्रमाण क्या था ? नैपोलियन की सेना पहले ही शत्रु

की सेना के सामने ऐसी थी जैसे समुद्र के सामने एक छोटा सा तालाब । तब उसका कर्तव्य शत्रुसेनारूपी समुद्र को सुखाना था न कि उस में और नदियों को डाल देना । इतना होने पर भी नैपोलियन उन सिपाहियों को छोड़ने के लिये तत्पर था, परन्तु उसकी सेना कहां मानती थी । वह तो इन शत्रुओं से तंग आ चुकी थी । इन सब कठिनाइयों को देखकर नैपोलियन ने उन सब सिपाहियों को मरवा दिया । यद्यपि यह कार्य्य बड़ा ही क्रूर तथा नृशंस था, तथापि नैपोलियन ने उसे तंग आकर ही किया था । यह कहने को मैं तय्यार नहीं हूं कि नैपोलियन इस कार्य्य के करने में सर्वथा निर्दोष था, किन्तु इसी वध के कारण उसे हत्यारा या नृशंस कहना भी ठीक नहीं ।

दूसरी घटना नैपोलियन की अद्भुत प्रतिभा को जतलाने वाली है । जब वह **एकर** का घेरा डाले पड़ा था, तब उसके पास गोलों की कमी हो गई । उसने बहुत विचार कर गोले प्राप्त करने की एक विचित्र तरकीब निकाली । **एकर** के पास ही बन्दरगाह थी—वहां पर सर सिडनेस्मिथ के कई जहाज़ खड़े थे, नैपोलियन ने उन के सामने समुद्र के किनारे पर बहुत से सिपाहियों को भेज दिया । समुद्र का किनारा रेतीला था । नैपोलियन के सिपाहियों को देख कर जहाज़ों ने गोले बरसाने शुरू किये । रेत में आकर गोले फटे नहीं—वैसे के वैसे ही पड़े रहे । नैपोलियन के सिपाही उन्हें उठा २ कर ले आये । प्रतिदिन नैपोलियन इंग्लिश जहाज़ों के साथ यही मखौल किया करता था ।

तृतीय-भाग ।

साम्राज्यलब्धि ।

प्रथम परिच्छेद

संस्था का भंग।

अधोमुखस्यापि कृतस्य वन्हेर्नाधः शिखा याति कदाचिदेव । कालिदास ।

जिस समय नैपोलियन समुद्र में घूमते हुवे पहरेदारों की आंख बचाकर लौटा, उस समय फ्रांस विचित्र दशा में था। आंधी और पानी आने से कुछ पूर्व आकाश की जैसी दशा होती है, उस की दशा उस समय वैसी ही होरही थी। वहां की तत्कालीन शासनसंस्था बहुत ही अरक्षित अवस्था में थी। डायरेक्टरी के आसन के नीचे बारूद रक्खा जा चुका था, देरी केवल फटने की थी। उस समय फ्रांस में तीन राजनैतिक दल थे। एक राजपक्षपाती दल, दूसरा क्रान्तिपक्षपाती दल और तीसरा संस्थापक्षपाती दल। इन में से राजपक्षपाती दल यद्यपि पहले बहुत निर्बल होगया था, तथापि पिछले दिनों की प्रतिक्रिया में फिर उस ने कुछ बल पकड़ लिया था। क्रान्तिपक्षपातीदल अब तक भी वैसा ही भीषण बनाहुवा था, जैसा दो वर्ष पूर्व था। सर्वसाधारण के चित्त पर अभी तक उन का वैसा ही जादू विद्यमान था। तीसरा संस्थापक्षपाती दल था। वह थोड़ा था, और साथ अल्पशक्ति था। उस दल के पीछे कोई शक्तिशाली भाव काम न कर रहा था, कोई विलीन बल उस में विद्यमान न था। ये तीन राजनैतिक दल थे—और ये तीनों ही उस समय की शासन संस्था—विशेषतया डायरेक्टरी—से असंतुष्ट थे।

राजपक्षपाती तो उन से प्रसन्न हो ही नहीं सक्ते थे। उन का और डायरेक्टरी का सम्बन्ध ३ और ६ का था। क्रान्तिपक्षपाती भी उन से प्रसन्न न थे। वे उन्हें क्रियाहीन नपुंसक और सापेक्षकसर्द समझते थे। तीसरा दल संस्थापक्षपातियों का था। वे लोग डायरेक्टरी के कुछ २ पक्ष में हो सक्ते थे, किन्तु डायरेक्टरी की अशक्ति ने उन का सहाय्यस्तम्भ भी उस के नीचे से निकाल दिया। डायरेक्टरी के पांच सभ्य थे। उन पांचों में सब की न्यारी २ मति थी। वे सब के सब प्रधानता और मुख्यता के लिये लड़ते और झगड़ते थे। न वे घर में शान्ति रख सक्ते थे, और न बाहिर शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सके थे। घर का यह हाल था कि साधारण प्रजा करों के भार के नीचे पिस रही थी। कर युद्ध के लिये और डायरे-

क्टरी के उड़ाने के लिये उगाहे जाते थे, किन्तु न युद्ध ही ठीक तरह से होते थे, और न ही डायरेक्टरी का अपरिमेय उदर भरता था । नैपोलियन के जीते हुवे सब स्थान एक एक कर के फ्रांस के हाथ से निकल गये । आस्ट्रिया फिर से शेर हो गया और इंग्लैंड की कैबिनट ने फिर से अपनी थैलियों के मुंह खोल दिये। चारों ओर रिशवतें घूमने लगीं । सुवर्ण की मूर्त्ति भी विचित्र है । बड़े से बड़े नरेशों को यह अपना दास बना लेती है, और संयत से संयत महात्मा से चरण पुजवा लेती है। इंग्लिश केबिनट इस थैली की शक्ति से खूब परिचित थी—और उस ने अपने इस परिचय को निरुपयोग नहीं छोड़ा ।

सारांश यह कि जब नैपोलियन मिश्र से लौटा, फ्रांस की और उस की शासन संस्था की दशा पातोन्मुख हो रही थी। दुःख दरिद्रता और पराजय से पराभूत हो कर, सारी फ्रेंच प्रजा अपने रक्षक और पालक विजेता नैपोलियन की ओर देख रही थी । मिश्र की ओर हाथ जोड़ कर वह परमात्मा से 'छोटे सेनापति' के लौटाने के लिये प्रार्थना कर छोड़ती थी। जब नैपोलियन आया तब उस ने सारे देश को अपने हार्दिक स्वागत करने के लिये उद्यत पाया । जिस किसी ने नैपोलियन के आने की खबर सुनी, उस के मुंह से यही शब्द निकले कि 'अब हम सुरक्षित हैं'। फ्रांस के सारे नगरों में दीपमाला की गई । खुशी के घंटे बजाये गये और अपरिमेय प्रसन्नता प्रकट की गई । सारी प्रजा नैपोलियन के चरणों पर पड़ने के लिये तय्यार थी ।

नैपोलियन ने पेरिस में पहुंचते ही भाविनी इतिकर्त्तव्यता पर विचार शुरू किया । उस ने चारों ओर दृष्टि उठाई—और देश की वास्तविक स्थिति का चिन्तन किया । उस ने देखा कि सारा देश मानरक्षा और प्राणरक्षा के लिये उस की ओर आशाभरी दृष्टि से देख रहा है । यह भी उस ने ठीक प्रकार से निश्चय कर लिया कि सिवाय उस के और कोई विद्यमान विपत्तियों से फ्रांस को छुड़ा नहीं सक्ता । साथ ही वह आत्मोदय के विचार को भी भूला हुवा नहीं था । वह अपनी शक्तियों को जानता था, और उन के अनुकूल ही इच्छायें रखता था । उस ने देखा कि सारा देश उस को अपना मूर्धन्य बनाने के लिये उद्यत है, और वह भी मूर्धन्य बनने के लिये तय्यार है। जब दोनों ओर से रेखायें आकर एक ही स्थान में मिलती थीं, तब फिर कोण का बनना आवश्यक था । असाधारणशक्ति और प्रतिभा से सज्जित नैपोलियन, फ्रांस की शासनसंस्था में समयानुरूप परिवर्त्तन करने के लिये उद्यत हुवा ।

एक विद्यमान सरकार को जड़ से उखाड़ कर उस के स्थान में अपना आधिपत्य

जमाना कोई साधारण बात नहीं थी। ऐसा संसार में बहुत वार हो चुका है, किन्तु पहले इस के कि ऐसा हो जाय खून की नदियें बही हैं। रक्त की नदियों के बहाये बिना, एक गवर्नमेन्ट को सर्वथा उड़ादेना बहुत कठिन कार्य है। विशेषतया फ्रांस जैसे देश में, जहां सर्वसाधारण में भी स्वतन्त्रता और समानता के भाव फैल चुके हैं। किन्तु यह नैपोलियन की बुद्धिमत्ता थी, जिसने उसे अपने इस कठिन काम को रुधिर की एक बूंद के बहाये बिना ही पूरा करने के लिये योग्य बनाया।

पेरिस में आते ही, नैपोलियन ने मन में किंकर्त्तव्यता का निश्चय करके, तद्नुकूल कार्य करना शुरू करदिया। सब से प्रथम उसने अपनी सेना का वेष उतार कर, साधारण नागरिक का वेष धारण किया। उस के पश्चात्, उस ने दो बातें आवश्यक समझीं। वह जानता था कि जब तक वर्तमान डायरेक्टर अपने अधिकारों से स्वयं मुक्तिपत्र न दें, तब तक उन को पदच्युत करना रुधिर बहाये विना नहीं होसक्ता। इस लिये उस ने डायरेक्टरों को अपने काबू करना प्रारम्भ किया। डायरेक्टरों में से सब से अधिक बुद्धिमान् **सीयेस** था। पहले नैपोलियन और वह एक दूसरे को बहुत सन्देह की दृष्टि से देखते थे। किन्तु थोड़े ही दिनों में, दोनों को यह प्रतीत हो गया कि उन में से कोई भी एक दूसरे के विना कार्य नहीं करसक्ता। सीयेस नैपोलियन के भाग्यसूर्य को उदित होता हुवा देख रहा था, और यह भी वह जानता था कि उसे न उदित होने देना शक्ति से बाहर है। समझदार पुरुष की तरह उस ने उस उदय में विघ्नकारी बनकर अफलयत्न होने की अपेक्षा, उस के सहायक बनना ही अच्छा समझा। सीयेस के साथी दो और डायरेक्टर भी नैपोलियन के साथ मिल गये। दो डायरेक्टर शेष रहे, नैपोलियन ने उन की परवा न की। जब बहुपक्ष उस की ओर हो गया तब विशेष यत्न करना उस ने योग्य न समझा।

डायरेक्टरों के अतिरिक्त सेनाओं के सेनापतियों को भी न भुलाया जासक्ता था। नैपोलियन जानता था कि कई सेनापति उस की कीर्ति से बहुत हसद खाते हैं, अतः उसने सेनापतियों को भी अपने गुट्ट में मिलाना निश्चित किया। मूरा आदि सैनिक, जो उस के नीचे लड़ चुके थे, उस के लिये मरने कटने को तय्यार थे। सेनापति **मोरियो** (Moreao) जो नैपोलियन का प्रतिद्वन्द्वी समझा जाता था, वस्तुतः उस से ईर्ष्या रखता था। किन्तु सेनापति केवल बल रखता था, नैपोलियन में बुद्धि भी थी। नैपोलियन ने उसे अपने यहां भोजन दिया, और मोरियो नैपोलियन का सहायक बनगया। **लफेब्र** Lefebre पेरिस की सेना का सेनापति था।

जब उस ने सुना कि नैपोलियन कुछ गड़बड़ करना चाहता है, वह उससे इस विषय में पूछने गया । उस के आते ही नैपोलियन ने उसे देख कर कहा 'लफेब्र ! क्या रिपब्लिक के स्तम्भरूप तुम यह सहन कर सक्ते हो कि ये वकलि लोग देश का सत्यानाश करें ? क्या तुम मुझे इनकी सत्ता का नाश करने में सहा-यता दोगे ?' यह कहते हुवे उसने विश्वास की सूचना देने के लिये अपना एक आभूषण लफेब्र के गले में डाल दिया । लफेब्र हार गया; महती प्रतिभा ने उसे दबा लिया । वह चिल्ला उठा 'हां, हम इन वकीलों को दरिया में बहा देंगे ।'

इस प्रकार से, उस ने सेनापतियों को भी अनेक नीतियों के वशीभूत करके अपनी नीति का विस्तार प्रारम्भ किया। शासनसंस्था में तीन शक्तियें थीं, डायरेक्टरी, वृद्धसभा, और पांच सौ प्रतिनिधियों की सभा। डायरेक्टरी को तो नैपोलियन ने शीघ्र ही काबू कर लिया। **सियेस** और उस के दो साथियों ने अपने मुक्तिपत्र दाखिल कर दिये। शेष रह गये दो डायरेक्टर । उन को नैपोलियन ने अपने आप बहुत समझाया बुझाया, किन्तु उन्हों ने अपने मुक्तिपत्र देने स्वीकार न किये। डायरेक्टर बारा ने इस समय इस कार्य्य के लिये नैपोलियन को झाड़ बतानी शुरू की। किन्तु नैपोलियन ऐसी झाड़ें सुनने के लिये न जन्मा था ? उस ने उत्तर में बारा को इस प्रकार सुनाई—' वह सुन्दर फ्रांस कहां है जिसे मैं तुम्हारे पास छोड़ गया था। मैं तुम्हारे लिये शांति छोड़ गया था, और अब मैं यहां युद्ध पाता हूं । मैं तुम्हें विजयी छोड़ गया था, किन्तु अब मैं तुम्हें पराजित देखता हूं । मैं तुम्हें इटली से लाये हुवे लाखों रुपयों से धनी छोड़ गया था, अब मैं आकर दरिद्रता के सिवाय कुछ नहीं देखता । मेरी कीर्ति के सहस्रों साथी कहां हैं ? वे सब मर गये । यह अवस्था अब स्थिर नहीं रह सक्ती । यह अब एक क्रान्ति में परिणत होगी ' ।

नैपोलियन की इस बलवती उक्ति को सुन कर बारा ने तो मुक्तिपत्र दे ही दिया था । शेष दो डायरेक्टरों को आनाकानी करता देख कर, नैपोलियन ने उन्हें कैद कर लिया । इस प्रकार डायरेक्टरों से छुटकारा पाकर, उस ने वृद्धसभा की ओर ध्यान मोड़ा । बृद्धसभा वस्तुतः **सीयेस** के हाथ में थी । वह उस से जो कुछ चाहता था करा लेता था । इस समय भी उसने अपने प्रभाव से काम लिया । वृद्ध सभा ने एक प्रस्ताव पास किया, जिस के द्वारा नैपोलियन को पेरिस नगर की सारी सेना की अध्यक्षता दी गई । वृद्धसभा के प्रस्ताव का भाव यह था कि क्योंकि रिपब्लिक खतरे में है, इस लिये नैपोलियन सेना की सहायता से हमारी रक्षा करे ।

इस प्रकार से सारे नगर का वास्तविक शासन नैपोलियन के हाथ में देकर, वृद्धसभा ने दूसरे दिन दूसरा निश्चय यह किया कि 'क्योंकि यह डर है कि पेरिस का जन-समूह शासनसंस्था में हस्ताक्षेप करे, अतः कल वृद्धसभा तथा पांच सौ प्रतिनिधियों की सभा पेरिस से दूर सेण्ट क्लाउड में हो'। ये दो निश्चय करके, वृद्धसभा का यह अधिवेशन समाप्त हुआ।

अगले दिन नवम्बर की ९ वीं तारीख़ थी। रिपब्लिकन सम्वत् के अनुसार वह १९ वां ब्रूमेयर था। इसी दिन पर नैपोलियन का सारा भविष्य अवलम्बित था। चिन्तित किन्तु दृढ़ आकृति को धारण किये हुवे, उस दिन प्रातःकाल ही नैपोलियन अपने घोड़े पर सवार हुवा। पेरिस की सारी सेना को पहले से ही सन्नद्ध रहने की आज्ञा मिल चुकी थी। सारी सेना, अपने पुराने विजेता सेनापति द्वारा निरीक्षण कराने के शौक से तय्यार थी। प्रातःकाल से ही, पेरिस के बाज़ारों में सेना के घोड़ों की टापें सुनाई पड़ने लगीं। सब के आगे लघुकाय पीतवर्ण नेता, और उसके पीछे संसार भर की सेनाओं में से वीर सेना—यह दृश्य बड़ा ही विचित्र था। नैपोलियन अपनी सेना को साथ लिये सेण्टक्लाउड पहुंचा। वहां पर, वृद्धसभा तथा पांचसौ प्रतिनिधियों की सभाओं के अधिवेशन हो रहे थे। यही नैपोलियन के जीवन में फेर का समय था, यह उस की सब शक्तियों की परीक्षा का अवसर था। यदि वह इस में अनुत्तीर्ण हुआ, तो फिर सिवाय फांसी के और उसका कोई भविष्य न था। नैपोलियन! सावधान!

बड़ी सावधानी और चतुरता से नैपोलियन ने अपना कार्य्य शुरू किया। नैपोलियन के एक प्रतिद्वन्द्वी सेनापति **बर्नेडौट्** ने कहा —'नैपोलियन! तुम फांसी के मुख में जा रहे हो।' नैपोलियन ने उत्तर दिया 'देखा जाय। क्या होता है?'

सब से प्रथम, वृद्धसभा का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। पहले दिन के प्रस्तावों पर विचार शुरू हुआ। कइयों ने नैपोलियन के हाथ में सब शक्तियें देने पर शंका की। नैपोलियन यह सुनते ही स्वयं वहां जा पहुंचा। वहां उसने दृढ़ किन्तु टूटी फूटी भाषा में कहा 'ऐ वृद्धसभा के सभ्यो! तुम सारे राष्ट्र के हितचिन्तक हो; रिपब्लिक की रक्षा के लिये यत्न करना तुम्हारा ही कार्य्य है। मैं तुम्हारे कार्य्य में सहायता देने के लिये सेनाध्यक्षों सहित यहां उपस्थित हुआ हूं।'

मध्यान्ह के समय पांचसौ प्रतिनिधियों की सभा का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। उस सभा का सभापति नैपोलियन का भाई **ल्यूशियन** था। वृद्धसभा में तो नैपोलियन

को शीघ्रविजय प्राप्त हुई थी, किन्तु प्रतिनिधिसभा में मामला ऐसा सरल न था। प्रतिनिधियों में स्वतन्त्रता और समानता के कई पुराने वकील अब भी विद्यमान थे। सभा लगते ही स्थानपरिवर्तन का प्रश्न उठाया गया। पेरिस से सेण्टक्लाउड आने के कारण पर विचार प्रारम्भ हुआ। नैपोलियन के विरोधियों को यह मौका हाथ लगा, उन लोगों ने प्रस्ताव पेश किया कि सब सभासद् पुरानी राज्यसंस्था को रक्षण करने की प्रतिज्ञा करें। सब जानते थे कि यह नैपोलियन के प्राधान्य के सामने बाड़ लगाई जा रही है। नैपोलियन के पक्षपाती प्रतिनिधि भी यह जानते थे, और नैपोलियन का भाई ल्यूशियन भी जानता था, किन्तु प्रतिनिधिसभा में इस प्रस्ताव के विरुद्ध शब्द उठाना कोई सरल कार्य्य न था। सब ने खड़े होकर संस्था की रक्षा करने की प्रतिज्ञा की। इस समाचार को सुनकर, नैपोलियन के माथे पर एक भृकुटी का संचार हुआ।

जिस समय इधर यह दृश्य हो रहा था, उसी समय उधर वृद्धसभा में नैपोलियन अपनी रक्षा के विषय में वक्तृता दे रहा था। 'इस समय रिपब्लिक एक ज्वालामुखी पर्वत के मुख पर स्थित है। आप लोगों ने रिपब्लिक को कष्ट में समझा; मैं आप की सहायतार्थ आ उपस्थित हुआ। आप ने मुझे बुलाया, मैंने आज्ञा पालन की, और अब मुझ पर सैकड़ों दोष लगाये जा रहे हैं। कोई कहता है कि मैं सीज़र हूं—कोई कहता है मैं क्रामवेल हूं। चारों ओर से भय गहरा हो रहा है। प्रतिनिधियों की सभा भी जोश में हैं, किन्तु डरने की आवश्यकता नहीं। अपने सैनिक-सहायकों के रहते, रिपब्लिक की रक्षा का मैं उत्तरदाता हूं।' इस के पश्चात्, उस ने भरी सभामें स्वतन्त्रता तथा समानता की रक्षा की प्रतिज्ञा की। किसी ने बीच में से पूछा, कि क्या तुम संस्था की रक्षा न करोगे? नैपोलियन ने गर्जते हुए उत्तर दिया कि 'संस्था है ही कुछ नहीं। कोई भी उस का आदर नहीं करता और हर एक उस का नाम लेता है'। अन्त में, वृद्धसभा में उस ने कहा कि 'यदि कोई वक्ता, मेरे प्राणघात के लिये प्रस्ताव करेगा, तो मैं अपने उन शस्त्रधारियों से प्रार्थना करूंगा जिन के सिर के फूंदे दरवाज़े में दीख रहे हैं। याद रक्खो! मैं भाग्य और युद्ध के देवताओं को साथ लिये हुए विचरण करता हूं'। इतना कहकर नैपोलियन अपने साथी योद्धाओं के सहित वृद्धसभा से बाहिर हुआ।

बाहिर आते ही उसे पता लगा कि प्रतिनिधिसभा में मामला बहुत बिगड़ गया है। पेरिस की सेना का आधिपत्य नैपोलियन को प्राप्त हुआ सुनकर सारी प्रति-

निधि सभा आगबबूला हो गई । ' नैपोलियन अत्याचारी है ' ' वह राजा होना चाहता है ' ' वह संस्था का द्रोही है ' इत्यादि शब्दों से सारी सभा गुंजायमान होउठी । किसी ने प्रस्ताव कर दिया कि नैपोलियन का वध निश्चित किया जाय । चारों ओर से इस प्रस्ताव का समर्थन होनेलगा। **ल्यूशियन** को तंग किया जाने लगा कि वह इस प्रस्ताव को विचारार्थ पेश करे । यह सब समाचार नैपोलियन को पहुंचा । एक क्षण की देरी भी न करके विद्युल्लता की न्यांई शीघ्रता से, वह अपने सैनिकों के सहित प्रतिनिधिसभा के द्वार पर आया । उसका सेनाध्यक्ष **औगेरियो** उसे वहां पर मिला । उस ने कहा कि ' तुम ने अपने आप को बड़ी मुश्किल में डाल लिया है ' ' आर्कोला में मैं इस से भी अधिक कठिनता में था । धैर्य्य रखना चाहिये । आधे घण्टे में सब ठीक हो जायगा । '

नैपोलियन सेना को बाहिर छोड़ कर, सारी शंकाओं को अपनी उपस्थिति से दूर करने के लिये, अकेला ही प्रतिनिधिसभा के अन्दर घुसगया । वह अभी दस कदम भी न घुसा होगा कि उस के चारों ओर से आंधी की न्यांई उठते हुए सभासदों के शब्द गर्जने लगे । ' धिक्कार है आततायी को ' ' इस को मारने का प्रस्ताव पास करो ' ' अनजान जल्दबाज़ लड़के ! तू क्या कर रहा है ' इत्यादि शब्द करते हुए प्रतिनिधियों ने नैपोलियन को चारों ओर से घेर लिया । एकने छुरा जेब मे निकाल कर नैपोलियन पर चलाना चाहा; किन्तु तब तक अपने ' छोटे सेनापति ' को भय में देख कर कई सैनिक वहां आ पहुंचे थे। उन्हों ने नैपोलियन के छोटे शरीर को उठा लिया, और वे उसे दरवाज़े के बाहिर ले गये ।

द्वार के बाहिर जाकर, क्षणभर, नैपोलियन सर्वथा किंकर्तव्यताविमूढ़ हुआ रहा। जिस नैपोलियन को सहस्रों तोपों के गोले न हरा सक्ते थे, वह इन वकीलों द्वारा पराजित हो गया ! भेड़ के बच्चे ने भेड़िये को दबा लिया !! नैपोलियन अपने भय के गौरव और महत्त्व को सोच कर, क्षणेक विमूढ़ सा रहा । किन्तु झटपट ही उस की प्रतिभा का दीपक फिर चमक पड़ा । ' सैनिको ! मेरा भाई खतरे में है। उसे यहां सुरक्षित उठा लाओ ' यह सुनते ही सिपाही भागे, और प्रतिनिधियों से घिरे हुए ल्यूशियन को, सभा में से सुरक्षित बचा लाये । अपने भाई को सभा के बीच में से निकलवा लेने में, नैपोलियन ने अद्भुत बुद्धिमत्ता से काम लिया । विना उस के, सम्भव है, उस की सेना ही सभा पर शस्त्र उठाने से इन्कार करती। **ल्यूशियन** ने आकर और घोड़े पर सवार होकर सिपाहियों को कहा ' सिपाहियो ! प्रतिनिधि

सभा को थोड़े से रक्त के प्यासों ने घेर लिया है। वह अब स्वतन्त्र नहीं रही। प्रतिनिधिसभा के सभापति होने की हैसीयत में मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं कि तुम सभाभवन को ख़ाली कर दो।'

नैपोलियन ने चिल्ला कर कहा—'सैनिको! क्या मैं तुम पर भरोसा रख सक्ता हूं?।'

'नैपोलियन की जय हो!' यह शब्द करते हुए सैनिक सभाभवन में घुस गये। सैनिकों का सेनापति मूरा—अदम्य मूरा—था। जहां मूरा का क़दम पड़ा, वहां किसी का सामना करना असम्भव था। उस का क़दम, विजय की पताका थी। मूरा ने गर्ज कर सिपाहियों को आज्ञा दी—

'आगे बढ़ो! और संगीनों का वार करो।'

सिपाहियों की पंक्ति संगीनें झुकाये हुए आगे बढ़ी। प्रतिनिधियों के लिये अब कोई चारा न था। कोई बैंच पर से कूदा, कोई खिड़की में से निकल भागा। एक मिनट में सभाभवन ख़ाली हो गया और साथ ही नैपोलियन के चरित की परिवर्तनकारिणी यह घटना समाप्त हुई।
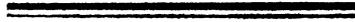
द्वितीय परिच्छेद ।

प्रथम शासक ।

नेतार्जनपालनीयैः संयमनैः संयम्यन्ते शक्तिशालिनः । दुष्यन्त कविः ॥

ब्रूमेयर की क्रान्ति के साथ, फ्रांस की राज्यक्रान्ति के अन्त का प्रारम्भ हुवा। यह अन्त का प्रारम्भ आवश्यक था। क्रान्ति अनन्त नहीं हो सक्ती थी और न ही उस का अनन्त होना अभीष्ट था। क्रान्ति से पूर्व समय की सामाजिक गन्दगी जल चुकी थी। क्रान्ति शुद्ध करने वाली आग थी, वह सामाजिक स्थिति का आवश्यक अंग नहीं बन सक्ती थी। यह आवश्यक था कि पुरानी सामाजिक स्थिति के खण्डरात पर नया सामाजिक प्रासाद खड़ा किया जाता। इस नये प्रासाद के खड़ा करने की शक्ति केवल एक ही मनुष्य में थी, और वह मनुष्य नैपोलियन बोनापार्ट था। इस संस्था के भंग करने में, नैपोलियन ने कई स्थानों पर, अपनी सैन्यशक्ति का डर देकर ही काम चलाया—यह ठीक था। किन्तु विना इस के फ्रांस की रक्षा न हो सकती थी। विना अराजकता का भंग किये, फ्रांस की सामाजिक स्थिति को स्थिर करना कठिन ही क्यों असम्भव था। नैपोलियन को कई लेखक संस्था का भंग करने वाला आततायी कहते हैं। उन के प्रति हमारा उत्तर है कि वस्तुतः उस समय संस्था कोई वस्तु ही न थी। डायरेक्टर लोग अपना उल्लू सीधा करने के सिवाय, संस्था का कोई उद्देश्य ही न समझते थे। जैसा नैपोलियन ने कहा था, संस्था का नाम सब लेते थे किन्तु उस की परवा कोई भी न करता था। इस के अतिरिक्त, संस्था का उद्देश्य समाज की संरक्षा करना है, न कि उस का ध्वंस करना। वह संस्था जो समाज की रक्षा नहीं कर सक्ती, जो अपने आप को आदृत कराने की शक्ति नहीं रखती, रहने योग्य नहीं, वह पृथिवीतल पर से धुल जाने योग्य है। ब्रूमेयर से पहले फ्रांस की संस्था ऐसी ही थी, तब उस का जीवित रहना कैसे बन सक्ता था?

नैपोलियन ने इस परिवर्त्तन के करने के लिये इतना यत्न क्यों किया? यह शंका बहुत टेढ़ी है। इस शंका का उत्तर देना सहल नहीं है। नैपोलियन को अपना राजनैतिक जीवन समाप्त किये शताब्दि के लगभग समय व्यतीत होने लगा है, किन्तु आज भी उस की घटनायें और उस के कार्य हमारे लिये वैसे ही हैं, जैसे उस समय थे।

नैपोलियन किन उद्देश्यों से प्रेरा जाकर सारे कार्यों को करता था ? क्या वह स्वार्थी पुरुष था ? या उस के सारे यत्न अपने देश का गौरव बढ़ाने के लिये थे? इत्यादि प्रश्न हैं, जिन का उत्तर पाने के लिये सैकड़ों ऐतिहासिकों ने सिरपच्ची की हैं– किन्तु ये आज तक भी वैसे हीं गुप्त प्रश्न बने हुवे हैं , जैसे नैपोलियन के समय में थे । नैपोलियन स्वयं एक रहस्य था–उस का इतिहास अब तक रहस्य है । इस लिये, उस के कार्यों का उद्देश्य निश्चयपूर्वक निश्चित नहीं किया जा सक्ता । नैपोलियन ने स्वयं सेण्टहेलीना में अपने साथियों के सामने, अपने जीवन के बहुत से रहस्य खोलने का यत्न किया था, कम से कम उस के साथी तो कहते हैं कि हमने उस के जीवन का रहस्य निकलवा लिया । किन्तु मेरी समझ में उन का ऐसा समझना बहुत कुछ भूल है । नैपोलियन सेण्टहेलीना में भी उतना ही बड़ा रहस्य था जितना बड़ा टयूल-रीज़ के प्रासाद में । वह सेण्टहेलीना में जानता था कि उस का एक एक शब्द मुद्रित होगा । उसे यह भी निश्चय था , कि उस के साथी उस का रहस्य खोलने के लिये ही उस से बातें पूछते हैं । तब आप यह कैसे अनुमान कर सक्ते हैं कि वहां पर उस ने सच्ची २ गुप्त मुद्रा खोल दी थी । अतः, नैपोलियन के चरित की माया खोलनी बहुत कठिन है । बाह्य विस्तार जितना इस अद्भुत चरित का मिलसक्ता है, उतना शायद ही किसी और का मिलसके । किन्तु, जब बाह्य खोल को–युद्धों संधियों और विजयों को– छोड़ कर हम उस के वास्तविक उद्देश्यों पर पहुंचते हैं, तब हमें एक बन्द कोठरी मिलती है, जिस के अन्दर घुसना सर्वथा असम्भव प्रतीत होता है ।

तथापि, जहां तक इस अद्भुत चरित की घटनाओं के देखने से प्रतीत होता है, नैपोलियन की इस क्रिया का मुख्य उद्देश्य देश की रक्षा करना ही था । अभी तक उस के अन्दर उस स्वार्थ का घोर राज्य न हुवा था, जिस ने उस के पिछले जीवन को स्याह कर दिया था । अभी तक वह फ्रांस के गौरव को ही अपना मुख्य उद्देश्य समझता था । साथ ही वह यह भी जानता था , कि फ्रांस का गौरव उस के गौरव के साथ मिला हुवा है । वह अपनी शक्तियों से पूरा २ अभिज्ञ था, अतः उस ने एक निर्बल तथा खोखले संस्थारूपी वृक्ष के गिरा कर, उस के स्थान में दृढ़ तथा छाया-कारी न्यग्रोध वृक्ष के जमाने का प्रयत्न किया ।

डायरेक्टरी वृद्धसभा और प्रतिनिधिसभा-सब एक ही दिन के अन्दर सत्तारहित होगई । इसी दिन सायंकाल के समय, अपने किये हुवे इस नियमविरुद्ध कार्य के

ऊपर नियम की मुहर लगवाने के लिये, नैपोलियन ने अपने पक्ष के प्रतिनिधिसभा के सभासदों की एक बैठक की । सभा की बची हुवी दुम ने यह निर्धारित किया कि नैपोलियन ने आज प्रातः काल जो कुछ किया है, यह देश और शासन की भलाई के लिये किया है। साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि नई संस्था के तय्यार करने के लिये नैपोलियन, सीयेस और ड्यूक्स ये तीन विचारक चुने जांय और जब तक नई संस्था तय्यार न हो, तब तक सारा शासन इन्हीं के हाथों में दिया जाय। तदनुसार, उसी दिन से डायरेक्टरी वृद्धसभा और पांचसौ की प्रतिनिधिसभा समाप्त हुई, तीन शासकों का और वस्तुतः नैपोलियन का राज्य प्रारम्भ हुवा । इस शक्ति के प्राप्त होने पर, नैपोलियन ने मनुष्योचित ही क्यों देवोचित गुणों का परिचय दिया। जो मनुष्य विजयी होने पर भी शान्ति और औदार्य का साथ नहीं छोड़ता, वही महापुरुष कहाने के योग्य है। तैमूरलंग और चंगेज़खां भी विजयी थे किन्तु वे क्रूर, नृशंस तथा राक्षस थे। किन्तु सीज़र और नैपोलियन बनने के लिये इन दुर्गुणों का त्याग करना पड़ता है । विजय के प्राप्त होने पर नैपोलियन ने जो क्षमा दिखाई, उस के बहुत थोड़े दृष्टान्त इतिहास में मिलते हैं। लंका का विजय कर के, रामचन्द्र ने जो सक्षमता दिखाई थी—उस के साथ नैपोलियन की क्रिया की उपमा दें तो यथार्थ होगी । जो उस के विरोधी राजनैतिक थे, उन्हें उस ने कुछ भी दण्ड नहीं दिया ; हर एक को क्षमा की गई । यहां तक कि जो मनुष्य साक्षात् उस के विरुद्ध शस्त्र पकड़े हुवे गिरिफ्तार हुवा, उस का भी अपराध क्षमा किया गया । कारागृहों में क्रान्ति के समय से जो सैकड़ों कैदी बन्द थे, उन्हें सर्वथा मुक्ति दी गई । पादरियों तथा कुलीनों पर अत्याचार करने के लिये जो नियम बनाये गये थे, उन्हें उड़ा दिया गया।

इसी बीच में देश की नई संस्था भी तय्यार होगई । इस संस्था का तय्यार करने वाला भी प्रधानतया **सियेस** ही था । यह मनुष्य क्रान्ति के प्रारम्भकों में से एक था। उस दिन से अब तक जितनी नई २ पांच चार संस्थायें बनीं, यही उन सब का निर्माता था । राजनैतिकदलरूपी नई २ आंधियें आईं और चली गईं । किन्तु अपनी राजनैतिक बुद्धिमत्ता से युक्त यह मनुष्य, उन सब के सामने चट्टानकी तरह डटारहा । उन में से सब दल एक दूसरे से लड़ मरे, किन्तु यह बाल २ बच गया और अब इस क्रान्ति की अन्तिम संस्था का बनाने वाला भी यही हुवा । इस नई संस्था द्वारा सब से ऊपर एक शासक निश्चित किया गया, जिसे राजा का स्थानीय समझना चाहिये । उस के कार्य में सहायता देने वाले दो उपशासक बनाये

गये । वे उस के कार्य में विघ्न न डाल सक्ते थे; केवल पूछने पर सलाह दे सक्ते थे । सारे फ्रांस के २१ वर्ष से ऊपर की उमर के निवासियों को ५० लाख प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया, वे ५० लाख प्रतिनिधि फिर अपने में से ५० सहस्र प्रातिनिधि चुन सक्ते थे, और फिर उन ५० सहस्र को अपने में से ५ सहस्र प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया । ये पांच सहस्र विशेष व्यक्ति समझे जाते थे । तीनों शासक, इन विशेष व्यक्तियों में से कुछ योग्य पुरुषों को चुन लेते थे जिन की सभा का नाम न्यायसभा या Tribunate था । यह न्यायसभा फिर कुछ एक योग्य पुरुषों को चुनती थी, जिन की सभा का नाम नियमसभा Legislature था । यह नियमसभा फिर एक सेनेट का निर्धारण करती थी । हर एक राजनियम का प्रस्ताव शासकत्रयी से प्रारम्भ हो कर, पहले न्यायसभा में, फिर नियम सभा में और फिर सेनेट में जाता था । तीनों सभाओं द्वारा स्वीकृत होने पर, वह नियम के रूप में परिवर्तित हो जाता था । यह तो नियमसंस्था थी । राजसम्बन्धी कार्य का समस्त अधिकार शासकत्रयी को ही दिया गया था । उस शासकत्रयी में भी प्रथमशासक स्वाधिकार से स्वतन्त्र था । प्रथम शासक नैपोलियन था, सारे फ्रांस का प्रबन्ध उस के ही युवककन्धों पर पड़ा । किन्तु, इस संस्था के लिये अकेला नैपोलियन ही उत्तरदाता न था, सियेस भी था । और यह वही सियेस था जिस ने क्रान्ति के प्रथम एक पुस्तिका लिखी थी, जिस में उस ने दिखाया था, कि सर्व साधारण का ही राज्याधिकार मुख्य है अन्य किसी एक व्यक्ति का नहीं । और अब उसी ने सारा राज्य कार्य्य एक नैपोलियन के हाथ में सौंप दिया । 'कालस्यचित्रागतिः' ।

इस प्रकार से राज्याधिकार प्राप्त होने पर, नैपोलियन ने अपनी असाधारण व्यापिनी शक्तियों का परिचय देना शुरू किया । वह न केवल युद्धकला में ही प्रवीण था, न्याय करने में भी वह असाधारणतया कुशल था । वह केवल असिधारा के प्रहार का ज्ञाता ही न था, न्यायदण्ड के धारण में भी वह पूरा २ चतुर था । उसकी शासन करने की चतुरता की यदि कोई उपमा दे सक्ते हैं, तो वह उसकी युद्धविद्या की निपुणता है—इससे अतिरिक्त नहीं । शासन कार्य्य संभालते ही, उस ने फ्रेंच समाज के विकृत और छिन्न भिन्न अङ्गों को, सुघड़ और दृढ़ बनाने का यत्न आरम्भ किया । शक्तिस्थापन द्वारा, सम्पत्ति और वैभव की उन्नति के लिये उस ने चेष्टा शुरू की । उस के बुद्धिपूर्वक किये हुवे राज्य में, शान्तिरूपी जल से सिक्त होकर, लोगों का सुखरूपी कल्पद्रुम दिनदूनी रातचौगुनी उन्नति करने

लगा। उसका इस समय का राज्य, फ्रांस के लिये एक प्रकार से आदर्शराज्य था। वह कुलक्रमागत राजाओं के राज्यों की तरह अनुदार तथा संकुचित न था; और न ही वह क्रान्ति की शान्तिस्थापक सभाओं के राज्य की तरह अत्यन्त बंधनरहित होने के कारण अत्याचारी था। नैपोलियन का राज्य मध्यम दर्जे का—शान्त और उदार—था। उसने पुराने कुलक्रमागत ठाकुरों के अधिकार को पुनः स्थापित नहीं किया, किन्तु साथ ही समानता समानता का शोर नहीं मचाया। उसने बोर्बोनवंशीय राजाओं की तरह बेहद कर नहीं लगाये, किन्तु तथापि सर्वसाधारण के समस्त राज्याधिकारों के सिद्धान्त को आघोषित नहीं किया। सारांश यह, कि उसका इस समय का राज्य क्रान्ति के सत्सिद्धान्त का पालन करता हुवा कुलक्रमागत राज्य में होने वाले दोषों का खण्डन करता था।

उसकी असाधारण प्रतिभा से किये हुवे इस शान्तिराज्य में, देश एक दम परिवर्तित हो गया। सुख और सम्पत्ति नें पुरानी क्रान्तिकालीन कठोरता का विस्मरण करा दिया। उदारनीति के प्रचलित हो जाने से, वे पादरी और ठाकुर लोग, जो क्रान्ति के शस्त्र से भयभीत होकर भाग गये थे, लौटने लगे। लोगों ने क्रान्तिकालीन लाल टोपियों और सादे कपड़ों को छोड़ कर फूलदार टोपियें और शान्दार कपड़े पहिनने शुरू किये। बालों पर खूब कंघे फिरने लगे, और चारों ओर नाटकघर खुल गये। नैपोलियन ने भी लोगों की इस विश्रान्त दशा को दृढ़ करने के लिये, राजकीय चमक दमक से अपने आपको घेरना शुरू किया। उसने इसी समय अपने एक सचिव से कहा था कि 'मैं चाहता हूं कि ये लोग अच्छे शासन के आनन्द भोगें, और नाटक घरों में आनन्द उड़ावें। किन्तु मैं यह नहीं चाहता कि ये सारा दिन राज्य के कार्य्यों की समालोचना किया करें। मैं इनको राज्य कार्य्यों में हाथ डालना भुला दूंगा।'

बड़ी राजसी सजधज के साथ, नैपोलियन ने फ्रांस के पुराने राजाओं के महलों में प्रवेश किया। उन महलों में बैठने से पूर्व, उसने सारे फ्रांस के निवासियों के सामने नई राज्य संस्था स्वीकृति के लिये उपस्थित की। सम्मति देने के लिये ३०, १२, ५६९ फ्रांस निवासी उपस्थित थे। उनमें से ३०,११,००७ सम्मतियें इस नई संस्था के पक्ष में और १५६२ सम्मतियें इस के विरुद्ध थीं। इस सम्मति लेने का फल यह हुवा कि नैपोलियन का आधिपत्य, सारी जाति द्वारा स्वीकार किया गया। अब नैपोलियन फ्रांस का वास्तविक शासक बना। उसने पीछे से कहा था कि

'फ्रांस के राजमुकुट को मैंने धूल में पड़ा हुवा पाया । उसे मैंने उठा लिया और सारी जाति ने उसे मेरे सिर पर धर दिया ।' इस प्रकार से, शासकत्व के सब अधिकार पाकर और देश के अन्दर शान्ति और समृद्धि का राज्य दृढ़ करके, नैपोलियन ने बाह्य शत्रुओं के आक्रमणों से भी देश को बचाने का उपाय प्रारम्भ किया । सब से प्रथम, उसने अपने सबसे बड़े शत्रु "इङ्गलैण्ड के महाराज" के पास अपनी दस्तखती चिट्ठी भेजी । उस चिट्ठी में दोनों सभ्यदेशों के चिरकालीन वैमनस्य पर शोक प्रकाशित करते हुवे, उसने बड़े बल से अब शान्ति स्थापना के लिये लिखा । इस पवित्र तथा उचित चिट्ठी के जवाब देने का कष्ट इंग्लैण्ड के अभिमानी शासक ने न उठाया । उसके मुख्य सचिव **लार्ड ग्रेन्विल** ने बड़े ही चिड़चिड़े शब्दों में, और बड़ी ही अपमानजनक रीति से, नैपोलियन के पत्र का उत्तर लिखा । उस उत्तर में शान्ति की चाहना की ज़रा सी छाया भी न थी । पत्र का अभिप्राय स्पष्ट था । इंग्लैण्ड का गर्वित शासक नैपोलियन को अपने से बहुत छोटा समझता था, और इंग्लैण्ड की कैबिनट शान्ति करने के लिये तय्यार न थी ।

इंग्लैंड के राजा के पास सन्धिपत्र भेजने के साथ ही, प्रथमशासक ने आस्ट्रिया के महाराज के पास भी संग्राम बन्द करने के लिये एक पत्र लिखा । आस्ट्रिया नैपोलियन के शस्त्र की तेज़ धारा में स्नान कर चुका था, अतः वह शान्ति को स्वीकार करने में सहमत हो जाता । किन्तु इंग्लैंड--नैपोलियन और फ्रांस का जन्मवैरी इंग्लैंड--आस्ट्रिया में धड़ाधड़ रुपयों की थैलियें भेज रहा था । रिश्वत का बाज़ार गर्म था । महाभारत में सच कहा है कि 'अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्' धन के सब दास हैं, किन्तु धन किसी का दास नहीं । इस सर्वविजयी धन ने आगामी बीस वर्षों तक योरप के बड़े २ राजाओं से प्रतिज्ञायें तुड़वाईं, युद्ध करवाये, और केवल एक देश की इच्छा का दास बनाया । आस्ट्रिया ने नैपोलियन के पत्र के उत्तर में लिखा कि विना इंग्लैंड की सम्मति के वह सन्धिपत्र को स्वीकार नहीं कर सक्ता । यह उत्तर पर्य्याप्त था ।

इस उत्तर के पश्चात्, आस्ट्रिया तथा इंग्लैंड का फ्रांस के साथ विरोध स्पष्ट होगया । रूस भी इनके साथ मिल गया । तीनों देशों की सेनाओं ने मिल कर फ्रांस को घेरना शुरू किया । अपने आप को स्वतन्त्रता का वकील कहने वाले इंग्लैंड के बेड़े, समुद्रों में घूम २ कर फ्रांस के व्यापार तथा जहाज़ों का ध्वंस करने लगे । आस्ट्रिया की सेना भी इटली में से होती हुवी फ्रांस के किनारे तक आ पहुंची । उधर रूस

की सेना भी किसी से पीछे न थी । इस समय नैपोलियन ने फिर शान्ति स्थापना के कार्य्य में पहल की। उसने आस्ट्रिया और इंग्लैंड की गवर्न्मेण्टों को लिखा कि 'क्या अच्छा हो यदि दोनों ओर से पुराने कैदी छोड़ दिये जांय। नये युद्ध के आरम्भ होने से पूर्व, पुराने कैदी छोड़ देना अच्छा है'। दोनों देशों की गवर्न्मेण्टों ने एक ही उत्तर दिया, और वह यह था कि वे कैद किये हुवे सिपाहियों का छोड़ना सिद्धान्तविरुद्ध समझते हैं। किन्तु नैपोलियन इस से भी असन्तुष्ट नहीं हुवा। उस के पास रूस के कई सिपाही कैद थे । उसने उन सब को रूसी सेना के वेष तथा रंग ढंग से सजा कर, रूसनरेश के पास भेज दिया। इंग्लैंड और आस्ट्रिया की इस नीचता तथा फ्रांस की उदारता से मोहित होकर, रूसनरेश ने अपनी सेना को फ्रांस पर आक्रमण करने से हटा लिया। फ्रांस के साथ उसने सन्धि कर ली, और इंग्लैंड के प्रति युद्ध की घोषणा दे दी।

आस्ट्रिया और इंग्लैंड की सेनाओं से घेरे जाकर, नैपोलियन ने युद्ध करने की ही ठानली। वे युद्ध की चमत्कारिणी शक्तियें, जो बरस भर छिपी रही थीं, अब फिर अपने पूरे २ बल से उद्भूत हुईं। पहले अपनी सेना के अत्युत्तम डेढ़ लाख सैनिकों के साथ, सेनापति **मोरियो** को उसने र्हाइन नदी के सामने शत्रु को रोकने के लिये भेजा। स्वयं, पचास सहस्र नये सैनिकों के साथ, **एल्प्स** पर्वत को पार करके, आस्ट्रिया की मुख्य सेना को काट डालने का विचार किया। पचास सहस्र सेना के साथ **एल्प्स** पर्वत को पार करना—यह एक असम्भव बात प्रतीत होती थी। आस्ट्रियन सेनापति **मेलास** ने नैपोलियन की इस इच्छा को सुन कर हंस दिया! 'जो असम्भव है, उसे नैपोलियन भी नहीं कर सक्ता।' इतना ही कह कर वह चुप हो रहा। इस बात को हर एक जानता था, कि यदि नैपोलियन **एल्प्स** पर्वत को पार कर के आस्ट्रियन सेना के पीछे जा पड़ेगा, तो फिर आस्ट्रिया की सेना बड़ी कठिनता में पड़ेगी । पर एल्प्स के पार करने को लोग असम्भव समझते थे। किन्तु नैपोलियन असम्भव शब्द के अर्थों से अनभिज्ञ था। उसने इटली का चित्र सामने रख कर, अपने युद्ध का पूरा २ चित्र खींच लिया। बड़े भारी मान चित्र पर, वह भिन्न २ स्थानों पर अपनी और आस्ट्रिया की सेनाओं की वास्तविक स्थिति के चिन्ह करता जाता था। अन्त में उसने उसी चित्र पट पर यह भी निश्चय कर लिया कि अमुक दिन अमुक स्थान पर वह आस्ट्रियन सेनापति को जीत लेगा। यह सारा का सारा भावी युद्ध चित्र, उसने अपने एक सचिव को समझा दिया। युद्ध

के पूर्व ही इस कल्पना को मानसिक प्लाव समझ कर, उस समय तो नैपोलियन का सचिव **बुरीने** हंस दिया, किन्तु जब युद्ध समाप्त हुवा, और उसका वृत्तान्त नैपोलियन के पूर्वोक्त वृत्तांत से सर्वथा मिलता हुवा पाया गया, तब नैपोलियन के मन्त्री को उसकी असाधारण प्रतिभा पर विश्वास हुवा।

७ वीं मई (१८००) के दिन, नैपोलियन अपनी सेना को मिलने के लिये पेरिस से प्रस्थित हुवा। वायु की तरह प्रचण्ड वेग से फ्रांस को पार करता हुवा, वह **एल्प्स** की उपत्यका में पड़ी हुवी अपनी सेना में पहुंच गया। सारी सेना को पंक्ति-बद्ध खड़ा करके, नैपोलियन ने उसकी देख भाल की और फिर एल्प्स के पार करने के लिये—असम्भव बात को सम्भव बनाने के लिये—फ्रांस की वीर सेना ने सोत्साह प्रस्थान किया। एल्प्स का मार्ग बड़ा ही दुर्गम और कष्टप्रद था। पर्वत की सर्दी, बरफ़ की चढ़ाई और तिसपर खाने पीने की न्यूनता—इस से सेना को बड़े कष्ट होने की सम्भावना थी। किन्तु, नैपोलियन की प्रतिभा ने इन कष्टों को बहुत ही ढीला कर दिया। स्थान स्थान पर भोजन तथा शराब का प्रबन्ध किया गया; पर्वत के दोनों ओर दो बड़े २ हस्पताल स्थापित किये गये; औरभी जितने प्रकार के आराम हो सक्ते थे उपस्थित किये गये। सारांश यह कि, विना किसी असाधारण दुःख के, फ्रांसीसी वीरसेना एल्प्स के इस पार से उस पार जा रही।

एल्प्स पार हुवा सुन कर सारे योरप में एक तरह की कँप कँपी छूट गई। जो तब तक असम्भव समझा जाता था, वह सम्भव हो गया। क्या सचमुच नैपो-लियन मनुष्यातिरिक्त कोई व्यक्ति था? ऐसी २ बातें चारों ओर कही जाने लगीं। आस्ट्रियन सेनापति **मेलास** का तो कुछ वृत्तान्त ही न पूछिये, वह तो मानों वज्र से आहत हुवा। उस ने नैपोलियन की इस एक असाधारण चेष्टा से अपने आपको आस्ट्रिया से सर्वथा कटा हुवा पाया, क्योंकि उसकी सेना और आस्ट्रिया के बीच में नैपोलियन पड़ा हुवा था। ख़तरे के महत्व से घबरा कर, फ्रांस को घेरने के लिये उद्यत मेलास स्वयं घिर गया। चौबे जी गये थे छब्बे होने को, रह गये दुब्बे जी। यही हाल **मेलास** का हुवा। मेलास ने इस विपदा में फंसकर, यही निश्चय किया कि एक बड़े संग्राम में नैपोलियन की सेना को काट कर, अपनी सत्ता तथा विजय को स्थिर रक्खा जाय। इस विचार से उसने फ्रांस की ओर पीठ की और नैपोलियन के ऊपर वह टूट पड़ा।

जून की चौदहवीं तारीख़ थी। नैपोलियन अपने २० सहस्र सैन्य के साथ

मेरंजो के स्थान पर दुर्ग बांधे बैठा हुवा था। मेलास ने, ४७ सहस्त्र की प्रबल सेना के साथ उसपर धावा किया। नैपोलियन के लिये यह बड़ी चिन्ता का समय था। प्रथम तो शत्रु को आक्रमणकर्त्ता होने का लाभ प्राप्त था, फिर नैपोलियन का सैन्य भी थोड़ा था। किन्तु उस ने बड़े धैर्य्य और सावधानी से शत्रु के दुगने दल का सामना किया। कुछ देर तक फ्रांसीसी सेना चट्टान की तरह डटी रही। किन्तु, अन्त को उसके पैर उखड़ गये। वह पीछे को हटने लगी। नैपोलियन का सेनापति **डिसे,** जो सेनापतिरत्नों में से एक था और जो अभी मिश्र से लौटा ही था, अपनी दश सहस्त्र सेना लिये कुछ दूर पड़ा हुवा था। उस ने **मेरंजो** के मैदान में तोप को गर्जते हुवे सुना। नैपोलियन ने अपने छोटे सेनापतियों को यह आज्ञा दे रक्खी थी, कि जहां तोपका शब्द सुनाई दे वहीं पर अवश्य पहुंचो। तोप की गर्जना सुनते ही **डिसे** सेनासहित मेरञ्जों के स्थान की ओर को प्रस्थित हुवा। किन्तु वह अभी बहुत दूर था, और नैपोलियन की सेना, बड़ी संख्या से पद २ पर धकेली जा रही थी। नैपोलियन ने इस पश्चाद्गमन को भाजड़ में परिवर्तित न होने दिया और पीछे हटती हुवी सेना को उसने दृढ़ बनाये रक्खा। वह केवल **डिसे** के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था और सेना को साथ साथ उत्साहना भी देता जाता था। जब कुछ थोड़ा पीछे हट लेता तब वह अपनी सेना को कहता 'वीरो! अब हम पर्य्याप्त पीछे हट लिये, आओ हम चट्टान की तरह जुट जांय' इस प्रकार से स्थिरतया नैपोलियन दिनभर पीछे हटता रहा। आस्ट्रिया की सेना का बूढ़ा की सेनापति **मेलास** दिन रात का थका हुवा था; घोड़े पर से गिर कर उसे और भी थकावट हो गई। उसने समझा विजय हो गयी। अपने से छोटे एक सेनापति को सेनापत्य का भार सौंप कर वह अपने विश्रामस्थान पर चला गया। आस्ट्रियन सेना विजय निश्चित समझ कर प्रसन्नता के नाद करने लगी। नैपोलियन के माथे पर भी चिन्ता की दो रेखायें दीख पड़ने लगीं।

उसी समय उस ने दूर मैदान में धूल को उड़ते हुवे देखा। वह ध्यान देकर उस ओर देखने लगा। क्षणभर में वह देखता क्या है कि सेनापति **डिसे** अपनी सारी सेना के आगे घोड़ा सरपट भगाये आरहा है। यह सेनापति नैपोलियन के वीरतम सेनापतियों में से एक था। इस से नैपोलियन को बड़ी आशायें थीं। आते ही वह नैपोलियन के पास आया। नैपोलियन के माथे की रेखायें दूर होगईं। उस ने अपने ताज़े दस सहस्त्र आदमियों को लेकर, बड़ा ही घोर आक्रमण किया। वह

तूफ़ान की तरह, आस्ट्रिया की विजयिनी सेना पर जा पड़ा । उधर से नैपोलियन के दूसरे सेनापति **केलरमैन** ने अपने घुड़सवारों के साथ शत्रु के पार्श्वपर वार किया । सामने से और पार्श्व से दबाया जाकर विजयी आस्ट्रियनसैन्य भाग निकला । इसी आक्रमण में वीर सेनापति **डिसे** एक गोली के प्रहार से भूशायी हुवा । मरतेहुवे उसने कहा कि प्रथम शासक से कह दो कि 'यदि मरते हुवे मुझे कोई शोक है तो यही है कि मैं भविष्य संतान के स्मरण करने योग्य किसी कार्य को किये विना ही इस लोक से प्रस्थित हुवा हूं' ।

आस्ट्रियन सेना भाग निकली ; विजय पूरा हो गया । विजय के समय में शान्ति ही महापुरुष का धर्म है । फिर स्मरणीय मेरङ्गो विजय के पश्चात् नैपोलियन ने आस्ट्रिया के महाराज के पास शान्तिस्थापना के लिये पत्र लिखा । इधर से नैपोलियन का भय था और उधर से इङ्गलैंड की केबिनट रिश्वत पर रिश्वत दे रही थी । बेचारा आस्ट्रिया का राजा बीच में ही त्रिशंकु बन रहा था । नैपोलियन सन्धि के लिये पत्र लिख कर पेरिस को लौटआया । आस्ट्रिया सन्धि करना न चाहता था, अतः वह इधर उधर टालमटोल करने लगा । तब नैपोलियन ने सेनापति **मोरियो** को एक बड़ी सेना के साथ फिर आस्ट्रिया की ओर को प्रस्थित किया । **मोरियो** विजय पर विजय पाता हुवा आस्ट्रिया तक जा पहुंचा । **होहिन्लिण्डन** का युद्ध बहुत प्रसिद्ध है । उस युद्ध में **मोरियो** ने आस्ट्रियन सेना को बिल्कुल उजाड़ कर दिया । इस विजय के पश्चात् आस्ट्रिया को बहुत ही भय प्रतीत हुवा । भयभीत होकर, उस ने अन्त को नैपोलियन से सन्धि करने के लिये इच्छा प्रकट की । सन्धि शीघ्र ही स्थिर हो गई । नैपोलियन के विरोधी भी स्वीकार करते हैं, कि इतने बड़े विजय के पश्चात इतनी उदारसन्धि वही ही करसक्ता था । इस सन्धि द्वारा इटली को स्वतन्त्र किया गया और फ्रांस और आस्ट्रिया की हद्दें निश्चित की गईं ।

थोड़ी देर के लिये इंग्लैण्ड के रुपये का असर दूर हुवा, और योरप में शान्ति का दृश्य दिखाई देने लगा ।

तृतीय परिच्छेद ।

आजन्मशासक ।

प्रणमन्त्यनपायमुत्थितं प्रतिपच्चन्द्रमिव प्रजा नृपम् । (भारविः)

फ्रांस और आस्ट्रिया में सन्धि हो गई । कई वर्षों का आपस का घातक संग्राम शान्त हो गया । जिस दिन यह सन्धि हुई, वह दिन बड़ाही शुभ था । उस दिन देशोन्नति के सच्चे अभिलाषुकों के चित्तों में घनीभूतहर्ष उदित हुवा । उस हर्ष को और भी अधिक करने के लिये, नैपोलियन ने अमेरिका की संयुक्त रियासतों की गवर्न्मेन्ट के साथ भी सन्धि करली । पेरिस में दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने मिल कर, दोनों देशों को प्रेम सूत्र में बांध दिया । इस प्रकार नैपोलियन नें सब देशों के साथ सन्धि करली । केवल एक देश रहगया, जिसने निश्चय किया हुवा था, कि वह कभी भी नैपोलियन के साथ सन्धि न करेगा । वह देश इंग्लैण्ड था । इंग्लैण्ड चिरकाल से स्वतन्त्रतादेवी की छत्रच्छाया में विश्राम करता था । उस की स्वतन्त्रता की रक्षा का मुख्य कारण यह था—और अब भी है—कि वह चारों ओर से समुद्रद्वारा रक्षित है । समुद्ररूपी परिखा आक्रमण से उस की पालना करती है । समुद्र पर इंग्लैण्ड के पोतों के साम्हने किसी शक्ति की सुनवाई नहीं, उस का बेड़ा सारे देशों के बेड़ों से अधिक प्रबल है । जब तक उस के हाथ में अपने अदम्य तथा शीघ्रसन्निहित बेड़े का मन्त्र विद्यमान है, तब तक किसी भी शत्रु का प्रहार उसे निर्बल तथा परतन्त्र नहीं कर सक्ता ।

इंग्लैण्ड की कैबिनट इस बात से खूब परिचित थी, नैपोलियन भी इस से अनभिज्ञ न था । कुछ नैसर्गिक जातीय प्रतिद्वन्द्विता से, और कुछ अपनी अनन्त तथा उच्च महत्वाकांक्षा से प्रेरे जाकर, नैपोलियन ने, पहले दिन से ही इंग्लैण्ड को नीचा दिखाने का प्रयत्न किया था । मिश्र पर आक्रमण इसी निश्चय का प्रथम अंग था । नैपोलियन मिश्र द्वारा भारत पर आक्रमण कर के, इंग्लैण्ड देश को कान्तिरहित भूखण्ड बना देना चाहता था । इंग्लैण्ड देश भी शयनशील या बुद्धिहीन न था । वह भी पहले से ही ताड़ गया था कि नैपोलियन के सूक्ष्मशरीर में उस के आधिपत्य का एक महान् शत्रु विद्यमान है । जब तक नैपोलियन रहे, तब तक उस का इङ्ग-

लैण्ड के साथ युद्ध करते रहना आवश्यक था । दोनों दल ऐसा करने के लिये बाधित थे—वे इस से अतिरिक्त कुछ करही न सक्ते थे ।

प्रथम विचार से इन बीस वर्षों के युद्ध का सारा भार नैपोलियन पर आ पड़ता है, क्योंकि मिश्र पर आक्रमण करके उसी ने पहल की थी । किन्तु यदि हम यहीं तक ठहर जाएं और इसके भी पूर्व काल में न पहुंचें तो हम नैपोलियन के साथ अन्याय कर रहे होंगे । फ्रांस की राज्यक्रान्ति के समय इंग्लैंड ने फ्रांस पर आक्रमण करने में पहल की थी । उस समय नैपोलियन नहीं था, और नहीं कोई अन्य विजेता सेनापति था । उस समय फ्रांस ने किसी अन्य देश पर आक्रमण नहीं किया था; और देशों ने ही उस पर आक्रमण किया था । यदि नैपोलियन के युद्धों को उन आक्रमणों से जोड़ दें, तो प्रतीत होगा कि इंग्लैंड के साथ उसका युद्ध कोई व्यक्तिगत युद्ध न था, किन्तु राष्ट्रीय युद्ध का ही उत्तरभाग था ।

इस प्रकार से, इस युद्ध में पहल इंग्लैंड की प्रतीत होती है । किन्तु इंग्लैंड को तथा उसके अन्य साथियों को भी सर्वथा दूषित नहीं करना चाहिये । उनका कथन था कि फ्रांस की राज्यक्रांति से उनकी सामाजिकदशाओं में अशान्ति फैलने का भय है । इंग्लैंड को इस बात से विशेष डर था; अतः वह क्रान्ति के छोड़ देने के लिये फ्रांस को बाधित करना चाहता था । इसमें बहुत बड़ा सन्देह है कि उसके इन यत्नों ने क्रांति को दबाया या बढ़ाया ? मेरी सम्मति में विदेशीय आक्रमणों ने ही क्रांति को बढ़ाया; और उन्होंने ही उसे भीषण बनाया । क्रांति का इतिहास लिखते हुवे हम बता आये हैं कि जब कभी भी क्रांति ने घोर अत्याचार किये, विदेशीय दबाव से घबरा कर ही किये । अतः इंग्लैंड ने तथा उस के साथियों ने, फ्रांस की क्रांति से लड़ कर, अपना या फ्रांस का भला किया-ऐसा कहना ठीक नहीं । तथापि, यह एक बात फ्रांस की क्रांति के विरोधियों के दोष को कम अवश्य करदेती है । वे क्रांति के नियम से इतने भयभीत होगये थे,—वे इस रोग से इतने डर गये थे—कि वे किंकर्तव्यताविमूढ़ हो गये । किंकर्तव्यताविमूढ़ होकर, उन्होंने विना सोचे विचारे ही शस्त्रप्रहार कर दिया । डर या क्रोध से मनुष्य अंधा हो जाता है; यही अवस्था इन देशों की हुई ।

नैपोलियन के युद्ध इन्हीं पूर्वकाल के जातीय युद्धों के उत्तर भाग थे । पहले दो युद्धों में वह सर्वथा आत्मरक्षा के लिये लड़ा । टउलन में और फिर इटली में उसने फ्रांस देश की सीमा के रक्षणार्थ युद्ध किया । उसका तीसरा युद्ध मिश्र में हुवा ।

वहां पर वह आत्मरक्षार्थ नहीं लड़ा, किन्तु आक्रमणकर्त्ता था, इतने अंश में वह दूषणीय है। उस को क्या अधिकार था कि वह विना कारण ईजिप्ट पर आक्रमण करे ? साथ ही कहा जा सक्ता है कि उसे मिश्रद्वारा भारत पर आक्रमण करने का भी अधिकार न था। किन्तु हम यह भी कह सक्ते हैं कि इंग्लैंड को भी टउलन पर सेना उतारने का अधिकार न था, और आस्ट्रिया को इटली द्वारा फ्रांस की भूमि पर चढ़ाई करने के लिये भी कारण न था। दोनों ओर से अनधिकार चर्चा हो रही थी; जो बलवान् था वह जीत जाता था। असल में बात यह है कि इन युद्धों में कोई भी पक्ष किसी सत्यसिद्धान्त के लिये न लड़ रहा था। क्या इंग्लैंड और क्या नैपोलियन-दोनों एक दूसरे की शक्ति की वृद्धि से ईर्ष्या रखते थे-कोई भी यह न चाहता था कि दूसरा मेरे से बढ़ जाय। यदि दोषी थे तो दोनों-यदि आत्मरक्षा के आधार पर निर्दोष थे तो दोनों। दोनों एक दूसरे से जले हुवे थे, जिन भी साधनों से वे सक्ते थे, एक दूसरे को नीचा दिखा देते थे। नैपोलियन के पास अपनी स्थलसेना का शस्त्र था। उसके द्वारा कभी वह सारे इङ्ग्लैंड-रहित भूमिष्ठ योरप को काबू करके इंग्लैंड का व्यापार बंद करना चाहता था; कभी वह एक दम जहाज़ों द्वारा इङ्ग्लैंड में पहुंच कर उसे दबाना चाहता था; और कभी द्वीपों पर राज्य जमा कर अपना सामुद्रिक आधिपत्य जमाना चाहता था। इंग्लैंड के हाथ में अदम्य सामुद्रिक शक्ति थी, और रिश्वत देने के लिये धन था। वह उनके द्वारा फ्रांस की सामुद्रिक शक्ति को छिन्न भिन्न करता तथा योरप के अन्य नरेशों को उस से लड़वाता था। इन दोनों ओर के शस्त्रों में से कौनसा अधिक आदरणीय तथा कम नीच था ? इसका निश्चय हम पाठकों पर ही छोड़ते हैं ? किन्तु इतना कह देना चाहते हैं कि दोनों पक्षों में से किसी एक को दूषित करना बुरा है। नैपोलियन अपनी महत्त्वाकांक्षा को अपने से दूर न कर सक्ता था और इंग्लैंड भी अपने बड़प्पन की अभिलाषा का त्याग न कर सक्ता था। बीस बरस तक नैपोलियन का हाथ ऊंचा रहा, क्योंकि उसकी असाधारण शक्तियें स्थिर रहीं; उस के पीछे वह हार गया, क्योंकि ईश्वर ऐसे एक मनुष्य को संसार में नहीं रखना चाहता, जिस की महत्त्वाकांक्षा से सारे नरेशों को भयभीत रहना पड़े; और साथ ही क्योंकि उस समय इंग्लैंड द्वारा नैपोलियन के विरुद्ध एकत्र की हुई शक्ति, नैपोलियन की असाधारण शक्तियों से भी अधिक हो गई थी। नैपोलियन का इन संग्रामों तथा अशान्तियों में इतना ही विशेष हिस्सा था कि वह असाधारण शक्तिसम्पन्न था।

शेष रही विजय की इच्छा-उसमें अन्य कोई देश उससे कम नहीं है। उसने मिश्र को जीतना चाहा, क्या उसके लिये वह दोषी था ? यदि वह था तो क्या अब मिश्र स्वतन्त्र है ? वह सार्वभौम साम्राज्य की चाहना करता था, क्या उसके लिये वह दोषी था ? यदि वह था तो क्या इस समय ऐसे देश नहीं हैं-और क्या उस समय ऐसे देश न थे-जो अपने भर सक कभी भी अपना राज्य फैलाने में कसर नहीं छोड़ते ? और वे देश भी ऐसे जो इस कार्य्य के लिये उस समय नैपोलियन को दूषित करते थे । जर्मनी पर ही दृष्टि डालिये-क्या वह किसी से कम है ? शायद नैपोलियन इस कार्य्य के करने में बहुत शीघ्रता करने का दोषी था । किन्तु वस्तुतः, वह पश्चिम की अशान्तता तथा प्रहारकता का ही आदर्श था; इस सार्वत्रिक गुण या दोष के लिये एकाकी उस को गुणी या दोषी न ठहराना चाहिये । अस्तु ।

जिस विरोधभाव का ऊपर वर्णन हुवा है, वह इस समय भी खब ज़ोरों पर था । फ्रांस और सब के साथ सन्धि कर चुका था, एक इंग्लैण्ड ही शेष था। फ्रांस के वे भाग हुवे कुलीन पुरुष भी, जो पुराने बोर्बोन राजाओं के पुनरागमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, इंग्लैंड में डेरे डाले पड़े हुवे थे । उन के कई भाई बन्द फ्रांस में भी थे । वे चुप चाप न थे, कोई न कोई शरारत करते ही रहते थे । विशेषतया इस समय, नैपोलियन के मारने के लिये वे यत्नवान् थे । उस से पहले क्रान्ति एक व्यक्ति पर आश्रित न होती थी, उन का आश्रय एक दल या एक सभा होती थी ; अतः उन्हें एक ही चपेड़ में मार गिराना कठिन था । किन्तु अब राज्य का तथा क्रान्ति का स्तम्भ केवल एक नैपोलियन था । राजपक्षपाती समझते थे कि उस एक के गिरते ही अब पुराने राजाओं का आजाना कठिन नहीं है। अतः नैपोलियन के प्राणघात के लिये वे ताक में लगे रहते थे । इस समय भी उन्होंने एक ऐसी ही चेष्टा की ।

एक दिन नैपोलियन गाड़ी में बैठ कर एक नाटक गृह की ओर को जा रहा था । उस के आने का समय पहले से ही ताड़ कर, घातकों ने उसी रास्ते क एक ओर एक गाड़ी खड़ी कर रक्खी, जिस में बारूद भरा हुवा था । गाड़ी के चलाने के लिये एक १५ वर्ष की जवान लड़की को नियत किया । जब नैपोलियन की गाड़ी उस के पास पहुंची, घातक ने उड़ाने के लिये बारूद में आग दी। आग लगने में एक क्षण भर की देरी हो गई । उतनी देर में नैपोलियन का भाग्य और गाड़ी उसे आगे खींचकर ले गये। कई कहते हैं कि नैपोलियन के कोचवान ने उस दिन शराब

की असाधारण राशि पेट में डाल ली थी, इस लिये उस के घोड़े सरपट से भी कुछ अधिक तेज़ भाग रहे थे। वे शीघ्र ही, उस बारूद की गाड़ी से आगे निकल गये। बारूद फट पड़ा। आस पास के कई घर गिर गये, सारा पेरिस नगर जड़ से हिल गया, किन्तु नैपोलियन को कोई हानि न पहुंची। उस का मुख पूर्ववत् ही शान्त तथा गम्भीर रहा। सारे पेरिस के लोगों ने पहले समझा कि नैपोलियन का चरित समाप्त हो गया, किन्तु जब उन्होंने नाटकगृह में उसे उन्हीं छोटे २ दृढ़ कदमों से चलते हुवे देखा, तब तो उन के आल्हाद की सीमा न रही। उन को नैपोलियन की अदम्यता पर और भी विश्वास हो गया, और वे उस से और भी अधिक प्यार करने लगे नैपोलियन ने पीछे से इस पाप कर्म के करने वाले दोषियों का पता लगाया। दो राजपक्षपातियों को फांसी दी गई। कुछ एक क्रान्ति के पक्षपातियों पर भी सन्देह हुवा, उन्हें देश–निकाला दिया गया।

इस उपर्युक्त घटना से और कोई लाभ हुवा या न हुवा, किन्तु इतना अवश्य हुवा कि नैपोलियन पहले की अपेक्षा अधिक सावधान हो गया। उस ने इन सब शरारतों के मूल में घुसने का यत्न किया। विचार करने पर उसे ज्ञात हुवा कि ये सब शरारतें, ये सब राजनैतिक पाप चेष्टायें, दूर नहीं हो सक्तीं जब तक कि निवासियों का कोई स्थिर धर्म न हो। देशनिवासियों का और राज्यशासन का, धर्म के साथ सम्बन्ध करना वह आवश्यक समझता था। संसार में सैकड़ों सर्वथा गुण-रहित राज–वंश केवल इस लिये शासन करते रहे हैं कि वे प्रजा की दृष्टि में ईश्वर के प्रतिनिधि और धर्म के रक्षक थे। धर्म के विना राज्य ऐसा ही है जैसा तने के विना वृक्ष। विना धार्मिकसम्बन्ध के, कोई भी शासन जीवित नहीं रह सक्ता। नैपोलियन ने भी अपने शासन को धर्मरूपी स्तम्भ पर स्थिर करने का निश्चय किया। एक बड़ा भारी उत्सव किया गया। क्रिश्चियन धर्म के गुरु पोप की अनुमति से, उस उत्सव में आघोषित किया गया कि फ्रांस देश की सरकार का राज–धर्म आज से रोमन कैथोलिक क्रिश्चियन धर्म होगा। क्रान्ति के भावों से भरी हुई नैपोलियन की सेना ने इस आघोषणा को बहुत नाक भौं चढ़ा कर सुना; किन्तु नैपोलियन इस घोषणा के राजनैतिक महत्त्व को जानता था। वह वस्तुतः क्रिश्चियन था–यह कहना बहुत सत्य नहीं। वह प्रायः कहा करता था कि मेरी सहानुभूति क्रिश्चियन धर्म की अपेक्षा मुहम्मदी धर्म के साथ अधिक है। मिश्र में यह स्पष्ट हो गया था कि धर्म को वह केवल राजनैतिक शस्त्र समझता है, इस के सिवाय और कुछ नहीं।

धर्मस्थापना के कार्य ने नैपोलियन के योरपस्थ शत्रुओं की संख्या बहुत कम कर दी। जो लोग उसे क्रान्ति का प्रतिनिधि समझ कर, उस से द्वेष रखते थे, उन्होंने अपनी सम्मति को बदल लिया। इस प्रकार अवशिष्ट शत्रुओं को मित्र बनाकर, उस ने अपने एकमात्र विरोधी इङ्गलैंड से भी सन्धि करने का विचार किया। कई लोगों की सम्मति है, कि नैपोलियन स्वभाव से ही युद्धप्रेमी था। यह उन लोगों का भ्रम है। वह स्वभाव से युद्धप्रेमी न था। हां, वह आत्ममहत्त्वाकांक्षा का शरीरधारी रूप था। वह स्वयं बड़ा होना चाहता था और अपने महत्त्व के साथ फ्रांस के महत्त्व को सर्वथा बंधा हुवा समझता था। उस महत्त्वाकांक्षा के पूरा करने के लिये, संसार में सब से बड़ा बनने के लिये, उसे जो भी साधन उपयुक्त प्रतीत होते थे वह उन्हें काम में लाता था। जब वह समझता था कि उस के तथा देश के गौरव के लिये शान्ति की स्थापना आवश्यक है, तब वह शान्ति के लिये यत्न करता था। और जब वह युद्ध के विना इस महत्त्व को कम होता समझता था, तब उस से भी न झिझकता था। वह निसर्गतः क्रूर या युद्धप्रेमी न था। आहतों और मरे हुवों को देख कर उसे शोक होता था, अन्यों के दुःख से वह दुःखी भी होता था। वह स्वयं युद्ध न चाहता था, किन्तु, जब अन्य कोई उपाय अपने तथा देश के गौरव की रक्षा का उसे न सूझता था, तब उस की सैंही प्रकृति प्रादुर्भूत हो जाती थी। शान्ति और युद्ध की कलाओं में वह समानतया प्रवीण था। जहां सैंही प्रकृति का प्रादुर्भाव हुवा, वहां फिर युद्ध के वे चमत्कार दिखाई देते थे, जिन की उपमा के लिये आप सारे इतिहास को खोजिये—तो भी आप पाने में कृतकृत्य न होंगे।

इंग्लैण्ड के साथ सन्धि करके, नैपोलियन अपने देश के व्यापार की रक्षा करना चाहता था। सारे समुद्र इंग्लैण्ड के जहाजों से अच्छादित थे, अतः फ्रांस का सामुद्रिक व्यापार मर रहा था। नैपोलियन ने मित्रभाव से शान्तिस्थापना के लिये यत्न किया, किन्तु उसे उस का टकेसा जवाब मिला। तब दूसरा उपाय उसके पास युद्ध का था। किन्तु इंग्लैण्ड के साथ सामुद्रिक युद्ध करना नैपोलियन के लिये कठिन ही क्या, सर्वथा असम्भव था। तब नैपोलियन ने दूसरे मार्ग का अवलम्बन किया। उस ने इङ्गलैण्ड के पास वाले फ्रांस के किनारे पर कई दुर्ग बनाये। वे दुर्ग इस प्रकार से बनाये गये थे कि उन द्वारा दूर २ तक समुद्र वश में आ सके और उतने स्थान में शत्रु का कोई भी पोत न घुस सके। तब उस ने उस तट पर जहाजों का एक बेड़ा तय्यार करना शुरू किया। बेड़ा तय्यार करने के साथ ही,

उस ने अपने सरकारी अखबार में कई लेख लिखे, जिन में दिखाया कि यदि इंग्लैण्ड अब भी फ्रांस के साथ सन्धि न करेगा तो मैं उसे एक वार मज़ा चखा दूंगा । ब्रिटिश बेड़े के ज़रा असावधान होने पर यदि मैं अपना बेड़ा लेकर इङ्ग्लैण्ड के तट पर पहुंचगया, तो फिर लन्दन की कैबिनट की खैर नहीं। पहले तो इंग्लिश सरकार ने इसे केवल फोकी धमकी समझा । उन्होंने अपने नो-सेनापति नेल्सन को फ्रांस के बेड़े के ध्वंस के लिये भेजा । । गर्व और अभिमान में चूर, नाईल के विजेता ने दो बड़े ज़बर्दस्त आक्रमण फ्रेंच बेड़े पर किये, किन्तु उसे अपनी हानि कर के निराश लौटना पड़ा। तब तो लन्दन की कैबिनट के दिल में सच मुच भय का संचार हो गया । जो कार्य सान्त्वना से न हो सका था, वह धमकी से हुवा । जो कार्य सीधी बात से न हो सका था, वह लात से हुआ। ब्रिटिश सरकार ने सन्धिका प्रस्ताव किया, नैपोलियन ने उसे झट स्वीकार कर लिया । फ्रांस और इंग्लैण्ड से समान दूरी पर स्थित आमियां (amiens) स्थान पर दोनों ओर के राजदूत इकट्ठे हुवे। उन्होंने सन्धि की जो शर्तें नियत कीं, उन द्वारा नैपोलियन को मिश्रदेश छोड़ना पड़ा। इंग्लैण्ड ने माल्टा पर से अपना अधिकार उठा लिया । इटली के प्रजातन्त्र राज्यों की स्वाधीनता स्विकार की गई, और साथ ही कुछ निश्चित सामुद्रिक उपनिवेशों को छोड़ कर, औरों पर से इंग्लैण्ड का प्राधान्य बन्द किया गया । इन शर्तों पर सन्धि स्वीकृत हुवी ।

इंग्लैण्ड के साथ सन्धि होजाने पर, नैपोलियन की कीर्ति आगे से दुगनी हो गई । पहले वह केवल युद्धवीर ही प्रसिद्ध था, अब वह सन्धिवीर भी प्रसिद्ध हो गया । इस सन्धि को सभी लोगों ने कई सांग्रामिक विजयों से बढ़ कर विजय समझा। नैपोलियन सब देशों में 'शान्ति का देव' के नाम से प्रसिद्ध हो गया । इस तरह से बाहिर शान्ति और विजय—दोनों की ध्वजा को साथ ही लहरा कर नैपोलियन फ्रांस को दृढ़ करने के लिये उद्यत हुवा । जब तक बाह्य युद्धों से निश्चिन्तता प्राप्त न हो—तब तक आभ्यन्तर उन्नति असम्भव रहती है । नैपोलियन ने अब बाह्य शान्ति स्थापित करली, अतः आभ्यन्तर उन्नति उसके लिये सम्भव हो गई । सब से प्रथम कार्य्य जो आभ्यन्तर उन्नति के लिये उस ने किया, शिक्षा का सुधार या शिक्षा को नये ढांचे पर ढालना था । उसने कई नये विद्यालय स्थापित किये, और उनकी पाठविधि भी नई बनाई । उस पाठविधि में दर्शन तथा इतिहास की न्यूनता करके, उनके स्थान पर साहित्य तथा शस्त्रविद्या की अधिकता की गई । शस्त्र-

विद्या की शिक्षा अधिक करने का उद्देश्य स्पष्ट है। नैपोलियन देश की रक्षार्थ अच्छे योद्धाओं का तय्यार करना आवश्यक समझता था। किन्तु दूसरे परिवर्तन का अभिप्राय समझना कठिन है। साहित्य की शिक्षा को प्राधान्य क्यों दिया गया? इसका उत्तर सहल नहीं। इसी प्रकार दर्शनशास्त्र का पाठविधि से कम कर देना भी उस के अभिप्रायों के अनुकूल था, क्योंकि वह जानता था कि शुद्ध दार्शनिक विचार ही क्रान्ति जैसी घोर आपत्तियों के हेतु होते हैं। किन्तु इतिहास को, जो शान्ति तथा स्थिरता का गुरु है, उस पाठविधि में से उसने क्यों उड़ा दिया? यह प्रश्न भी बहुत कठिन है।

अपने राज्य की स्थिरता के लिये नैपोलियन ने एक और भी उपाय किया। किसी भी एकव्यक्तिप्रधान शासन का स्थिर रहना दुःसाध्य होता है, जब तक वह योद्धाओं की एक श्रेणि के आश्रित न हो। पुराने राज्यों में, जहां चिरकाल से राजकीय सत्ता की नींव दृढ़ होती चली आई हो, कुलीनों की एक श्रेणि होती है, जो अपनी रक्षा के लिये राजा का मुख देखती है, और अत एव राजा को भी विपत्ति में सदा सहायता देती है। क्रान्ति की आंधी ने इस श्रेणि का चिन्ह तक फ्रांस में न छोड़ा था। नैपोलियन ने फिर से इस श्रेणि को जीवित करने के लिये एक आदर का चिन्ह (Legion of Honour,) निश्चित किया जो बड़े २ योद्धाओं, चित्रकला के विद्वानों तथा ज्ञानियों को दिया जाता था। जिन स्तम्भों के विना कोई राज्यप्रासाद खड़ा नहीं हो सक्ता, उनकी रचना करके नैपोलियन फ्रांस के राजनियमों के संशोधन में प्रवृत्त हुवा। उसने कई एक बड़े ही प्रशस्त राजनियमज्ञों को एकत्र करके, एक स्मृति बनाने के लिये आदेश किया। नैपोलियन ने अपने जीवन में जितने भी भावात्मक कार्य्य किये हैं, उन सब में से अधिक स्थिर कार्य्य इस स्मृति का तय्यार कराना था। कहते हैं कि यह नैपोलियन-स्मृति (Code Napoleon) अपनी तरह की स्मृतियों में से एक है। प्रसिद्ध विद्वान् लार्ड रोज़बरी की सम्मति है कि अब तक फ्रांस के राजनियमों पर इस नैपोलियनस्मृति का ठप्पा लगा हुवा है। कई ईर्ष्यालु तथा दिलजले ऐतिहासिक नैपोलियन के हाथ से इस स्मृति के बनाने का पुण्य छीनना चाहते हैं। वे कहते हैं कि यह स्मृति पहले से ही बन रही थी, नैपोलियन केवल उसका पूरा करने वाला ही हुवा है। किन्तु ऐतिहासिकखोजों ने सिद्ध कर दिया है कि नैपोलियन की यह स्मृति सर्वथा निराली थी, पहले की किसी भी नियमपुस्तक का संशोधनरूप न थी।

इन सब लोकहितकारी कार्य्यों ने नैपोलियन के कीर्तिस्तम्भ को बहुत ही ऊंचा कर दिया । ऐसे शान्तिस्थापक और सुख देने वाले शासक के साथ, फ्रांस की प्रजा अपने पिता की तरह प्यार करने लगी । सारे फ्रांसनिवासी अनुभव करने लगे कि नैपोलियन उनकी जाति का गढ़ में से निकालने वाला, तथा उन्हें गजपृष्ठ पर चढ़ाने वाला हुवा है । प्रजा के प्रतिनिधियों की सभा में यह प्रश्न होने लगा कि प्रथमशासक के इन सब उपकारों का क्या प्रतिफल दिया जाय ? हर एक फ्रांस निवासी यह अनुभव करता था कि उसे अवश्य किसी तरह नैपोलियन के प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करनी चाहिये , किन्तु यह किसी के भी समझ में न आता था, कि वह कृतज्ञता किस रूप में हो । यह विषय न्यायसभा में विचारार्थ उपस्थित हुवा । कुछ भी अन्तिम निश्चय न करके, उसने वह विषय सेनेट में भेज दिया । सेनेट के कई सभासद् प्रतिनिधिरूप से नैपोलियन के पास उपस्थित हुवे, और उन्हों ने उस से निवेदन किया कि 'सारी फ्रेंचजाति आपकी कृतज्ञ है और आपको उस कृतज्ञता का कुछ प्रतिफल देना चाहती है । आप जो कुछ चाहेंगे, वही आप को मिलेगा ।'

नैपोलियन ने सेनेट के इस प्रस्ताव का जिन शब्दों में उत्तर दिया, वे स्मरणीय हैं । उसने कहा कि 'मैं आप लोगों के प्रेमोपहार से अधिक और किसी भी इनाम की इच्छा नहीं रखता । मैं अपने देश की सेवा को ही अपने जीवन का उद्देश्य समझता हूं । यदि आप लोगों की सेवामें मैं मर भी जाउं तो मैं अपने आपको धन्य समझूंगा ।'

इस उत्तर के पहुंचने पर फिर सेनेट में विचार प्रारम्भ हुवा । बहुत विचार के अनन्तर, सेनेट ने यही निश्चय किया कि नैपोलियन को जन्म भर के लिये देश का प्रथम शासक निश्चित किया जाय । अभी तक वह केवल दस वर्ष के लिये ही प्रथम शासक था, अब उसे जन्म भर के लिये यह अधिकार दिया गया । जब नैपोलियन को सेनेट का यह प्रस्ताव भेजा गया, तब उसने उन्हें जो उत्तर भेजा वह भी बहुत स्मरणीय है । उसका उत्तर यह था—'आप लोगों के इस प्रेम का चित्र सदा मेरे दिल पर खिंचा रहेगा । मेरी सेवाओं से आप प्रसन्न हुवे हैं, इसी में मुझे सन्तोष है, किन्तु आप मुझ से कुछ और भी सेवा कराना चाहते हैं । मैं उस के करने के लिये सर्वथा तय्यार हूं—किन्तु मुझे आपकी सम्मति के अतिरिक्त सर्व साधारण की सम्मति भी अभीष्ट है । यदि सर्वसाधारण की सम्मति भी वही हो जो आप सब की है तो मैं अपना जीवन देश के लिये दे देने में अपना अहोभाग्य समझूंगा ।'

नैपोलियन की इच्छा के अनुसार, यह प्रस्ताव फ्रांस के सारे निवासियों के सामने उपस्थित किया गया। फ्रांस के ३५,६८,८८५ निवासियों ने यह सम्मति दी कि नैपोलियन को जीवन भर के लिये शासक बनाया जाय, केवल ८ सहस्र की सम्मति इस प्रस्ताव के विरुद्ध थी। सारे देश की बहु सम्मति से नैपोलियन जीवन भर के लिये फ्रांस का शासक बनाया गया, किन्तु तब भी कई ऐतिहासिक हमें बताते हैं कि वह अपनी धक्का मुश्ती से देश का राजा बना। यदि शान्तिस्थापक राज्य का नाम ही धक्का मुश्ती है, तो नैपोलियन अवश्य धक्का मुश्ती से शासक बना था; यदि सारे देश की बहु सम्मति ही धक्का मुश्ती है, तब भी नैपोलियन धक्का मुश्ती से ही शासक बना था; किन्तु यदि धक्का मुश्ती आततायिपने का नाम है, तो नैपोलियन के शासक बनने के विषय में उस शब्द का प्रयोग करना सत्य का अपलाप तथा शब्द का दुरुपयोग करना है।

क्या सचमुच नैपोलियन धक्का मुश्ती से शासक बना? इस प्रश्न का उत्तर हम अपने पाठकों की सम्मति पर ही छोड़ देते हैं।

चतुर्थ परिच्छेद।

साम्राज्य लब्धि।
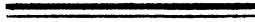
प्राकाट्यं स्वगुणोदयेन गुणिनः संयान्ति किं जन्मना।

राजनीति का सब से कठिन परिच्छेद सन्धिपरिच्छेद है। अन्य देश के साथ सन्धि करना ही राजनैतिक बुद्धिमत्ता की सच्ची कसौटी है। सेना तय्यार करके शत्रु पर यथावसर आक्रमण करना भी सहल कार्य्य नहीं, तथापि वह सन्धि के दुःसाध्य कार्य्य से बहुत सहल है। युद्ध में हम सेनाओं से साहाय्य ले सक्ते हैं, किन्तु जब एक कमरे में हम अपने शत्रु के प्रतिनिधियों के साथ सन्धि की शर्तें बना रहे हों, तब सिवाय हमारे अपने मग़ज़ के और कोई सहायक नहीं हो सक्ता। युद्धनिपुण मनुष्य जिस प्रकार की साहसिक चेष्टाओं का अभ्यासी हो जाता है, राजनीतिज्ञ पुरुष वैसी साहसिक चेष्टायें नहीं कर सक्ता। यदि वह ऐसी साहसिक चेष्टायें करे, यदि वह अपने आप को थोड़ी सी भी जोखम में डालदे, तो फिर वहां से बचना कठिन हो जाता है। वह सन्धि जो एक वार पत्र पर आ गई, वे अक्षर जो एक वार काग़ज़ पर लिखे गये, फिर मिटाये नहीं जा सक्ते। संसार में युद्ध और सन्धि में समान योग्यता रखने वाला पुरुष दुर्लभ है, क्योंकि इन दोनों कार्य्यों के पूर्ण करने के लिये भिन्न २ प्रकार की योग्यतायें आवश्यक होती हैं, किन्तु नैपोलियन बोनापार्ट इन दोनों कलाओं में निपुण था। इसीलिये वह महापुरुष था। केवल योद्धा युद्धों को जीत सक्ता है, किन्तु लोगों के मनों को वह नहीं जीत सक्ता। नैपोलियन केवल योद्धा न था, वह योद्धा के साथ कुछ और भी था। वह सन्धि करने में, और राजनीति के नीच ऊंच देखने में भी सिद्धहस्त था। आमियां की सन्धि इस में ज्वलन्त प्रमाण थी।

आमियां की सन्धि नैपोलियन और इंगलैण्ड के बीच में हुई थी। इंगलैण्ड अपनी नीतिमत्ता के सामने हिमालयपर्वत की चोटी को भी वामन ख्याल करता था। नैपोलियन ने नीति में इंगलैण्ड को भी जीत लिया। जब आमियां की सन्धि हो रही थी, तब इङ्गलिश कैबिनट न जानती थी कि वह अपने आप को कैसे दुर्मोक पाश में बांध रही है। तब उस ने समझा कि चलो हमारे हाथ से माल्टा द्वीप गया, तो नैपोलियन को मिश्र देश छोड़ना पड़ा, मामला बराबर हो गया।

उस समय उसने यह न सोचा कि मिश्र के निकल जाने से नैपोलियन की मुट्ठी ज़रा भी ढीली नहीं हुई, किन्तु माल्टा के खो जाने से इङ्गलैण्ड के गौरव की कुञ्जी ही नष्ट हो गई। इङ्गलैण्ड का राजनैतिक महत्व सामुद्रिक बल के कारण ही है। मैडिटेरेनियन समुद्र में से इङ्गलैण्ड के जहाज़ों का आधिपत्य उठा दीजिये, और आप उसे 'यावच्चर्म च दारुच' के सिवाय कुछ न पायेंगे। माल्टा मैडिटेरेनियन की राजधानी है। उस के निकल जाने पर इङ्गलैण्ड समुद्रों का नादिरशाह नहीं रह सक्ता था। सन्धि करते हुवे इङ्गलिशकैबिनट को यह बात नहीं सूझी, नैपो-लियन को सूझ गई। सन्धि हो गई। जब ब्रिटिश सरकार माल्टा से अपनी सेनाओं को उठाने के लिये बाधित हो गई, तब उसे यह सूझा कि वह दिन दहाड़े लूट ली गई। इधर इसे यह चिन्ता लगी, उधर नैपोलियन इटली की रिपब्लिक का भी सभापति बन गया, और हालेण्ड में भी उस ने अपनी सेना भेज रक्खी थी। नैपोलियन के ये कार्य्य संसार की शान्ति के भंग के लिये पर्य्याप्त थे, और इङ्गलैण्ड को नैपोलियन के प्रति सचेत करने के लिये भी पर्य्याप्त थे, किन्तु इङ्गलैण्ड से सन्धि तुड़वाने के लिये पर्य्याप्त न थे। यदि राजनैतिक सन्धियें तोड़ने की प्रथा चल जाय, तो पृथिवी तल पर कभी भी तलवारों के बजने का शब्द बन्द न हो। नैपोलियन जो कुछ कर रहा था, वह सन्धि के बाहिर था। सन्धिद्वारा उस पर कोई दोष न दिया जा सक्ता था। मिश्र से अपनी सेना बुला लेने के लिये उसे तीन मास की मुहलत दी गई थी, उसने दो मास में ही ईजिप्ट ख़ाली कर दिया; किन्तु इङ्गलैण्ड से माल्टा नहीं छूटा। पहले सन्धि करने की मूर्खता उस समय की ब्रिटिश सरकार ने करली, तब फिर उसे पालन करने में वह हिचकिचाने लगी। क्या सन्धिकला में नैपोलियन इङ्गलैण्ड की केबिनट को नहीं जीत गया?

जब लन्दन की केबिनट ने माल्टा छोड़ने में आनाकानी शुरूकी, तब नैपोलियन घबराया। सब से प्रथम, उसे यह पता था कि जब तक मेडिटेरेनियन पर अंग्रेज़ी सिक्का चलता है, तब तक वह अपनी शक्ति को महत्वाकांक्षा के अनुकूल नहीं बढ़ा सक्ता। दूसरे उसे यह भी ध्यान था कि यदि पहले कीगई सन्धी के अनुसार वह इङ्गलेंड से माल्टा को ख़ाली न करायेगा तो सारे देश उस की अशक्तता से लाभ उठायेंगे। इन दोनों बातों पर विचार करके, उसने माल्टा ख़ाली करने के लिये तकाज़े पर तकाज़ा शुरू किया। इंगलैण्ड के पास कोई सीधा उत्तर न था। उपयुक्त उत्तर न मिलने से मनुष्य निसर्गतः चिड़ चिड़ा हो जाता है। ब्रिटिश केबिनट

भी इस समय आपे से बाहिर होगई । इंग्लैण्ड के पत्रों में नैपोलियन के आचारों पर झूठे और गन्दे आक्षेप किये जाने लगे । इंग्लैण्ड के पेम्फिलट लिखने वालों नें उसे दुराचारी अत्याचारी और मिथ्याचारी लिखा । नैपोलियन ने ब्रिटिश सरकार के पास शिकायत की तो जवाब मिला कि इङ्गलैंड में पत्रों को पूरी स्वतन्त्रता है अतः वह ऐसे आक्षेपों को नहीं रोक सकती । यद्यपि यह सब लोगों को ज्ञात है कि जब ब्रिटिश सरकार उचित समझती है तब इङ्गलैंड में भी वाक्य तथा लेख की स्वाधीनता के छीनने को बुरा नहीं समझती । और न ही यह बुरा है । सरकार समाज की रक्षार्थ है, यदि वाक्य तथा लेख से सामाजिक स्थिति खतरे में हो तो उनके मुंह पर भी लगाम लगा देना बुरा नहीं । किन्तु,शायद ब्रिटिश मरकार ने नैपोलियन के ऊपर झूठे तथा गन्दे दोष लगाने को बुरा नहीं समझा था।

इन अधिक्षेपों से नैपोलियन भी आपे से बाहिर हो गया । उसने इन आक्षेपों के उत्तर अपने हाथ से लिख कर, अपने राजकीय पत्र मौनीटर में प्रकाशित किये । उन उत्तरों में उस ने आक्षेप कर्ताओं के साथ ही ब्रिटिश सरकार को भी आड़े हाथों लिया । आखिर फ्रांस में रहने वाले ब्रिटिश सरकार के राजदूत ने नैपोलियन से आकर कहा कि वह यदि हालैण्ड को खाली करदे तो इङ्गलैंड माल्टा को खाली कर देगा । साथ ही उसने यह भी कहा कि यदि यह शर्त सात दिनों के अन्दर स्वीकृत न हो तो वह पेरिस छोड़ जायगा । यह सर्वथा स्पष्ट है कि इङ्गलैड को ऐसी शर्त उपस्थित करने का कोई अधिकार न था और ना ही नैपोलियन इस के मानने के लिये बाधित था । इस का मतलब यही था कि इङ्गलैंड लड़ाई पर तुला हुवा है,चाहे कुछ हो वह युद्ध करके छोड़ेगा । नैपोलियन ने भी खम ठोक कर कहा कि 'इङ्गलैंड हम से अवश्य युद्ध करना चाहता है । तब हम उसे युद्ध देंगे और आमृत्युयुद्ध देंगे'। शायद नैपोलियन का अभिप्राय इङ्गलैंड की मृत्यु से था, किन्तु दैवको इसका उलटा अभिप्रेत था । सातवें दिन इङ्गलैंड का राजदूत पेरिस छोड़ कर चला गया। उसी दिन नैपोलियन ने भी अपनी प्रजा के सामने युद्ध की घोषणा देदी ।

क्या इस युद्ध के करने में इङ्गलैंड दोषी था? आत्मरक्षा और योरप की शान्ति-रक्षा के लिये यह आवश्यक था कि नैपोलियन के साथ युद्ध किया जाता, इतने अंश में इङ्गलैंड का कार्य्य दूषणीय नहीं । पहले एक सन्धि पर स्वीकृति के हस्ताक्षर कर के, पीछे से उस का आदर न करने में निःसन्देह इङ्गलैंड दूषित था । इस युद्ध के प्रारम्भ

का वास्तविक उत्तरदातृत्व किस पर है ? निःसन्देह इस के उत्तरदातृत्व को दोनों पक्षों पर बांट देना चाहिये । नैपोलियन इस पृथिवी के शासकों से इतना अधिक शक्तिशाली था और वह अपनी शक्तिशालिता को इतनी बहुतायत से प्रकाशित करता रहता था कि अन्यदेशों के शासकों के मनों में भय उत्पन्न होना स्वाभाविक था। इस कारण को भुलाना नहीं चाहिये। हां, इस युद्ध का सीधा उत्तरदातृत्व इंग्लैंड पर ही था। इङ्गरसोल, थेयर्स, और सरवाल्टर स्काट आदि इंग्लिश इतिहासज्ञ भी यह स्वीकार करते हैं। इस शान्तिभंग का उत्तरदातृत्व इंग्लैंड पर है, फ्रांस पर नहीं। विलियम हैज्लिट यह दिखाते हुवे कि इस युद्धारम्भ का उत्तरदातृत्व इङ्गलैंड पर था, कहता है कि 'माल्टा, केवल एक पाप युक्त (Criminal) बहाना था। कहा जाता था कि फ्रांस का बढ़ता हुआ प्रभाव हमारी एशिया की हुकूमत पर छाया डाल रहा है। किन्तु क्या उन्हीं दिनों में हम भारतवर्ष में अपने आधिपत्य को नहीं बढ़ा रहे थे ? यदि कहीं सन्धिका भंग करने वाले हम न होते, और फ्रांस होता तो क्या केवल इतने बहाने को हम पर्य्याप्त समझते ? किन्तु असल में बात यह है कि हम अपने आप को सदा उन नियमों से ऊपर समझते हैं, जिन्हें हम दूसरों पर सदा लगाते रहते हैं'। अङ्गरेज़ इतिहासज्ञ सर् आर्चिबाल्ड एलिसन की भी सम्मति का यही सारांश है।

इस युद्धारम्भ से पूर्व ही इंग्लैण्ड ने एक और भी अद्भुत कार्य्य किया। ब्रिटिश सरकार ने अपने सामुद्रिक बेड़े को पहले से ही आज्ञा दे रक्खी थी, कि वह मौका पाते ही समुद्र में जितने फ्रांसीसी छोटे मोटे जहाज़ मिलें उन सब को अपने काबू कर ले। अभी युद्ध की घोषणा न हुई थी, कि अंग्रेज़ी बेड़े ने फ्रांस के व्यापारियों के दो सौ बेड़े पकड़ लिये। कहते हैं कि उन में करोड़ों रुपयों का माल था, वह भी लूट लिया गया। पहले सन्धि करने में मूर्खता दिखा कर, उस का क्रोध उस समय की केबिनट ने अब निकाला। नैपोलियन ने इस घोर ज़बर्दस्ती के कार्य्य का उत्तर, वैसी ही निर्दयता से दिया। उस समय फ्रांस में १८ और ६० बरस के बीच की आयु के जितने अंग्रेज़ विद्यमान थे, कैद कर लिये गये। यह इस युद्ध का प्रथम परिणाम था।

इन घटनाओं को बारंवार आंखों के सामने आता हुवा देख कर, एक मनुष्य का चित्त स्वभावतः घबरा कर पूछने लगता है कि क्या यह सारी शासनकला, यह सारा राज्ययन्त्र, यह पुलीस सेना और न्यायालय, ये तोप बंदूक और जहाज़, ये सारे राजकीयसाधन, इन्हीं अत्याचारों के लिये, बेचारे व्यापारियों को लूटने और

निरपराध गृहस्थों को कारावद्ध करने के लिये हैं ? क्या ये सब वस्तुएं घोर कर्म्मों के अनुष्ठान के लिये ही हैं ? यदि यह सच है, यदि इतिहास इसके विरुद्ध साक्षी नहीं देता तो दूर से नमस्कार है इस राज्यसंस्था को । तुम इस राज्यसंस्था को दूर से नमस्कार न करो, वह तुम से नमस्कार करा कर ही छोड़ेगी । जो वस्तु जाति के हित के लिये नहीं है, जो संस्था यमदण्ड की प्रतिनिधिरूप है—वह अवश्यमेव नष्ट होगी, वह रह नहीं सक्ती । ऐ पृथ्वीतल के साम्राज्य कर्ताओ ! यह मत समझो कि तुम इस अत्याचार से भरी हुवी घोर निद्रा में सोये रहोगे ? वह देखो ! तुम्हारी राज्यसंस्था, तुम्हारी पुलीस और सेना की सत्ता को पृथ्वी तल पर से बहा देने के लिये, बड़ा कठोर तूफ़ान आ रहा है । वह देखो ! अराजकतावाद और निषेधवाद का राक्षस, दांत खोले और रुधिरभरी जिव्हा निकाले हमारे ऊपर आक्रमण करने के लिये कूद रहा है । वह राक्षस—वह तूफ़ान—सौम्य नहीं, वह भी घोर है अत्याचारी है, भयानक है । यदि तुम अपनी चमकती हुवी तलवार की धारा से निरपराधों की गर्दनें धड़ से जुदा कर सक्ते हो, तो उस राक्षस की कटार भी कमज़ोर नहीं है । यदि तुम निरपराध गृहस्थियों को कारागृह में डाल कर परिवारसुख से जुदा कर सक्ते हो, तो वह राक्षस भी राजकुलांकुरों के शरीर को ख़ाक में मिला कर तुम्हारे राजकुलों को रुण्ड मुण्ड कर सक्ता है । हम साधारण लोग उन दोनों से डरते हैं । हमें कारागार भी पसन्द नहीं, हमें अराजकता भी पसन्द नहीं । तब, क्या तुम अपने रास्तों को, अपनी चेष्टाओं को, नहीं बदल सक्ते; ताकि उस राक्षस को उठने का अवसर ही न मिले ? तुम्हारा एक २ घोर कर्म्म उस राक्षस को दो २ हाथ ऊंचा कर रहा है । क्या तुम हम दीनों की आवाज़ें सुनोगे ? उत्तर मिलता है कि सुन रहे हैं, किन्तु प्रिय भाइयो ! अभी तुम्हारी सुनने की गति बहुत धीमी है । ज़रा जल्दी करो, क्योंकि राक्षस, द्रौपदी के चीर की तरह निरन्तर बढ़ता चला जा रहा है ।

दोनों पक्षों ने एक२ घाव कर दिया । सामुद्रिक नैपोलियन चारों ओर अपनी चमक दिखाने लगा, क्योंकि इंग्लैंड का बेड़ा निःसन्देह सामुद्रिकनैपोलियन था । नैपोलियन ने भी इंग्लैंड पर आक्रमण करने की तय्यारी शुरू की । बूलोन्य बन्दरगाह पर चारों ओर से अपने जहाज़ों को इकट्ठा करके, एक ज़बर्दस्त बेड़ा बनाने का उस ने उपक्रम किया । दिन रात कार्य्य चलने लगा; रात और दिन शिल्पशालाओं में नये पोत तथा अस्त्र शस्त्र तय्यार होने लगे; सिपाहियों को सामुद्रिक युद्ध का अभ्यास

कराया जाने लगा। इंग्लैंड पर आक्रमण की इन तय्यारियों को देख कर, कई लोग कहते थे, कि यह केवल गीदड़ भभकी है; कोई भी बेड़ा इंग्लैंड के सामुद्रिक बल का तिरस्कार करके समुद्र को पार नहीं कर सक्ता। अन्य लोग चिल्लाते थे कि नैपोलियन सब कुछ कर सक्ता है, उसके लिये असम्भव कुछ नहीं। लन्दन की केबिनट इन पिछले विचार वाले मनुष्यों में से ही थी। वह भी समझती थी कि शायद नैपोलियन किसी समय चुपचाप अपने बेड़े को इंग्लैंड के किनारे पर लगा देगा। इस लिये, सारे देश में नई २ सेनायें तय्यार होने लगीं; सब निवासियों को व्यूह-रचना तथा शस्त्र चलाने का अभ्यास कराया जाने लगा। जब इस प्रकार से, इंग्लैंड और फ्रांस के अतिरिक्त और सारे योरप का ध्यान भी इस युद्ध की अद्भुत तय्यारियों पर लगा हुवा था, तब एक ऐसी और विचित्र घटना हो गई, जिसने उस ध्यानावस्थित जनसमूह को क्रमशः अचम्भे में, उत्सुकता में, और भीत दशा में डाल दिया। सारा योरप यह सुन रहा था कि नैपोलियन इंग्लैंड के ऊपर आक्रमण करने की तय्यारियें कर रहा है, जब उसने एक दम सुना कि नैपोलियन ने बार्बोन वंश के फ्रांस की सीमा के बाहिर बैठे हुवे एक राजपुत्र को पकड़वा कर गोली से मरवा दिया। सारा योरप इस समाचार को सुन कर एक दम काँप गया। किन्तु नैपोलियन ने यह बध क्यों किया? और क्या सचमुच इस बध का उत्तरदाता नैपोलियन ही था?

जब नैपोलियन **बूलोन्य** में सैन्यसन्नाह के कार्य्य में दत्तचित्त था, तब उसने सुना कि कोई कैदी पकड़ा गया है, और उसने इज़हार देते हुवे यह कहा है कि 'मैं उस गुप्तमण्डली का एक कार्य्यकर्त्ता हूं जो प्रथमशासक के मार डालने के लिये बनाई गई है'। थोड़े ही दिनों में एक अंग्रेज़सेनापति का पत्र पकड़ा गया, जिस में लिखा था कि फ्रांस में बोनापार्ट को पशुमार मारने के लिये जो यत्न हो रहा है, उसके कृतकार्य्य होने की आशा है। गुप्तरहस्य के प्रकट करने वाली इन दो घटनाओं को सुन कर नैपोलियन चौकन्ना हुवा, उसके कान खड़े हुवे। उसने अपने पुलिस कर्मचारियों को बुलाकर इस मन्त्रणा का रहस्योद्भेद करने के लिये कहा। पुलीस ने अपना कार्य्य प्रारम्भ किया। धीरे २ गुप्तमण्डली के आदमी पकड़े जाने लगे। इन पकड़े हुवे आदमियों से इज़हार लिये गये, तो पता लगा कि इस रहस्य के अन्दर नैपोलियन के दो सेनापति मिले हुवे हैं और एक कोई बोर्बोन वंश का राजकुमार भी फ्रांस की सीमा के पास ही रहता है और इस गुप्तमण्डली

की सभाओं में अध्यक्षता का कार्य्य करता है। तब नैपोलियन को इन तीनों व्यक्तियों की खोज हुई। मण्डली में मिले हुवे कुमन्त्रणकर्त्ता दोनों सेनापतियों का पता लग गया। एक तो होहिन्लिण्डन का विजेता नैपोलियन का पुराना सेनापति **मोरियो** था। वह नैपोलियन की उन्नति देख कर बहुत ही खिन्न गया था, और ईर्ष्या रूपी राक्षसी ने उन दोनों सेनापतियों के बीच दीवार बांध दी थी। मोरियो को पकड़ कर दो वर्ष के लिये देशनिकाला दिया गया। वह अमेरिका जाकर निवास करने लगा। दूसरा कुमन्त्रणकर्त्ता सेनापति **पिशाग्रयू** भी पेरिस में छुपा हुवा पकड़ा गया। नैपोलियन, जो क्षमा करने में भी उतना ही उदार था जितना दण्ड देने में क्रूर था, उसे क्षमा कर देने के लिये तय्यार था; किन्तु अन्य अपराधियों को मृत्युदण्ड मिलता देख कर वह अपने जीवन से निराश होगया, और कारागृह में फांसी लगा कर स्वयं ही मर गया। एक और शैतान **कैडोडल** भी पकड़ा गया और गोली से मार दिया गया।

अब नैपोलियन को एक ही चिन्ता शेष रही। बोर्बोन वंश के उस राजपुत्र का कुछ पता न लगा, जो इन विचारों में मुखिया था। जब नैपोलियन ने बोर्बोन वंश के सब राजपुत्रों के निवासस्थानों का पता लगाया, तब उसे पता लगा कि फ्रांस देश की सीमा के पास ही एक दुर्ग में, **ड्यूक ओन्गियां** (Duke D' Enghien) नाम का बोर्बोन वंश का राजकुमार पड़ा हुवा है। सुना जाता था कि वह वहां एक राजकुमारी के प्रेम के कारण पड़ा हुवा था, और कई २ दिन तक वेष बदल कर अपने निवास स्थान से तिरोहित रहता था। इस से नैपोलियन ने यह सारांश निकाला कि सम्भवतः यही राजकुमार गुप्तरीति से कुमन्त्रणा करने वालों का साथ देता होगा, क्यों कि सिवाय उस के और कोई राजवंशीय कुमार फ्रांस की सीमा के पास न था। नैपोलियन ने कई लोगों के सामने कहा था कि 'यदि कोई भी बोर्बोनवंशीय राजपुत्र मेरे विरुद्ध शस्त्र उठाये हुवे मेरे क़ाबू आजायगा, तो मैं उसे उचित दण्ड दूंगा। मैं उसे शीघ्र ही सिखा दूंगा कि मैं कुत्ते की मौत मारा जाने वाला नहीं हूं। मेरे रुधिर की भी वही कीमत है, जो उस के रुधिर की है'। और नैपोलियन का यह कहना था भी ठीक। बोर्बोनराजाओं को नैपोलियन का धन्यवाद करना चाहिये था, न कि उस से शत्रुता। उस से पूर्व ही क्रान्ति ने उन के वंश को पदच्युत कर के उन के पक्षपातियों का सर्ववध कर दिया था। नैपोलियन उन के कुल का सिंहासन पर से उतारने वाला न था, वह तो उलटा उन के पक्षपातियों का आश्रयदाता

था। तब उस का यह अनुभव करना ठीक ही था कि बोर्बोन राजाओं तथा उन के पक्षपातियों को उस के प्रति कृतघ्नता करने का अधिकार नहीं। जब वह निरन्तर उन लोगों को कृतघ्नता करता हुवा देखता था, उस का क्रोध और भी बढ़ जाता था। अब उसे एक बोर्बोनवंशीय पर सन्देह हुवा, वह राजकुमार उस के काबू भी आसक्ता था। नैपोलियन ने उचित कृतज्ञता सिखाने, तथा कृतघ्नता का बदला लेने का पक्का निश्चय कर लिया। उस ने अपनी सेना भेजकर ड्यूक को पकड़वा मंगाया। वह ड्यूक आव बेडन के राज्य में पकड़ा गया था, अतः नैपोलियन ने उस से इस स्थानाक्रमण के लिये क्षमा मांग भेजी। ड्यूक आव बेडन ने संतोषपूर्वक नैपोलियन के कार्य को क्षमा कर दिया।

राजपुत्र के दोषों की परीक्षा के लिये एक न्यायसभा नियत की गई। न्यायसभा के सामने राजपुत्र ने नैपोलियन के मारने की इच्छा को स्वीकार किया, तथा अभिमानपूर्वक कहा कि यद्यपि वह नैपोलियन की असाधारणशक्तियों का आदर करता है, तथापि उस का कुलक्रमागत शत्रु है। गुप्तमन्त्रणा में योग देने से उस ने इन्कार कर दिया। न्यायालय ने परीक्षा के पीछे निश्चय किया कि राजकुमार वस्तुतः फ्रांस का द्रोही है, अतःउसे मृत्युदण्ड दिया जाय। किन्तु उन का ऐसा निश्चय करना नैपोलियन की इच्छा के प्रतिकूल था। उस से एक दिन पहले नैपोलियन ने अपने बड़े भाई जोज़फ़ से बात करते हुवे कहा था कि मैं बोर्बोन वंश के राजाओं को अब दिखाऊंगा कि मैं उन की कृतघ्नता पर भी क्षमा कर सक्ता हूं। इस से प्रतीत होता है कि उस का अभिप्राय उस राजपुत्र को मारने का न था, किन्तु उसका दोष सिद्ध कर के क्षमा करने का था। उस ने यह भी विचार प्रकट किया था कि वह राजपुत्र को क्षमा करके अपने शरीररक्षकों में कोई उच्चस्थान दे देगा, किन्तु हुवा वह जो नैपोलियन न चाहता था। राजपुत्र को न्यायालय के सुपुर्द करके वह रात के समय सो गया। दिन भर का थका मांदा था, इस लिये सोते हुवे उस ने द्वारपाल को कह दिया कि विना किसी आवश्यक कार्य के उसे न जगाया जाय। जब राजपुत्र दोषी सिद्ध हो गया, और उसे मृत्युदण्ड सुना दियागया, तब उस ने नैपोलियन के नाम एक चिट्ठी लिख कर भेजी। निःसन्देह यह आवश्यक कार्य था। चिट्ठी लाने वाले मनुष्य को चाहिये था कि वह प्रथमशासक के द्वारपाल को कह देता कि चिट्ठी बहुत आवश्यक है, किन्तु उस ने चिट्ठी ला कर नैपोलियन की मेज़ पर रखदी। नैपोलियन सोता रहा था। उधर राजपुत्र को मृत्युदण्ड की आज्ञा मिलने के

पश्चात् थोड़ी देर में ही एक अंधेरे स्थान में ले जा कर गोली से मार दिया गया। कहते हैं कि राजपुत्र बड़ी वीरता से मरा। हम उस राजपुत्र की मृत्यु पर शोक प्रकाशित कर सक्ते हैं, उस पर दया कर सक्ते हैं, अन्याय करने वालों पर घृणा प्रकाशित कर सक्ते हैं, किन्तु हम इस अन्याय के लिये नैपोलियन को दोषी नहीं कह सक्ते; क्योंकि उस के सोये हुवे ही यह कार्य कर दिया गया था।

प्रातः काल यह समाचार योरप भर में घूम गया। इस समाचार से चारों ओर भयङ्कर सन्नाटा छा गया; सारे देश नैपोलियन को रुधिर का प्यासा बाघ समझने लगे। पेरिस भी इस समाचार को सुनकर स्तब्ध हो गया। सब ने यही समझा कि अब नैपोलियन अपनी करनी कर चुका; अब उस का पाप का प्याला भर गया, अब शीघ्र ही उस का अन्त होगा। नैपोलियन के भाई ल्यूशियन ने जब यह समाचार सुना तो वह घर को भागा २ गया और अपनी पत्नी को पुकार कर कहने लगा कि 'अलेग्ज़ेण्ड्राइन! चलो हम भाग चलें। उसने अब ख़ून का स्वाद ले लिया है।' योरप, जो पहले ही उसके शस्त्रों के प्रहार से बिधा पड़ा था, एक शब्द हो कर चिल्ला उठा कि 'यह रुधिर का प्यासा कसाई है, इस का वध करना चाहिये।' नैपोलियन ने भी वीरता का आश्रय किया। उसने अपने नौकरों पर सारा दोष डालने का यत्न नहीं किया, प्रत्युत इस कार्य्य के समर्थन में अपनी प्रबल लेखनी उठाई। उसने सब आक्षेपों का उत्तर देते हुवे दिखाया कि राज्यरक्षा के लिये यह आवश्यक था कि एक देशद्रोही का बध किया जाता, चाहे वह कोई ही क्यों न होता।

जहां सारा योरप इस क्रिया से नैपोलियन से भयभीत हो गया, वहां फ्रांस के विचारकों के मन में एक और शङ्का का अभ्युदय हुवा। उन्होंने विचारना प्रारम्भ किया कि इन सब कुमन्त्रणाओं के मूल काटने का क्या उपाय है? जो राजवंश स्थिर हो जाते हैं, उन के काट डालने का कोई यत्न नहीं करता। नैपोलियन की स्थिति अभी बहुत अस्थिर थी। अभी वह कुमन्त्रणाओं से घिरा हुवा रह सक्ता था। यह सब कुछ विचार कर, फ्रांस की नियामकसभा ने यही निश्चय किया कि यदि नैपोलियन को सम्राट् की पदवी देकर, फ्रांस के राज-सिंहासन को फिर से कुलक्रमागत कर दिया जाय, तभी राज्य की पूरी रक्षित दशा हो सक्ती है—अन्यथा नहीं। यही निश्चय करके, उन्होंने, अपना विचार नैपोलियन के सामने प्रकट किया। उस ने भी प्रतिनिधियों की इच्छा के सामने सिर झुकाते हुवे

अपने सम्राट् बनने के प्रस्ताव पर लोकमत पूछने का विचार प्रकाशित किया । तद्नुसार, यह प्रस्ताव सारी फ्रेंचजाति के सामने उपस्थित हुवा । की सम्मति सम्राट् बनाने के पक्ष में थी और २/८ की सम्मति उसके विरुद्ध । बहुसम्मति से नैपोलियन फ्रांस का सम्राट् बना । सम्राट् बनने का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया । रोम का पोप नैपोलियन के सिर पर स्वयं ताज रखने के लिये फ्रांस में आया । पोप ने आज तक और किसी नवीन राजा के लिये रोम को न छोड़ा था, यह आदर एक नैपोलियन को ही प्राप्त हुवा । सम्भवतः फ्रांस में धर्मस्थापना का ही यह परिणाम था । पोप ने राज्याभिषेक किया । जब वह राजमुकुट को नैपोलियन के सिर पर रखने लगा, तब उस ने उसे पोप के हाथ से ले लिया, और स्वयं ही अपने सिर पर धर लिया । बड़ी धूमधाम से यह राज्याभिषेकोत्सव मनाया गया था । प्रशिया के राजा तथा आस्ट्रिया के सम्राट् ने भी नैपोलियन को फ्रांस का सम्राट् स्वीकार किया । इटली की रिपब्लिक नें, जिसका नैपोलियन प्रधान था, उसे अपने देश का राजा नियत किया । इस प्रकार फ्रांस में क्रान्ति के शोधक कार्य्य के पश्चात्, रचना का कार्य भी जितना होना था, हो गया ।

---

१. यह १८०४ ईस्वी की दूसरी दिसम्बर का दिन था ।

चतुर्थ-भाग ।

दिग्विजय-यात्रा

प्रथम परिच्छेद।

उल्म और औस्टर्लिट्स

साहसे श्रीर्निवसति । व्यासः ।

इस समय नैपोलियन मनुष्य द्वारा प्राप्य स्थानों में से बहुत उच्चस्थान को प्राप्त हो चुका था। शायद कोई और सांसारिक पद उस से बड़ा नहीं हो सकता था। वह एक जाति का प्रधान और देश का सम्राट् था; सारा योरप उस के लोहे को स्वीकार करता था; समग्र फ्रेंचजाति उसे अपना विश्वासी तथा विजयी सेनानी समझती हुवी उस पर सब कुछ वारने के लिये उद्यत थी; अभिमानी रूस का राजा उस की प्रतिभा और शक्ति पर मोहित था; और प्रशिया की महाराणी अपने लड़कों को नैपोलियन के आचरणों का अनुशीलन करने और उस के चरणचिन्हों पर चलने का उपदेश देती थी। आत्मरक्षा के आनन्द में मग्न होने वाला इङ्गलैंड भी नैपोलियन के नाम से कांप रहा था, और दिन रात उस के असह्य आक्रमण के रोकने में लगा हुवा था। आस्ट्रिया, जो पुराने राजवंशों के गर्व का नमूना था, नैपोलियन के उदय को नमाये हुवे सिर से सह रहा था। हालैंड, इटली आदि छोटे २ देश उस के बूट के नीचे पड़े हुवे थे। तब फिर नैपोलियन की अत्यन्त आश्चर्यित चक्षुओं से निहारने योग्य दशा थी, यह कहने में हमें संकोच क्यों करना चाहिये?

किन्तु इस आदर और भय के नीचे २ ऊपर की कृत्रिम झाग से छुपा हुवा एक और भी भाव था। अपने से बड़े के लिये, और अत्यधिक शक्तिशाली के लिये, हम आदर का भाव कर सकते हैं; किन्तु यदि वह अत्यन्त बड़ा हमारी सत्ता को ही नष्ट करने की धमकी दे रहा हो, यदि वह हमारी शक्ति को सर्वथा अभाव रूप कर देने की ओर झुकता हुवा दिखाई दे, तो हमारा आदरभाव ईर्ष्या के रूप में परिणत हो जाता है। हम उस का कुछ बिगाड़ नहीं सकते, किन्तु बिगाड़ना चाहते हैं। इस विरुद्ध धर्मद्वय के संघर्ष से, इस इच्छा और अशक्ति के संघर्ष से, एक क्लिन्नताप उत्पन्न होता है जिसे हम ईर्ष्या के नाम से पुकारते हैं। वही ईर्ष्याग्नि योरप के सारे राजाओं के दिलों में सुलग रही थी। हर एक राजा अनुभव कर रहा था कि यह छोटासा अद्भुत मनुष्य, यह कठोर सिर वाला कोमल मनुष्य, नहीं रहना चाहिये, इस का रहना योरप की स्थिरता तथा शान्ति के लिये भयप्रद

है । नैपोलियन राजवंश में उत्पन्न न हुवा था । उस ने साधारण कुल में उत्पन्न हो कर अपने भुजबल और मस्तकबल से फ्रांस के गिरे हुवे राजमुकुट को उठा कर अपने सिर पर रक्खा था। ये चिन्ह राजवंशीय राजाओं के लिये शुभ न थे। उन के सिंहासनों की स्थिरता इस प्रकार बड़े सन्देह में पड़ रही थी। नैपोलियन यद्यपि क्रान्ति का अन्त करने वाला था, तथापि वह एक तरह से क्रान्ति का प्रतिनिधि भी था । क्रांन्ति मौरूसी जायदाद की तरह मौरूसी गुणको स्वीकार न करती थी । पिता के राज्य-कार्य्य में योग्य होने से पुत्र का वैसा होना वह आवश्यक न समझती थी । उस की सम्मति में, जो जिस योग्य हो वह उस स्थान को पा सकता था । नैपोलियन इसी का उदाहरण था । कोर्सिका के एक साधारण वकील का पुत्र होते हुवे, शनैः २ अपने गुणों के प्रभाव से मुकुटधारी सम्राट् हो जाना क्रान्ति के सिद्धान्त की व्याख्या करना था। यह व्याख्या वंशीयराजाओं को पसन्द न थी। उन को यह अपने मृत्यु की अग्रेसरी दूती प्रतीत होती थी ।

इन दो कारणों से योरप के समस्त स्थलीय राजा नैपोलियन के लिये अन्दर ही अन्दर दांत पीसते थे और अपनी कोठियों में घुस कर तलवारें तेज़ कर रहे थे। किन्तु समुद्र के असाहिष्णु राजा इङ्गलैंड की अवस्था इन सब से कुछ भिन्न थी । क्रान्ति की व्याख्या से वह भी वैसा ही घबराता था, जैसे और वंशीय राजा घबराते थे, किन्तु उसे नैपोलियन के शस्त्रों से सीधा भय न था । वह जानता था कि नैपोलियन सैकड़ों यत्न करे, उस के लिये लन्दन तक पहुंचना असम्भव है । हां उसे एक और भय अवश्य था। एक उच्च राजनीतिज्ञ योद्धा के कथनानुसार अंग्रेज़ों की जाति बनियों की जाति है। बनियों के लिये सारा संसार नष्ट हो जाय, किन्तु उनकी बांसुली ख़ाली न हो । नैपोलियन का स्थलीय योरप पर आधिराज्य, इंग्लैंड के व्यापार का सत्या-नाश कर रहा था। यह उसे सह्य न था। इन दो कारणों से इंग्लैंड और नैपोलियन में प्राणान्त विरोध था । दोनों शक्तियें यदि एक दूसरे के साथ सीधा युद्ध कर सक्तीं, तो इस दुःखान्त नाटक का अन्तिम पर्दा शीघ्र ही गिर जाता । किन्तु ऐसा था नहीं । इंग्लैंड स्थल पर नैपोलियन के सामने वैसा ही तुच्छ था. जैसा नैपोलियन समुद्र में इंग्लैंड के सामने। न इंग्लैंड अपनी सेनाओं से फ्रांस पर धावा कर सक्ता था और ना ही नैपोलियन अपनी वृहती सेनाओं के शस्त्र इंग्लैंड में चमका सक्ता था । तब युद्ध का दीर्घीकरण आवश्यक था । इंग्लैण्ड का यत्न नैपोलियन के लिये स्थलीय शत्रु तय्यार करने में था, और नैपोलियन का यत्न इंग्लैंड को सामुद्रिक कारागार

में बन्द करके उस के व्यापार और वाणिज्य को ध्वस्त कर देने का था। यह टेढ़ा युद्ध वैसे तो नैपोलियन के उदय के साथ ही प्रारम्भ हो गया था, किन्तु इस समय से उसने विशेष तीव्रता धारण की। यह इंग्लैंड और नैपोलियन का द्वन्द्व आगामी दस बरसों तक निरन्तर चला और अब उस की उत्तरपीठिका का प्रारम्भ होता है।

नैपोलियन **बूलोन्य** की बन्दरगाह में इंग्लैण्ड पर सामुद्रिक चढ़ाई करने की तय्यारियों में लगा हुआ था। वह उस कार्य्य में इतना मग्न दीखता था कि इंग्लैण्ड ने एक नई गुप्तमन्त्रणा करने का विचार किया। उस ने रिश्वतें देने के लिये अपनी थैली खोलनी शुरू की। रूस और आस्ट्रिया के महाराजों के पास इंग्लैण्ड के राजदूत भागे २ गये, उन्हों ने जाकर उन के सामने चांदी और सोने के ढेर लगा दिये। उन ढेरों को देख कर महाराजों की जिह्वाऐं लालायित हो गईं। आस्ट्रिया के राजा ने पुरानी सन्धि की सब शर्तों को भूल कर, नैपोलियन पर आक्रमण करने का वचन दिया। रूस का अभिमानी युवक महाराज भी शीघ्र ही काबू आगया। यह कार्य्य सर्वथा गुप्त रीति से हुआ। नैपोलियन इन सब कार्य्यवाहियों से सर्वथा अज्ञ प्रतीत होता था। चुपके ही चुपके **स्वीडन** भी रूस और आस्ट्रिया के साथ मिल गया। चारों शक्तियों ने मिल कर नैपोलियन पर आकस्मिक धावा करके, और उसे एक दम चुंगल में दबा कर प्राणरहित कर देने का विचार किया। आकस्मिक धावा करने के लिये ही, किसी देश ने युद्ध की घोषणा तक न की ; सब देशों के प्रतिनिधि विश्वास दिलाने के लिये पेरिस में ही बने रहे। मिलित शत्रुओं का गुप्त धावा शुरू हुआ।

सब से प्रथम ८० सहस्र आस्ट्रियन सेना, सेनापति **मैक** के नीचे, फ्रांस की सीमा की ओर को चल पड़ी। रूस का महाराज एलेग्ज़ेण्डर, १,१६,०००, सेना के साथ, आस्ट्रियन सेना की सहायतार्थ अपनी राजधानी से प्रस्थित हुआ। इधर वीर इंग्लैण्ड ने भी चोरी चोरी तीस सहस्र की एक सेना फ्रांस की सीमा पर उतार दी। इस प्रकार एक बड़ी ज़बर्दस्त सेना ने नैपोलियन को घेरना शुरू किया, किन्तु वह अभी बूलोन्य के ऊंचे फ़र्शों की ही सैर कर रहा था। उसे अचल देखकर हर एक जानने वाले ने समझा कि अब के अज्ञानी नैपोलियन अवश्य पीसा जायगा। आस्ट्रिया की सेना निरन्तर बढ़ती चली आई। उस ने **बैवेरिया** में आकर वहां के राजा को जीत लिया और अपना साथ देने के लिये बाधित किया। थोड़े ही दिनों में आस्ट्रियन सेना ने अपने उपनिवेश **ऊल्म** और **म्यूनिक** में गाड़ दिये। अब वह फ्रांस के

सर्वथा पास पहुंच गई । सेनापति मैक अपनी असाधारण कृतकृत्यता के लिये हर्ष से फूला न समाता था । वह समझता था कि नैपोलियन अब तक भी सेनासहित उस का सामना करने नहीं आया, तब वह अकस्मात् पेरिस को जा घेरेगा, इस में सन्देह ही क्या है ?

किन्तु उस के आश्चर्य्य और नैराश्य की सीमा न रही, जब एक दिन अकस्मात् उस ने अपने पीछे से फ्रांसीसी सेना को आते हुए सुना । उस ने एक दम सुना कि न केवल नैपोलियन पेरिस से उस के आक्रमण का प्रतिबन्ध करने के लिये ही चल पड़ा है, किन्तु वह र्हाईन और डैन्यूब नदियों को पार करके आस्ट्रियन सेना के पीछे से उन पर आक्रमण करने के लिये भी उद्यत हुआ है । सेनापति मैक अपने और आस्ट्रिया के बीच में नैपोलियन की सेना को पाकर बिल्कुल किङ्कर्तव्यता-विमूढ़ हो गया । उस की सेना निराश होकर चारों ओर भागी, किन्तु नैपोलियन ने अपनी सेना का ऐसा घेरा डाल लिया था कि सेना का कोई भी भाग उस चक्कर में से निकल न सक्ता था । अन्त को और कोई आश्रय न पाकर आस्ट्रियन सेनापति ने अपने मृतावशिष्ट तीस चालीस सहस्र सैनिकों सहित शस्त्र रख देने का निश्चय किया । उस समय संसार के इतिहास में एक विचित्र दृश्य उपस्थित हुआ । आस्ट्रियन सेना फ्रेंचसेना के सामने एक भी कदम खड़ी न हुई और उस के सामने अपने आपको गिरा दिया । नैपोलियन अपनी सेनासहित एक ऊंचे स्थान पर खड़ा हो गया और आस्ट्रिया की शस्त्ररहित चालीस सहस्र सेना उस के सामने से प्रणाम करती हुई निकल गई । यह नैपोलियन की प्रतिभा का विजय था । ऐसे विजयों के दृष्टान्त पाने के लिये यदि इतिहास को खोजें, तो निराश होना पड़ता है ।

सेनापति मैक, इस प्रकार फ्रांसीसी सेना से एक दम घिर जाने पर आश्चर्यित हो रहा था । किन्तु आश्चर्यित होने की कोई बात न थी । जब आस्ट्रिया और रूस समझ रहे थे कि वे सर्वथा अन्धेरे में अपनी सेनाओं को आगे बढ़ाये लिये जा रहे हैं, तब नैपोलियन एक छोटीसी प्रतिभारूपी लालटैन लिये उन के पीछे २ घूम रहा था, और उन की सब क्रियाओं को देख रहा था । जब उस ने सुना कि फ्रांस की सीमा की ओर आस्ट्रिया का सैन्य बढ़ रहा है, तभी उस ने अपनी बृहती सेना को तय्यार कर लिया था । नैपोलियन की विद्युत्समान गति प्रसिद्ध थी । बिल्कुल चुप चाप उस ने सारी सेना को उचित आज्ञा देकर ऐसे चलाया कि वह आस्ट्रियन सेना के बहुत दूर से ही नदियों को पार करके उस के पीछे जा मिली ।

इस प्रकार आस्ट्रियन सेना ज़रासी चतुरता से सर्वथा अशक्त कर दी गई। नैपोलियन के विजय ने सारे योरप को आश्चर्य के समुद्र में डाल दिया, और फ्रेंचसेना के दिल में यह विश्वास बिठा दिया कि नैपोलियन अदम्य है, इस के साथ रहते हुए उन्हें कभी भय नहीं।

इस अद्भुत आक्रमण के साथ, नैपोलियन की उस विजययात्रा का प्रारम्भ हुआ जो निरन्तर आठ वर्ष तक सारे योरप के भूतल को हिलाती रही। आठ वर्ष तक निरन्तर नैपोलियन अपनी वृहती सेना के साथ विजय पर विजय मारता हुआ सारे संसार को चकित करता रहा। इस विजय में लाखों मनुष्यों का वध हुआ, किन्तु उस वध का सारा उत्तरदातृत्व विजेता पर नहीं है। अंग्रेज़ी रुपये पर भी उस का बड़ा भारी उत्तरदातृत्व है।

ऊल्म के पराजय के पीछे, शेष आस्ट्रियन सेना ने पीछे को भागना शुरू किया। नैपोलियन भी द्रुत गति से उन के पीछे हो लिया। सारी फ्रेंचसेना महीनों की यात्रा से थकी हुई थी, किन्तु नैपोलियन विश्राम करना न जानता था। उस के शरीर और सिर अनथक थे। अपनी सेना को बड़े ही तीव्र वेग से उस ने आगे की ओर धकेलना शुरू किया। जब तक वह आस्ट्रिया की राजधानी **वीना** तक न पहुंच जाय तब तक उसे चैन न थी। नित्य प्रातःकाल यही आज्ञा सारी सेना के कानों में गूंजती थी—"सीधे वीना तक पहुंचो"। जिस वेग से फ्रांसीसी सेना वीना की ओर बढ़ रही थी, उसे देख कर आस्ट्रिया के महाराज का भी साहस टूट गया। १७ अक्टूबर (१८०५) के दिन नैपोलियन विना किसी विश्राम के बयालीस मील तक घोड़े की पीठ पर रहा। **फ्रांसिस** अपनी राजधानी को छोड़ कर भाग गया। १३ नवम्बर के दिन नैपोलियन वीना में जा पहुंचा। अभी उस का शत्रु और भी आगे था। एक लाख सेना लिये रूसनरेश अलेग्ज़ेण्डर आंधी की तरह उमड़ता हुआ चला आ रहा था। महाराज फ्रांसिस भी उसी के साथ जा मिला। नैपोलियन की सेना को फिर वही आज्ञा मिली कि 'आगे बढ़े चलो'।

आख़िर दिसम्बर की प्रथम तारीख़ को, औस्टर्लिट्ज़ ग्राम के घेरने वाले पर्वतों पर दोनों विरोधी सैन्य एक दूसरे की दृष्टि में आये। जब सेनाओं ने एक दूसरे की ओर देखा, तो एक दम उन के मुखों से वीरनाद की ध्वनि निकल पड़ी। किन्तु नैपोलियन की दशा शोचनीय थी। शत्रु का सैन्य एक लाख था, फ्रांसीसी सेना केवल सत्तर हज़ार थी। विरोधी की सेना को उत्साह देने वाले दो महाराज थे, इधर

केवल एक ही छोटे से देह वाला उत्साहदाता था। किन्तु नैपोलियन घबराना न जानता था। उस ने बड़ी सावधानी से उस स्थान की देख भाल की। स्थान की देख भाल करके, उस ने शत्रु की चेष्टाओं पर दृष्टि डाली। उस ने देखा कि शत्रु अपनी सारी सेना को नैपोलियन की दांये पार्श्व की ओर को घुमा रहा है। शत्रु का अभिप्राय ऐसा करने से यह था, कि वह सारी सेना को फैला कर फ्रेंच सेना के दाहिने पक्ष पर धावा करे। दाहिने पक्ष के तितर बितर होजाने पर सारी सैन्य में गड़बड़ पड़ जायगी और बहुत ही शीघ्र विजय उसके हाथ में आजायगी। नैपोलियन यह सब कुछ ताड़ गया। इस चाल के देखते ही वह चिल्ला उठा कि 'यदि शत्रु इसी गति से प्रभात तक चलता रहा तो कल सूर्य्य डूबने से प्रथम उस की सारी सेना मेरे वश में होगी'। सेना को दिनभर स्थान २ पर ठहराते ठहराते उस दिन की ठंडी रात का आरम्भ होगया। सारी सेना विश्राम के लिये अपने अपने डेरों में टिक गई। निरीक्षण के लिये महाराज नैपोलियन घोड़े पर सवार होकर उपनिवेश के बीचमें से गुज़रने लगा। एक सिपाही ने उस घेरे में से नैपोलियन को जाते देखा तो झट से थोड़ा सा घास उठाकर और उसे बंदूक के सिरे पर बांध कर एक मशाल बनाली, और उसे जलाकर महाराज का रास्ता प्रकाशित करदिया। एक सिपाही की देखादेखी सब सिपाहियों ने अपने २ तम्बुओं से निकलकर, कृत्रिम मशालें बना २ कर रास्ता दिखाना शुरू किया। सारा उपनिवेश एक दम प्रदीप्त होगया। तब सब को ध्यान आया कि वही रात नैपोलियन की साम्राज्यप्राप्ति की रात थी। सारे उपनिवेश में एकदम कोलाहल मच गया। चारों ओर से यही शब्द सुनाई देने लगा, "महाराज नैपोलियन चिरंजीवी हों"

रात का अंधेरा धीरे २ धुंधले प्रकाश के रूप में परिणत होने लगा—प्रभात निकट आने लगा। उषःकाल से पूर्व ही नैपोलियन अपने घोड़े पर सवार होगया। उसे अभी यह संदेह था कि कहीं शत्रु अपनी पहले दिन वाली चाल बदल न ले। अतः उसी चाल को प्रोत्साहन देने के लिये उसने अपने दायें पार्श्व को पीछे हटाना प्रारम्भ किया। दाहिने पार्श्व को पीछे हटाकर उसने सारी सेना को एक ही स्थान में इकट्ठा करलिया। शत्रु ने समझा कि नैपोलियन डरगया। उसने और भी वेग से दाहिनी ओर फैलना शुरू किया। नैपोलियन ने इस समय एक नई ही चतुरता सोची थी। शत्रु को दाहिनी ओर फैलाने से उसका उद्देश्य यह था कि किसी प्रकार शत्रु का सैन्य छीदा २ हो जाय। तब दाहिने पार्श्व में युद्ध को जारी रखने

के लिये थोड़ी सी सेना को छोड़ कर, अपने सारे प्रबल बल के साथ शत्रुसैन्य के ऐन मध्य में कठोर चोट की जाय। मध्य के खोखला होजाने पर, दोनों पक्षों को फाड़ कर जुदा २ काट देना कोई कठिन काम न था। इस विचार के अनुकूल सारी सेना का प्रबन्ध करके, वह अपने सेनानियों सहित खड़ा हुआ शत्रु के वार की प्रतीक्षा करने लगा। प्रातःकाल सूर्य्य असाधारण दीप्ति के साथ उदित हुआ। आकाश ऐसा साफ़ हुआ कि सूर्य्य का दृश्य सब द्रष्टाओं के दिल में गड़ गया। पीछे वर्षों तक नैपोलियन औस्टर्लिट्स के सूर्य्य का स्मरण किया करता था। उसी उज्ज्वल सूर्य की दीप्ति में, शत्रु ने फ्रेंचसेना के दाहिने पार्श्व पर गोले बरसाने शुरू किये। 'चलो, समय आगया,' नैपोलियन की इतनी आज्ञा पाते ही लेनस, सौल्ट, मूरा आदि सेनापतियों ने अपने घोड़ों को एड़ी लगाई और संग्राम शुरू हुआ। नैपोलियन ने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। देखते ही देखते निर्बल हुवा हुवा शत्रु का मध्य सर्वथा काट डाला गया। मध्य को काटकर नैपोलियन ने शत्रु के दाहिने हिस्से पर धावा दिया। वह भी देखते ही देखते भूमितल-शायी हुआ। रूसी घुड़सवारों ने एक बड़ा प्रबल आक्रमण करके विजय की लहर को पलटना चाहा, किन्तु **मार्शल रैप** की घुड़सवार सेना के सामने उस की एक न चली। तब चारों ओर से भयभीत होकर शत्रु की सेना भागी और एक जमी हुई नदी को पार करने लगी। भार पड़ते ही जमी हुई हिम काच की तरह फट गई और सारी सेना उस के गर्भ में विलीन होगई। विजय बड़ा ही भारी हुआ। शत्रु के २५००० सैनिक मारे गए और २५००० ही कैदी पकड़े गए। रूसी राजा की संरक्षक सेना का मुख्य झण्डा भी पकड़ा गया। रूस नरेश अलेग्ज़ेण्डर और आस्ट्रियन नरेश फ्रांसिस पास की एक पहाड़ी पर खड़े हुए अपनी सारी सेनारूपी हिम को नैपोलियन के तेजरूपी सूर्य के सामने पिघलता हुवा देख रहे थे। इस प्रकार सेनाक्षय होने पर दोनों नरेश छोटी सी सेना लेकर उलटे पांव भाग पड़े। औस्टर्लिट्स का विजय नैपो-लियन के प्रदीप्ततम और प्रसिद्धतम विजयों में से एक है। क्या सैन्यसंस्थान की चतुरता की दृष्टि से और क्या युद्धयात्रा की तीव्रता की दृष्टि से, यह युद्ध न केवल नैपोलियन के ही युद्धों में से प्रधान था, किन्तु सारे भूमंडल का इतिहास भी इस की उपमा के लिये भिखारी है। रूस का नरेश इस युद्ध में हार कर, अपना सा मुंह लिये हुए अपनी राजधानी को लौट पड़ा। आस्ट्रिया के महाराज ने सन्धि करने का प्रस्ताव किया। सन्धि द्वारा युद्ध का सारा व्यय आस्ट्रिया को देना पड़ा। इसके अतिरिक्त

अन्य छोटे २ राजाओं के स्थानों में भी नैपोलियन ने कुछ उलट फेर किया । किसी को कुछ ज़मीन देदी और किसी से कुछ छीन लिया । सारांश यह कि इस विजय से नैपोलियन का प्रभाव आगे से बहुत बढ़गया, उस के नाम की भीति आगे से चौगुनी होगई, और उस की विजयदुन्दुभि चारों ओर ज़ोर शोर से बजने लगी ।

द्वितीय परिच्छेद ।

टिल्सिट की सन्धि ।

रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः । भारविः ।

उल्म और औस्टर्लिट्स् के विजयों से आस्ट्रिया की सारी शक्ति नैपोलियन के चरणों पर आ पड़ी । रूस, हताश और पराजित हो कर, अपने घर को लौट गया । इंग्लैण्ड अपने साथियों से त्यक्त हुवा हुवा, स्थलीय साहस का त्याग करके सामुद्रिक लूट मार में फिर से नियुक्त हुवा । नैपोलियन की शक्ति इस प्रकार अबाधित हो गई । अबाधित हो कर, उस ने जीवितमनुष्यों का शतरञ्ज खेलना शुरू किया । देशों के राजाओं और शासनों का भंग, तथा निर्णय, उस के लिये एक स्वाभाविक धर्म्म था, जो विजयी होने पर प्रकाशित होता था । जब वह अपने शत्रुओं को पराजित कर देता, तब देशों का बण्टन और मनुष्यों का विभाजन प्रारम्भ करता । उस के शत्रु, नैपोलियन की इस क्रिया को बहुत ही अत्याचार-युक्त बताते हैं । निःसदेन्ह वह अत्याचार—युक्त थी । किन्तु, उस के शत्रुओं को उपालम्भ देने के लिये स्थान न था । उस के शत्रु भी इस अत्याचारी कार्य्य में उस से पीछे न थे । योरप का ऐसा कोई देश नहीं, जो समय पा कर अपने से निर्बल देश को अपने काबू में करने से पहले आगा पीछा करे । निर्बल जातियों को योरप अपना भोजन समझता था, समझता रहा है और अब भी समझता है । जिस समय, विजयी नैपोलियन हालैण्ड, जैनोवा और मिलान में अपने घर के आदमियों को राजा बना रहा था, और उसके शत्रु उसे अत्याचारी की उपाधि प्रदान कर रहे थे, उसी समय प्रशिया, रूस और आस्ट्रिया मिल कर पोलैण्ड का उपभोग कर रहे थे । तथापि नैपोलियन को अत्याचारी कहा जाता था, और अंग्रेजी, रूसी और आस्ट्रियन महाराजे बड़े ही दयालु और न्यायप्रिय कहाते थे । हम पूछते हैं कि जिस पाप को सभी कर रहे थे, उसे करने के कारण क्या नैपोलियन विशेषतया अपराधी हो सक्ता था ? और क्या उसी पाप के करने वाले अन्य देश नैपोलियन पर आक्रमण कर सक्ते थे ? अस्तु । नैपोलियन ने विजयी हो कर अपनी स्थिति को दृढ़ करने का विचार

किया । अपने और शेष स्थलीय योरप के मध्य में उस ने अपने अधीन सहायकों का एक जत्था तय्यार करने का विचार किया । **इटली** का वह राजा हो ही चुका था; **जैनोवा** को उस ने अपने ही राज्य में मिला लिया; **हालैण्ड** में उस का भाई ल्यूईबोनापार्ट राजा हुवा; **नैपल्स** का बोर्बोनवंशीय राजा सिंहासनच्युत किया गया और नैपोलियन का भाई जोज़फ़ उस के स्थान में शासक बना; **पीडमौण्ट** को भी इटली के अन्दर ही प्रविष्ट कर लिया गया । इस प्रकार से राज्य को विस्तीर्ण करके, इटली के शेष छोटे२ प्रान्तों को मिला कर, उन की एक संयुक्त संस्था बनाई गई, जिस का प्रधान नैपोलियन हुवा । इस संयुक्तसंस्था का नाम **र्‍हाईन का संयुक्त राज्य** था ।

इस प्रकार नैपोलियन ने एक ही धावे में अपने राज्य की सीमा को बहुत बढ़ा लिया । बढ़ा तो लिया, किन्तु इस में सन्देह है कि उसकी वृद्धि वास्तविक थी । क्या वह ऐसी थी जैसी एक शरीर की होती है? या केवल दृश्यमान ही थी, और आन्तरिक न थी? जहां तक इतिहास साक्षी देता है, यही प्रतीत होता है कि यह उन्नति वास्तविक न थी । यह उन्नति ऐसी थी जैसी एक पत्थर पर मिट्टी को लेप देने से उसकी वृद्धि हो जाती है । उस पर थोड़ा भी पानी डालो और वह अवश्य ही उतर जायगी । ऐसी वृद्धि और ऐसा विस्तार, अधिक देर तक स्थिर नहीं रह सक्ते । नैपोलियन ने इस वृद्धि को स्थिर समझ लिया, यही उसकी बड़ी भारी भूल थी । जिन देशों के राजा उसने अपने भाइयों को बनाया था, उनसे स्वशक्तिवृद्धि की आशा रखना उस के लिये असम्भव की आशा रखना था । उसके भाइयों की अशक्तता इतनी ही बढ़ती थी, जितनी उसकी शक्तता । अन्य देशों के जो भाग उसने अपने राज्य में मिला लिये थे, उनसे भी स्थिरता की सम्भावना केवल मृगतृष्णिका थी । अन्य देशीय और अन्यजातीय प्रांतों को फ्रांस का अंग बना लेना वैसा ही असम्भव था, जैसा कपड़े को अंगीभूत कर लेना हमारे शरीर के लिये असम्भव है ।

अतः इस बात में इतिहास साक्षी है कि नैपोलियन के साम्राज्य की वृद्धि अस्थिर थी, अवास्तविक थी । उसकी अस्थिरता और भी स्थिर हो जाती है, जब हम देखते हैं कि वह इतने थोड़े समय में की गई । इसी कारण, योरप के सारे देशों के मन में, नैपोलियन के लिये ईर्ष्या का भाव फिर से उत्पन्न हो गया । ईर्ष्या के अतिरिक्त उन्हें अपने प्राणों का भी भय था । यद्यपि वे जानते थे कि नैपोलियन अकेला उन के मिले हुवे जत्थे से प्रबल है, तथापि आत्मरक्षा भी कोई वस्तु होती है । आस्ट्रिया, प्रशिया आदि को आत्मरक्षा का इतना भय लगा हुवा था कि वे वारंवार

पराजित होने को, अन्त में सर्वथा नष्ट होने से अच्छा समझते थे ! कुछ नैपोलियन की इन नई स्थानप्राप्तियों से डर कर, कुछ लन्दन की कैबिनट के टर्कों का लोभ पाकर और कुछ रूस के अपमानित किंतु गर्वित ज़ार की सहायता से उत्साहित होकर, प्रशिया का राजा अपनी सेनासहित फ्रांस पर धावा करने के लिये उद्यत हुवा । उस की महाराणी तथा पुत्र उस के सुलगते जोश पर फूंक लगाने वाले थे । इंग्लैंड ने भी अपनी सेनायें किनारे पर उतारनी शुरू कर दीं; स्वीडन के राजा ने अपने साहाय्य की प्रतिज्ञा की; और रूस का ज़ार अपने दो लाख जंगली राक्षसों के साथ पोलैंण्ड की भूमि को कंपाता हुवा प्रशिया की सहायतार्थ प्रस्थित हुवा ।

इस प्रकार, पूर्व और उत्तर दिशाओं से उठती हुई आंधियों से, फ्रांस देश आन की आन में घिर गया । फ्रांस की पोतशक्ति पहले ही ध्वस्त हो चुकी थी । जिस दिन नैपोलियन ने ऊल्म में आस्ट्रियन सेना के शस्त्र रखवाये, उस के दूसरे ही दिन उस के बेड़े का लार्ड नेल्सिन ने ट्रेफलगर में ध्वंस कर दिया । इस वार, नैपोलियन का बेड़ा केवल फ्रांस के जहाज़ों से ही बना हुवा न था, स्पेन के जहाज़ भी उस में सम्मिलित थे । ट्रेफ़ल्गर पर नैपोलियन की सामुद्रिक शक्ति को बड़ा ही सख़्त धक्का पहुंचा । इस धक्के को प्राणांत करने वाला धक्का कहें तो अनुपयुक्त न होगा । अतः, अब नैपोलियन केवल स्थल का स्वामी था । उस की स्थलीय सेना अब अदम्य थी । उसी अदम्य स्थलीय सेना को साथ लेकर नैपोलियन इन उठती हुई भयानक घटाओं का विदारण करने के लिये आंधी की तरह उठा, और उन बादलों की ओर को चला । एक अंधा भी कह सक्ता है कि यदि केवल एक इसी घटना पर दृष्टि रक्खी जाय, तो इस युद्ध का-इस मेघवायु संग्राम का-उत्तरदातृत्व नैपोलियन पर न था-किंतु प्रशिया रूस और इंग्लैंड पर था । अस्तु ।

२४ सेप्टेम्बर (१८०६) की रात के समय नैपोलियन पेरिस से रवाना हुवा । उस की सेना, उस से कुछ आगे गई हुई थी । थोड़े ही दिनों में नैपोलियन उसके साथ जा मिला । उस के पहुंचते ही सारी सेना में उत्साह की विद्युत् संचार करने लगी । सिपाही अपनी शक्तियों का अतिक्रमण करके यात्रा करने लगे । यात्रा इतनी तेज़ी से की गई, और यात्रा का रास्ता ऐसी चतुरता से निश्चित किया गया, कि थोड़े ही दिनों में नैपोलियन प्रशिया के राजा की सारी सेना के पीछे सेक्सनी देश के गर्भ में जा डटा । उस स्थान से वह प्रशियन सेना का पीछे लौटना रोक सक्ता था । जब उस के और फ्रांस के बीच में प्रशिया का राजा सैन्यसहित आ गया, तब उसे

पता लगा कि वज्र उसकी पीठ पर गर्ज रहा है । अन्य कोई उपाय न देखकर, उस ने वहीं पर नैपोलियन का सामना करने का विचार किया ।

नैपोलियन युद्ध प्रारम्भ हो जाने पर रुद्र देवता का रूप धारण कर लेता था, किन्तु उस के पहले वह सदा यह यत्न करता था कि किसी प्रकार प्रेम से या भय से उसका शत्रु उस से सन्धि करने के लिये तय्यार हो जाय । इस समय भी शत्रु की संशयित दशा को देखकर नैपोलियन ने एक पत्र प्रशिया के राजा के पास भेजा। उस पत्र में प्रशिया के राजा को उसने पहले उस भयानक अवस्था की सूचना दी, जिसमें वह पड़ चुका था । उसने उसे लिखा कि अब तुम्हारा बचना असम्भवता की कोटि में आ चुका है, इस लिये लड़ने से सिवाय प्राणिक्षय के और कोई लाभ नहीं हो सक्ता । अतः नैपोलियन ने सलाह दी कि वह अब भी यदि शस्त्र रख दें तो संग्राम बन्द हो सक्ता है । किन्तु नैपोलियन को इस पत्र का उत्तर नहीं मिला । कई कहते हैं कि वह पत्र प्रशिया के राजा को मिला ही तब, जब हत्थापाई शुरू हो चुकी हैं; और अन्यों की सम्मति है कि रानी के दबाव से राजा ने इस पत्र में दी हुई सलाह को स्वीकार न किया । ख़ैर, कुछ ही हो, नैपोलियन के पत्र का उत्तर उसे नहीं मिला, यह निःसन्देह है । नैपोलियन अपनी सेनाओं से प्रशिया के सुशिक्षित सैन्य को घेरता गया । प्रशिया की सेना भी कोई ऐसी वैसी सेना न थी । उस सेना के तय्यार करने वाला वीर योद्धा, **अल्फ्रेड दि ग्रेट** था। यह राजा बड़ा भारी विजयी योद्धा था। इसी के शिक्षित किये हुवे सिपाही, प्रशिया की सेना में विद्यमान थे । वे सिपाही भी किसी दिन योरप के एक बड़े भाग को अपने शस्त्र के प्रहार के नीचे झुका चुके थे । सिवाय नैपोलियन की गर्म चपेड़ के, वे कैसे अपना मुंह युद्ध से मोड़ सक्ते थे ?

जेना और औरस्टेट के खेतों में दोनों वीर सेनाओं की मुठ्ठ भेड़ हुवी । प्रशिया की सेना वहां ज़बर्दस्त दुर्ग बांधे हुवे पहले से पड़ी थी । जेना पर नैपोलियन ने स्वयं अपनी सेना के एक विभाग के साथ आक्रमण किया । औरस्टेट पर, जहां प्रशिया का राजा अपनी सेना के साथ सगर्व विराजमान था, सेनापति **डीवू** (Davoust) ने उसी समय आक्रमण किया । प्रातः काल से युद्ध का प्रारम्भ हुवा । दोनों ओर के वीर योद्धाओं ने प्राणों की आशा छोड़ कर संग्राम किया । घुड़सवारों की सेनाओं के भी अच्छे धावे हुवे । दोपहर के बारह बज गये, और संग्राम उसी घोरता के साथ होता रहा । कभी फ्रांसीसी सेना प्रशियन सेना को

धकेल कर पीछे भगा देती, और कभी प्रशियन घुड़सवार असह्य आक्रमण करके फ्रेंचसेना को कुछ कदम पीछे कर देते। शान्त और विचारपूर्ण नैपोलियन अपने घोड़े की पीठ पर बैठा हुवा, इस मनुष्यकदन को देखता रहा। दोपहर के समय उसने देखा कि धनुष अब पूरा तन गया है; दोनों सेनायें खूब थक गई हैं और तुली हुई हैं; उस समय नैपोलियन ने उस युद्धकला का प्रयोग किया, जिस से बड़े युद्ध प्रायः जीते जाते हैं। तने हुवे धनुष में, जिस तरफ़ ज़ोर डालिये वही टूट जायगा। इसी प्रकार, जब नैपोलियन देखता कि युद्ध खूब तनगया है, तब उस रक्षित सेना को धावा करने की आज्ञा देता, जिसे वह पहले युद्ध से पृथक् रखता था। नैपोलियन का विजय, रक्षित सेना का विजय हुवा करता था। अब भी उस ने सेनापति **मूरा** की रक्षित घुड़सवार सेना की ओर आंख मोड़ी। मूरा लम्बे चौड़े कद का जवान योद्धा था। लम्बी फूंदेदार टोपी पहन कर जब वह अपनी सेना के सामने घोड़े के एड़ी लगाता था, तो कहते हैं कि उसकी सेना में राक्षसी माया का संचार हो जाता था। वह यदि चाहता तो उस समय उन्हें यम की सेना के साथ संग्राम करने के लिये भी ले जा सक्ता था। उस वीर भयानक मूरा को, अपनी घुड़सवार सेना के साथ प्रहार करने की अब आज्ञा मिली। बस इतना पर्याप्त था। जैसे एक लौहमुष्टि के लगने पर काच का पात्र चूर २ हो जाता है, उसी प्रकार मूरा की वज्रमय सेना के प्रहार से प्रशियन फ़ौज के टुकड़े २ हो गये। वह जान बचाकर भागी। किन्तु नैपोलियन के सामने भागना भी सहल न था। सेनापति **सौल्ट** और सेनापति नेको, युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्वही उसने प्रशियन सेना का मार्ग रोकने के लिये भेज दिया था। ज्यों हीं प्रशियन सेना भागी, त्यों ही उन दोनों सेनापतियों की सेनाओं ने उन का सामना किया। 'वृश्चिकभिया पलामान आशीविषमुखे निपतितः' बिच्छू के डर से भागती हुवी वह सेना सांप के मुख में जापड़ी। दो तोपखानों के बीच में पड़ कर वह भुनगई। उधर औरस्टेट में सेनापति डीवू ने भी विजय पाया। सारी की सारी प्रशियन सेना देखते ही देखते खाक में मिल गई। प्रशिया का राजा, किसी प्रकार अपनी जान बचाकर भाग निकला और पीछे से आती हुवी रूसी सेना की शरण में आगया। औरस्टेट के विजय के उपलक्ष में, सेनापति डीवू को, नैपोलियन ने ड्यूकआव औरस्टेट बना दिया।

प्रशियन शत्रुका क्षय करके, अब नैपोलियन उमड़ते हुवे रूसी बादल को

छिन्न भिन्न करने के लिये आगे को प्रस्थित हुवा । रूसी सेना के साथ मुठ भेड़ होने से पूर्व ही, उसे एक ऐसा कार्य करना पड़ा, जो यद्यपि सैनिकयुद्ध का अंग नहीं कहा सक्ता, तथापि वह उसी की एक पीठिका थी । इस तकरार के प्रारम्भ होने से पूर्व ही, इंग्लैण्ड ने समुद्रस्थित सब फ्रांस के निवासियों को कैद कर लिया था, और उन की सम्पत्तियें छीन ली थीं । तब से निरन्तर इंग्लैण्ड इसी नीति के अनुसार कार्य कर रहा था । फ्रांस के साथ वह किसी भी अन्य देश के जहाज़ को व्यापार न करने देता था। इस से फ्रांस का सामुद्रिकव्यापार सर्वथा नष्ट हो रहा था । यदि समुद्रमें कोई फ्रांसनिवासी पाया जाता, तो ब्रिटिश बेड़ा अवश्य उसे क़ैद कर लेता । नैपोलियन इस से बहुत तंग आगया । वह जहाज़ी शक्ति का स्वामी न था, अतः उस के लिये सीधा ब्रिटिश बेड़े पर धावा करना असम्भव था । इस लिये, उस ने इंग्लैण्ड का व्यापार तोड़ने की टेढ़ी रीति निकाली । **बर्लिन** और **मिलान** से जो शासनपत्र उस ने प्रचारित किये, उन द्वारा सारे स्थल पर इंग्लैण्ड के जहाज़ों का आना बन्द कर दिया गया । स्थल पर, जहां २ फ्रेंचशक्ति विद्यमान थी, जो कोई अंग्रेज़ पायागया, उस की सम्पत्ति छीन ली गई, और उसे कैद किया गया । इस शासनपत्र के प्रचार ने, इंग्लैण्ड के स्थलीयव्यापार को उतने दिनों के लिये बहुत भारी धक्का पहुंचाया । मीठा तथा कई अन्य चीजें, जो पहले इंग्लैण्ड से प्राप्त होती थीं, वे अब स्थल पर ही, विशेषतया फ्रेंचसाम्राज्य में ही बनने लगीं । यह स्वयं ही अनुमान हो सक्ता है कि इस शासनपत्र पर ब्रिटिश पार्लियामेण्ट खूब झींकी होगी । किन्तु यह निःसन्देह है कि इस कार्य के करने में पहल नैपोलियन ने न की थी । उस ने केवल उत्तर दिया था। उच्च आचारधर्म की दृष्टि से चाहे चपेड़ के बदले चपेड़ लगाने को बुरा कहें, किन्तु तब भी इस में सन्देह नहीं कि नैपोलियन और राजाओं की अपेक्षा अधिक क्रूर या कुटिलनीति का वर्ताव न करता था ।

बर्लिन से नैपोलियन रूस के राक्षसयूथ के साथ द्वन्द्वयुद्ध करने के लिये आगे की ओर बढ़ा । सर्दियों की घोर ऋतु उपस्थित हुई । दिसम्बर का महीना था, सर्दी काटने वाली थी । सर्दी के अतिरिक्त चारों ओर बिखरे हुवे शत्रु के कुछ सैन्य भी थे, जो समय २ पर सेना पर छापे मारते रहते थे । ये सब काठिनाइयें थीं, किन्तु, इन सब को झेलता हुवा फ्रेंच सेनासमुद्र अनिवार्य्य गति से आगे बढ़ता ही गया । १९०७ के जनवरी मास में सारी फ्रेंचसेना **विश्च्युला** नदी के किनारे

पर पहुंच गई । वहीं पर सर्दियें बिताने का नैपोलियन ने निश्चय किया । सारी सेना के डेरे वहीं जमा दिये गये । सेना का उपनिवेश ऐसा लगाया गया कि, सारा दृश्य नगराकार हो गया था । गलियें, बाज़ार और चौक—सभी कुछ उस सैनिक उपनिवेश में बना दिया गया । सिपाहियों को इस कृत्रिमनगर में भी निष्क्रिय न बैठने दिया जाता था । व्यूहरचना, खेलकूद और नकली युद्धों द्वारा उन की फ़ुर्ती को स्थिर रक्खा जाता था ।

नैपोलियन इसी तरह सारी शीत ऋतु गुज़ारना चाहता था । वह इस समय फ़्रांस की हद्द से सैकड़ों मील दूरी पर बैठा हुआ था, किन्तु उस की मानसिक शक्तियों का अनुमान इसी से लग सक्ता है कि वह वहीं बैठा २ सारे फ़्रेंचसाम्राज्य का प्रबन्ध करता था । इसी यात्रा में उस ने कई महलों, कई सड़कों, कई विद्यालयों और कई स्मारकों के नकशे खींच २ कर फ़्रांस में भेजे । इस आश्चर्य्यमय मनुष्य के सिर में यह विशेषता थी, कि वह जब, जिस विषय पर विचार करना चाहता था, कर सक्ता था । वह कहा करता था कि 'मेरे सिर में हर एक विषय का एक डब्बा बना हुआ है । जब मुझे किसी एक विषय पर विचार करना होता है, तब मैं और सब डब्बों के मुंह बन्द कर देता हूं और केवल उसी विषय के डब्बे को खुला रखता हूं ।' उस की अवधारणा शक्ति सच मुच विलक्षण थी । कभी २ वह संग्रामभूमि में ऐन शत्रु की तोपों के सामने बैठ कर, फ़्रांस की उन्नति के लिये नई २ स्कीमें तय्यार किया करता था । किन्तु,

'चिन्तयत्यन्यथा जीवो हर्षपूरितमानसः' ।
'विधिस्त्वेष महावैरी कुरुते कार्य्यमन्यथा' ॥

इसी लोकोक्ति के अनुसार, नैपोलियन को भी शीतऋतु आराम से गुज़ारनी न मिली । रूस का सम्राट् उस के सिर पर आ डटा । दिनरात रूस के सिपाहियों ने, चारों ओर से, फ़्रांसीसी सेना पर छापे मारने शुरू किये । भावी बड़े संग्राम को समीप ही आया देख कर, नैपोलियन ने अपनी सेना के डेरे उठा लिये । तत्क्षण सेना को आगे बढ़ने की आज्ञा दी गई । उस घोर काटने वाली हिम में, सारी सेना का प्रयाण प्रारम्भ हुआ । विचारमग्न और चिन्ताशील नैपोलियन अपने घोड़े पर चढ़ा हुआ, अपनी सेना को प्रोत्साहित और उत्तेजित करने लगा । नित्यप्रति छोटे २ युद्ध प्रारम्भ हुये । किन्तु, इन छोटे २ युद्धों में निरन्तर विजय पाती हुई फ़्रेंच सेना आगे बढ़ती गई ।

आइल्यू के मैदान में, दोनों वृहती सेनाओं का सामना हुआ । रूस की शक्ति दो लाख तक पहुंची हुई थी । नैपोलियन के पास तकरीबन एक लाख के फ़ौज थी । जहां युद्ध हुवा, वह स्थान ऐसा था कि वहां युद्धसम्बन्धिनी कला विशेष कार्य्य न दे सक्ती थी । दोनों सेनायें, सपाट मैदान में, एक दूसरे के सन्मुख तनी हुई थीं । युद्ध शुरू हुवा । दोनों ओर से तोपों ने अग्निवर्षा प्रारम्भ की । सिपाही भुनने लगे । ऊंचे या नीचे स्थान का अब प्रश्न नहीं था । जिसने जितने गोले चलाये, उसने उतने ही शत्रुओं को भूतलशायी किया । दोनों ओर बीभत्स कदन हुवा । सारी भूमि लाल ही लाल हो गई । नैपोलियन अपनी सेना को प्रोत्साहित करने के लिये चारों ओर घूमने लगा । कहते हैं कि कभी कभी तो इस युद्ध में वह लड़ने वाली सब से पहली पंक्ति में चला जाता था । तब और सेनापति उस से पीछे आने की प्रार्थना करते थे । सब जानते थे कि फ्रांस की सीमा से सैकड़ों कोस दूर हमारे प्राण इसी एक छोटे से देह पर आश्रित हैं । यह सूत्र कटा और सारी संस्था यहीं चकनाचूर हो जायगी । युद्ध के मध्य में, नैपोलियन, थोड़े से अनुचरों के साथ, एक ऊंची ज़मीन पर खड़ा था । रूस के कुछ घुड़सवारों ने, उसे असहाय देख कर, घेरने के लिये उधर को घोड़ों की लगामें फेरीं । नैपोलियन की शरीररक्षक सेना का अध्यक्ष **सेनापति डोरसिन** शत्रु की इस गति को देख रहा था । सेनापति डोरसिन एक लम्बा चौड़ा और सुन्दर जवान था । उस ने अपनी वीरसेना को नैपोलियन के चारों ओर घेरा डाल कर खड़ा कर दिया । स्वयं, साभिमान और वीरोचित आंखों से शत्रु की ओर देखता रहा । रूसी सेना पास पहुंची । पास पहुंच कर, उस को नैपोलियन के शिक्षित तथा अनुभवी शरीररक्षकों के ऊंचे फून्देदार मुकुट दिखाई पड़े । अपने आयास से निराश होकर रूसी सेना उलटे पांव लौटगई । नैपोलियन ने सेनापति डोरसिन की ओर देख कर मुस्करा दिया ।

इस घोर युद्ध में, एक बार, फ्रेंच सेना बड़ी शोचनीय अवस्था में पड़ गई । सेनापति **औगीरियो** अपनी सेना के साथ शत्रु के मध्य में प्रहार करने के लिये प्रस्थित हुआ । उसी समय, आंधी, पानी और बर्फ़ का एक तूफ़ान सामने से सेना पर आ पड़ा । चारों ओर दीखना बन्द हो गया । किन्तु वीर सेनापति के पीछे २ वह सेना निरन्तर शत्रु की सेना की ओर चलती गई । न उस ने शत्रु को देखा, और न शत्रुने उसे देखा । थोड़ी देर में तूफ़ान बन्द होगया । तब फ्रेंचसेना ने आश्चर्य्य और भय के साथ देखा कि वह बिना जाने बूझे शत्रु की सारी सेना के ऐन

बीच में आ पड़ी है । चारों ओर से उस पर आग बरसने लगी । उस वीरसेना ने भी, बड़े धैर्य्य से उस का सामना किया; किन्तु अकस्मात् सेनापति औगीरियो आहत हो गया । सेनापतिहीन सेना शत्रुदल में से निकल तो आई, किन्तु उन की इस विपदा से फ्रेंचसेना की शक्ति कुछ कम होती हुई प्रतीत देने लगी । इस निर्बलता को देखते ही, रूसी घुड़सवारों ने, एक दुर्निवार आक्रमण करके उस के कदम उखाड़ने का विचार किया । उस समय नैपोलियन को वीर मूरा का स्मरण आया । सेनापति मूरा और बैस्सीयर्स को, उस ने, अपने घुड़सवारों के साथ विजय का मुख बदलने की आज्ञा दी । इतिहास, सवार सेना के उस आक्रमण का, आजतक स्मरण करता है । उस आक्रमण से, सारी रूसी सेना में,दो वार बड़े २ छेद हो गये । किन्तु, सायंकाल के समय फिर रूसी सेना एक दृढ़ चट्टान की न्याईं युद्ध के लिये खड़ी दिखाई दी ।

जिस गांव के पास युद्ध होरहा था, उस में एक गिर्जा था । वह गिर्जा ऐसी जगह पर था, कि उस का जीतना आवश्यक था । युद्ध के बीच में नैपोलियन ने सुना कि शत्रु की सेना ने उसे छीन लिया है । घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ नैपोलियन वहां पहुंचा और ऊंची आवाज़ से चिल्ला कर उस ने अपने सिपाहियों को कहा 'ऐ वीरो ! क्या मुट्ठी भर शत्रुसेना तुम से एक स्थान छीन सक्ती है ? वह गिर्जा अवश्य जीता जाना चाहिये । चाहे कुछ हो, वह जीता जायगा । ' अपने सम्राट् के दर्शन से प्रोत्साहित हुई हुई सेना, एक दम चिल्ला उठी,—'सम्राट् चिरजीवी रहो । ' और यही चिल्लाती हुई उस गिर्जे की ओर को भागी । भागते हुए सिपाहियों में नैपोलियन ने एक बूढ़े सिपाही को देखा, जिस का मुंह बारूद से काला हो गया था; एक बाहु गोली के लगने से कन्धे पर से उतर गई थी; और उस का सारा शरीर लहू लहान हो रहा था । नैपोलियन को उस पर दया आई; उसने चिल्ला कर कहा कि ' वीर पुरुष ! ठहर जाओ । पहले अपनी चोटों का इलाज करालो, फिर लड़ाई में जाना ' ।

सिपाही ने पीछे मुड़ कर देखा और इतना कह कर कि ' जब गिर्जा जीता जायगा, मैं तब अपनी चोटों का इलाज कराऊंगा ' वह विना कुछ सुने, जोश से भागती हुई सेना में मिल गया । नैपोलियन की आंखों में, इस दृश्य को देख कर, आंसू भर आये । उस के शत्रु कहते हैं कि नैपोलियन क्रूर था । निःसन्देह ये चिन्ह क्रूरता के नहीं थे । वह गिर्जा ले लिया गया ।

लड़ाई होते २ रात पड़ गई। दोनों ओर की तोपों ने अपने मुख बन्द किये। दिनभर के युद्ध में रूस की सेना का आधा भाग नष्ट हो गया था। फ्रेंचसेना की भी कुछ कम हानि नहीं हुई थी। कहते हैं कि जैसा जनक्षय इस युद्ध में हुआ, ऐसा शायद ही कहीं हुआ हो। तकरीबन ९० सहस्र मनुष्य मारे गये। क्या इन घोर दृश्यों को देख कर भी किसी का दिल साक्षी देगा कि युद्ध और क्रान्तियें मनुष्यजाति के लाभ और सुख के लिये हैं?

रातभर युद्ध बन्द रहा। फ्रांसीसी सेना युद्धक्षेत्र में ही सोई, किन्तु रूसी सेनापति घबरा गया। वह रात ही रात में युद्धक्षेत्र को छोड़ कर पीछे लौट गया। आठ दिन तक नैपोलियन आइल्यू में ही रहा। जितने आहत सिपाही थे, उन का इलाज करने में ही उस के ये दिन बीते। वह प्रायः गिरे हुए सिपाहियों के आघातों पर स्वयं पट्टी बांधता, और उन्हें सान्त्वना देता था। वे भी प्रायः मरते हुए, नैपोलियन के दर्शन करके अपने आपको धन्य मानते हुए प्राण देते थे। सब मृत सिपाहियों के बालबच्चों तथा परिवारों की रक्षा का भार राज्य पर ही पड़ता था, अतः मरे हुए सिपाहियों को प्रायः घर की तरफ़ से सन्तोष रहता था।

अपनी सेना के व्याहत पुरुषों की रक्षा तथा सेवाटहल का ठीक २ प्रबन्ध करके, उस ने आगे को प्रयाण प्रारम्भ किया। यहींसे उसने रूस के ज़ार को एक चिट्ठी लिखी, जिस में लड़ाई बन्द करने का प्रस्ताव किया गया। उसने उसे खूब समझा दिया कि जबतक वह अपनी सेना के साथ है, कोई उसे जीत नहीं सक्ता। तब केवल जनक्षय करने से क्या लाभ है? किन्तु इस सत्य सुझाने को अलेग्जेण्डर ने या तो धमकी समझा, या डरपोकपने की बात समझा। इस लिये इसपर कोई ध्यान न दिया। फ्रेंचसेना आगे बढ़ती गई। फ्रीडलैंड में दोनों सेनाओं का अन्तिम युद्ध हुआ। इस युद्ध में सेनापति ने ने बड़ी ही वीरता का कार्य्य किया। फ्रीडलैण्ड ग्राम के विजय के समय जो धावा उस ने किया, उससे ही उसे 'वीरों में वीरतम' की उपाधि प्राप्त हुई। सारी रूसी सेना, ग्राम के पिछली तरफ़ बहने वाली नदी में धकेल दी गई। रूस के ज़ार की गर्वित सेना इस युद्ध में ध्वस्त हो गई। यह नैपोलियन के सम्पूर्णविजयों में से एक विजय था।

फ्रीडलैण्ड के युद्ध ने अभिमानी ज़ार की गर्दन झुका दी। जिस ज़ार ने, कुछ दिन पहले, नैपोलियन के शान्ति विषयक प्रस्ताव पर ज़रा भी ध्यान न दिया था,

उस ने अब स्वयं ही शान्ति के लिये प्रार्थना की। नैपोलियन ने वह प्रार्थना स्वीकार कर ली। रूस की सीमा पर नीमन नाम की एक नदी है, वहां तक पहुंच कर नैपोलियन ने अपनी विजेत्री सेना को विश्राम दिया। उस नदी के बांये किनारे पर **टिल्सिट** नाम का एक गांव है। नैपोलियन ने उसी में अपने डेरे डाले। दोनों सम्राटों में सन्धि की बात पक्की हो गई। नदी के ऐन मध्य में एक नौका तय्यार की गई और नियतसमय पर दोनों सम्राट् उस नौका में मिले। वह नौका न रूस के साम्राज्य में थी, और न नैपोलियन के विजित स्थानों में; अतः दोनों सम्राट् खुले तौर से मिले। अलेग्ज़ेण्डर ने नैपोलियन से मिलते ही कहा कि 'मैं इंग्लैण्ड का उतना ही बड़ा शत्रु हूं, जितने बड़े तुम हो।'

नैपोलियन ने कहा कि 'तब तो फिर हमारी सन्धि हुई हुवाई है।'

बस दोनों सम्राटों में सन्धि हो गई। एक दूसरे का सदा साथ देने की दोनों ओर से प्रतिज्ञा हुई। जब दोनों सम्राट् एक दूसरे से मिल गये, तब उन्हों ने अपनी दशा पर विचार किया। उन्हों ने देखा, कि उन की मिली हुई शक्तियों के सामने कोई भी शक्ति ठहर नहीं सक्ती। यह सोच कर उन्हों ने बड़ी ही कल्पनायुक्त भावनायें करनी शुरू कीं। अलेग्ज़ेण्डर भी नैपोलियन के पास ही **टिल्सिट** गांव में आगया। वहां दोनों सम्राट् दिन भर साथ ही रहते और साथ ही भोजनादि करते थे। विश्राम के समय सारे योरप का नक़्शा खोल कर सामने रख लेते, और फिर दूरगामिनी कल्पनायें किया करते थे। नैपोलियन ने अपने लिये पश्चिमीय योरप में विजय के लिये खुल्ल मांगी, और रूस के ज़ार को पूर्वीय भाग में छुट्टी दे दी। सारे योरप को, इन दो नरेशों ने, आपस में बांटने का विचार कर लिया। नैपोलियन इतने बड़े साथी को पाकर प्रसन्न हुआ और ज़ार तो अपने आप को धन्य ही समझने लगा। वह अभी युवा था; नैपोलियन में उस की बड़ी भक्ति थी। वह उसे संसार का एक बहुत बड़ा मनुष्य समझता था। युद्ध में वह प्रायः कहा करता था कि 'हम नैपोलियन के सामने युद्ध में ऐसे हैं जैसे एक राक्षस के सामने वामन हों।' इतने बड़े मनुष्य के साथ अपने आप को सन्धि में गंठा हुआ देख कर, वह अपने अन्दर २ बड़ा गर्वित होता था।

दोनों सम्राट्, मिल कर, **टिल्सिट** में बहुत दिनों तक रहे। जो सन्धि की गई, उस द्वारा प्रशिया के पराजित राजा को उस का आधा राज्य सौंपा गया। शेष देशों के विजयों को, दोनों सम्राटों ने स्वीकार किया। बहुत दिनतक, योरप के भाग्यों

पर विचार करने के अनन्तर, दोनों मित्र-सम्राट् , पृथक् हुवे । एक सालभर बाहिर युद्धों में रह कर, विजयी नैपोलियन, जुलाई की २७ वीं तारीख़ के दिन, पेरिस में प्रविष्ट हुवा ।

तृतीय परिच्छेद ।

साम्राज्यविस्तार और आन्तरिकविस्फोट ।

अणुरप्युपहन्ति विग्रहः प्रभुमन्तःप्रकृतिप्रकोपजः। भारविः।

एक मनुष्य की लौकिक शक्ति जहां तक विस्तृत हो सक्ती है, नैपोलियन की शक्ति इस समय वहां तक विस्तृत हो चुकी थी । जिस महत्वयुक्त स्थान के पाने की कोई सांसारिक मनुष्य अभिलाषा कर सक्ता है, वह स्थान इस समय नैपोलियन को मिल चुका था । वह फ्रांस का अनियन्त्रित राजा था; इटली का राजमुकट भी उसी के शिर पर शोभायमान हो रहा था; हालैण्ड, मिलान आदि स्थानों में उस के भाई उसी के लिये राज्य कर रहे थे; र्‍हाइन का संयुक्तराज्य, सैक्सनी और वुर्टन्बर्ग आदि छोटे देश उस की आज्ञा का पालन करने में अपना अहोभाग्य समझते थे; विस्तीर्ण तथा शक्तिशाली रूस का ज़ार नैपोलियन की मित्रता के कारण अपने आप को धन्य समझ रहा था; प्रशिया और आस्ट्रिया, पराजय पर पराजय खाकर, गर्दन उठाने में सर्वथा अशक्त हो गये थे । यह एक मनुष्य के लिये कितना उच्च पद है ? हमारे साधारणतः संकुचित मन इस गौरवयुक्त स्थान के महत्त्व को समझने में अशक्त हैं ।

इतना बड़ा साम्राज्य और इतनी भयानक शक्ति नैपोलियन ने अपनी दो भुजाओं के बल से ही प्राप्त किये थे । संसार में और कोई उसका सहायक न था । वह सरकारी राजघराने का अङ्कुर न था; और न ही उसे और कोई धार्मिक या वंशीय लाभ प्राप्त था । वह एक निर्धन अज्ञात वकील का लड़का था । अपने एक सिर, और दो बाहुओं को लेकर वह संसाररूपी युद्धक्षेत्र में प्रविष्ट हुआ । इन्हीं तीन वस्तुओं के सहारे उसने वे असाधारण काम कर दिखाये, जिन से सारे भूतल पर कँपकँपी छा गई । ऐसा कोई आदर नहीं था जो उसे प्राप्त न हुआ हो; ऐसा कोई विजय नहीं था जो उस के सामने हाथ जोड़कर न खड़ा होगया हो; ऐसी कोई महत्वाकांक्षा नहीं थी जिसे वह न पा सका हो । जहां उस की महत्त्वाकांक्षा की उंगली उठी, वहीं पर सारे सिर झुक गये और सिवाय नैपोलियन की विजयपताका के और कुछ दिखाई न देने लगा । वह अप्रतिवार्य्य महत्त्वाकांक्षा नैपोलियन को रास्ता दिखाती २ यहां तक खींच लाई ; उस ने उसे 'साम्राटों का भी साम्राट्' बना दिया ।

उस महत्वाकांक्षा ने उससे आश्चर्यजनक कार्य्य कराये। ज्यों २ नैपोलियन उच्च-पद को प्राप्त होता गया, त्यों २ उस की महत्त्वाकांक्षा भी बढ़ती गई । जब वह पहले पहल इटली का सेनापति बना था, तब उस की एक बड़े विजेता बनने की इच्छा से बढ़ कर कोई और इच्छा न थी । जब वह मिश्र से लौटा, तब उस की महत्त्वाकांक्षा केवल प्रथमशासक बनने तक ही उंगली उठाती थी । मेरंजो के विजय ने उसे सम्राट् बनने के लिये तय्यार कर दिया । औस्टर्लिट्स और फ्रीड-लैण्ड के विजयों ने उस की महत्त्वाकांक्षा को और भी ऊपर चढ़ा दिया । अब उस की महत्त्वाकांक्षा, अपनी उंगली उठा कर सारे पश्चिमीय योरप के साम्राज्य का दृश्य उसे दिखा रही थी । पश्चिमीय योरप के सम्राटों को सिंहासन च्युत करके, स्वयं या अपने कृतकराजाओं द्वारा उन के शासन का विचार इस समय नैपोलियन के मन में अठखेलियें ले रहा था । नैपोलियन के पक्ष से कहा जा सक्ता है, कि हालैण्ड, मिलान आदि का राज्य उसे छीनना पड़ा—ऐसा करने के लिये वह बाधित हो गया । इन देशों के राजा उस के शत्रु थे, अतः उस का अधिकार था और उस के इस अधिकार को आत्मरक्षा का भाव आवश्यकता में परिणत कर देता था, कि वह उन के राजाओं को पदच्युत कर के अपने भाई बन्धुओं को उनके स्थान पर स्थित करे । किन्तु यह बहाना लज्जाहीन बहाना है, यह किसी तरह भी खड़ा नहीं रह सक्ता । मनुष्यजाति का हित किसी मनुष्य को या किसी देश को यह आज्ञा नहीं देता कि वह अन्य देशों या राष्ट्रों पर अपना स्वत्व जमाता रहे । मनुष्य को यह अधिकार किसने दिया है कि वह उन सब लोगों का ध्वंस करदे, जो उस के साथ सहमत न हों । यदि ऐसा अधिकार सब मनुष्यों को प्राप्त हो जाय, तो एक दिन भर भी किसी को इस भूतल पर शान्ति के उपभोग करने का अवसर प्राप्त न हो । नैपोलियन के पक्ष में दूसरी युक्ति यह दी जा सक्ती है कि अन्य सारे ही देश अपनी विजयपताका के विस्तार का यत्न कर रहे थे, तब उस ही बेचारे का क्या दोष था ? इस युक्ति के उत्तर में हम इतना ही कहेंगे कि अन्य सारे देश भी मनुष्यजाति के प्रति अपराध कर रहे थे और आज तक कर रहे हैं, अतः समयापेक्षक दृष्टि से नैपोलियन को हम दोषी नहीं ठहराते । हम उसको केवल निरपेक्ष आचारदृष्टि से दूषित ठहराते हैं । क्या हम कभी भी समयापेक्ष दृष्टि से उसे दूषित ठहरा सक्ते हैं, जब हम रूस और आस्ट्रिया के उस समय के इतिहासों से परिचित हैं ? क्या टर्की और पोलैण्ड के इतिहासों को हम भूले हुवे हैं जो हम नैपोलियन

पर दोष लगायें ? इस दृष्टि से नैपोलियन ने कोई अपराध नहीं किया। वह उस संसार में आया, जहां हर एक शक्तिशाली देश, निर्बलों को अपना शिकार बना रहा था। सब सभ्य कहाने वाले देशों को जिस पेशे में लगे हुवे उस ने पाया, उसी का स्वयं भी आश्रयण किया। शायद उसने आवश्यकता से अधिक शीघ्रता इस कार्य्य में दिखाई; शायद उस ने जड़ को मजबूत किये बिना ही प्रासाद खड़ा करने का यत्न किया; और शायद उस ने एक मनुष्य की शक्ति से बहुत बढ़ कर कार्य्य करने का निश्चय किया। शायद उसने ये सब भूलें कीं और इन भूलों का फल उसे अन्त में मिल भी गया। किन्तु क्या समयापेक्षया हम उस के विजयप्रसंगको दोषी ठहरा सक्ते हैं ? और क्या उस के विरोधी अन्य देश उस समय उस की महत्त्वाकांक्षा को या उस की क्रूरता को दोषी ठहरा सक्ते थे ? विना किसी सन्देह के हम उत्तर देंगे कि 'नहीं'।

इसी सार्वत्रिक महत्त्वाकांक्षा से वह भी प्रेरित था। उसके शरीर तथा मन में महत्त्वाकांक्षा के अनुरूप शक्तियें थीं। अतएव, उस की महत्त्वाकांक्षा के सामने कोई भी प्रतिबंध नहीं आया। किन्तु ज्यों २ वह सांसारिक महत्त्व को पाता गया, त्यों २ उस की महत्त्वाकांक्षा शीतऋतु की रात्रि की न्याई बढ़ती चली गई। उस ने जब साम्राज्य प्राप्त कर लिया, तब उसे एक महासाम्राज्य स्थापित करने की अभिलाषा हुई। उस की शक्तियें बहुत बड़ी थीं, किन्तु वे अनन्त न थीं। संसार में मनुष्यसम्बन्धी कोई वस्तु अनन्त नहीं हो सक्ती, तब उस की शक्तियें और उस के साधन अनन्त कैसे हो सक्ते थे ? जहां तक नैपोलियन के जीवन का हम अनुशीलन कर चुके हैं, वहां तक उस की महत्त्वाकांक्षा उस की शक्तियों और साधनों से न बढ़ी थी। किन्तु अब आगे वह अपने जीवन के नये भाग को शुरू करता है। जीवन के इस नये भाग में, महत्त्वाकांक्षा, उस की शक्तियों और साधनों से आगे बढ़ जाती है। वह सारे पश्चिमीय योरप का शासन करना चाहता है, किन्तु अपनी सेना की परिमितता और परकीय राष्ट्रों की राष्ट्रीयता के भावों का ज़रा भी विचार नहीं करता। अब तक नैपोलियन का निर्बाध उठता हुवा चरित था, किन्तु अब आगे उस का डगमगाता हुवा चरित है। उस की महत्त्वाकांक्षा, अब शक्तियों की परिधि से बाहिर निकल गई है। उस ने नैपोलियन की शक्ति के तुले हुवे भार को हिला दिया है और वह एक दम डांवाडोल हो गया है। नैपोलियन ! यदि अब भी अपनी बेलगाम महत्त्वाकांक्षा को रोक सक्ते हो तो रोको ? यदि अब भी

डांवाडोल होते हुवे महत्त्व को स्थिर रख सक्के हो तो रक्खो ? नहीं तो न जाने यह निरङ्कुशा मत्तहस्तिनी तुम्हें किस गढ़े में डाल देगी ? किस हिमानीभयङ्कर देश में ले जा गिरायगी ? या किस सूखे और चुटीले निर्मक्षिक द्वीप में पहुंचा देगी ?

किन्तु, यहां यह भी ध्यान रखना चाहिये कि नैपोलियन कभी भी पहल न करता था, बिना शत्रु के प्रथमप्रहार के वह कभी अपना शस्त्र न चलाता था; अब भी उसको उत्तेजित करने के लिये किसी छेड़ छाड़ की आवश्यकता थी । इस कार्य्य के लिये, नैपोलियन के विजयों का असहिष्णु इंग्लैण्ड अग्रेसर हुआ । विना किसी भी युद्ध या विद्वेष के प्रारम्भ हुए, इंग्लैण्ड का एक जहाजी बेड़ा, **डेनमार्क** के किनारे के पास आ पहुंचा । उस बेड़ का अध्यक्ष **सर अर्थर वेल्ज़ली** था, जो अभी भारतवर्ष में अपने जौहर दिखाकर आया था । उस ने आते ही **डेनमार्क** के राजा के पास कहला भेजा कि ' इंग्लैण्ड की सरकार चाहती है कि डेनमार्क का बेड़ा उस के सुपुर्द कर दिया जाय । उसे डर है कि कहीं फ्रेंचसरकार उसे पहले काबू न कर ले । जब फ्रांस और इंग्लैण्ड में युद्ध समाप्त हो जायगा, तब यह बेड़ा फिर लौटा दिया जायगा ' । डेनमार्क के राजा ने इस प्रकार की अनधिकार चर्चा का स्वीकार करना अपने लिये अपमानजनक समझा और अपना बेड़ा देने से निषेध कर दिया । तब, ब्रिटिश बेड़े ने एक बड़ा ही अप्रशस्य कार्य्य किया । समुद्र के किनारे पर ही **कोपनहेगन** नाम का शहर था, उस पर धड़ाधड़ गोले बरसाने शुरू किये । यह कहने की जरूरत नहीं कि डेनमार्क का बेड़ा ब्रिटिश बेड़े का सामना न कर सका । कोपनहेगन में दो सहस्र से अधिक निरपराधी प्राणी मारे गये । जिन जहाज़ों ने कुछ सामना किया, उन पर भी गोले बरसाये गये । और यह दण्ड डेनमार्कनिवासियों को किस अपराध के लिये दिया गया था ? केवल इस लिये कि उन्हों ने एक अनधिकारचर्चा का प्रतिषेध किया था । किन्तु, लन्दन की कैबिनट ने इस अनधिकारचर्चा के लिये यह बहाना पेश किया कि इंग्लैण्ड की आत्मरक्षा के लिये यह कार्य्य आवश्यक था । ठीक इसी बहाने को लेकर, नैपोलियन ने इस से भी बढ़ कर अनधिकारचर्चा का कार्य्य प्रारम्भ किया ।

पुर्तगाल का राज्य बहुत ही छोटी जगह में है । किसी दिन पुर्तगाल भी विजयों और समारोहों में बहुत बढ़ा हुआ था, किन्तु इस समय वह बहुत हीन अवस्था में पड़ा हुआ था । नैपोलियन ने वहां के राजा से पुछ भेजा कि 'पुर्तगाल फ्रांस की ओर है या इंग्लैण्ड की ओर ? ' पुर्तगाल के राजा ने कुछ उत्तर न दिया ।

नैपोलियन ने कई सहस्त्र सेना सहित सेनापति **जूनो** को पुर्तगाल के जीतने के लिये भेजा । वहां का अशक्तराजा उस सेना का सामना न कर सक्ता था । अपनी सारी सम्पत्ति को इकट्ठा करके, और परिवार को साथ लेकर वह जहाज़ पर सवार हुआ और पुर्तगाल को फ्रांसीसी सेना के हाथ में छोड़ कर **ब्राज़ील** में चला गया । वहां भी उस का ही राज्य था, उसने लड़ कर मरने की अपेक्षा 'अर्धं त्यजति पण्डितः' वाला मामला ही ठीक समझा । पुर्तगाल का स्वामी नैपोलियन हो गया ।

पुर्तगाल के पीछे **स्पेन** की बारी आई । स्पेन में इस समय बोर्बोन वंश का **चतुर्थ चार्लस** राज्य करता था । बोर्बोन वंश नैपोलियन का जन्मशत्रु था । इस लिये, स्वभावतः स्पेन भी उस का विरोधी था । कई वार उस ने विरोध के चिन्ह दिखाये भी थे । इंग्लैण्ड से पृथक् सन्धियें भी वह कर चुका था । किन्तु डर से कभी प्रत्यक्ष विरोध पर वह न उतरता था । जब कभी नैपोलियन किसी बड़े युद्ध में जाता, तब स्पेन भी अपनी सेनायें सन्नद्ध कर लेता । उस की यह इच्छा रहती थी कि यदि नैपोलियन हार जाय तो उस पर सीधा आक्रमण किया जाय; और यदि वह जीत जाय तो सन्नद्धसेना उस की सहायतार्थ भेजी जाय । इसी प्रकार बीचा बीच रह कर स्पेन का राजा अपना कार्य्य चला रहा था । फ्रीडलैण्ड वाली विजय-यात्रा में, नैपोलियन ने सुना था कि स्पेन ने इंग्लैण्ड के साथ सन्धि कर ली है । जब नैपोलियन ने यह सुना, तब वह नींद में था । वह उठा, स्पेन की इस सन्धि के विषय के कागज़ को पढ़ा और इतना कह कर सो गया कि 'स्पेन के राजाओं के स्थान में मुझे अपने वंश का कोई राजा बनाना पड़ेगा ।'

उस कथन के पूरा करने का अब समय आया । इस समय स्पेन का राजा चतुर्थ चार्लस था । यह राजा बड़ा ही निर्बल तथा व्यसनी पुरुष था । सारा दिन शिकार खेलना या रोटी खाना—ये दो ही कार्य्य थे जिन्हें वह प्रसन्नता से करता था । उस की रानी **ल्यूशामेरिया** पहले दर्जे की बेशर्म और निन्दिताचारों वाली स्त्री थी । असली राज्य इस रानी के एक वल्लभ के हाथ में था, जिस का नाम **गौडोय** था । वस्तुतः राज्य का भार इन्हीं दोनों के हाथों में था । राजा भी इन के हाथों में राज्य सौंप कर स्वयं आनन्द उड़ाता था । ऐसी अवस्था में, स्पेन के सर्वसाधारण निवासियों को अपने देश के राज्य की इस दुरवस्था पर शोक आना स्वाभाविक था । उन्हों ने रानी के वल्लभ को एक रोज़ खूब ही मारा पीटा तथा कैद कर दिया, और चतुर्थ चार्लस को तंग करके उस के बड़े पुत्र **फर्डिनण्ड** को राजा बनवा दिया ।

लोगों के अत्याचारों से डर कर ऐशपसन्द निर्बल चार्लस ने स्वयं ही अपना राज्य अपने पुत्र के नाम लिख दिया । डर से उस ने यह कर दिया; किन्तु अन्त को उस के हृदय में बहुत शोक हुआ । पश्चात्ताप में पड़ कर, उस ने नैपोलियन को एक चिट्ठी भेजी । उस चिट्ठी में उस ने लिखा कि 'दबाकर मुझ से राज्य का त्याग कराया गया है, अतः मैं अभी अपने आप को राज्य का वास्तविक अधिकारी समझता हूं । मैं इतने दिनों तक फ्रांस का साथी रहा हूं, अतः नैपोलियन जैसे महान् तथा उदार पुरुष से मुझे आशा रखनी चाहिये कि वह इन कड़े समयों में मेरा पृष्ठपोषण करेगा ।'

बोर्बोन नैपोलियन के सहजवैरी थे और नैपोलियन उन का सहजवैरी था । इस लिये, निसर्गतः नैपोलियन अपने इतना पास बोर्बोन वंश के राजा को रहने न देना चाहता था । उस स्वाभाविक इच्छा में सहायता देने के लिये चार्लस का यह पत्र उस के हाथ में पड़ा । बस, उसी क्षण उस ने अन्तिम निश्चय कर लिया । उस ने हालेण्ड के राजा अपने छोटे भाई ल्यूई को लिखा कि 'यदि तुम स्पेन के राजसिंहासनपर बैठना चाहो तो आ जाओ ।' ल्यूई ने इस कार्य्य में अपनी अशक्ति प्रकट की । तब नैपोलियन ने अपने बड़े भाई जोज़फ़ को इसी विषय का पत्र लिखा । उस ने मिलान की शासकता की अपेक्षा स्पेन की अधीशता को अच्छा समझ कर स्वीकार कर लिया । यह निश्चय करके नैपोलियन स्पेन की हद पर, **बायोन** नामक नगर में पहुंच गया । वहां पर उस ने स्पेन के आसनच्युत राजा चार्लस को, उस की रानी को और वर्तमान राजा फर्डिनण्ड को बुलाया । उस ने उन तीनों को अच्छी प्रकार से समझा दिया कि अब वस्तुतः राज्याधिकार उन में से किसी का भी नहीं है । चार्लस तो स्वयं ही अपनी सिंहासनच्युति की घोषणा कर चुका था । शेष था फर्डिनण्ड, सो उस की माता ने कह दिया था कि वह चार्लस का पुत्र नहीं है, किन्तु गौडोय का पुत्र है । इस लिये उस का भी राज्याधिकार न था । तब नैपोलियन उन के स्थान पर कोई नया राजा चुनने के लिये स्वतन्त्र था । उन तीनों को तथा चार्लस के और दो पुत्रों को गुज़ारे के लिये थोड़े २ स्थान देकर उस ने बिदा किया, और साथ ही स्पेन में आघोषणा करा दी कि 'आज से स्पेन का राजा जोज़फ़ होगा' ।

नैपोलियन का यह कार्य्य आचारशास्त्र के दृढ़ नियमों के अनुकूल नहीं था, यह सर्वथा सिद्ध है । किसी अन्य मनुष्य या जाति को यह अधिकार नहीं कि

वह किसी राष्ट्र का स्वच्छन्द शासन करे। स्पेन के निवासियों को ही अपने शासकों के बदलने का अधिकार था और किसी को नहीं। किन्तु, नैपोलियन का यह अतिक्रामक कार्य्य नीति के भी विरुद्ध था। नैपोलियन के भाई शासन तथा युद्ध की कला में वैसे ही अनभिज्ञ थे, जैसा नैपोलियन उन में अभिज्ञ था। तब जोज़फ़ से यह आशा रखना नैपोलियन की बड़ी भारी भूल थी कि वह एक दूसरी जाति को अपने बुद्धिबल से या बाहुबल से काबू रख सकेगा। उसे स्वयं अपनी ही सेनाओं के साथ जोज़फ़ की रक्षा करनी पड़ेगी—यह पहले से ही स्पष्ट था। ऐसी हालत में, शक्तियों के बँट जाने से जिस हानि की सम्भावना थी, वह भी बहुत साफ़ थी। किन्तु नैपोलियन ने यह सब कुछ नहीं सोचा, यह उस की पहली बड़ी भारी भूल थी। इस भूल का फल भी उसे पीछे से खूब भुगतना पड़ा। अस्तु।

जोज़फ़ को राजा बनाते हुए जो घोषणापत्र नैपोलियन ने प्रचारित किया, उस में स्पेननिवासियों को यह सुझाने का यत्न किया गया था कि ये सब परिवर्त्तन उन के भले के लिये ही किये गये हैं; पहले राजाओं के अत्याचारों के हटाने के लिये ही यह सारा यत्न है। यह घोषणापत्र प्रचारित करके, नैपोलियन वहां से पेरिस को लौट आया। अभी वह स्पेन को छोड़ ही पाया होगा, कि वहां पर हलचल शुरू होगई। पादरियों ने और पुराने दर्बारियों ने साधारण लोगों को भड़काना शुरू किया। स्पेन के देशभक्तों का रुधिर भी इस अनधिकारचेष्टा से उबल पड़ा। सब असन्तुष्टों ने मिल कर स्पेन के कृषकों को तथा अन्य लोगों को खूब उत्तेजित किया। इस उत्तेजना का फल यह हुआ कि थोड़े ही महीनों में सारा का सारा स्पेन शस्त्र लेकर जोज़फ़ को देश से निकालने के लिये उद्यत हो गया। चारों ओर विप्लव की अग्नि भड़क उठी। राष्ट्रीयजागृति का फल जोज़फ़ को शीघ्र ही भुगतना पड़ा। स्पेन की राजधानी **मैड्रिड** को छोड़ कर वह सेनासहित पीछे को लौटने लगा। बहुत सी फ्रांसीसी सेनायें स्पेन के योद्धाओं से घिर गईं। सेनाध्यक्ष ड्यूपोण्ट को २० सहस्र सेना के साथ अपने शस्त्र रखने पड़े। जोज़फ़ ने नैपोलियन को कई ख़त लिखे, जिन में उस से प्रार्थना की कि वह शीघ्र ही उस की सहायतार्थ यत्न करे, अन्यथा स्पेन हाथ से निकल जायगा। पहले तो नैपोलियन उसे उत्साहजनक वाक्यों से उत्साह देता रहा, और चाहता रहा कि किसी तरह उस के जाए विना ही काम चल जाय, किन्तु अन्त को भय इतना बढ़ गया कि उसे सेनासहित स्पेन की ओर को प्रयाण करना पड़ा।

जब नैपोलियन क्षेत्र में पहुंच गया, तब फिर किस की शक्ति थी कि उस की गति को रोक सके ? आंधी की तरह चारों दिशाओं को गुंजाती हुई नैपोलियन की सेना स्पेन में पहुंची । आधा स्पेन तकरीबन ९ सप्ताहों में सर हो गया । राजधानी मैड्रिड के लेने में दो या तीन दिन लगे । वहां के निवासियों ने स्वयं ही अपने शस्त्र धर दिये । राजधानी को अपने वश में करके नैपोलियन आगे बढ़ा । फ्रांस को कष्ट में पड़ा देख कर इंग्लैण्ड ने भी 'आत्मोदयः परज्यानि र्द्वयं नीतिरितीयती' के सिद्धान्त का अनुसरण करते हुए ३० सहस्र सेना के साथ सर जौन मूर को स्पेन में उतार दिया था । अब मैड्रिड से छुट्टी पाकर नैपोलियन ने उस का पीछा शुरू किया । योरप के विजेता की दृष्टि अपनी ओर मुड़ी देख, **सर जौनमूर** ने भी स्पेन को छोड़ कर भागने की ठानी । नैपोलियन उस के पीछे हो लिया । कई दिनों की भागाभागी के पीछे नैपोलियन सर जौन से केवल चार दिन के अन्तर पर रह गया । वहां पर, रात के समय, आग के पास बैठे हुए, उस ने समाचार सुना कि उसे स्पेन के कार्य्य में व्यग्र पाकर, और उस की सेना को भी स्पेन में लगा हुआ देख कर, आस्ट्रिया ने फिर से इंग्लैण्ड के साथ सन्धि कर ली है, और सीमाप्रान्त पर सेना जमा करना शुरू कर दिया है । इस समाचार को सुन कर, एक क्षणभर के लिये तो नैपोलियन का धैर्य्यवारिधि विचलित होगया, किन्तु झटपट ही अपने आप को संभाल कर उस ने आगे जाने का विचार छोड़ दिया । सर जौन मूर का पीछा करने का कार्य्य सेनापति **सौल्ट** को सौंप कर, वह स्वयं वहीं से फ्रांस को लौट पड़ा । उसे पेरिस पहुंचने की अब इतनी जल्दी थी, कि कहते हैं उस ने घोड़े पर चढ़े हुए ९ घंटे में ८९ मील का मार्ग तय किये । रास्ते में सर्वथा आराम न लेते हुए वह अनवरत गति से पेरिस की ओर को रवाना हुआ । उस की यह यात्रा, देखने वालों को बहुत दिनों तक याद रही । चुपचाप और चिन्ताग्रस्त मुख से लक्षित नैपोलियन को, सरपट भागते हुए घोड़े की पीठ पर जिन्हों ने देखा था, वे बहुत दिनों तक उस का वर्णन करते रहे । इसी असाधारण शीघ्रयात्रा के पश्चात् २२ जनवरी के दिन (१८०९) वह पेरिस के राजभवन में पहुंच गया ।

चतुर्थ परिच्छेद ।

आस्ट्रियन-विजय-यात्रा ।

अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता । भारविः ।

संसार में बहुत सी स्थिर वस्तुएं प्रसिद्ध हैं, किन्तु उन में से इतनी स्थिर कोई नहीं जितनी स्थिर जातियों की स्मृतियें होती हैं । और सब कुछ नष्ट हो जाय, किन्तु जातियें अपने साथ किये गये व्यवहारों को कभी नहीं भूलतीं । यदि एक जाति ने किसी अन्य जाति पर एक बार अत्याचार किया, तो वह उस का बदला लिये विना नहीं छोड़ती । इंग्लैण्ड के राजाओं ने, मध्यकाल में, फ्रांस के राज्य पर अपना हक बना कर, उस पर धावा किया; फ्रांस के निवासी इंग्लैण्ड के राजाओं की इस चेष्टा को आज तक नहीं भूले । इसी प्रकार, नैपोलियन के समय से, जर्मनी और फ्रांस में विरोध चल रहा है, वह न अभी तक कम हुआ है, और न उस के कम होने की आशा है । इसी प्रकार भारतवर्ष के मुसलमानों और आर्य्यलोगों में निरन्तर विरोध को देख कर भारतवर्ष के और बाहिर के भी विचारक सोचते हैं, कि यह विरोध हटता क्यों नहीं ? यह प्रतिदिन बढ़ता ही क्यों जाता है ? उन को याद रखना चाहिये कि मार्तण्ड ऊपर से नीचे हो जाय, किन्तु जातियें कभी भी अपने साथ किये हुए अच्छे या बुरे व्यवहारों को नहीं भूल सक्तीं । जाति की स्मृति आकाश के नीले रंग के समान है,—पानी उसे धो नहीं सक्ता, मिट्टी उसे मैला नहीं कर सक्ती और समय उसे फीका नहीं बना सक्ता ।

ऐसी ही दृढ़ और अक्षाल्य स्मृति से, आस्ट्रिया नैपोलियन के विरुद्ध तुला हुआ था । तीन वार, इस पुराने तथा आदृत साम्राज्य का सिर, उस के शस्त्रप्रहार से नँवाया जा चुका था । वह उस की पुरानी ऐतिहासिक राजधानी वीना में भी अपनी तोप की गर्ज सुना चुका था । इस अपमान को आस्ट्रियन नहीं भूल सक्ते थे ! नैपोलियन वीर था, वह विजेता था, किन्तु इन कारणों से आस्ट्रिया उसे क्षमा नहीं कर सक्ता था । जब नैपोलियन की विजयिनी सेना उसे दबने के लिये बाधित कर देती थी, तब वह दब जाता था; किन्तु फिर समय पाकर शीघ्र ही वह उभड़ आता था। इस समय भी कई कारण हुए, जिन्हों ने लेटे हुए आस्ट्रिया को फिर से उठा कर खड़ा कर दिया ।

नैपोलियन ने स्पेन के पुराने राजा को सिंहासनच्युत करके अपने भाई को उसके स्थान पर राजा बनाया। इस क्रिया ने न केवल आस्ट्रिया को डरा दिया, उसने उसे खिजा भी दिया। यदि विजेता नैपोलियन पुराने राजाओं को राजगद्दियों पर से उतार २ कर, अपने भाई बन्धुओं को उन की जगह बिठाने लग गया, तो एक न एक दिन आस्ट्रिया की भी वारी आयगी,—यह विचार था जिसने आस्ट्रिया के राजा को एक दम डरा दिया। एक नये अकुलीन राजा द्वारा, एक पुराने राजवंशीय नरेश को पदच्युत किया जाता देख कर, पुराने वंशीय राजाओं के दिलों में खिजाहट होनी आवश्यक थी। आस्ट्रिया के फिर से उठने के मुख्य दो कारण ये ही थे।

किन्तु ये दो कारण ही पददलित आस्ट्रिया के हाथ में फिर से शस्त्र न पकड़ा सक्ते थे; नैपोलियन के शस्त्र का भय उसे इतना साहसी नहीं बनने दे सक्ता था। इस बाधा को दूर करने के लिये, नैपोलियन स्पेन के झगड़े में फंस गया। स्पेन में जोज़फ़ के आसन को स्थिर करने के लिये, उसे आस्ट्रिया की सीमा पर से कई सहस्र सेना हटानी पड़ी। साथ ही उसे आप भी पेरिस छोड़ना पड़ा। इन घटनाओं ने, आस्ट्रियन नरेश फ्रांसिस के मन में, फिर से सिर उठाने का साहस उत्पन्न किया।

ये सब कारण ही आस्ट्रिया को फिर से उठाने के लिये पर्य्याप्त थे। किन्तु जब नैपोलियन ने एक और तरह से उस के घाव पर नमक छिड़क दिया, तब तो युद्ध असन्दिग्ध हो गया। स्पेन तथा टर्की के झगड़ों का फैसला करने के लिये, नैपोलियन और रूस का ज़ार फिर से **यर्फर्थ** में इकट्ठे हुए। दोनों नरेशों ने एक दूसरे के साथ खूब सलाहें कीं। सारे योरप को आपुस में बांट लेने के प्रस्ताव पर बड़ा आशाजनक विचार हुवा। इस सम्मेलन में आस्ट्रिया के महाराज को नहीं बुलाया गया। यह उसका बड़ा भारी अपमान था। नैपोलियन ने यह अपमान जान बूझ कर किया था। इस सम्मेलन से पूर्व ही, आस्ट्रिया की सेनायें फ्रांस की सीमा पर इकट्ठी हो रही थीं। नैपोलियन का मन इस से सन्दिग्ध हो गया। उसने आस्ट्रिया के राजदूत को इसी पर झाड़ भी सुनाई थी। इस सम्मेलन के हो चुकने पर, उस ने, आस्ट्रियन नरेश को एक चिट्ठी लिखी। उस में उसने साफ़ २ लिख दिया कि 'इस सम्मेलन में आप को न बुलाने का कारण यही था कि आस्ट्रिया की सेना का फ्रांस की सीमा पर एकत्रित होना सन्देहजनक है। शायद आस्ट्रिया फ्रांस से फिर लड़ना चाहता है'। पहले से ही खिजे हुवे आस्ट्रियन नरेश को उत्तेजित करने के लिये, यह घटना पर्य्याप्त थी।

इस सम्मेलन के पीछे नैपोलियन को स्पेन में जाना पड़ा। आस्ट्रिया को यह अच्छा समय हाथ लगा। महाराज फ्रांसिस का छोटा भाई **आर्कड्यूक चार्ल्स** आस्ट्रियन सेना का सेनापति था। वह दो लाख सेना को लेकर फ्रांस की सीमा पर आ जमा। उस की सहायतार्थ ३ लाख और सेना पीछे इकट्ठी हो रही थी। इतनी बड़ी शक्ति को साथ लेकर, आर्कड्यूक चार्ल्स, अपने समय के सब से बड़े योद्धा के साथ मुठभेड़ करने के लिये तय्यार हुवा। नैपोलियन ने इस आक्रमण का समाचार स्पेन में सुना। जिस रात उसने यह समाचार सुना, उसी रात स्पेन की सेना का आधिपत्य अपने भाई जोज़फ को सौंप कर वह पेरिस के लिये रवाना हुवा। बड़ी तीव्रगति से, इस के पहले कि किसी को उस के आगमन का समाचार मिलता, वह ट्यूलरीज़ के सभाभवन में आ पहुंचा।

पेरिस में आकर, नैपोलियन ने, अपनी सीमास्थ सेना को नियमबद्ध करना प्रारम्भ किया। उस का यह नियम था कि वह कभी भी शत्रु पर प्रथम प्रहार न करता था। जब शत्रु उस की या उस के किसी साथी राजा की भूमि पर आक्रमण करदे, तब वह उस का सामना करने के लिये उद्यत होता था। वह अब भी, पेरिस में बैठा हुवा, आस्ट्रियन सेना के प्रथमाक्रमण की प्रतीक्षा करने लगा। अन्त को आक्रमण का दिन भी आ ही गया। रात के बारह बजे उस ने सुना कि आर्कड्यूक चार्ल्स ने उस के मित्र बवेरिया नरेश की भूमि पर आक्रमण किया है। एक घण्टे की तय्यारी के बाद वह गाड़ी में सवार हुवा, और बाण की सी तीव्र गति से अपनी सेना के केन्द्रस्थान की ओर को प्रस्थित हो गया।

सेना में आकर उसने देखा कि उस की स्थिति बड़ी ही भयंकर है। आस्ट्रिया की ५ लाख सेना का सामना करने के लिये उस के पास केवल एक लाख सेना थी। इस एक लाख सेना से, इतनी बड़ी शत्रुसेना का सामना तभी हो सक्ता था, यदि वह अपनी सारी सेना को एक स्थान में एकत्रित करके, उस द्वारा शत्रु की बड़ी सेना को ध्वस्त कर देता। उस ने सेनापति बर्दियर को पेरिस से ऐसी ही आज्ञा भेजी थी, किन्तु उसने अपनी बुद्धि को भी बीच में लगाते हुवे, सारी सेना को बीसों स्थानों में बखेर रक्खा था। जब नैपोलियन ने अपनी सेना की ऐसी दुरवस्था देखी, उसने अपने सेनापति को बहुत धमकाया। उसने कहा कि 'यदि इस समय शत्रु की सेना में कोई भी अच्छा साहसी सेनापति होता, तो अब तक हमारी सेना सर्वथा नष्ट हो गई होती' किन्तु व्यतीत चिन्ता में समय बिताना नैपोलियन की आदत में

न था । उसने उसी क्षण चारों ओर फैली हुवी सेना के सेनापतियों को, बहुत ही शीघ्र अपने पास सेनासहित पहुंचने की आज्ञा भेजी । उस के रणक्षेत्र में रहने का ऐसा प्रभाव था कि केवल दो दिनों में ही कई मीलों की दूरी में फैली हुई सेना एकत्रित हो गई ।

आर्कड्यूक ने, **यत्रमूल** नाम के ग्राम के पास, अपनी एक लाख सेना को दृढ़-तया स्थापित किया । नैपोलियन ने अपनी अदम्य सेना के साथ उस पर आक्रमण किया । फ्रांसीसी सेना में इस समय ९० सहस्र सिपाही थे । घमसान युद्ध प्रारम्भ हुआ । ९ घण्टों तक सिवाय दोनों ओर जनकदन के और कुछ दिखाई न देता था । दोनों ओर की तोपों ने खूब ही हत्याकांड मचाया । अन्त को, पांच घण्टे के पीछे, नैपोलियन ने देखा कि शत्रु की सेना थक गई है । तब उस ने अपनी रक्षक घुड़स-वार सेना को, अन्तिम आक्रमण कर के, शत्रु की सेना को भगा देने के लिये भेजा । यह रक्षकसेना, सारी फ्रांसीसी सेना का निचोड़ थी । सब से वीर तथा कुशल पांच सहस्र योद्धाओं की यह सेना नैपोलियन ने ऐसे ही समयों के लिये तय्यार की थी । रक्षक सेना सारे योरप के लिये भयानक राक्षससेना हो गई थी । जब कभी भी युद्ध में उस के जबर्दस्त घोड़ों की टापें सुनाई देतीं, और उन की टोपियों के ऊंचे फूंदे वायु में फहराते हुवे दिखते, तब योरप में कोई ऐसी सेना नहीं थी, जिस के दिल न दहल जांय । रक्षक सेना का आक्रमण युद्ध का अन्त समझा जाता था । अब भी ९ घण्टे के घमसान युद्ध के पीछे, नैपोलियन ने अपनी रक्षक सेना को अन्तिम काम करने की आज्ञा दी । क्षण भर में ५ सहस्र फूंदे हवा में लहराने लगे । सारी सेनाओं की दृष्टि उधर ही जा पड़ी, जिधर से ५ सहस्र उच्चैः-श्रवाओं की टाप सुनाई दे रही थी । इस रक्षकसेना का सामना करने के लिये, उधर से भी आस्ट्रियन रक्षक सेना के घुड़सवार सन्नद्ध हुवे । इन दोनों रक्षक सेनाओं के अतिरिक्त और सारी सेना केवल दर्शकमात्र हो गई । दोनों ओर की सेनायें जानती थीं कि आज के विजय का अवलम्ब रक्षकसेना के विजय पर है । जिधर के घुड़सवार जीत जायंगे, वही सेना विजेत्री हो जायगी । इस अत्यन्त औत्सुक्य से उत्पन्न हुई हुई निश्चेष्टता के साथ, दोनों सेनायें इस अश्वयुद्ध को देखने लगीं ।

दोनों दलों में जो घोर युद्ध चला, वह लेखनी द्वारा वर्णित नहीं हो सक्ता । फ्रेंच रक्षक दल, बीसों रणक्षेत्रों पर प्राप्त की हुई जीतों से गर्वित और अपने नायक

की अदम्यता से उत्साहित होकर, अनहोनियों को होनियें बना रहा था। आस्ट्रियन रक्षकदल भी, निराशा और अवमानता से खिन्न हो कर, भूखे शेर की तरह लड़ रहा था। कई घण्टों तक बड़ा ही भयानक अस्त्रयुद्ध हुआ। किन्तु अन्त में, आधे से ज्याद: काटा जा कर आस्ट्रियन दल घबरा गया। घबरा कर उसने अपने घोड़ों की बागें पीछे को मोडीं और सारी समरभूमि 'महाराज जीवित रहें' के विजय सूचक नाद से गुञ्जायमान हो गई। रक्षकदल के पांव उखड़ते देख कर आस्ट्रियन सेना के भी दिल टूट गये। आर्कडयूक चार्ल्स अपनी सेना को पीछे हटाता हुवा डन्यूब नदी के पार ले गया। नैपोलियन को पेरिस से चले अभी केवल १२ दिन ही हुवे थे। इसी बीच में उसने पेरिस से डन्यूब के बीच का रास्ता तय किया, बिखरी हुई सेना को एक स्थान में इकट्ठा किया, और अन्त में सारी प्रबल आस्ट्रियन सेना को यक्मूल पर ऐसी शिकस्त दी कि जिस की उपमा इतिहास में बहुत थोड़ी मिलती है। महाराज नैपोलियन की अपरिमेय शक्तियों का यह एक छोटा सा नमूना था।

आर्कडयूक ने अपनी पराजित सेना के साथ डन्यूब नदी को पार करके, **बोहीमिया** के जंगलों में शरण लेने का विचार किया। धीरे २ किन्तु पद २ पर सामना करता हुवा वह पीछे को हटने लगा। **रेटिस्बन** नामक नगर में दोनों सेनाओं का बड़ा घोर युद्ध हुवा। गलियों में और बाज़ारों में फ्रांसीसी तथा आस्ट्रियन खूब लड़े। इसी नगर पर आक्रमण का प्रबन्ध करते हुवे, नैपोलियन के पांव में एक बन्दूक की गोली आ लगी। पैर की एड़ी का निचला थोड़ा सा भाग उस गोली से छिल गया। जब सेनामें नैपोलियन के आहत होने की खबर पहुंची, तब शोर मच गया। सारे सिपाही अपने प्रिय सेनानी के चारों ओर खड़े हो गये। नैपोलियन के पैर में झटपट पट्टी बांधी गई। चोट कुछ गहरी थी, तथापि सेना को प्रोत्साहित करने के लिये, नैपोलियन घोड़े पर चढ़ कर फिर युद्ध का प्रबन्ध करने लगा। नगर थोड़ी ही देर में लेलिया गया, और आर्कडयूक नदी के पार चला गया।

इस समय यक्मूल का विजेता आस्ट्रिया की राजधानी वीना से २०० मील की दूरी पर था। वीना डन्यूब के उसी किनारे पर था, जिस किनारे पर इस समय नैपोलियन था। यद्यपि वह इस समय जीत गया था, तथापि बड़ी चिन्तनीय दशा में था। उस के चारों ओर शत्रु ही शत्रु थे। कहीं अंग्रेज़ सेना और कहीं आस्ट्रियन

सेना—बस चारों ओर उस के शत्रु की ही सेना दिखाई देती थी । इस समय सारा योरप समझता था कि या तो वह फिर आर्कड्यूक से लड़ कर आगे बढ़ेगा या वहीं ठहर कर शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करेगा । किन्तु यह कोई न सोच सक्ता था कि वह अपने पीछे शत्रुओं के समूह को छोड़ कर सीधा वीना को ही चल देगा । किन्तु, और लोगों के लिये जो कुछ असम्भव था वही नैपोलियन के लिये सम्भव था । उसने न आगा देखा न पीछा—सीधा वीना के प्रति प्रयाण प्रारम्भ किया । उसने अपने मन्त्रियों से कहा था कि ' आस्ट्रिया को दबाने का एक यही रास्ता है कि उसकी राजधानी से ही उस का शासन किया जाय' बड़ी तीव्रगति से सारी सेना के साथ वह राजधानी की ओर को प्रस्थित हुवा । रास्ते में कई स्थानों पर दोनों दलों की मुठ्भेड़ हुई; कई जगहों पर छोटे २ युद्ध हुवे; किन्तु उन सबमें जीतती हुई फ्रेंचसेना के झण्डे, १० मई (१८०९) के दिन, वीना नगर की दीवारों के सामने फह-राने लगे ।

नैपोलियन के पास पहुंचने का समाचार सुन कर, महाराज फ्रांसिस तो, अपनी सारी साम्राज्यलक्ष्मी को छोड़ कर, सात नौ ग्यारह हो गये थे । फ्रेंच सेना ने, नगरमें, महाराज के स्थान में, नगर के अध्यक्ष **आर्कड्यूक मेक्सिमिलियन** को पाया । नैपोलियन नहीं चाहता था कि ऐतिहासिक तथा प्राचीन वीना की दीवारों पर गोला बारी की जाय । इस लिये, उस ने, आर्कड्यूक के पास कहा भेजा कि ' यदि तुम नगर के दरवाज़े फ्रांसीसी सेना के लिये खोल दोगे, तो दीवारों को गोलों से छेदने की आवश्यकता न होगी । योरपभर के पुरातन नगरों में से वीना भी एक है । इस के प्रासादों का ध्वंस करना मुझे अभीष्ट नहीं । इस लिये, यही अच्छा है, कि तुम द्वार खोल दो ' किन्तु मेक्सिमिलियन इन सलाहों को सुननेके लिये तय्यार न हुआ । शहर के अन्दर गोलाबारी शुरू हुई । दस घण्टों तक बराबर तोपों के मुंह खुले रहे । चारों दिशाओं में, अग्नि की ज्वालाओं और धूंए की धाराओं के सिवाय कुछ दिखाई न देता था । जिस तरफ़ को गोले फेंके जा रहे थे उधर ही आस्ट्रियननरेश की लड़की बीमार पड़ी हुई थी । जब नैपोलियन को इस बात की सूचना मिली, तब उसने तोपों का मुख शहर के उस भाग की ओर से मोड़ कर दूसरी ओर को कर दिया ।

आखिर कई घरोंका तथा प्रासादोंका सत्यानाश कराकर, आर्कड्यूक मेक्सिमिलि-यन ने नगर के द्वार खोलनेका वचन दिया । नगर के द्वार तदनुसार खोल दिये गये ।

सारा राजकोश तथा सांग्रामिक सामान विजेता के हाथ पड़ा। राजकीय प्रासाद में, महाराज नैपोलियन ने, अपना डेरा डाल दिया। सेना को यह कठोर आज्ञा दी गई, कि वह शहर के किसी निवासी की सम्पत्ति या कलत्रादि को न छुए। चारों ओर कठोर नियमों का बन्धन रक्खा गया। शहर के निवासियों को कष्ट न हो, इस लिये विजेता ने अपनी सेना के लिये भोज्यादि पदार्थ भी बाहिर से ही मंगवाये। इस प्रकार, नैपोलियन ने, अपनी दिगन्तविस्तारिणी कीर्त्तिनदी में वीनाविजय का एक और स्रोत मिला दिया।

नैपोलियन इस समय आस्ट्रिया की राजधानी में था। किन्तु वह सुरक्षित अवस्था में न था। करोड़ों की आबादी वाले विजातीय देश में, केवल एक लाख सेना की सहायता से रहना कोई सहल कार्य्य न था। विशेषतया ऐसी अवस्था में, जब कि डन्यूब नदी के परले किनारे, आर्कड्यूक चार्लस, एक लाख के समीप सेना के साथ, युद्ध करने के लिये तय्यार खड़ा था। अब, वीना को लेने के पश्चात्, सब से प्रथम कार्य्य जो नैपोलियन को करना था, वह आर्कड्यूक की सेना का ध्वंस था। अपने एक सचिव को वीना का शासक निश्चित करके, सेनासहित अदम्य जेता डन्यूब नदी के तट पर आ जमा।

वीना नगर के कुछ नीचे जाकर, डन्यूब में एक ऐसा स्थान था, जहां पानी कुछ कम गहरा था, तथा उसका वेग भी कुछ कम था। नदी का जो असली पुल था, उसे शत्रु ने उड़ा दिया था। नैपोलियन ने, उसी ओछे पानी की जगह से, नदी के पार करने का संकल्प किया। यद्यपि, वहां पानी गहरा कम था, तथापि उसका विस्तार बहुत था,—तकरीबन ९०० गज़ पानी गुज़र कर फिर फ्रेंच सेना पार पहुंच सक्ती थी। नदी के बीच में लोब्यू नाम का एक द्वीप था। वह द्वीप कोई तीन मील चौड़ा था। उस से नदी के दो भाग होते थे। उसी स्थान को पार करने के योग्य समझ कर, नैपोलियन ने किश्तियों के पुल तय्यार कराने शुरू किए।

थोड़े दिनों में पुलों का सारा सामान तय्यार हो गया। १९ मई की रात के समय, सेनाओं ने पार उतरना शुरू किया। आस्ट्रियनसेना नदी से पांच मील की दूरी पर पड़ी थी। उसे फ्रेंच सेना के पार उतरने का समाचार प्रातःकाल पहुंचा। आर्कड्यूक चार्लस ने यह समाचार सुनते ही, अपनी सेना को आज्ञा दी कि वह भाग कर फ्रेंच सेना के पार उतरने को रोक दे। बड़ी तीव्र गति से आस्ट्रियन सेना नदीतट के पास पहुंच गई। आस्ट्रियन सेना के वहां पहुंचने से पूर्व, २० सहस्र फ्रेंच सिपाही

एक छोटे तोपखाने के साथ पार पहुंच चुके थे । इस २० सहस्त्र सेना ने, नदी के तट पर के दो ग्राम काबू कर लिये थे । आस्ट्रियन सेना उन्हीं पर टूट पड़ी । बड़ा असम युद्ध प्रारम्भ हुआ । एक लाख आस्ट्रियन २० सहस्त्र फ्रेंच सिपाहियों पर आग बरसा रहे थे । किन्तु शिक्षित सिंही की न्याईं, अदम्य वृहती सेना, अपने स्थान से न हिली । सेनापति लेनस और मेस्सीना ने विशेष वीरता का परिचय दिया । इधर तो यह असम युद्ध हो रहा था, और उधर डन्यूब पर बनाये हुए पुल का एक टुकड़ा टूट गया । आस्ट्रियन सेना ने, ऊपर से बड़े २ वृक्ष और अन्य भारी २ वस्तुऐं तैरानी शुरू कीं । उनकी टक्कर से सेतु का एक पक्ष पृथक् होगया । इसका समाचार जब फ्रेंच सेना में पहुंचा तब जो निराशा वहां फैली होगी, उसका अनुमान हो सक्ता है । विना और सेना के आये अब २० या २५ सहस्त्र फ्रेंच सेना का जीते रहना भी कठिन था । दूसरे दिन पुल का टूटा हुआ हिस्सा बनाया गया, किन्तु पानी के चढ़ाव में दूसरी बार सारा का सारा पुल बह गया । अब तो फ्रेंचसेना बहुत ही विपदा में पड़ी । किन्तु वहीं मुट्ठी भर सेना दो रोज़ तक बराबर एक लाख आस्ट्रियन सिपाहियों के दांत खट्टे करती रही । वे दोनों गांव, सारी शत्रु सेना, अपने सारे तोपखाने की सहायता से भी, लेसकी ? यह युद्ध, नेपोलियन की सेना के कई विजयों से भी अधिक गौरवयुक्त था ।

आखिर दूसरे दिन की रात आई । नदी के दूसरे पार पड़ी हुई सेना से अब किसी तरह की सहायता की आशा नहीं रही थी । ऐसी अवस्था में, मुट्ठिभर फ्रेंच सेना, किस प्रकार से निरन्तर युद्ध कर सक्ती थी ? ये सब विचार कर के रात ही रात में सारी सेना डन्यूब के छोटे हिस्से को पार कर के लोब्यू द्वीप में आगई । इस द्वीप में शत्रु की तोपों के गोले नहीं पड़ सक्ते थे । इस स्थान को रक्षित समझ कर, नैपोलियन ने वहीं पर डेरा जमाने का विचार किया । द्वीप में उपनिवेश डाल दिये गये । सेना के एक बड़े भाग को वहां टिका कर, महाराज ने कई बहुत दृढ़ तथा विस्तृत पुलों की तय्यारियें शुरू कीं । इस बार ऐसे पुल बनाने का सामान इकट्ठा किया गया, जो पानी के बढ़ने से या किसी छोटी मोटी चीज़ की टक्कर से न टूट सकें । इस प्रकार के चार पांच खूब चौड़े २ पुल बना कर, ४ थी जुलाई की रात को नदी पर तान दिये गये । रात ही रात में, गुप्त रीति से, ७० हज़ार सेना नदी के परले पार पहुंच गई । आर्कडयूक के लिये यह आश्चर्य तथा विस्मय के उत्पन्न करने वाली बात थी । वह भी लड़ने के लिये तय्यार तो पहले से हो रहा था,

वाग्राम का युद्ध

पृ० १५५

किन्तु उसे यह सम्भावना न थी कि इतने शीघ्र नैपोलियन की इतनी बड़ी सेना पार उतर आयगी।

दूसरे दिन प्रातः काल ही, छोटी २ लड़ाइयें प्रारम्भ हो गईं। किन्तु दिन भर में कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ। दोनों सेनायें दूसरे दिन के अन्तिम संग्राम के लिये तय्यार होती रहीं। सारी रात रणक्षेत्र पर ही गुज़ार कर, दूसरे दिन प्रभात होते ही, दोनों वृहती सेनायें भिड़ गईं। **वाग्राम** का प्रसिद्ध युद्ध प्रारम्भ हुवा। युद्ध का विस्तृत वर्णन करना असम्भव है। इतना कहना पर्याप्त है कि आस्ट्रियन सेना फ्रेंच सेना से दुगनी थी, नैपोलियन के सेनापतियों में से दो सर्वथा निकम्मे हो गये थे। लेनस मरगया था; और बैस्सीयर्स घोड़े पर से गिरने के कारण सर्वथा अशक्त हो गया था। इतनी न्यूनताओं के होने पर भी, सायंकाल होने पूर्व ही आस्ट्रियन सेना पीठ दिखा कर भागी जाती हुई दिखाई दी। नैपोलियन ने ऐसी व्यूहरचना की थी कि आस्ट्रियन सेना की अधिक संख्या किसी काम न आसक्ती थी। सेनापति **मेकडानल्ड** को आज्ञा दी गई कि वह अपनी पैदल सेना के साथ शत्रु सेना के एैन मध्य में छिद्र कर दे। एक चलायमान चट्टान की तरह, तोपों की श्रेणि के पीछे २, उस की पैदल सेना शत्रु के मध्य में घुसने लगी। ऊपर से आग बरसती थी, चारों ओर से गोलियें बेध रही थीं, किन्तु मेकडानल्ड की पैदल सेना निरन्तर बढ़ती चली गई। ज्यों ही नैपोलियन ने देखा कि पैदल सेना ने शत्रुदल के मध्य में छिद्र कर के उसे दो भागों में विभक्त कर दिया है, त्योंही उस ने सेनापति डीवू को आज्ञा दी कि वह एक पार्श्व पर आक्रमण करे। पार्श्व पर आक्रमण होने से, ज्यों ही शत्रु के सैन्य में खलबली पड़ी, त्यों ही नैपोलियन ने अपनी तेज़ कटार रूपी रक्षकसेना शत्रु के पेट में घुसेड़ दी। जैसे शेरके अन्दर आ पड़ने से भेड़ बकरियें जहां स्थान पाती हैं भाग निकलती हैं, इसी प्रकार रक्षकदल के प्रहार होते ही, आस्ट्रियन सेना भी चारों दिशाओं में बिखर गई। संग्राम जीत लिया गया। नैपोलियन अब आस्ट्रिया का अनिवार्य स्वामी हो गया।

इस युद्ध के पश्चात् ही, आस्ट्रियन नरेश ने, सन्धि के लिये प्रार्थना भेजदी। नैपोलियन ने उसे झट पट स्वीकार कर लिया। वह केवल शक्ति और शान्ति चाहता था, उसे संग्रामों की विशेष आवश्यकता न थी। थोड़े दिनों में ही सन्धि की शर्तें स्थिर हो गईं, और नैपोलियन पेरिस को लौट पड़ा। किन्तु लौटने से प्रथम, आस्ट्रिया के भविष्यत् विरोध को कम करने के लिये, उस ने, वीना के चारों ओर के पुराने

प्राकार को गिरा दिया । इन्हीं दिनों में, उस ने, रोम के पोप को भी पदच्युत कर के क़ैदी कर लिया, क्योंकि वह नैपोलियन के कथनानुसार अपने बन्दरगाह ब्रिटिश जहाज़ों के लिये बन्द न करता था ।

इस प्रकार नैपोलियन की यह आस्ट्रियन विजययात्रा समाप्त हुई ।
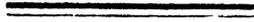
पञ्चमपरिच्छेद ।

फ्रांस का शासन ॥

स वेलावप्रवलयाम्परिखीकृतसागराम् । अनन्यशासनान्देशं शशासैकपुरीमिव । (परिवर्तित) । कालिदासः ।

नैपोलियन विजेता था, साथ ही वह शासक भी था । उस के विजयों के समाचार हम सुन चुके, अब शासन पर भी दृष्टि डालनी निरर्थक न होगी । गत चार वर्षों तक, वह प्रायः युद्धक्षेत्र में ही रहा । पेरिस में आकर निवास करने का उसे बहुत ही थोड़ा समय मिला । जब कभी वह पेरिस में आकर बैठा, तब भी बाह्य शत्रुओं ने उसे चैन नहीं लेने दी । इस अवस्था में, यह स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि वह फ्रांस का शासन कुछ न कर सका होगा । किन्तु, यह स्पष्ट परिणाम ठीक नहीं है । यह परिणाम ठीक होता, यदि नैपोलियन केवल साधारण शक्तियें रखने वाला मनुष्य होता—यदि उसके असाधारण शरीर में असाधारण मन न धरा हुवा होता । किन्तु ऐसा नहीं था । वह अनन्य-साधारण शक्तियों से युक्त मनुष्य था । उस के लिये युद्धों में विजय यदि दायें हाथ की खेल थी, तो फ्रांस का शासन बायें हाथ की खेल से अधिक न था । पेरिस से पन्द्रह २ सौ मील दूरी पर बैठे हुवे, और सांग्रामिक चिन्ता में व्यस्त रहते हुए भी, वह फ्रांस का उसी तरह शासन किया करता था, जैसा अपने ट्यूलरीज़ के कार्य्यालय में । यदि उस का इन पांच वर्ष के विजयों का वर्णन कई मनुष्यों के सारे जीवनों के विजयों के वर्णन के समान है, तो उस की शासन कथा भी कुछ कम विस्तार वाली नहीं । नैपोलियन की वह शक्तिरूपी नदी, जो दिग्विजय के लिये बहती हुवी चिरनिर्मित साम्राज्यों को उखाड़ती और शासकों को उन्मूलित करती हुई दिखाई देती थी, अपने घर में शीतलजलवाहिनी और सर्वतापदाहिनी गंगा के समान प्रतीत होती थी । उस की वह तेजो रूपी विद्युल्लता जो बाह्य संग्रामों में शत्रुसैन्यों के महान् पर्वतों की चोटियों को गिरा २ कर चकनाचूर करती हुई चमकती थी, फ्रांस के घरों में पंखों के चलाने वाली और भोजन के तय्यार करने वाली जीवनशक्तिदायिनी अलक्तरसता अनुभूत होती थी । सारांश यह कि नैपो-लियन का शासन वैसा ही शान्तिदायी था, जैसा भयानक उस का विजयप्रसंग था ।

इस बात को नैपोलियन के शत्रु भी स्वीकार करते हैं कि उस की शासनयोग्यता

बहुत ऊंचे दर्जे की थी। उस के शासन का हर एक कार्य्य फ्रांस की शान्ति तथा समृद्धि के लिये था। यदि ज़रा ध्यान से उस के जीवन के कार्य्यों पर दृष्टि डाली जाय, तो प्रतीत होता है कि उस ने अपने सामने दो मुख्य उद्देश्य रक्खे हुए थे। प्रथम उद्देश्य फ्रांस में अपने राज्य को शान्ति तथा समृद्धि द्वारा स्थिर करना और दूसरा उद्देश्य फ्रांस के साम्राज्य को विस्तृत करना था। फ्रांस के साम्राज्य को स्थिर करना कोई छोटा मोटा कार्य्य न था। वह राजकुलीन नरेश न था किन्तु जाति का पुत्र था; जाति ने उसे सम्राट् बनने के योग्य समझा और बना दिया। अपनी योग्यता और अपनी वीरता से वह राजा बना था, राजवंश में उत्पन्न होने के कारण वह राजा न था। तब उसका साम्राज्य स्वभावतया स्थिर न था, उस के सिर का मुकट वैसी ही चलायमान दशा में था, जैसे एक पद्मपत्र पर जल का बिन्दु हुआ करता है। जन साधारण की हर एक सम्मति और हर एक कार्य्य क्षणिक मौज पर स्थिर रहते हैं। जैसे वर्षाऋतु में क्षण २ के पीछे प्रकृति अपने रूप बदलती है, वैसे ही जनसाधारण की सम्मतियें भी बदलती रहती हैं। नैपोलियन जनसाधारण की उस सम्मति को स्थिर करना चाहता था। इस स्वभाव से विरुद्ध कार्य्य के करने के लिये, असाधारण यत्न तथा किंकर्तव्यता अपेक्षित थे। नैपोलियन उन दोनों में कुछ दूर तक कृत कार्य्य हुवा। बहुत सम्भव था कि वह पूरी २ कृतकार्य्यता को प्राप्त हो जाता, किन्तु उस सम्भव का समय आने से पूर्व ही उस से एक बड़ी भारी ग़लती होगई। विरोधिरूपी मेघ असमय में ही उमड़ आया और उस के जमते हुवे साम्राज्य-प्रासाद को मिलियामेट कर गया।

अपने साम्राज्य को स्थिर करने का सब से प्रधान साधन वह यह समझता था कि अपने बल से प्राप्त किए हुए शासन को वह लोगों के मनों में उसी प्रकार से जमादे, जिस प्रकार एक राजवंशीय शासक का शासन जमा रहता है। हर एक इतिहासज्ञ आंखें मूंदकर भी यह कह सकता है, कि उस समय फ्रांस को यदि किसी भी वस्तु की आवश्यकता थी, तो वह दृढ़ स्थिरता की थी। क्रान्तिरूपी परिवर्तन ने उसकी पुरानी संस्थाओं का समूल नाश करदिया था। पुराने कँटीले वृक्ष उखड़ चुके थे। अब उद्यानको नये सुहावने तथा दृढ़ वटों की आवश्यकता थी। परिवर्तनप्रधान अवस्था में रह कर फ्रांस पर्य्याप्त शुद्धता को पा चुका था। अब उस दशा के हटाने का समय था। फ्रांस की उन्नति के लिये भी और योरप के अन्य राज्यों के लिये भी, अब फ्रांस का स्थिर शासन के नीचे आजाना

ही अच्छा था। इस लिये ऐसा कोई भी विचारक नहीं हो सकता, जो नैपोलियन के इस उद्देश्य के साथ सहमत न हो।

साम्राज्य स्थिर करने के लिये, सब से पूर्व, क्रान्ति के सब चिन्हों का दूर करना आवश्यक था। नैपोलियन ने इस कार्य्य को भी वैसी ही बुद्धिमत्ता से किया, जैसी से वह रणक्षेत्र में अपनी सेना को चलाता था। सर्वसाधारण द्वारा नियामकसभा या शासकसभा के चुनाव से बढ़ कर क्रान्ति का चिन्ह और कोई न था। सर्वसाधारण-प्रजा सालभर खाने पीने और पहरने के सिवाय और किसी चीज़ की परवा नहीं करती। उस की तीन प्रकार की आवश्यकतायें पूरी करदो और वह तुम्हारे शासन की अणुमात्र भी परवा नहीं करते। ऐसी शान्तदशा में स्थित प्रजा को शासक-सभा के चुनने के लिये इकट्ठा किया जाय, और फिर हरएक दल लोगों को अपना २ पक्ष सुझाये, तब समझा जा सक्ता है कि परिणाम क्या होगा? यदि सर्वसाधारण शिक्षित हैं, तो वे शान्ति की उचित सीमा में रह सकेंगे; किन्तु यदि वे अशिक्षित तथा अज्ञ हैं, तो जो सब से अधिक भड़काने वाली बातें उन्हें सुनायगा वे उसी का कथन स्वीकार करेंगे। क्या क्रान्ति के फैलाने वाला इस से बढ़कर कोई कारण हो सक्ता है?

नैपोलियन ने फ्रांस की साधारणप्रजा को अशिक्षित पाया, अतः उसने सर्व-साधारण के चुनाव की रीति को उड़ाना चाहा। जिस अशुद्धि को कर के सोलहवें ल्यूई ने फ्रांस की शान्ति और अपने जीवन को इकट्ठी तिलाञ्जलि दे दी थी, वही अशुद्धि नैपोलियन फिर से न कर सक्ता था। पहले जब वह प्रथम शासक हुवा, तब उसने यह नियम रखाया कि सर्वसाधारण में से कुछ व्यक्तिनिर्दिष्ट कर दिये जाया करें, फिर उन में से नियामकपरिषद् या शासकपरिषद् के सभासद् चुने जाते थे। फिर जब वह सम्राट् बन गया, तब तो सारे चुनाव का अधिकार ही उसे था। इस प्रकार, यद्यपि उसने क्रान्ति की दी हुई कई शक्तियें सर्वसाधारण से छीन लीं, तथापि शक्ति स्थापना के लिये ऐसा करना आवश्यक था। जो देश क्रान्ति से विरुद्ध थे, और उस के विरुद्ध अपनी सेनाएं भेज रहे थे, उन्हें नैपोलियन के इस कार्य्य से प्रसन्न होना चाहिये था। किन्तु, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें किसी सिद्धान्त से डर न था, वे केवल फ्रांस की बढ़ती से डरते थे। जिस मुख से वे कल क्रान्ति पर गालियों की बौछाड़ कर रहे थे, उसी मुख से आज वे नैपोलियन को अत्याचारी की उपाधि देने लगे।

दूसरा कार्य्य नैपोलियन ने यह किया कि नियामकपरिषद् (Tribunate) को

उड़ा दिया। १८०७ में, जब टिल्सिट की सन्धि के पश्चात् वह फ्रांस में आया, तब उस ने शासकसभा में ही नियामक सभा के भी सभासदों को मिला दिया। इस प्रकार से, शासनकार्य्य को सहल करने के अतिरिक्त शासन का एक अनावश्यक अंग काट दिया गया।

पुराने राज्यों की स्थिरता का एक बड़ा भारी कारण उनका धार्मिक उपजन होता है। हर एक राज्य अपने साथ किसी न किसी धर्म्म का सम्बन्ध बनाये रखता है। मध्यकाल में राज्य का उद्भव ही ईश्वर से माना जाता था। यह भाव केवल हमारे यहां के मन्वादिग्रन्थों में ही नहीं मिलता, योरप में भी प्रायः सर्वत्र यही भाव विद्यमान था। पुराने राज्यों में राजतिलक के समय भी धर्म्माचार्य्यों का ही आशीर्वाद आवश्यक समझा जाता था। इस पुरानी रीति तथा भाव से, नैपोलियन पूरा लाभ उठाना चाहता था। अपने साम्राज्य की स्थिरता के लिये वह धर्म का आश्रय आवश्यक समझता था। इसी लिये, अपना राजतिलक उसने स्वयं पोपके हाथ से करवाया। इस असाधारण मनुष्य की सभी बातें असाधारण थीं। पोप का स्वयं पेरिस में आकर इसके सिर पर ताज रखना एक नई घटना थी। फ्रांस देश का भी रोमन कैथोलिक धर्म उसने आरोपित कर दिया था। यह कहना सर्वथा ही सत्य-शून्य होगा कि वस्तुतः उसे रोमन कैथोलिक धर्म्म से कोई प्रेम था। यह सारी उस की राजनैतिक चाल थी, जिस का उद्देश्य अपनी स्थिरता द्वारा फ्रांस की सामाजिक स्थिति की रक्षा करना था।

धर्म के पश्चात्, साम्राज्यों का दूसरा आश्रय कुलीन लोग होते हैं। हरएक पुराने वंश के राजा के चारों ओर विशेष २ कुलों का समूह एकत्रित होता है, जो न केवल राजा के कार्य्यों के उत्तरदातृत्व को बांटता है, कष्टसमय में उस का सहायक भी होता है। यदि धर्म साम्राज्यरूपी प्रासाद की ईंटों के जोड़ने वाला चूना है, तो यह कुलीन जनसमूह उस के धारण करने वाली स्तम्भमाला है। स्तम्भों के विना, किसी भी मकान का स्थिर रहना असम्भव है। फ्रांस के पुराने सब बड़े २ वंश क्रान्तिरूपी वज्रपात से चकनाचूर हो चुके थे, इसलिये नैपोलियन के लिये एक नई कुलीनश्रेणि का तय्यार करना आवश्यक था। अतः उस ने बड़े २ वीरों, विद्वानों तथा कलाभिज्ञों को सम्मानित कर के अपने सहायक बनाने के लिये (Legion of Honour) लीजियन आव आनर की स्थापना की। इस उपाधि को प्राप्त करके, प्राप्त करने वाला फ्रांस के नवीन साम्राज्य का वैसा ही सहायक बन जाता था, जैसा पुराने साम्राज्य का सहायक पुराना कुलीन होता था।

साम्राज्य की स्थिरता के ये सब साधन थे, किन्तु ये सब कुछ भी नहीं कर सक्ते जब तक प्रजा सुरक्षित तथा समृद्ध अवस्था में न रहे । साम्राज्य के स्तम्भ तथा चूने कितने ही हो जांय, उन से वह स्थिर नहीं हो सक्ता । साम्राज्यों की जड़ प्रजा की रक्षा तथा समृद्धि में है । सर्वसाधनसम्पन्न सम्राट् भी अपने सिंहासन पर स्थित नहीं रह सक्ता, जब तक उस के साम्राज्य में रक्षा तथा समृद्धि नहीं। रक्षा तथा समृद्धि की कमी ने ही फ्रांस में बोर्बोन वंश का नाश किया, और उसी ने ही क्रान्तिरूपी अग्नि को प्रज्वलित किया । अतः, नैपोलियन का सब से मुख्य कार्य्य देश में शान्ति तथा सम्पत्ति की वृद्धि करना था । शान्ति तथा रक्षा की स्थापना के लिये, उस ने नैपोलियन-स्मृति (Code Napoleon) की रचना करवाई । इस स्मृति द्वारा, फ्रांस के राजनियमों का बहुत ही संशोधन तथा सरलीकरण हो गया । यह बात सभी विचारकों द्वारा स्वीकृत है कि यह स्मृति नैपोलियन के ही सिर की कृति थी । उस के महत्त्व से ईर्ष्या रखने वाले कई लेखक, इस स्मृति के बनने में, नैपोलियन के भाग को उड़ाना चाहते हैं । वे कहते हैं कि इस स्मृति के बनाने वाले तीन या चार वकील थे, जिन्हें नैपोलियन ने इस कार्य्य में नियुक्त किया था । उस का अपना भाग इस में बहुत न था । उन महाशयों से हम यह प्रश्न करेंगे कि क्या आप मेरेन्जो औस्टर्लिट्स और वाग्राम के विजय में भी नैपोलियन का कुछ हिस्सा मानते हैं या नहीं ? यदि मानते हैं तो कृपया बताइये कि वहां क्या नैपोलियन ने स्वयं तोपें चलाई थीं ? क्या आप के ही तर्क के अनुसार वे विजय भी उस के सेनापतियों के ही न थे ? किन्तु वस्तुतः बात यह है कि क्या स्मृति के बनाने में और क्या युद्ध के विजय में, जिस की बुद्धि तथा सलाह से सब काम होते हैं, उन का कर्ता वही कहा जाता है । इस स्मृति की रचना के लिये, वह कार्य्य में लगाये हुए वकीलों के साथ कभी कभी दस २ घण्टों तक विचार किया करता था ।

इस स्मृति से केवल फ्रांस के ही राजनियम संशोधित हुवे हों ऐसा नहीं, आज सारे सभ्य देशों के राजनियमों पर नैपोलियनस्मृति की मुहर लगी हुई है । दायभाग के नियम सब देशों में प्रायः नैपोलियन स्मृति के अनुकूल ही बनाये गये हैं । फ्रांस में तो आज तक वही स्मृति प्रचलित है । यह अद्भुत राजनियम संग्रह, इस अद्भुत मनुष्य की सर्वव्यापिनी अद्भुत शक्तियों का परिचायक था । साथ ही इस ने देश में न्याय के सुधार द्वारा शांति स्थापना कर के नैपोलियन के साम्राज्य को दृढ़तया स्थापित किया ।

इस स्मृति के अतिरिक्त, नैपोलियन ने और बहुतसे सुधार फ्रांस में किये। पुलीस के विभाग को दृढ़ किया, ताकि देश में लूट मार का बाज़ार सर्द हो; कई बड़ी २ नहरें बनवाई, जो आज तक उस के साधुशासन की साक्षिरूपा विद्यमान हैं; कई लम्बी सड़कें भी उस ने तय्यार करवाई, जो व्यापार तथा वाणिज्य के लिये बड़ी ही उपयोगिनी सिद्ध हुई। आज तक किसी भी इतिहासज्ञ ने इस बात से इन्कार नहीं किया कि नैपोलियन का शासन, फ्रांस के लिये रक्षा तथा समृद्धि का शासन था। इंग्लैंड के लिये उस ने अपने सब बन्दरगाह बन्द कर दिये, अतः जो चीज़ें पहले इंग्लैंड से आती थीं, वे अब वहीं बनने लगीं। शक्कर आदि कई वस्तुएं फ्रांस में तभी से उत्पन्न होने लगी हैं।

पाठक प्रश्न करेंगे कि इन सब प्रकार की उन्नतियों के करने के लिये नैपोलियन को समय कब मिलता होगा? युद्धों से तो उसे श्वास लेने तक का अवसर न मिलता था, राजनियमों का संग्रह करवाना, नहरें खुदवाना, पाठशालायें खुलवाना, और रास्ते बनवाना तो लम्बे काम हैं। इतने कामों के होते हुए भी, नैपोलियन ने इतना कुछ किया, इस बात को साधारण मनुष्य का मन स्वीकार नहीं करता। किन्तु इस व्यक्ति का मन साधारण न था। उस के असाधारण शरीर में असाधारण ही मन स्थित था। इन सब देशोपयोगी कार्य्यों के लिये नैपोलियन को समय कैसे मिलता था? इस के दृष्टान्त सुनने से मन एक दम आश्चर्यित हो जाता है। जब जेना और औस्टर्लिट्स का युद्ध होना था, उस की प्रथम रात नैपोलियन को समरभूमि में ही बितानी पड़ी थी।। दिन भर से सेनाओं को यथोचित स्थानों पर जमा दिया गया था। रात को सोई हुई सेना के बीच में और शत्रु के गोले की मार में बैठ कर, इस विचित्र मनुष्य ने पेरिस में एक कन्यापाठशाला खोलने के लिये विचार किया और वहीं पर उस के लिये सब मानचित्रादि तय्यार किये। क्या इतनी भय के उपजाने वाली और विश्राम के चाहने वाली दशा में आज तक और किसी ने भी ऐसे २ विचार किये हैं? नैपोलियन के मन में यही विलक्षणता थी। वह क्षण भर में अपने विषय को बदल सक्ता था। जब वह जिस विषय पर चाहता था, उसी पर विचार करता था, अन्य विषय उस पर दबाव न डाल सक्ते थे,

नैपोलियन की एक यात्रा करने की गाड़ी थी। कहते हैं कि वह अब तक भी मिलती है। उस गाड़ी के देखने से ही, उसकी कार्य्यकारिता का परिचय मिल जाता है। उस गाड़ी में लेटने के लिये स्थान नहीं है—केवल ज़रा पीछे को झुक कर

ढासना लगाने की जगह है। बीच में एक छोटी सी मेज़ है, जिसके इधर उधर कुछ कागज़ कलम आदि रखने के लिये खाने बने हैं। गाड़ी में चारों ओर पुस्तकें रखने के लिये आलय हैं, जिनमें यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व वह पुस्तकें भर लेता था। बैठने के स्थान के पीछे एक प्रदीप लगा था, जो पढ़ने में सहायता देता था। यात्रारम्भ से पूर्व ही वह आलयों को नई पुस्तकों तथा युद्धादि के मान चित्रों से भर लेता था और सारे रास्ते में थोड़े से विश्राम के अतिरिक्त समस्त समय इन सब चीज़ों के अनुशीलन में व्यतीत करता था। साथ ही साथ देश के लिये नये २ सुधार सोच कर पडावों से दूतों के हाथ आज्ञायें पेरिस को भेजता जाता था।

ये तो थे उसके युद्ध भूमि से शासन करने के उपाय। किन्तु जब वह युद्ध के पीछे पेरिस में लौट कर आता था, तब तो वह चमत्कार कर देता था। सैकड़ों मील की यात्रा घोड़े की पीठ पर या गाड़ी में तय करके, जब रात के या दिन के समय वह पेरिस पहुंचता, तभी सब से प्रथम उस का काम अपनी कौंसिल को बुलाना होता था। सारी कौंसिल को बुलाकर आठ २ नौ २ घण्टों तक एक दम बैठा रहता, और जब तक अपने पीछे का सारा हिसाब किताब जांच न लेता, तब तक सांस न लेता था। इस काम से फ़ैसला पाकर और थोड़ा सा स्नान करके वह फिर शासक सभा में आ उपस्थित होता और नये २ नियम पेश करने प्रारम्भ कर देता। जब अपनी विचारसभा में बैठ कर वह आज्ञायें लिखवानी शुरू करता, तब तो उसके बीच में कई वक्ताओं की शक्तियें आ जातीं। उसके सचिव कहते हैं कि वह आज्ञायें ऐसी तेज़ी से लिखवाता था कि शीघ्र से शीघ्र लिखने वाले मनुष्य का भी साथ चलना कठिन था। कभी २ तो तीन २ चार २ सचिवों को इकट्ठा ही बिठा लेता और उन सब को भिन्न २ विषयों पर एक ही समय में आज्ञायें लिखवाता।

विचारसभा में वह अनथक था। उसके सारे सचिव थक जाते, कभी २ तो थकावट के मारे ऊंघने भी लग जाते, किन्तु सारा जन्म भर किसी ने उसे थके हुए नहीं देखा। वह कभी थकता ही न था। एक वार रात के एक बजे उसकी जाग खुल गई। उसे तब एक आज्ञा लिखवाने की इच्छा हुई। अपने डारू नाम के सचिव को उस ने जगाया। यह सचिव अपनी अनथक शक्तियों पर बहुत गर्वित था। डारू को उठाकर नैपोलियन ने आज्ञा लिखवानी शुरू की, किन्तु आलस्य ने डारू को आ दबाया। लिखते लिखते वह सोगया। चुपके से नैपोलियन ने उसके हाथ से लेखनी ले ली और स्वयं

लिखना प्रारम्भ किया । बहुत देरके पश्चात् डारू जागा । सम्राट् को स्वयं लिखते देख कर उस के होश उड़ गये । नैपोलियन ने उसकी ओर देखकर मुस्कराकर कहा कि 'ऐसा दीखता है कि तुमने कल शाम खूब मजे उड़ाये थे, तभी आज नींद आये जाती है ।' उस बेचारे ने उत्तर दिया कि 'देव ! आप की ही आज्ञायें लिखता २ कल थक गया था, इसी लिये मुझे अब नींद आ गई । अपराध क्षमा हो । ' 'तब तो तुम आराम करो । मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता' ऐसा कह कर नैपोलियन ने सचिव को विदा किया, और स्वयं लिखने बैठ गया ।

इस असाधारण पुरुष के ये शासन के अनथक प्रकार थे । यद्यपि वह फ्रांस में बहुत कम रह सका, तथापि उसने देश की दशा में अन्य अनेक राजाओं से अधिक सुधार कर दिये । उसके विरोधी लोग उसकी इन शक्तियों को स्वीकार करें या न करें, यह निःसन्देह है कि भावी सन्तान के दिलों पर वे लोहे के अक्षरों से लिखी रहेंगी । यद्यपि वह अपनी शक्तियों द्वारा ही देश का शासन करता था, और प्रजा की सम्मति की विशेष परवा न करता था, तथापि उसकी सारी शक्तियों का व्यय फ्रांस की रक्षा विस्तृति और समृद्धि के लिये ही हुआ ।

---

१. १८०९ में नैपोलियन ने अपनी पहली पत्नी जोजफाइन को छोड़ कर, आस्ट्रिया की राजकुमारी मेरी ल्यूसी से विवाह कर लिया । कारण इसका यह था कि पहली स्त्री से कोई सन्तान उत्पन्न होने की आशा न थी । नैपोलियन अपने साम्राज्य की स्थिरता के लिये सन्तान का होना आवश्यक समझता था । पहले रूस के ज़ार की बहिन से विवाह करने का विचार हुवा था, किन्तु ज़ार की माता नैपोलियन के बहुत पक्ष में न थी । उसने ज़रा आगा पीछा किया । नैपोलियन ने झट आस्ट्रिया के सम्राट् को लिखा । परिणाम विवाह हुवा । इस नये विवाह से उसके एक पुत्र उत्पन्न हुवा—, जिसे रोम के राजा की उपाधि दी गई । इस विवाह को हम धर्म की दृष्टि से बहुत उच्च नहीं कहेंगे, किन्तु इस में सन्देह नहीं कि नैपोलियन ने यह कार्य्य विषयवासना से प्रेरित होकर न किया था, प्रत्युत राष्ट्रहित से प्रेरित होकर किया था ।

पञ्चम भाग ।

दुःखमय अन्त

प्रथम परिच्छेद।

विधिवैपरीत्य।

हत विधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः ! माघः ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में मैंने लिखा था, कि इस संसार में कोई भी घटना ऐसी नहीं होती जो विना प्रयोजन के हो। नैपोलियन का जीवन भी विना प्रयोजन के नहीं था। उस के द्वारा भी संसार का कुछ भला होना था। यदि वह संसार के भले के लिये न होता, तो एक वर्ष तक जीना भी उस के लिये असम्भव हो जाता। किन्तु वस्तुतः वह संसार में एक बड़ा भारी कार्य्य करने आया था। उस के आने से कुछ पूर्व योरप की क्या दशा थी? यदि ज़रा ध्यान से देखा जाय, तो प्रतीत होगा कि सारा योरप उस समय रोगग्रस्त हो रहा था। किसी देश को कोई रोग था, और किसी देश को कोई रोग। फ्रांस में क्रान्ति होने से पूर्व वह रोग सब जगह एक सा ही था। सभी जगह राजा तथा कुलीनों के दबाव के नीचे सर्वसाधारण पिस रहे थे। इन के अतिरिक्त, क्रिश्चियन धर्म्म के आचार्य्यों ने भी उन का लहू चूसने में कोई कसर न छोड़ी थी। राजा, कुलीन और पादरी साधारण प्रजा का मांस नोचने में एक दूसरे से बढ़ने की सिरतोड़ कोशिश कर रहे थे। फ्रांस में ऐसी कोशिश अन्य सब देशों से बढ़ चढ़ कर थी। साथ ही, फ्रांस के सर्वसाधारण, ज्ञान भी कुछ अधिक रखते थे। इस लिये, वहां पर, इस मांस नोचने की क्रिया के विरुद्ध सब से प्रथम झण्डा खड़ा हुआ। फ्रांस में राज्यक्रान्ति हो गई। क्रान्ति हुई तो रोगनिवृत्ति के लिये थी, किन्तु उन्हीं साधनों ने, जिन्हों ने फ्रांस के वास्तविक रोग के नाश करने का उपक्रम किया था, अपने आप को निर्बाध पाकर घोर रूप धारण किया, और स्वयं रोग के रूप में परिणत हो गए। कई और देश भी फ्रांस की क्रान्ति से प्रभावित हुए। उन में भी फ्रांस का औषधजन्य रोग विद्यमान था। क्रान्ति से अप्रभावित देश उसी रोग से ग्रस्त थे, जो क्रान्ति से पहले फ्रेंच राष्ट्र को कृश तथा अधमुआ बना रहा था। इस प्रकार प्रतीत होता है कि नैपोलियन के कार्य क्षेत्ररूपी रंगस्थली में अवतरण करने से पूर्व, योरप के सारे देश किसी न किसी रोग से अवश्य ही ग्रस्त थे।

योरप में विद्यमान रोगों के विनाश के लिये एक प्रचण्ड वैद्य की आवश्यकता थी । रोग इतना पुराना हो गया था, कि कोई छोटा मोटा मृदुहृदय वैद्य उस का निवारण न कर सक्ता था । विना कठोरता के योरप कभी औषध पीने के लिये कृतमति न हो सक्ता था । वह वैद्य, जो योरप के गले के नीचे उस रोग की वास्तविक औषधि को उतारता, नैपोलियन था । फ्रांस के तथा अन्य क्रान्ति से प्रभावित देशों के लिये वह क्रान्तिरोगनाशक महौषध था । उस ने भयानक क्रान्ति का विध्वंस कर दिया और मृदु विचारक्रान्ति को जारी रक्खा । जहां वह राष्ट्रीयसमिति और विचारसभा की क्रान्तिरूपी नदी के लिये प्रचण्ड आतप के समान था, वहां क्रान्ति की भावना के लिये वह कल्पद्रुम से उपमा रखता था । क्रान्ति का तत्त्व, या मुख्यभाव, गुणानुसार अधिकार देना था । क्रान्ति जन्म का तिरस्कार करती थी, और गुण कर्म्म का प्राधान्य दिखाती थी । नैपोलियन इस प्रवृत्ति का ज्वलन्त उदाहरण था । वह स्वयं गुणकर्म्मानुसार राजा हुआ था । सर्वसाधारण ने उसे राजा बनाया था । इसी तरह वह भी नीचकुलोत्पन्न योग्य पुरुषों को देश की सब से बड़ी उपाधियों से विभूषित करता था ।

ड्यूरोक, जो पीछे से ड्यूक आव अबरेण्टीज़के की उपाधि से विभूषित किया गया था, और साम्राज्य के स्तम्भों में से एक था, बहुत ही छोटे घराने का था । अनुपमेय **मूरा**, जो घुड़सवारों का अदम्य सेनापति होकर नैपल्स का राजा बनाया गया था, एक सराय के मालिक का पुत्र था । सेनापति **क्लीबर**, जिस ने मिश्र में आश्चर्यदायक वीरता दिखा कर नैपोलियन से सम्मान पाया था, एक माली का लड़का था । सेनापति **मैस्सीना** साम्राज्य की सब से बड़ी उपाधि से विभूषित किया गया था, किन्तु पहले वह जहाज़ों में कोले उठाने पर नौकर था । ड्यूक आव मौण्टेबैलो, जिस का प्रथम नाम **लेनस** था, और जो निस्सन्देह नैपोलियन का वीरतम और प्रियतम सेनापति था, एक साधारण व्यापारी के घर उत्पन्न हुआ था ।

ये दृष्टान्त पर्य्याप्तस्पष्टता से बताते हैं कि नैपोलियन गुणकर्म्मानुसार वर्णाधिकार मानता था, जन्मानुसार नहीं । इस अंश में वह क्रान्ति के भाव का विस्तारक था । किन्तु साथ ही राष्ट्रीय समिति और विचारसभा की क्रान्तियों का वह शरीरधारी निषेध था । उन की संकुचितहृदयता तथा नैसर्गिक क्रूरता का उस में लेशमात्र भी न था । फ्रांस की जलती हुई क्रान्तिरूपी अग्नि को बुझाने के लिये नैपोलियनमेघ की बड़ी भारी आवश्यकता थी । उस ने फ्रांसरूपी अस्थिर समुद्र के सामने चट्टान का

कार्य किया । वह क्रान्ति के तत्त्व का प्रचारक किन्तु उस के क्रूरतायुक्त बाह्यखोल का कठोर विनाशक था । इसी लिये, वह फ्रांस और फ्रांस से इतर देशों के भी रोगों का वैद्य था । फ्रांस में उस ने सामाजिक अव्यवस्था का नाश किया और बाहिर उस ने उस समय की विद्यमान स्थिरता तथा अत्याचार की जड़ें हिला दीं ।

यह सब विचारकों का माना हुआ सिद्धान्त है कि योरप के और विशेषतया जर्मनी के राजा ने, केवल नैपोलियन के दबाव से ही अपनी प्रजा को स्वाधीनता तथा समानता के अधिकार अर्पित किये । अन्य देशों में भी, केवल अपनी सेना के साहाय्य से इस क्रान्तिपुत्र का सामना न कर सकने के कारण, नरेशों ने प्रजा को उस के विरुद्ध उठाना शुरू किया । योरप के राज्यों की वर्तमान उदारनीति का मूल यदि खोजा जाय, तो वह सम्भवतः नैपोलियन के पराक्रमों में ही मिलेगा । पुराने राजवंशोद्भव नरेशों को कई वार सिंहासनच्युत करके, तथा राजधानियों से भगा कर, सर्वसाधारण के मन में उस ने यह भाव बिठा दिया कि राजा ईश्वर के प्रतिनिधि और अतएव अप्रहार्य्य नहीं हैं, उन्हें एक साधारणकुल में उत्पन्न हुआ हुआ योद्धा भी केवल अपने भुजबल से हरा सक्ता है ।

ये कार्य्य थे, जिन के करने के लिये नैपोलियन जैसे असाधारण पुरुष की आवश्यकता थी । यह उद्देश्य था; युद्ध और जनघात केवल इस के साधन थे । सेनापति से सम्राट् होजाना और सम्राट् से असाधारण विजेता हो जाना—यह सब कुछ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये आवश्यक था । इस दृष्टि से देखने पर प्रतीत होगा कि नैपोलियन नरमांसलोलुप पिशाच न था, किन्तु संसार की उन्नति में सहायता देने वाला ईश्वर का भेजा हुवा असाधारण पुरुष था । उसे किसी कार्य्य के करने के लिये भेजा गया था, और उसने उस कार्य्य को बड़ी ही योग्यता के साथ किया । तुम उसे दुष्ट कहो, राक्षस कहो या नृशंस कहो, किन्तु उन्नति के मार्ग को साफ़ करने के लिये उस की जो आवश्यकता थी, उसे तुम तिरोहित नहीं कर सक्ते । योरप के घातक रोगों को दूर करने में जितना हिस्सा कोई व्यक्ति ले सक्ता था, नैपोलियन ने लिया । वाग्राम के युद्ध के पश्चात्, हम उसे अपना उद्देश्य पूरा कर के लौकिक गौरव और महत्त्व के शिखर पर बैठा हुआ पाते हैं ।

नैपोलियन का सद्भाव सप्रयोजन था—यह ठीक है । किन्तु उस के जीवन में फिर वही फ्रांस की राज्यक्रान्ति वाली कथा दोहराई गई । राज्यक्रान्ति फ्रांस के

रोगों के निवारणार्थ उत्पन्न हुई थी। उसने पुरानी जमी हुई सामाजिक दशा को हिला दिया। पहली सामाजिक दशा बड़े ही बल से जमी हुई थी, उसे हिलाने के लिये पैशाचिक बल की आवश्यकता थी। क्रान्ति में वह पैशाचिक बल था, इस लिये उसने उसे हिला दिया। किन्तु, उसे हिला कर फिर उस के पैशाचिक बल को रोक कौन सक्ता था? उस पैशाचिक बल का सामना कौन कर सक्ता था? क्रान्ति की प्रतिबन्धरहित पैशाचिक शक्ति ने वे क्रूर गाथायें तय्यार कीं, जिन का वर्णन प्रथमभाग में हो चुका है।

फिर नैपोलियन का आगमन हुवा। उस के आगमन का उद्देश्य फ्रांस की पैशाचिकबलसम्पन्न क्रान्ति को दबाना तथा योरप भर में जमी हुवी दूषित सामाजिक अवस्था का हिलाना था। क्या इन कार्यों के पूरा करने के लिये कम बल की आवश्यकता थी? नहीं, इन कार्यों के पूरा करने के लिये तो क्रान्ति के बल से भी अधिक बल की ज़रूरत थी। कम बल उसे दबाने में कैसे शक्त हो सक्ता था? तब, इन कार्यों के पूरा करने के लिये जिस अतिपैशाचिक बल की आवश्यकना थी, वह निःसन्देह नैपोलियन में वर्त्तमान था। उस ने अपना कार्य्य भी थोड़े ही वर्षों में कर दिखाया। किन्तु अपना कार्य समाप्त कर के, वह भी थोड़े ही दिनों में प्रतिबन्धरहित हो गया। अब कोई भी मानुषीय शक्ति उस का सामना करने के लिये नहीं रही। कई देशों ने मिलकर अनेक वार उस पर धावा किया, किन्तु जैसे ही आवेश में भरे हुए वे आये थे, वैसे ही क्लान्तभाव से भरे हुए उन्हें लौटना पड़ा। जब तक नैपोलियन के सिर में बुद्धि की मात्रा तथा उस के अधीन सेना विद्यमान थी, तब तक उस का प्रतिबन्ध करना मानुषीय शक्ति से बाहिर प्रतीत होता था। मिले हुए दो या तीन देशों की सेनायें भी, उस की वृहती सेना के सामने भेड़ बकरियों के गल्ले के समान थीं; एक ही जमा हुआ युद्ध उन को निःसत्त्व कर देने के लिये पर्याप्त था।

नैपोलियन का कार्य हो चुका था, अब संसार में उस की आवश्यकता न थी। अब वह यदि संसार में रहने योग्य हो सक्ता था, तो तभी हो सक्ता था, यदि वह विजयप्रसंग को छोड़ कर देश के शासन में लग जाता। तब वह राजनैतिक संसार में समा जाता। किन्तु, विजययात्रा के गौरव ने उस की आंखें फिरादी थीं। अब उसे अपने विजयव्यसन से छुटकारा नहीं मिल सक्ता था। तब उस से संसार का छुटकारा आवश्यक था। मानुषीय बल उस कार्य के करने के लिये अशक्त

था, तब ईश्वरीय बल या प्रकृति का बल उस कार्य के करने के लिये तय्यार हुवा। अब जिस युद्ध का हम वर्णन करेंगे, उस में प्रकृति से नैपोलियन का संग्राम है, मानुषीय शक्ति से नहीं।

द्वितीय परिच्छेद ।

रूसी विपत्ति ।

मतिमतां च विलोक्य पराजयं विधिरहो बलवानिति मे मतिः ।

जिस समय फ्रांस और रूस के सम्राट् टिल्सिट में मित्रता गांठ रहे थे, उस समय उन्होंने कुछ वादे किये थे। फिर यर्फर्थ पर उन वादों को दोहराया गया था। और सब वादे तो वैसे के वैसे दोहरा दिये गये, किन्तु एक वादा था जिसे उस समय छोड़ दिया गया। वह वादा यह था कि रूस कुस्तुन्तुनिया में अपना दख़ल जमा कर, टर्की को अपने साम्राज्य में मिला सक्ता है। टिल्सिट पर यह वादा दोनों सम्राटों ने कर लिया था। उस समय नैपोलियन ज़ार को किसी तरह प्रसन्न करना चाहता था। कुछ देर पीछे ही उसने विचार किया, तब उसे पता लगा कि यदि टर्की रूस के साम्राज्य में सम्मिलित हो जायगा तो फ्रांस बहुत हानि में रहेगा। न केवल रूस का साम्राज्य ही बहुत विस्तारशाली हो जायगा, रूस की सांग्रामिक स्थिति भी अदम्य हो जायगी। वह कुस्तुन्तुनिया को पूर्वीय भूगोल के विजय की कुंजी समझता था। इस लिये यर्फर्थ में उस ने यह वादा न किया। अलेग्ज़ेण्डर को यह बहुत खटका। वह अपने साम्राज्य के लिये टर्की की प्राप्ति को इतना ही आवश्यक समझता था, जितना भयानक उसे नैपोलियन समझता था। सन्धि के पीछे अलेग्ज़ेण्डर ने कई वार नैपोलियन से इस विषय में पूछा, किन्तु उसने इस प्रश्न को टालना ही चाहा।

इस बात से दोनों नरेशों के बीच में कुछ २ खिंचाव हो चुका था। किन्तु अलेग्ज़ेण्डर इस शिकायत को, उस आदरबुद्धि के नीचे दबाने को तय्यार था, जो उसने नैपोलियन के लिये की हुई थी। वह नैपोलियन की शक्तियों का बड़ा ही भक्त था। किन्तु, उस की माता नैपोलियन से घृणा करती थी। वह उसे अधमकुलोत्पन्न समझती थी। रूस के सब कुलीन भी राजमाता के पक्ष में थे। राजमाता और कुलीन मिल कर सदा अलेग्ज़ेण्डर को नैपोलियन के विरुद्ध भड़काते रहते थे। इस लिये, टर्की के निमित्त हुआ २ थोड़ासा खिंचाव भी दिन प्रति दिन बढ़ता गया।

खिंचावट की इसी अवस्था में नैपोलियन के दूसरे विवाह का प्रसंग आया।

ज़ार उस का मित्र था, इस लिये निसर्गतः विवाह का पहला प्रस्ताव उसी के वंश में होना चाहिये था। यथार्थ में ज़ार की बहिन से नैपोलियन के विवाह का प्रसंग आया भी था, किन्तु उस समय कोई अन्तिम निश्चय न हुआ था। जब दूसरे विवाह के प्रश्न ने निश्चित रूप धारण किया, तब नैपोलियन ने एक दूत रूस के ज़ार के पास भेजा। रूस के ज़ार ने सम्बन्ध करने के लिये पूर्ण अनुमति प्रकट की, किन्तु साथ ही कहा कि बिना अपनी माता से पूछे वह कोई वचन नहीं दे सक्ता। मामिला राजमाता के सन्मुख पेश हुवा। राजमाता भी इस सम्बन्ध से सन्तुष्ट थी, किन्तु उस ने यह विचारा कि यदि वह एक दम नैपोलियन के साथ अपनी लड़की के विवाह को स्वीकार करलेगी तो समझा जायगा कि सम्बन्ध जोड़ने के लिये रूस उतावला हो रहा था। इस लिये, उसने कुछ दिन तक इस विषय को स्थगित करने का विचार किया। नैपोलियन को यह बहुत बुरा लगा। उस के साथ राजपुत्री के विवाह के विषय में विचार कैसा? क्या वह फ्रांस का सम्राट् नहीं? क्या उसने दो वार रूस नरेश का मुकुट पैर के ठुड्ड से नहीं हिलाया? फिर उस के साथ ऐसा वर्ताव क्यों? ऐसी बातों का विचार कर के उस ने झटपट एक दूसरा राजदूत आस्ट्रिया के महाराज के पास भेज दिया। आस्ट्रिया के महाराज की राजधानी नैपोलियन के विजयदण्ड की पर्याप्त चोट भुगत चुकी थी; साथ ही नैपोलियन से सम्बन्ध जोड़ कर रूस को नीचा दिखाने का भी उसे अवसर प्राप्त हुआ। आस्ट्रियन दरबार ने झट पट इस विवाहसम्बन्ध के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। स्वीकृति के अनुसार, आस्ट्रिया की राजपुत्री **मेरिया ल्यूसी** के साथ नैपोलियन का विवाह हो गया। रूस के ज़ार के मन में यह बात तीर सी चुभ गई। दोनों मित्र एक दूसरे से उतने ही पृथक् हो गये, जितने पहले वे एक दूसरे के पास थे।

यह निश्चित होगया कि रूस और फ्रांस में अवश्य युद्ध होगा। तब फिर एक बहाना मिलने की देरी थी। ज़ार ने कहला भेजा कि नैपोलियन ने टिल्सिट की सन्धि के विरुद्ध कई कार्य्य किये हैं, इस लिये जबतक वह उन सब का शोध न करदे तब तक उन दोनों में मित्रता नहीं हो सकती। नैपोलियन ने उत्तर में ज़ार के पास एक दूत भेजा, जिसने जाकर ज़ार को न केवल सन्धि की शर्तों के पूरे २ पालन करने के लिये ही कहा, प्रत्युत अन्य भी कई रियायतें देने के लिये वचन दिया। किन्तु रूस को इस से भी सन्तोष न हुआ। उसे तो नैपोलियन का यह कार्य्य और भी निर्बलताजनक प्रतीत हुआ। उसने न आगा सोचा न

पीछा—झट से युद्ध आघोषित करदिया। यद्यपि नैपोलियन युद्ध के लिये उत्सुक न था, तथापि युद्ध आपड़ने पर वह तय्यारी में कोई कसर भी न छोड़ता था। अनथक शक्तियों से उसने रूस पर आक्रमण करने के लिये अपनी वृहती सेना को एकत्रित करना शुरू किया। युद्ध की तय्यारियों के साथ २ उसने अन्य देशों से शान्ति करना भी उपयुक्त समझा। रूस कोई उपेक्षणीय शत्रु न था; उसे जीतने के लिये नैपोलियन की समग्र शक्ति आवश्यक थी। इस लिये, द्विविधा में पड़ने से बचने के लिये, उसने इंग्लैण्ड के पास सन्धि का प्रस्ताव भेज दिया। कुत्ते की दुम सीधी होजाती, किन्तु उस समय की लन्दन की कैबिनट सीधी नहीं होसक्ती थी। उसने सन्धि के प्रस्ताव का बड़े गर्वित शब्दों में निषेध किया। शायद इन्हीं दृष्टान्तों से सिद्ध होता है कि नैपोलियन रुधिर का प्यासा राक्षस था और लन्दन की कैबिनट शान्ति की देवी।

युद्ध आघोषित होगया था; अब देरी करने के लिये समय न था। ९ मई (१८१२) के दिन नैपोलियन पेरिस से सेना के नयन करने के लिये रवाना हुआ। पहले वह **ड्रूस्डन** नाम के नगर में ठहरा। वहां पर उसने अपने सब अधीन राजाओं तथापि मित्र नरेशों को मिलने के लिये आमंत्रित किया था। वहां पहुंचते ही उन के 'मित्र नरेशों' ने उसका स्वागत किया। वह दृश्य भी देखने ही योग्य था। एक मनुष्य के सिर तथा भुजाओं की शक्ति क्या कुछ कर सकती है इसका वह दृष्टान्त था। सर्वसाधारण की इच्छा नरेशों के मुकुटों को कैसे रौंद सकती है—इस का वह ज्वलन्त उदाहरण था। आस्ट्रिया के महाराज और प्राशिया के राजा के साथ और भी बीसों छोटे बड़े नरेश, समय के विजेता को नमस्कार करने के लिये वहां आये हुए थे। विजेता की ड्योढ़ी दिन रात समागत नरेशों से ठसाठस भरी रहती थी। एक चतुर सचिव, जिसे नैपोलियन बहुत कार्य्यकुशल समझता था, ड्रूस्डन में एक दिन नियत समय से देरी में आया। नैपोलियन समयातिक्रम का कभी सहन नहीं कर सक्ता था। उसने उसे डपटा और पूछा कि तुम विलम्ब करके क्यों आए? उस धूर्त ने समयोचित उत्तर दिया कि 'देव की ड्योढ़ी नरेशों से इतनी भरी हुई थी कि मुझे आने के लिये स्थान न मिला'। नैपोलियन का मुख इस उत्तर से बन्द होगया।

इस प्रकार अपने पुराने विजयों के फलों को देखता हुआ और विजयश्री से अन्तिम बड़ी मुलाकात करता हुआ नैपोलियन ११ जून को आगे प्रस्थित हुआ। उस के थोड़ा आगे फ्रांस की वृहती सेना डेरे डाले पड़ी हुई थी। इस अवसर पर एकत्रित की हुई सेना अवश्य वृहती सेना कहाने के योग्य थी। जिन्हों ने उस

सेना को देखा है वे कहते हैं कि ऐसी सेना योरप में पहले शायद कभी नहीं देखी गई। सेना के सारे योद्धा छः लाख से कम न थे, उन छः लाख के साथ तोपोंका भी एक बड़ा भारी समूह था। सेना के सारे अस्त्र शस्त्र सर्वथा नवीन प्रणाली के थे, और उन की मार का सामना रूस के जङ्गली लड़ाकू कदापि न कर सकते थे। सेना के उपनिवेश में पहुंच कर महाराज सन्नद्ध श्रेणियों के बीच में से गुज़रा। वहां पर उस ने अपनी सब विजयों के साक्षी तथा विजय श्री के सहभोजी सैनिकों की चमकती खड्गों को देखा। एक वार उस ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, तो उसे प्रतीत होने लगा कि वस्तुतः वह अनन्तशक्ति का स्वामी है। एक रूस क्या सौ रूस मिलकर भी उस की शक्ति का पार नहीं पासक्ते। सारी सेना का निरीक्षण करने के अनन्तर बृहती सेना को चलने की आज्ञा दी गई। सारी सेना के ६ लाख सिपाहियों के लिये सब स्थानों में भोजनादि के सम्भारों का मिलना कठिन था, इस लिये बहुत सा भोजन भी साथ ही ले लिया गया। सेनाओं की गति प्रारम्भ हुवी। सारा योरप इस अभूतचर सेना को देख कर परिणाम के लिये उत्सुक हो रहा था। सच मुच यह सेना भयानक रूप वाली थी। किन्तु इस में कुछ भी सन्देह नहीं कि इस सेना का बाह्य रूप ही भयानक था, अन्दर से यह वैसी भयानक न थी जैसी ने नैपोलियन के वाग्राम तथा फ्रीडलैंड के युद्ध जीते थे। जानने वाले सेना के इस राक्षसी प्रासाद के बीच २ में कच्ची रेतीली ईंटोंको देख रहे थे, तथा नैपोलियन के भाग्य में सन्देह कर रहे थे। इस बृहती सेना में, फ्रांस तथा पोलैण्ड के भक्त सिपाहियों के सिवाय, बहुत से भाड़े के टट्टू भी भरे हुवे थे। ऐसे सिपाही तभी तक लड़ सक्ते हैं जब तक उन्हें विशेष कष्ट न हो; किन्तु जहां सेना पर आपत्ति आई, वहां वे बोरिया बुगचा संभाल कर दस नौ ग्यारह हो जाते हैं। नैपोलियन के ६ लाख सिपाहियों में से दो लाख के समीप २ सिपाही ऐसे ही थे। शाल्मली तरु कितना ही बड़ा हो, यदि उसके अन्दर खोख विद्यमान है तो वायु के ज़रा से झोंके से वह गिर सक्ता है। नैपोलियन की यह सेना भी ऐसी ही थी। टके के गुलाम सिपाहियों के सद्भाव के अतिरिक्त एक और भी निर्बलता इस बृहती सेना में विद्यमान थी। वह निर्बलता इस सेना का आकारगौरव था। ६ लाख की अजगरसमान सेना में वैसी फुरती नहीं होसक्ती, जैसी छोटीसी ८० हज़ार की सर्प समान सेनामें हो सक्ती हैं। जिन्हों ने यहां तक नैपोलियन के जीवन का अनुशीलन किया है, वे जानते हैं कि उस के सम्पूर्ण तथा सुलभ विजयों के कारणों में से मुख्य उसकी सेना की तीव्रगति थी। रूस पर धावा करने वाली बृहती सेना में वह असम्भव थी।

इन उपर्य्युक्त दो कारणों के अतिरिक्त कई और भी कारण थे, जो इस सेना में तथा नैपोलियन की पहली सेनाओं में भेद करते थे। उन में से मुख्य नैपोलियन की अपनी शिथिलता थी। अब महाराज नैपोलियन वह सेनापति नैपोलियन न था जिसने इटली तथा मिश्र के विजयों में रात और दिन एक कर दिये थे। अब नैपोलियन बदल गया था। साम्राज्य के आराम ने उस के शरीर के वज्रमय बन्धों को कुछ ढीला कर दिया था। वह मोटा तथा कुछ भद्दा हो चला था। यह सिद्धान्त इतिहास के अनुशीलन से सर्वथा सिद्ध हो चुका है कि संसारके भाग्य सूक्ष्मकाय मनुष्यों के हाथों में रहते हैं, स्थूलकाय मनुष्यों के हाथों में नहीं। स्थूलकाय मनुष्यों में चर्बी द्वारा प्रतिभा की तथा शारीरिक चेष्टा की क्षीणता हो जाती है। संसार में शासन करने की शक्ति, प्रतिभा तथा शारीरिक चेष्टा में ही है। नैपोलियन भी, इस समय, गर्म पानी के स्नानों तथा गद्देदार विस्तरों पर सोने के कारण कुछ मोटा तथा विश्राम-प्रिय होगया था। उसकी पुरानी विद्युद्गति विलुप्त हो गई थी। पहले दिनों में वह प्रायः चलता २ घोड़े पर से उतर कर सड़क के किनारे खड़ा हो जाता, और सारी सेना को अपने सामने से गुज़ारता था। जहां कहीं ज़रा सी भी न्यूनता देखता, उसे ठीक करवादेता, और एक २ सिपाही से बात चीत करता था। इन कार्य्यों से उसकी सेना उस के सर्वथा काबू में रहती थी। हर एक सिपाही को वह पहचानता था, और सब सिपाही उसे पहचानते थे। किन्तु इन सब बातों में से अब एक भी शेष न रही थी। न महाराज ही अब घोड़े पर से उतर कर सारी सेना का निरीक्षण करता था, और न सेना ही अपने सेनापति को पहचानती थी। उन में इतने जर्मन आस्ट्रियन और पोल भरे हुवे थे कि आधी से अधिक सेना नैपोलियन से सर्वथा अनभिज्ञ थी। वह सेना को न पहचानता था, और सेना उसे न पहचानती थी। ऐसी सेना विपत्ति के आते ही फ्रेंच झण्डे के तले से सरक गई, तो इस में विचित्र क्या हुवा?

अस्तु। वृहती सेना ने अपना प्रयाण शुरू किया। ज़ार अपनी सेना को लिये **नीमन** नदी के परले पार पड़ा था। नीमन नदी रूस के राज्य की अवधि है। फ्रेंचसेना उसी ओर को बढ़ी। ज्यों ही फ्रेंचसेना नीमन तक पहुंची, रूसी सेना नदीतट को छोड़ कर पीछे को लौटने लगी। फ्रांसीसीसेना उसके पीछे २ चली। नैपोलियन ने सुना कि ज़ार अपनी सेना को **स्मालेन्स्क** नाम के नगर में लड़ाई के लिये तय्यार कर रहा है। यह सुन कर उसके आनन्द की सीमा न रही। उसने समझा इस युद्ध के साथ ही, अलेग्ज़ेण्डर अशक्त हो जायगा। रात भर युद्ध की तय्यारियों

में बीती। प्रातः काल उठ कर नैपोलियन धावे की आज्ञा देने को ही था कि उस ने रूसी सेना का पीछे हटना सुना। रूसीसेना रात ही रात धोखा देकर कई मील पीछे लौट गई थी। न केवल विजय का अवसर ही नैपोलियन के हाथ से निकल गया, शत्रु की सेना भी साफ़ बच निकली। अब विचार में समय न खोकर, नैपोलियन ने रूसी सेना का पीछा शुरू किया। रूसी सेना भी निरन्तर पीछे को हटती गई। उस सेना का रोज़ यही कार्य्य था। रात को एक स्थान पर ठहरी, युद्ध के पूरे सामान किये, जब फ़्रेंचसेना पास पहुंची तो अपना बोरिया बिस्तर उठाकर पीछे को चल दी। इसके साथ ही जिस २ स्थान से रूसीसेना जाती थी, उस २ स्थान को सर्वथा उजाड़ करती हुई जाती थी। खेती तथा आबादी को सर्वथा नष्ट कर दिया जाता था, ताकि फ़्रेंचसेना को भोजनाच्छादनादि की प्राप्ति न हो।

फ्रांसीसी सेना को युद्ध में अजय्य समझ कर ज़ार ने नये ही मार्ग का अवलम्बन किया। उसे यह निश्चय था कि छः लाख सेना के लिये नैपोलियन घर से भोजन नहीं ला सक्ता। तब यदि उसे रूस में लूट का भोजन न मिले तो उसकी सेना अवश्य ही भूखी मर जायगी। साथ ही यह भी वह जानता था कि यदि उसे इसी तरह बेघरबार रूस में घूमते घूमते शीतऋतु हो गई, तब फिर उसकी सेना का बचना कठिन होगा। रूस के घोर तथा घातक शीत को ज़ार जानता था, किन्तु नैपोलियन न जानता था। जब फ्रेंचसेना अभी जा रही थी, तभी उसके एक घोड़े की टाप को सड़क पर पड़ा हुवा देख कर, एक रूसी लुहार कह उठा था कि यदि इस सेना को रूस में सर्दियें पड़ गई, तो इस में से एक भी आदमी बच कर न जायगा। बात यह थी कि फ्रांस की सेना के घोड़ों के पैरों के नीचे नालें नहीं थीं, और रूस की बर्फ़ पर विना नालों के कोई घोड़ा चल न सक्ता था। इधर भोजन का टोटा-उधर सर्दी का ज़ोर, बस ज़ार को निश्चय था कि यदि नैपोलियन को रूस में देरी हो जायगी तो फिर उसकी चिता रूस में ही बन जायगी। ज़ार का अनुमान ठीक निकला। नैपोलियन की मति ने तथा भाग्यों ने पलटा खाया, और यदि नैपोलियन की अपनी नहीं तो उसकी सेना की चिता तो रूस में बन ही गई।

रूसी सेना आगे २ और फ्रेंचसेना पीछे २— इसी प्रकार रूस की राजधानी **मौस्को** की तरफ़ यात्रा प्रारम्भ हुई। ज़ार सेना को छोड़कर, पहले ही, मौस्को होता हुआ **सेण्टपीटर्सबर्ग** पहुंच गया था। रूसी सेनापति **कुटुसौफ** अपनी सेना को संभाल कर पीछे को लौट रहा था। वह केवल एक स्थान पर ठहरा। **मौस्क्वा** नदी के

तट पर **बोरोडिनो** नाम का एक गांव है। वहीं पर रूसी सेना ने अपना झण्डा गाड़ दिया। दूसरे दिन युद्ध हुआ। युद्ध में विजय नैपोलियन की हुई। यह युद्ध नैपोलियन के महान् तथा भयानक युद्धों में से एक था। दोनों ओर की सेनाएं संख्या में प्रायः समान थीं। रूसीसेना ने बड़े ही हठ तथा धैर्य्य के साथ सामना किया। फ्रेंचसेना को, बोरोडिनो पर अधिकार करने के लिये, बड़ा ही घोर संग्राम करना पड़ा। दोनों ओर से मिलाकर पचास साठ सहस्र मनुष्यों का बध हुवा। दोनों ओर के कई वीर सेनानायक भी मारे गये तथा आहत हुवे। विजय का सेहरा नैपोलियन के सिर पर बंधा। किन्तु यह विजय नैपोलियन के पराभव के समान था। शत्रुदेश के ऐन मध्य में, उसके २९ या ३० सहस्र सैनिक मर गये, किन्तु शत्रु का विध्वंस न हुवा। शत्रु रात के समय धीरे २ फिर पीछे को हटने लगा। आखिरकार रूसीसेना पीछे हटती २ राजधानी मौस्कौ से भी पीछे हट गई। नैपोलियन की विजयिनी सेना १४ सितम्बर के दिन नगर में प्रविष्ट हुई। इस से अधिक हर्ष का समय नैपोलियन और उसकी सेना के लिये न हो सक्ता था। किन्तु, उनके मुंह पर दृष्टि डालिये—तो आप को पता लगेगा कि वहां हर्ष के स्थान पर मुर्दैनी छाई हुई है। प्रिय पाठक! आप को जिज्ञासा होगी कि इस हर्ष के समय में शोक कैसा? सुनिये।

यह यात्रा यद्यपि विजययात्रा के नाम से ही कही जाती है, तथापि वस्तुतः प्रारम्भ से अन्त तक यह पराजय यात्रा ही थी। रूसनरेश की प्रयोग की हुई चतुरता पहले से ही फलनी शुरू होगई थी। जिस दिन से फ्रेंचसेनाने नीमन-नदी को पार किया, उसी दिन से भोजन का टोटा अनुभूत होने लगा था। रास्ते में अन्न की कमी तो थी ही, साथ ही सर्दी भी कुछ २ अपना रोब दिखा रही थी। सेनाएं बहुत कष्ट में थीं। वे सिपाही, जिन्हें सिवाय टके के और कोई चीज़ सेना में रखने वाली न थी, चुपके २ चलते बने। शेष सैनिकों में से बहुत से भूख और थकान से मर गये, और बहुत से कठोर शीत के लिये बलि हुवे। इन दृश्यों को देख कर किस मनुष्य का मन प्रसन्न रह सक्ता था? सेना के कष्टों से सेनानी भी विचलित हो रहे थे। सेना के संभालने की कठिनता के अतिरिक्त, सेनानियों को अपने रहन सहन की भी बड़ी तङ्गी थी। महाराज के लिये तो किसी न किसी तरह निवास तथा भोजन का प्रबन्ध हो ही जाता था, किन्तु और सब बहुत तङ्ग अवस्था में थे। इसी लिये सब के मुंह पर मुर्दैनी छाई हुई थी। सैनिकों तथा सेनानियों के असन्तुष्ट रहते हुए, भला नैपोलियन को सन्तोष क्या हो सक्ता था? इसी मान-

सिक व्यथा के वशीभूत होकर नैपोलियन ने रातें जाग कर काटीं; तथा अनेक वेदनाओं को सहन किया। इसी यात्रा में, पेरिस से एक दूत उस के पास उस की राज्ञी, तथा राजपुत्र के चित्र लाया था। उन से, क्षणभर तो उस का चित्त कुछ प्रसन्न रहा, किन्तु शीघ्र ही फिर उसी चिन्तारूपी गढ़े में झुकने लगा।

राम २ जपते मौस्को नगर प्राप्त हुआ। सब के दिलों में कुछ २ आशा का संचार होने लगा। सब ने समझा कि अब तक तो हम विना घरबार रहे; किन्तु अब यहां रहने को घर तथा खाने को भोजन मिलेगा। और कुछ नहीं तो सिर छुपाने की जगह तो भी मिलेगी। सारी फ्रेंचसेना नगर में चारों ओर बिखर गई। नैपोलियन ने राजकीय महल पर अधिकार जमा लिया। वहीं उस का दरबार लगने लगा। चारों ओर कुछ सन्तोष तथा विश्राम के चिन्ह दिखाई देने लगे। दो रात सारी सेना बड़े आनन्द से सोई। किन्तु तीसरा प्रभात होते ही, चारों ओर उसे अपने भाग्यों का प्रासाद दग्ध होता हुआ दृष्टिगोचर हुआ। नैपोलियन ने खिड़की खोल कर देखा, तो ज़ार का प्राचीन नगर कई स्थानों में जल रहा था। चारों ओर आग ही आग के दृश्य दिखाई देते थे। आग बढ़ती गई, और सारी सेना को तथा नैपोलियन को शहर छोड़ कर फिर मैदान में डेरे डालने पड़े। इस में सन्देह नहीं कि इस वार मौस्को से बाहिर होते हुए, फ्रेंचसेना के हर एक सिपाही का हृदय निराशारूपी अन्धकार में डूब रहा था। नैपोलियन भी इस भयानक आग के ऊपर मंडलाने वाले धुएं में, अपने ऊपर भविष्यत् में आने वाली विपत्तियों के दृश्य देख रहा था। तीन दिन और तीन रात तक मौस्को जलता रहा। जब आग बुझी तो पता लगा कि पुराने महान् नगर का सँवा हिस्सा भी अब शेष नहीं रहा। रूस के ज़ार की नीति की यह अन्तिम चाल थी, तथा स्वातन्त्र्यरक्षार्थ अन्तिम तथा भारी स्वार्थत्याग था। इस एक नीति के कार्य्य ने न केवल रूस के डूबते हुए जहाज़ को बचा दिया, नैपोलियन के चमकते हुए कीर्तिदिवाकर को भी आपत्ति के बादल में घिरा दिया।

मौस्को के जल जाने पर, फ्रेंचसेना में, निराशा तथा उदासी का पूरा आधिपत्य होगया। उस पांच लाख की सेना में से, जिस ने कुछ दिन पूर्व नीमन नदी को पार किया था, केवल दो लाख के लगभग सिपाही शेष थे। शेष सब काल की गाल में विलीन हो चुके थे। इन दो लाख को भी भोजनाच्छादन के लिये कुछ न मिलता था। सारी सेना बड़ी ही करुणायोग्य दशा में पड़ी हुई थी। सेनानी लोग भी

कष्ट और वेदना से विह्वल होरहे थे । आपत्तियों की लहरों के थपेड़े खाता हुआ नैपोलियन किङ्कर्त्तव्यताविमूढ़ होरहा था । इस में सन्देह करने का ज़रा भी स्थान नहीं कि इस सारी यात्रा में नैपोलियन की बुद्धि ठिकाने न थी । उस की बुद्धि के ठिकाने न रहने का पहला सबूत इस युद्ध को प्रारम्भ करना था । इतने गुप्त शत्रुओं के होते हुए, एक इतने बड़े और शत्रु को बना लेना प्रकट कर रहा था, कि विजेता की बुद्धि हिल गई थी—अब वह अस्थिर होगई थी । अक्ल ठिकाने न रहने का दूसरा प्रमाण यह था कि नैपोलियन इस यात्रा में प्रारम्भ से ही बहुत धीरी चाल से चल रहा था । एक २ स्थान पर पन्द्रह २ दिन ठहर कर आराम लेता था और रूसियों को सकुशल चुङ्गल से निकल भागने के लिये समय देता था । आने वाली सर्दियों तथा कज्ज़ाकराक्षसों का कुछ भी विचार न करके, रूस के गर्भ में इतनी देर तक घुसे रहना, उस के बुद्धिमान्द्य का तीसरा प्रमाण था । मौस्को जल चुका था, और उस के महलों के साथ ही फ्रेंचसेना के विश्राम की आशा भी ख़ाक में मिल चुकी थी । इस अवस्था में नैपोलियन के लिये दो ही रास्ते खुले थे । या तो वह मौस्को से भी आगे बढ़कर सेण्टपीटर्सबर्ग पर चढ़ाई करता, और ज़ार को वहां से भी निकाल कर रूस के विजय को पूरा करता; या दूसरा रास्ता उस के लिये यह था कि वह अब जितना शीघ्र हो सक्ता, सीधा उलटे पांव फ्रांस की ओर को लौटता । किन्तु उस ने इन दोनों मार्गों में से किसी का भी अवलम्ब न किया । उस के सेनानी आगे बढ़ने के विरुद्ध थे, इस लिये वह आगे न बढ़ा और सीधा पीछे लौटने को वह अपमानजनक समझता था, इस लिये पीछे भी न लौटा । इन दोनों मार्गों को छोड़ कर उस ने तीसरे ही रास्ते का अवलम्बन किया । जले हुए नगर में से जो मकान बचे थे, उन्हीं में उस ने एक मास तक डेरा जमाये रक्खा । इस एक मास की देरी का फल यह हुआ कि उस के लौटते २ बड़ी ही भयानक शीतऋतु आन पहुंची ।

नैपोलियन के जीवनचरित लिखने वालों में से बहुतों की सम्मति है कि इस समय से कुछ पूर्व ही, नैपोलियन की मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों का ह्रास प्रारम्भ होगया था; या दूसरे शब्दों में इसी को यूं कह सक्ते हैं कि उस की महत्वाकांक्षायें उस की शक्तियों से बहुत बड़ी होगई थीं । इस सम्मति में, बहुत सा सत्य का अंश प्रतीत होता है । इस यात्रा का साद्यन्त वृत्तान्त, इस सम्मति की पुष्टि के लिये उपस्थित किया जा सक्ता है । ऊपर उन अशुद्धियों का उल्लेख

किया जा चुका है, जो इस यात्रा में नैपोलियन ने की । किन्तु अब भी उन अशुद्धियों का अन्त नहीं हुआ । मौस्को में एक महीने तक निश्चेष्ट बैठे रहने की अशुद्धि करने के पीछे, उसने फ्रांस को लौटने का विचार दृढ़ कर लिया। १८ अक्तूबर के दिन पीछे को यात्रा प्रारम्भ हुवी । पीछे की यात्रा का स्पष्ट अभिप्राय पराजय का चिन्ह है । इस चिन्ह को छिपाने के लिये, नैपोलियन ने एक नये ही रास्ते का अवलम्बन किया । सीधे रास्ते को छोड़ कर, उसने एक टेढ़ा रास्ता पकड़ा । टेढ़े रास्ते को पकड़ने में इस एक के अतिरिक्त और भी कई उद्देश्य थे । उसे आशा थी कि इस नये टेढ़े रास्ते में, खाने पीने के सामान उस की सेना को अच्छे मिल सकेंगे । किन्तु, इस टेढ़े रास्ते ने सिवाय देरी लगाने के और कोई लाभ फ्रेंचसेना को नहीं पहुंचाया। इस रास्ते में थोड़ी दूर जाकर ही नैपोलियन को पता लगा कि आगे रूसी सेना बड़े पक्के दुर्ग बांध कर उस का सामना करने के लिये डटी हुई हैं । रास्ता साफ़ कर के आगे बढ़ना असम्भव समझ कर, उस ने फिर उसी सीधे रास्ते से लौटना शुरू किया, जिस से वह आगे बढ़ा था ।

इस समय से उस इतिहासप्रसिद्ध दुःखमय नाटक का प्रारम्भ हुआ, जिस की उपमा इतिहास में अन्यत्र मिलनी कठिन है । यह यात्रा क्या थी—दुःखमय संसार में विचरण था । यात्रा प्रारम्भ होने के साथ ही कठोर सर्दी ने अपना राज्य आ जमाया । रात के समय, बड़े ज़ोर की काटने वाली वायुएं चलने लगीं । रास्तों में चारों ओर बर्फ़ ही बर्फ़ होगई—कहीं हरा पत्ता देखने को भी न मिलता था । दिन को खाने के लिये मिलना मुश्किल था और रात को सर्दी से बचना कठिन था। सर्दी और भूख से धड़ाधड़ लोग मरने लगे । सर्दी और भूख द्वारा डाली हुई विपत्ति की अंशपूर्ति के लिये, रूसी सेना के कज़्ज़ाक राक्षस, सेना के चारों ओर घूम रहे थे । ये निर्दय योद्धा अकस्मात् रात को छापा मारते और जितने भी सिपाहियों को पाते, मार देते; या नंगा करके सर्दी और हवा की करुणा पर छोड़ जाते। ग्रामों के किसान भी, अपने देश के ऊपर आक्रमण करने वालों से पूरा २ बदला लेने के लिये, तुले हुए थे । वे भी जहां कहीं किसी फ्रांसीसी सिपाही को अकेला दुकेला पाते, पकड़ कर सण्टियों से उधेड़ डालते ।

इसी अकथनीय दुर्दशा में से होती हुई फ्रेंचसेना अपने घर की ओर को मुड़ने लगी । सब से आगे महाराज रक्षकसेनासहित जाते थे । शेष सारी सेना उन के पीछे २ चलती थी, और पृष्ठ की रक्षा के लिये सेनापति ने और डीवू निश्चित

किये गये थे । सेनापति डीवू तो थोड़े दिनों बाद अगली सेना के साथ मिल गया, किन्तु मार्शल ने सारी सेना की पृष्ठरक्षा का कार्य अन्त तक करता रहा । यह सेनापति जिन २ कठिनाइयों का सामना करता था, उन का अनुमान करना भी दुष्कर है । शत्रु की सेना अब एक लाख से कम न थी । वह रूसी सेना, जो बढ़ते हुवे नद के सामने भागती हुई चली गई थी, अब उसे लौटता देख कर पीछे २ हो ली । दीन दशा में पड़ी हुई फ्रूंच-सेना को पीछे से धकेलने के लिये, इस समय, कम से कम लाख रूसीसिपाही पहुंचे हुए थे । वे केवल शत्रुसैन्य को धकेलते ही न थे, उस के आगे आकर उस का रास्ता भी कई वार काट देते थे । कभी २ तो फ्रांस के पांचसौ सिपाही शत्रु के पचास २ सहस्र सैनिकों से घिर जाते थे; किन्तु फिर भी साहस तथा परिश्रम से किसी न किसी तरह निकल ही जाते थे। **सेनापति ने** सब से अधिक मुसीबत में था । उसे पृष्ठरक्षा का कार्य दिया गया था । जब तक अगली सारी सेना बहुत आगे न निकल जाय, तब तक शत्रु को रोके रखना ही उसका कार्य था । इस कार्य के करने में वह कभी २ पचास साठ आदमियों के साथ, बन्दूक हाथ में लिये हुए, तीस तीस सहस्र सिपाहियों का सामना करता था । एक वार की बात है कि वह सारी सेना से बहुत ही पीछे रह गया; उस के तथा फ्रूंचसेना के मध्य में पचाससहस्र से अधिक शत्रुसैन्य था । वह शत्रु की सेना को चीर कर अपने साथियों से मिलना चाहता था । किन्तु, इस कार्य के करने के लिये, उस के पास केवल ६ सहस्र थके मांदे योद्धा थे । एक साधारण सेनापति ऐसे समय निराश होकर निश्चेष्ट हो जाता, किन्तु सिंहसमान ने ने साहस नहीं छोड़ा, और शत्रुसैन्य में घुसने का उपक्रम किया । रूसी सेनापति ने की इस वीरता को देख कर दंग रहगया, और वीरोचित सौजन्य के प्रकट करने के लिये अपना दूत सेनापति ने के पास भेजा । दूत ने आकर मार्शल को अपने सेनापति का संदेशा सुना दिया । सन्देशे में कहागया था कि 'मैं जानता हूं कि तुम बड़े वीर तथा साहसी सेनापति हो । मैं तुम्हारे इन गुणों का बड़ा भक्त हूं । किन्तु, इस समय, तुम ऐसी बुरी तरह से घिरे हुए हो, कि कोई भी बचने का अवसर तुम्हारे लिये छूटा नहीं है । तुम्हारे सामने इस समय पचास सहस्र सेना पड़ी है, यदि मेरे कथन में विश्वास न हो तो अपना एक सिपाही भेज दो, वह सब कुछ देख आयगा' । शत्रु के सेनापति के इस सन्देशे का उत्तर सेनापति ने ने यह दिया कि 'जाओ अपने सेनापति से कह दो कि मैं उस की सेना को कुछ नहीं समझता, और अवश्य उसे पार कर जाऊंगा'

युद्ध शुरू हुआ । ने अपने पांच सहस्त्र योद्धाओं के साथ पचास सहस्त्र सिपाहियों के उमड़ते हुए समुद्र में घुस गया । तोपों ने अपने मुंह उस पर खोल दिये; चारों ओर पहाड़ थे, पहाड़ों की हरएक कन्दरा ने अग्निकोष का रूप धारण कर कर लिया । फ्रेंचसेना भुनने लगी । ने आगे बढ़ता गया । गोलों की वर्षा और भी गाढ़ी हुवी; फ्रूंचसेना और भी वेग से बढ़ने लगी । वेग से बढ़ती बढ़ती वह शत्रुसैन्य के ऐन मध्य में आगई । मार्शल ने ने पीछे दृष्टि दौड़ाई तो उसे केवल अपने पांच सौ सिपाही दिखाई दिये । चार हज़ार पांचसौ सिपाही भूतलशायी हो चुके थे । किन्तु, फिर भी साहस न हार कर उसने आंख पीछे से मोड़ली, और बन्दूक चढ़ाये आगे को बढ़ना शुरू किया । अकस्मात् शत्रु की तोपों के मुंह बन्द हो गये, और सफ़ेद झण्डा दिखाई दिया । थोड़ी देर में एक दूतने आकर सेनापति ने से शस्त्र रख देने के लिये कहा । इस कथन का जो उत्तर मार्शल ने ने दिया था, वह चिरस्मरणीय है । उस ने कहा:—

'फ्रांस का सेनापति मरना जानता है, किन्तु शस्त्र रखना नहीं जानता'।

यह उत्तर पाकर रूसीसेना ने फिर तोपों के मुंह खोल दिये । सेनापति ने ने अब आगे बढ़ने के स्थान में पीछे लौटना शुरू किया । धीरे २ पीछे लौट कर, और शत्रुसैन्य में से निकल कर, वह एक और ही निर्जन मार्ग से होता हुआ आगे निकल कर फ्रूंचसेना में जा मिला । जब से सेनापति ने पीछे रहगया था, नैपोलियन को चैन नहीं आती थी । वह रात दिन इस पुरुषसिंह की खोज में रहता था । जब उसने सुना कि उस का सम्मानित सेनापति अपनी वीरता और धीरता से इतने बड़े शत्रुदल को छका कर चला आया है, तब वह आसन पर से उठ कर उसे लेने के लिये आगे बढ़ा और कन्धे पर हाथ रख कर उसे 'वीरों में से वीरतम' की उपाधि दी ।

२१ दिन तक बराबर इसी प्रकार की दुःखयात्रा होती रही । सेनापतियों या महाराज में से कोई भी क्लेशों से रहित न था । सिपाहियों की संख्या प्रति दिन घट रही थी । मौस्को से दो लाख के लगभग सेना लौटनी शुरू हुई थी, किन्तु इस समय सारी फ्रूंचसेना में तीस सहस्त्र से अधिक सिपाही न थे । सारे सेनापति भी थके हुए और असन्तुष्ट थे । नैपोलियन को सेना की इस चिन्ता के अतिरिक्त और भी कई चिन्तायें चिपटी हुई थीं । उसे इसी मार्ग में पता लगा, कि उसे इन क्लेशों के अन्दर पड़ा हुआ देख कर, प्रशिया ने फिर से सिर उठाया है । अन्य

भी उस के जीते हुए देश, जो केवल समय की प्रतीक्षा में थे, अपनी २ कमरें कस रहे थे। इन सब बाह्यशत्रुओं की तय्यारियों के अतिरिक्त, पेरिस में भी एक ऐसी घटना हो गई जिस से नैपोलियन की चिन्ता दुगनी हो गई। **मैलट** नाम के एक मनुष्य ने, शहर में प्रसिद्ध कर दिया, कि महाराज रूस में मारा गया है, और कुछ साथियों को मिला कर कैदखानों पर आक्रमण किया। वहां से कई कैदी छुड़ा दिये और उन के साथ शहर में गड़बड़ मचानी शुरू की। शहर की पुलीस को शीघ्र ही इस घटना का पता लग गया, और उन्हों ने मैलट को साथियों सहित पकड़ कर विद्रोह को शांत कर दिया। यह घटना यद्यपि स्वयं कोई बड़ी घटना न थी, तथापि, इस से कम से कम इतना तो अवश्य सिद्ध होता था कि नैपोलियन के सिरपर राजमुकुट अभी स्थिर नहीं हुआ है—अभी वह थोड़े से व्यत्यय से भी हिल सक्ता है। साथ ही इस बात ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि लोग नैपोलियन के पुत्र को अभी उस का उत्तराधिकारी नहीं समझते। उस के मरने का समाचार सुन कर, उस की राज्ञी या पुत्र की ओर न देख कर, लोगों का विद्रोह की ओर आंख उठाना इस में स्पष्ट साक्षी था।

इस घटना का तथा प्रशिया की तय्यारियों का वृत्तान्त सुन कर, नैपोलियन ने शीघ्र ही पेरिस को लौटने का विचार किया। अपनी सेना को नैपल्सनरेश सेनापति मूरा के आधिपत्य में छोड़ कर, पांच नवम्बर के दिन वह दो तीन मन्त्रियों के साथ पेरिस की ओर को प्रस्थित हुआ। उस के जाने के पीछे, सेना की दशा, और भी बुरी हो गई। सर्दी बहुत ही बढ़ गई। तापमापक का पारा शून्य से भी ६० अंश नीचे चला गया था। सेना का कष्ट अपरिमेय था। नैपोलियन के चले जाने ने चोट पर नमक का काम किया। सारी सेना ने उस के चले जाने को विश्वासघात का कार्य समझा। इस प्रकार से द्विगुणित दुःखवाली निःसहाय सेना धीरे २ पीछे को लौटने लगी। सेनापति ने अपने अदम्य साहस से शत्रु को रोकता रहा। अन्त को, अनेक कष्टों को झेल कर और विपत्तिसागर को पार कर के, यह बदनसीब सेना, १३ दिसम्बर के दिन, नीमन नदी के पार आगई। नीमन नदी को पार करने के साथ ही वह शत्रु के देश में से निकल आई। सेनापति ने, नीमन-नदी के पार करने वालों में से अन्तिम पुरुष था। जब सारी सेना पार हो गई, तब वह पुल पर आया। उस ने अपने हाथ की बन्दूक नदी में फेंक दी, और स्वयं कपड़े झाड़ कर पार हो गया।

तीसरा परिच्छेद ।

जय और पराजय

परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् । भारविः ।

मनुष्य असाधारण कार्य्य कर सक्ता है, किन्तु वह असम्भव कार्य्य नहीं कर सक्ता । जो कुछ सम्भवता की परिधि के बीच में है, और जिसे असाधारण बुद्धि तथा असाधारण शक्ति कर सक्ती है, वह साध्य है, इस से आगे असाध्य है । वह कार्य्य जो मानसिक तथा भौतिक नियमों से परे है, किसी द्वारा भी नहीं किया जा सक्ता। प्रकृति भी असाध्य को साध्य नहीं बना सक्ती, तब अल्प शक्ति मनुष्य के लिये यह कैसे सम्भव है ? नैपोलियन ने असाध्य करने का यत्न किया और वह अकृतकार्य्य हुआ । उस ने प्राकृतिक शक्तियों का सामना मानुषिक शक्तियों से करना चाहा, और उसे जबर्दस्त धक्का खाना पड़ा । पहले धक्के का वृत्तान्त पाठक लोग पढ़ चुके । अब नैपोलियन के लिये संभलने का समय था । उस की सैनिक तथा शारीरिक शक्तियों का ह्रास हो चुका था, तब उसे थोड़े दिन तक अपने आप को तय्यार करना चाहिये था। तभी यह सम्भव था कि वह अपने पूर्व गौरव को प्राप्त कर सक्ता।

किन्तु जैसे ऊपर कहा गया है, अतुल शक्ति ने उस की साध्यासाध्य और सम्भवासम्भव में भेद करने की बुद्धि को नष्ट कर दिया था । वह अब यह न पहचान सक्ता था कि सम्भव क्या है और असम्भव क्या ? रूस की विपत्ति के पीछे, उस के लिये किसी बड़े युद्ध में विजयी होना असम्भव था । अपनी असामान्य शक्तियों से वह क्षणिक विजय प्राप्त कर ले, किन्तु शत्रुसंख्या के सामने उस की शक्ति उपहास्य थी । योरप में कौनसा ऐसा बड़ा नरेश था, जिस के दिल में उसके लिये जलन न थी ? कौनसा ऐसा शासक था जिसकी आंखों में वह कांटे सा न चुभता था ? रूस, प्रशिया और आस्ट्रिया की राजधानियों का दलन करके, वह इन देशों के शासकों को प्राणान्त शत्रु बना चुका था; उन के दिलों में वह आहतगर्व से उत्पन्न होनेवाली अग्निज्वाला उत्पन्न कर चुका था । जब तक वह आकाश के मध्य में देदीप्यमान था, सब चुप थे । किन्तु जहां विपत्ति ने उसे कुछ मद्धम किया वे सब जले दिल अपना २ बदला निकालने के लिये उस पर कूद पड़ेंगे—यह स्पष्ट बात थी ।

इंग्लैंड ने तो नैपोलियन के विरुद्ध कसम खाई हुई थी—वह उस को क्षय करने वाले पर अपना सर्वस्व वारने के लिये तय्यार था। इस प्रकार, योरप की सारी बड़ी शक्तियों के विरुद्ध रहते हुए, नैपोलियन का विजयी रहना दो अवस्थाओं में ही सम्भव हो सक्ता था। या तो उस की सैनिकशक्ति पूर्ववत् अदम्य रहती, और या वह अब शस्त्रयुद्ध को छोड़ कर नीतियुद्ध का आश्रय लेता, और शत्रुओं को सन्धिभेद द्वारा वश में कर लेता। पहला साधन स्पष्टदृष्टि से विनष्ट हो चुका था, तब दूसरे साधन का अवलम्ब आवश्यक था। किन्तु, उसी भाग्यरूपी अंकुश ने, जिस से प्रेरा जाकर वह रूस की हिमानी में गलने के लिये घुस गया था, उसे दूसरे मार्ग के पीछे न जाने दिया। उस ने अब इस अवस्था में भी अपने उलटे भाग्यों का मुंह तलवार द्वारा ही फेरना चाहा। यह असम्भव के लिये यत्न करना था। नैपोलियन ने, गर्वित हृदय के साथ, इस असम्भव के करने का यत्न किया। आगामी एक वर्ष का इतिहास इसी असाध्य को साध्य बनाने की चेष्टाओं का वृत्तान्त है।

असाध्य को साध्य नहीं बनाया जासक्ता, इस लिये नैपोलियन भी अपनी चेष्टा में अकृतकार्य्य हुआ। किन्तु इस में ज़रा भी सन्देह नहीं कि आगामी एक वर्ष के इतिहास में जिस वीरता और धैर्य्य का हम वर्णन पायंगे, उस की उपमा अन्यत्र इतिहास में मिलनी कठिन है। नैपोलियन अपनी मुट्ठी भर सेना और थोड़े से सेनापतियों के साथ जिस तरह एक वर्ष तक अपने अगणनीय शत्रुओं के कदम रोकता रहा और उस की छाती को बेधता रहा, उसे पढ़कर और स्मरण करके चित्त यही समझने लगता है कि 'नैपोलियन ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया।' नैपोलियन के सब इतिहासलेखक एक शब्द होकर कहते हैं कि उस के बारह बरसों के विजय इस एक वर्ष के विजयों के सामने तुच्छ हैं। वह असम्भव को सम्भव करना चाहता था, इस लिये हम उसे पागल कह सक्ते हैं; और वह केवल अपनी और फ्रांस की शक्ति के लिये लड़ रहा था, इस लिये हम उस की सत्यता में सन्देह कर सक्ते हैं। यह सब कुछ हम चाहें तो कर सक्ते हैं, किन्तु उस की वीरता तथा असाधारण प्रतिभा में संशय करना हमारे लिये असम्भव है।

इस साधारण भूमिका के अनन्तर हम इस चरित को फिर आरम्भ करते हैं। रूस की विपत्ति ने नैपोलियन के शत्रुओं की दबी हुई गर्दनें कुछ २ उठादीं। वे पराजित नरेश, जो उसे अदम्य समझ कर अब तक दबे बैठे थे, कुछ सोच में पड़े। उन्हें अब पता लगा कि नैपोलियन अदम्य नहीं है। साथ ही उन्हें यह भी ज्ञात हो गया कि अब

उसकी पुरानी सेना नष्टप्राय हो चुकी है, अब उस सेना की दुम का एक बाल ही शेष रह गया है। यही सिर उठाने का समय था। जब अभी नैपोलियन रूस के मैदानों में शीत और कज़्ज़ाकों की चोटें खा रहा था, प्राशिया का नरेश उसी समय से सचेष्ट हो गया था। वह अन्य सब नरेशों की अपेक्षा नैपोलियन से अधिक जला हुआ था। रूस की विपत्ति का वृत्तान्त सुनते ही उस ने अपनी पराजय को धो डालने का निश्चय किया। ऐसा निश्चय होते ही प्राशिया की सेनाएं सन्नद्ध होने लगीं। उन के सन्नाह में इंग्लैंड के धन ने और भी सहायता दी। मौका पाकर ब्रिटिश कैबिनट ने फिर पीतमूर्ति ऐन्द्रजालिक का जाल फैलाना प्रारम्भ किया। प्राशिया उस जाल में सब से पहले फंसा। आस्ट्रिया को पीतमूर्त्ति दिखाई गई, किन्तु कई कारणों से उस ने अभी सीधा विरोध आघोषित न किया। अपने जामाता के विरुद्ध, इतनी शीघ्रता से, विना विशेष कारण शस्त्र उठाना उसे ठीक न प्रतीत होता था; साथ ही अभी उस की सेनायें भी संग्राम के लिये तय्यार न थीं; वाग्राम का आघात अभी पूरा २ न भरा था।

ज्यों ही नैपोलियन रूस की सीमा को लांघ कर जर्मनी में आया, त्यों ही अलेग्ज़ेण्डर भी सेण्टपीटर्सबर्ग को छोड़ कर उसी ओर को रवाना हुआ। नैपोलियन पेरिस में पहुंचा और ज़ार सेनासहित जर्मनी में आगया। अलेग्ज़ेण्डर ने अब यह निश्चय कर लिया था कि या तो वह स्वयं राज्यच्युत होगा और या नैपोलियन को राज्यच्युत करेगा। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिये यह उसे आवश्यक प्रतीत होता था कि नैपोलियन को नई सेना तय्यार न करने दी जाय, और जितना शीघ्र हो सके उस पर धावा किया जाय। वह नैपोलियन की गाड़ी के पीछे २ ही अपनी सेना के साथ जर्मनी में आ पंहुचा। वहां प्रशियननरेश ने और ज़ार ने मिलकर योरप के आततायी का क्षय करने की प्रतिज्ञा की। आस्ट्रिया से भी इस गुट्ट में मिलने की प्रार्थना की गई, किन्तु उस ने अभी उदासीन रहने की इच्छा प्रकट की। इंग्लैंड तो नैपोलियन के शत्रुओं का सार्वदिक साथी था, वह भी साथ हो लिया। इन तीनों देशों की सम्मिलित शक्तियों ने फ्रांस की सीमाओं की ओर को प्रस्थान किया।

सम्मिलित शक्तियों में, सारे सैनिकों की संख्या चार लाख से कम न थी। किन्तु, फ्रांस के सम्राट् के नाम की धाक ऐसी थी कि अब भी वे अपनी सेना को पर्य्याप्त न समझते थे। अब भी उन्हें विश्वास न था कि वे सेनारहित नैपोलियन को पराजित

कर सकेंगे । इस लिये, उन्हों ने, इस सेनांगुद्द को स्वाधीनतायुद्ध के रूप में परिणत करने का सङ्कल्प किया । जर्मनी ही प्रथम से अब तक मुख्यतया नैपोलियन की समरभूमि रहा था; वहीं पर उस के अधिक युद्ध हुए थे । सम्मिलित राजाओं ने जर्मनी को नैपोलियन के अत्याचारों के विरुद्ध भड़काना शुरू किया । 'नैपोलियन आततायी है, हम उस आततायी से तुम्हें छुड़ाने आये हैं । हमारी सेनाओं में तथा राज्यों में तुम लोगों को पूरी स्वाधीनता तथा समानता प्राप्त होगी ।' सम्मिलित नरेशों के इन यत्नों से सैन्ययुद्ध बहुत कुछ राष्ट्रीययुद्ध के रूप में परिणत होगया ।

नैपोलियन भी इतने दिनों तक निश्चेष्ट नहीं रहा । वह अपनी कठिनाइयों को अपने शत्रुओं से भी अधिक जानता था । वह युद्धसे जीता, था और युद्ध से ही स्थिर रह सक्ता था । सिवाय सांग्रामिक शक्ति के और किसी शक्ति से वह अभिज्ञ न था । इस लिये, रूस से लौट कर पहला कार्य्य उस ने सैन्यसंग्रह का किया । चारों ओर फैली हुई सेनाओं को एकत्रित करने के अतिरिक्त, एक लाख नये नौ-जवान सिपाहियों को भी भर्ती किया । इन नये नौजवान सिपाहियों को शीघ्र ही शिक्षित तथा अभ्यस्त कराकर युद्धभूमि के लिये रवाना किया गया । अपने देश के शासन का प्रबन्ध कुछ दृढ़ करके, और सचिवों के सिर पर राज्यभार सौंप कर, वह १५ अप्रैल के दिन पेरिस से चल दिया । दोनों सेनायें संग्राम के लिये ठीक २ सन्नद्ध होकर, फ्रांस की सीमा की ओर को चलने लगी । यदि केवल सङ्ख्याओं पर तथा सेना की अभ्यस्तता पर ही ध्यान दिया जाय, तो शत्रुओं की सेना नैपो-लियन से बहुत बढ़ी हुई थी । केवल नग्नचक्षु से ही देखने से नैपोलियन का क्षण भर में पराजय निश्चित था, किन्तु प्रतिभा और असामान्य शक्ति ने इस पराजय में जो विघ्न डाले उनकी कथा सुनिये ।

ल्युट्ज़न नाम के मैदान में, दोनों सेनाओं की पहली मुठ भेड़ हुवी । २ मई के दिन नैपोलियन की सेना पर शत्रुओं की सेना ने एकाएक धावा किया । धावा होने से प्रथम नैपोलियन को उसका गुमान भी न था । शत्रुओं की सेना किसी ऊंची जगह के पीछे छुपी हुई थी, वहां से निकल कर एक दम फ्रेंचसेना पर टूट पड़ी । नैपोलियन बड़ी ही सोच की दशा में पड़ गया । शत्रु की सेना १३००००, से कम न थी और उसकी रंगरूट सेना केवल ८० हज़ार थी । शत्रु के पास चालीस सहस्र घुड़सवार थे, उसके पास ४ सहस्र से अधिक न थे । फिर वह युद्ध के लिये तय्यार भी न था । इतनी न्यूनताओं के होते हुए यह युद्ध प्रारम्भ हुआ ।

युद्ध ८ घंटे तक होता रहा । दोनों ओर से हज़ारों सिपाही भूशायी हुवे । पहले पहल तो नैपोलियन के रंगरूटों के पैर उखड़ गये, किन्तु थोड़ी ही देर में उसकी उपस्थिति ने उनके अन्दर रूह फूंकदी । 'महाराज चिरजीवी हों' का शब्द करती हुई फ्रैंचसेना शत्रुओं पर टूट पड़ी । ८ घंटे के घोर युद्ध के पीछे शत्रुओं के पैर उखड़ गये । रक्षकदल ने हिली हुई शत्रुसेना के शेषांश का पीछा किया और उन्हें बहुत दूर भगा दिया । फिर भी नैपोलियन विजयी हुवा । रूस की विपत्ति ने उस की शक्ति में कोई कमी न की थी । वह वैसा ही अदम्य बना हुआ था । इन विचारों को मन में लाकर शत्रु भी घबराने लगे ।

नैपोलियन ने भागते हुवे शत्रुओं का पीछा किया । कई दिन तक भागने के पश्चात् उन्होंने **बौट्ज़न** नामक नगर में अपनी स्थिति की । नैपोलियन ने वहां भी उन पर प्रहार किया, वे चारों ओर से घेर लिये गये और थोड़ी ही देर में तितर बितर हो गये । सम्मिलित शत्रुओं का दल फिर पराजित हुवा । नैपोलियन का प्रतापदिवाकर फिर मध्याकाश में चमकने लगा ।

शत्रुओं ने नैपोलियन की शक्तिनदी को सूखा हुआ समझा था, किन्तु उन्हें पता लगा कि उस में अभी इतना जल है जितने को वे सब मिलकर भी पार नहीं कर सक्ते । वे सब इन दो पराजयों से घबरा गये, उन्हों ने देखा कि रणभूमि में जीतने के लिये नैपोलियन को सेना की आवश्यकता नहीं है, केवल अपनी उपस्थिति की ही आवश्यकता है । निराश होकर उन्हों ने उस के पास सन्धि के लिये प्रार्थनापत्र भेजा । नैपोलियन ने झटपट उसे स्वीकार कर लिया । सन्धि के नियम निर्धारित होने लगे । आस्ट्रिया, जो अब तक उदासीन था, सन्धि का प्रस्ताव होते ही बीच में कूद पड़ा । अपने आप को सरपंच बना कर, आस्ट्रिया के सम्राट् ने, अपना एक दूत नैपोलियन के पास भेजा । उस दूत ने नैपोलियन के पास आ-कर अपने महाराज की इच्छा सुनाई । आस्ट्रियननरेश ने, इस समय शृगालकार्य्य करना शुरू किया । वह इतनी देर से केवल यह ताक रहा था कि ऊंट किस करवट बैठता है ? अब युद्ध ठहरते ही वह आन मौजूद हुवा । आस्ट्रिया के राजदूत ने नैपोलियन को कहा कि 'हमारे महाराज इस समय आप के साथ अपनी सेनाओं को मिलाने के लिये तय्यार हैं, किन्तु आप को भी इटली, हालैंड, स्पेन आदि में से अपनी सेनायें उठा लेनी चाहियें । यदि आप इस शर्त को मानने के लिये तय्यार न होंगे, तो आस्ट्रियनसेना इसी समय शत्रुओं के साथ मिल जायगी ।' नैपोलियन

सन्धि के लिये तो तय्यार था, किन्तु अपने तथा फ्रांस के लिये अपमानोत्पादक शर्तों को वह न मान सक्ता था । अपमान का भार सिर पर उठाने की अपेक्षा आस्ट्रिया को भी अपने शत्रुओं के साथ ही मिलने देना उसने अच्छा समझा । वह मानी था और मानी पुरुष मान के सामने प्राण की भी कोई परवा नहीं करते । पराजयों का कलङ्क विजयजल से धोया जा सकता है, किन्तु अपमान का कलङ्क किसी भी उपाय से नहीं धोया जा सक्ता ।

आस्ट्रिया की दो लाख सेना भी शत्रुओं की पांच लाख सेना के साथ आ मिली । इस बन्धुद्रोह के कार्य्य के लिये, इंग्लैंड ने लाखों रुपये आस्ट्रिया की भेंट किये । सन्धि के प्रस्ताव उठा लिये गये, और युद्ध फिर से शुरू हुवा । शत्रुओं की समुद्रसमान सेना ने **ड्रस्डन** नगर में जमी हुई फ्रेंचसेना को घेरना प्रारम्भ किया । नैपोलियन स्वयं अपनी रक्षकसेना सहित वहां विद्यमान था । निरन्तर दो दिन तक युद्ध चलता रहा । नैपोलियन के पास एक लाख सिपाही थे, और घेरने वाले योद्धाओं की संख्या दो लाख से कम न थी । तब भी दो दिन तक वह शत्रुओं का खूब सामना करता रहा । इन दो दिनों में उसे रात और दिन घोड़े पर ही सवार रहना पड़ा । तिस पर भी आकाश के ताले बन्द न होते थे । मूसलधार वर्षा दिन और रात होती थी । इन कष्टों ने, तथा शीतोष्णव्यत्यय ने नैपोलियन को तीसरे दिन बीमार कर दिया । वह सर्वथा अशक्त हो गया, और युद्ध का सारा भार सेनाध्यक्षों के ऊपर पड़ा । कोई निरीक्षक न रहा, और उस का फल यह हुआ कि फ्रांसीसी सेना पद २ पर हारने लगी ।

संसार में शायद ही कोई ऐसा मित्र हो, जो विपत्ति के समय में विपरीत न हो जाय । नैपोलियन पर विपत्ति पड़ी हुवी देखकर उसके साथियों ने भी मुंह मोड़ना शुरू किया । उठती हुई शक्ति के साथ मिलकर समृद्धि प्राप्त करना कौन नहीं चाहता ? **बैवेरिया** और **वुट्टन्बर्ग** आदि छोटे २ जर्मननरेशों ने नैपोलियन का साथ छोड़ना प्रारम्भ किया । जो पहले उसके दरवाज़ों पर धूल चाटते २ न थकते थे, अब वेही 'अत्याचारी अत्याचारी' का शोर मचाते हुवे शत्रुओं के दल में आ मिले । नेपल्स के राजा **मूरा** ने भी फ्रेंचसेना का साथ छोड़ कर शत्रुओं की शरण ली । यह **मूरा** वही था, जो नैपोलियन के उदय के साथ उदित हुवा था । उसे एक साधारण सेनाध्यक्ष से नरेश बनानेवाला नैपोलियन ही था । किन्तु टुकड़ों को याद रखना मनुष्यजाति का धर्म नहीं है ।

कृतज्ञतागुण देवों का है, मनुष्यों का नहीं। मूरा ने भी चुपके से आपद्गत स्वामी का साथ छोड़ दिया, और अपनी वीरता पर सदा के लिये कृतघ्नता का धब्बा लगा दिया। मनुष्यजाति की कृतज्ञता का यह हाल है, और तब भी मनुष्य कृतज्ञता पर भरोसा रखता है। जो सज्जन मनुष्यजाति की कृतज्ञता पर भरोसा रखता है, उसे चाहिये कि वह एक बार नैपोलियन के चरित के अन्तिमभाग का अनुशीलन करे। वहां वह कृतघ्नता और विश्वासघात के ऐसे २ दृष्टान्त देखेगा, जो उसे मनुष्यजाति के विषय में सम्मति बदलने के लिये बाधित करेंगे।

नैपोलियन के मित्र एक के पीछे दूसरे उस का साथ छोड़ने लगे। वह चारों ओर से निराश्रय होने लगा। साधारण मनुष्य इस निराश्रयदशा में हताश होकर बैठ जाता, किन्तु महापुरुष सहल में ही धैर्य्य नहीं छोड़ते। नैपोलियन ने भी अपना धैर्य्य नहीं छोड़ा। धैर्य्य छोड़ना तो एक ओर रहा, ज्यों २ उस के शत्रुओं की संख्या बढ़ती थी, त्यों २ उस का साहस प्रगुणित होता जाता था। ड्रूस्डन से निकाले जाकर, उस ने एक नया ही युद्धक्रम सोचा। अपने सब बड़े सेनाध्यक्षों को इकट्ठा कर के, उन के सन्मुख उसने अपनी सेना सहित बर्लिन पर आक्रमण करने का विचार प्रकट किया। वह समझता था कि वहां पर आक्रमण करने से, शत्रु द्विविधा में पड़ जायंगे कि वे फ्रांस पर आक्रमण करें या बर्लिन की रक्षा करें? इस शङ्का से लाभ लेकर नैपोलियन फ्रांस को सुरक्षित करना चाहता था। किन्तु, उस के सेनाध्यक्ष, बारह बरस तक निरन्तर युद्धों से थक कर और रूस की विपत्ति से परीक्षित होकर, अब इतने बड़े साहसिक कार्य्य के करने से घबराते थे। उन्होंने एक स्वर होकर महाराज के इस प्रस्ताव का विरोध किया। उन सब ने अपने आप को एक नये **मौस्कौ** में पहुंचाने के लिये अनिच्छा प्रकट की। नैपोलियन को इस अनिच्छा तथा विरोध से बहुत कष्ट हुवा। उस के सोचे हुऐ कार्य्यक्रम का उस के सेनाध्यक्ष विरोध करें-यह उसे सह्य न था। किन्तु अवश्यभावी के सामने दबना ही पड़ता है। जब सेनाध्यक्षों को ही जाना अभीष्ट न था, तब अकेला नैपोलियन भला क्या कर सक्ता था?

बर्लिनप्रस्थान का विचार छोड़, अब उसने **लीपूसिक** नगर में अपनी सारी शक्ति को एकत्र कर के शत्रुओं को पछाड़ने का सङ्कल्प किया। नगर के चारों ओर खूब दुर्गबन्दी की गई। सेना और तोपों की ऐसी दीवारें बांध दी गईं, कि उन में से पक्षियों और वायु का गुज़रना भी कठिन था। यद्यपि फ्रांस की

सेना शत्रुओं की सेना से आधी से भी न्यून थी, तथापि जिस वीरता तथा साहस से उस ने इस नगर की रक्षा की, इतिहास उस की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करता है। दो दिनों के युद्ध में, नैपोलियन घोड़े पर सवार हो कर सारे युद्ध में घूमता था। जहां कहीं शत्रु की तोपें भयानक गोलाबारी करतीं, वह झट वहीं पर पहुंच जाता और अपनी सेनाओं को उत्साह देता। जब उसे इतने भय में पड़ा हुआ देख कर कोई सिपाही उस स्थान से हट जाने के लिये प्रार्थना करता, तब वह उत्तर देता कि 'अभी वह गोला संसार में तय्यार नहीं हुआ, जो मुझे बींध दे।'

दो दिन तक फ्रूंचसेना हिमालय की चट्टान की न्याईं दृढ़ता से खड़ी हुई शत्रुओं की सेना की गति को रोकती रही। शत्रु इस रोक को देख कर घबरा गये और निराश होकर पीछे को लौटने की तय्यारियें करने लगे। नैपोलियन ने जब यह देखा, तब उस के हर्ष की सीमा न रही। वह चारों ओर से आक्रमण करके शत्रुओं को भगा देने की आज्ञा देने वाला ही था, जब उस ने सुना कि उस के कोष में केवल दो घण्टे तक फैंकने के योग्य गोले रह गये हैं। यह बड़ा ही भयजनक समाचार था। यदि दो घंटे में गोले समाप्त हो गये और शत्रु न भाग गया, तब सारी सेना का क्या हाल होगा? इस समाचार ने विजयोन्मुख फ्रूंच सेना के दिल तोड़ दिये। ऐसी निर्बल दशा में शत्रु का सामना करने को भयावह समझ कर, नैपोलियन ने भी पीछे को लौटना ही निश्चित किया। रात के समय लौटना शुरू हुआ। रात भर सेनायें नगर छोड़ती रहीं, प्रातःकाल ही शत्रु को यह समाचार मिल गया। शत्रुओं के हर्षनाद से सारा आकाश गूंज उठा। विजेता नैपोलियन शत्रुओं के सामने भागा जा रहा है, इस से अधिक हर्ष की बात शत्रुओं के लिये क्या हो सक्ती थी? फ्रूंचसेना के पीछे २ वे **लिप्सिक** में दाखिल हुवे। उस की दूसरी ओर **अल्स्टर** नाम की नदी थी। उस पर से फ्रूंच सेना गुज़र रही थी। नैपोलियन पार उतरता हुआ एक बड़े अधिकारी को यह आज्ञा दे गया था कि जब सारी फ्रूंचसेना उस पर से गुज़र जाय, तब वह पुल उड़ा दिया जाय। वह अधिकारी बहुत कर्त्तव्यपरायण न था। जब शत्रुसैन्य पास २ आने लगा, उस ने भी अपनी जान बचानी आवश्यक समझी। एक साधारण सिपाही को, सेना के निकल जाने पर पुल उड़ाने की आज्ञा देकर, उस ने अपने घोड़े के एड़ी दी, और चम्पत होगया। सेनाओं के सङ्कट में उस सिपाही की अक्ल मारी गई, और उस ने आगा देखा न पीछा, झट पुल के नीचे रक्खे हुवे बारूद में आग दे दी। सेनाओं

और गाड़ियों से भरा हुआ पुल आकाश में उड़ा और पानी में गिर पड़ा। वे सैनिक जो पुल के ऊपर थे, नदीगर्भ में विलीन हो गये और वह पच्चीस सहस्र सेना जो अभी पार न गई थी, शत्रु के चार लाख फ़ौज के अन्दर फंस गई। उस पच्चीस सहस्र में से जो वीर थे, वे लड़ मरे; जो भाग्यशाली थे वे पार पहुंच गये; और जो कायर थे वे कैदी हो गये। शेष सत्तर अस्सी हज़ार सैन्य को लिये हुए नैपोलियन पेरिस की ओर को बड़े वेग से मुड़ता रहा।

शत्रुओं की सेना के बहुत पीछे रह जाने पर अपनी सैन्य का आधिपत्य अपने सेनापतियों के अधीन करके ५ नवम्बर (१८१४) के दिन नैपोलियन पेरिस नगर में प्रविष्ट हुआ। वहां पर आकर उसने अपने सलाहकारों से सलाह ली और राजसभाओं से अधिक सेनायें तय्यार करने की अनुमति ले ली। राज्यकार्य्य की दो तीन दिन तक देख भाल करके, और अपनी राज्ञी और पुत्र का अन्तिम आलिङ्गन करके, वह शीघ्र ही फिर अपनी सेना में जा मिला। इस बार पेरिस से आते हुए वह अपने साथ मरने या मारने की प्रतिज्ञा लाया था। पेरिस में शत्रु के आजाने का अर्थ न केवल नैपोलियन का नाश ही था, किन्तु फ्रांस के गौरव का ध्वंस भी था। इस लिये अब वह अन्तिम सामना करने के लिये तत्पर हुआ। फ्रांस जितने सैनिक उपस्थित कर सक्ता था, वे उस ने इस समय चूस लिये। सारे कोणों से जवान सिपाहियों की सेनायें तय्यार कर २ के उस ने रणक्षेत्र में भेजीं। इन नई रंगरूट फौजों और पुरानी सेनाओं को मिलाकर इस समय उस के पास युद्ध करने योग्य ७०,००० सिपाहियों का सैन्य था। इस मुष्टिमेय सैन्य के बल से, चार लाख शत्रुसैन्य के आक्रमण को रोकने के लिये वह तय्यार हुआ।

इस बात में इतिहास साक्षी है, कि नैपोलियन की इस समय की युद्ध–चेष्टा, असामान्य थी। इतने थोड़े सैनिकों के साथ, महीनों तक इतनी बड़ी विजयोन्मुख सेना के दांत खट्टे करना इसी अमानुषिक शक्तिशाली मनुष्य से सम्भव था; अन्य से नहीं। पेरिस से चल कर २८ जनवरी के दिन वह अपनी सेना के साथ जा मिला। सेना में पहुंचते ही उसने अपनी तथा शत्रुओं की सेनाओं की स्थिति पर विचार किया। खूब पूछ पाछ, और देख भाल के पीछे उसे पता लगा कि उसकी दशा बहुत ही चिन्तनीय है। शत्रु दो भागों में विभक्त होकर, अनिवार्य्य वेग से पेरिस की ओर बढ़ रहा था; नैपोलियन के सेनाध्यक्ष स्थान स्थान पर पराजय खाकर पीछे को हट रहे थे। ब्रीने नगर में—जहां बाल्यावस्था में नैपोलियन ने शिक्षा

पाई थी—प्रशियन सेनापति **ब्लूचर** एक लाख सैन्य के साथ पड़ा हुआ था। उसकी सेना का अग्रभाग **सेण्टडिजीयो** तक पहुंचा हुआ था। दूसरी ओर उस से कुछ ही दूरी पर सेनापति **स्क्वार्टन्बर्ग** अपना उपनिवेश जमाये बैठा था। सेनापतियों के पीछे और भी बड़ी सेनाओं को साथ लिये रूस तथा आस्ट्रिया के महाराज दिग्विजय का आनन्द लेते हुए आ रहे थे। ऐसी भयानक दशा थी, जिस समय नैपोलियन अपनी सेना में पहुंचा। एक दिन देख भाल कर उस ने अपना कार्य्य-क्रम शीघ्र ही निश्चित कर लिया। उस के शत्रुओं ने उस के डर से अब यह नीति पकड़ी हुई थी कि जहां कहीं स्वयं नैपोलियन हो वहां से पीछे भाग जाना, और जहां उस के सेनापति हों वहां वार करना। इसी नीति का अवलम्ब करते हुए वे अब फ़्रांस के तृतीयभाग को पार कर चुके थे। नैपोलियन ने, शत्रु की इस धूर्तता का प्रतिकार करने के लिये चुपके चुपके उसे दबाने का विचार किया। **ब्लूचर** ब्रीने में अपनी सेना को टिकाये हुवे निःशङ्क बैठा था। वह अभी तक यही समझता था कि महाराज पेरिस में हैं। नैपोलियन ने अचानक ही उसे दबोच लेने का सङ्कल्प कर के २९ जनवरी के दिन कूच कर दिया। **ब्लूचर** इस आकस्मिक विपत्ति के सहने के लिये तय्यार न था, नैपोलियन की गति ने उसे विमोहित कर दिया ; बहुत देर तक वीरता से लड़ कर उसकी सेना के कदम उखड़ गये। वह बिखर गई और शीघ्र ही पीठ दिखा कर भाग निकली।

इस एक ही विजय ने जहां हरे हुए हुए शत्रुओं के दिलों पर मुरझावटसी डाल दी, वहां फ़्रांसवासियों के सूखे हुवे निराश चित्तों को हरा भरा कर दिया। फ्रांस की आशाओं का वृक्ष फिर फूलने लगा। किन्तु सम्पत्ति के पीछे विपत्ति और विपत्ति के पीछे सम्पत्ति के रास्ते को कोई नहीं जान सक्ता। इस असामान्य विजय के दूसरे ही दिन **ब्लूचर** और **स्क्वार्टन्बर्ग** दोनों ने अपनी सेनाएं मिलाकर नैपोलियन पर आक्रमण किया। फ्रेंचसेना शत्रुसेना की एक तिहाई से कुछ ही अधिक होगी ; फिर वह कई महीनों के वेग-युक्त प्रस्थानों और निरन्तर युद्धों से सर्वथा श्रान्त हो चुकी थी। पहले पहले तो शत्रुसेना की लहर के सामने फ्रेंच-सेना चट्टान की तरह डटी रही; किन्तु शत्रु का संख्याबाहुल्य अन्त को विजयी हुआ। महाराज **अलेग्ज़ेण्डर** और प्रशियानरेश स्वयं परिशिष्ट सेनाओं को लिये स्थान स्थान पर युद्ध का भाग्यनिश्चय कर रहे थे। घण्टों के घोर युद्ध के पश्चात् नैपोलियन अपनी विजय को असम्भव समझ कर फिर पीछे को लौटने लगा।

इस समय फ्रेंचसेना की जैसी निराशायुक्त और शत्रुओं की जैसी उत्साह-युक्त दशा थी, पाठक उस का स्वयं ही अनुमान कर सक्ते हैं। तालियों और जय-नादों से दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुवे शत्रुओं ने फ्रेंचसेना का पीछा प्रारम्भ किया। सारे देश में इस पराजय का घातक समाचार फैल गया; निराशा और चिन्ता का चारों ओर राज्य हो गया। आततायि-दल भी समय पाकर राज-धानी की ओर को बढ़ चला।

नैपोलियन ने बड़े ही वेग से पीछे को लौटना शुरू किया। उस का वेग ऐसा असाधारण था कि थोड़े ही दिनों में वह शत्रु की आंखों से ओझल होगया। उन को यह भी पता न रहा कि फ्रेंचसेना किस ओर को लौटी है? सेनापति **स्च्वार्टन्बर्ग** को उस का पीछा करने की आज्ञा दी गई थी, किन्तु वह नैपोलियन की श्येनगति को न पा सक्ता था। किन्तु सेनापति **ब्लूचर** बहुत साहसिक तथा वीर था। उस ने युद्धविद्या में नैपोलियन को गुरु बनाया था। शत्रु के पराजित करने का मूलमन्त्र उस ने अनेक-राजधानी-विजेता से सीखा था। नैपोलियन जब शत्रु के देश में विजयार्थ जाता था तब न पीछा देखता न आगा, सीधा राजधानी में घुस जाता था। राजधानी देश की चाबी होती है, उस के काबू आते ही नैपोलियन सारे देश का शासन कर लेता था। **ब्लूचर** ने भी अब वही सिद्धान्त सामने रक्खा। उस ने अपना मुंह सीधा पेरिस की ओर को मोड़ा, और प्रति दिन ग्रामवासी किसानों और गृहस्थों को खदेड़ता हुआ आगे को बढ़ने लगा। नैपोलियन ने कुछ दिन तक इस साहसी वीर को आगे बढ़ने की छुट्टी दे दी। किन्तु जब वह अपनी सेना से बहुत आगे बढ़ आया तब, नैपोलियन के मन में उसी दैवीशक्ति का प्रादुर्भाव हो आया, जिस के बल से वह बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी शत्रु का ध्वंस कर के, उस के जीने और मरने के प्रश्न का निश्चायक हो जाया करता था। पचास हज़ार सिपाहियों की मुष्टिमेय सेना के साथ वह एकाकी पड़े हुए **ब्लूचर** के ऊपर जा पड़ा। ब्लूचर के पास इस समय एक लाख से अधिक सेना थी, किन्तु नैपोलियन ऐसा चुपके २ पहुंचा, कि शत्रुओं की सेना को कपड़े संभालने का भी समय न मिला। नैपोलियन अपनी सेना के अग्रभाग से शत्रुसैन्य के छिलके में छेद करके ऐन मध्य में घुस गया। वहां से उस ने एक एक करके चारों पार्श्वों को पराजित कर दिया। आकस्मिक पराजय से घबराया हुवा **ब्लूचर** थोड़े से शरीररक्षकों के साथ भाग निकला। नैपोलियन समर विजेता रहा। दूसरे दिन

साठ हज़ार सेना को इकट्ठा करके ब्लूचर ने फिर नैपोलियन पर धावा करना चाहा, किन्तु आज उसकी पहले दिन से भी बुरी गति बनी ।

सेनापति **स्च्वार्टन्बर्ग** ने जब सुना कि नैपोलियन ब्लूचर के साथ भिड़ा हुवा है, अपना रास्ता साफ़ समझ कर उस ने पेरिस की ओर को भाग शुरू की । वह अभी बहुत दूर न पहुंचा था, कि ब्लूचर को पूर्वोक्त दो संग्रामों में हराकर, एक रात और एक दिन में पचास साठ मील का रास्ता तय करके, फ्रेंच-सेना उस के पृष्ठभाग पर आ पड़ी । बड़ा ही भयानक संग्राम शुरू हुवा । **स्च्वार्टन्-बर्ग** की दो लाख सेना इस निर्मेघ आकाश से गिरे हुवे वज्रपात को न सहार सकी । नैपोलियन फिर विजेता रहा । शत्रुदल थोड़ी ही देर में टूट गया और पीछे को भाग निकला । नैपोलियन की पचास सहस्र थकी मांदी सेना ने चार पांच दिन में ही पेरिस की ओर को उमड़ती हुई आततायि-सेना के पैर उखाड़ दिये । इतिहास साक्षी देता है कि आज तक किसी भी योद्धा ने इन युद्धों की उपमा उपस्थित नहीं की ।

शत्रु के दोनों बड़े दल पीछे को लौटने लगे । रूस, प्रशिया और आस्ट्रिया के सम्राटों के विजयोल्लासित मन कुम्हलाने लगे । वे किंकर्तव्यताविमूढ़ हो गये, और शत्रुसैन्य का कार्य्यक्रम अनिश्चित प्रतीत होने लगा । शत्रुदल के प्रबन्ध में ऐसी गड़बड़ देख कर, नैपोलियन ने एक नया ही सङ्कल्प किया । पेरिस को राम भरोसे छोड़ कर, और **स्च्वार्टन्बर्ग** के पीछे की ओर जाकर, शत्रु-सेनाओं का सम्बन्ध जर्मनी से काट देने का निश्चय कर के वह घूम गया और शीघ्र ही पेरिस के विजय के लिये बढ़ते हुए शत्रुओं ने अपनी राजधानियों को ही सर्वथा अरक्षित होने के कारण नैपोलियन के चुङ्गल में पाया । ज्यों ही नैपो-लियन ने जर्मनी की ओर को मुख मोड़ा, त्योंही सारी शत्रुसेनाओं ने मिल कर उस का रास्ता रोकने के लिये पेरिस की ओर पीठ की । **आर्किस** पर चालीस सहस्र फ्रेंचसेना का डेढ़ लाख शत्रुओं के साथ घोर संग्राम हुवा । नैपोलियन की छोटी सी सेना ने शत्रु पर दुर्दम आक्रमण किये; शत्रु ने भी कई स्थानों पर उसकी सेना को छेद दिया, किन्तु युद्ध अनिश्चित रहा । हानि फ्रांस की अधिक रही; नैपो-लियन का जर्मनी की ओर को प्रस्थान रुक गया । इस प्रकार इस महान् शक्तिशाली मनुष्य की देशरक्षा की अन्तिम चेष्टा समाप्त हुई ।

अब नैपोलियन के पास बृहती सेना के अस्थिपञ्जर के, और अपने नाम के

सिवाय कुछ न रहा था। केवल चालीस सहस्त्र सेना की सहायता से एक मनुष्य जो कुछ कर सक्ता था, नैपोलियन ने उसका सहस्त्रों गुणा कर दिखाया। किन्तु अब वह वर्षे हुए मेघ की न्याईं अशक्त हो गया था। अपनी निर्बल दशा को नैपोलियन भी खूब जानता था, और उसके शत्रु भी खूब जानते थे। शत्रुओं ने पहले सेना के दो भाग करके नैपोलियन को छकाना और तङ्ग करना चाहा था, किन्तु उनकी यह नीति फली नहीं; उलटी उसकी विद्युत्समान गति से वे वारवार पराजित होने लगे। अब सम्मिलित नरेशों ने मिलकर नया कार्य्यक्रम निर्धारित किया। तीन लाख से अधिक सारी सेना को इकट्ठा करके, एक साथ ही पेरिस पर चढ़ाई करने का विचार किया गया। दूसरे दिन से ही यह अदृष्ट पूर्व जनसमूह राजधानी की ओर को बढ़ चला। नैपोलियन के लिये अपनी थोड़ी सी सेना के साथ इस महासागर के प्रवाह का रोकना असम्भव था। अब उसके लिये एक ही रास्ता खुला था। वह शत्रुओं से पहले पेरिस में पहुंच कर, उसकी रक्षा का कोई उपाय कर सक्ता था। किन्तु इसमें भी एक कठिनता थी। शत्रुओं की अपेक्षा वह पेरिस से बहुत दूर था; शत्रु उस से चार दिन पहले राजधानी में पहुंच सक्ते थे। यह स्पष्ट था कि अब देशरक्षा की कोई आशा नहीं रही।

शत्रुओं का सैन्यसागर शीघ्र ही पेरिस की दीवारों के आसपास जा पहुंचा। नैपोलियन का भाई जोज़फ़ वहां का स्थानीय शासक था। उसकी सहायतार्थ **मोर्टियर** और **मार्मोण्ट** दो सेनापति थे। शत्रुओं की किर्चों की चमक देखते ही उन के दिल निराशा में डूब गये। विना किसी प्रकार का सामना किये, उन्होंने राजधानी शत्रु के हाथ में अर्पित करदी। जब नैपोलियन शीघ्र गति से चलता हुआ रात के समय पेरिस के पास पहुंचा, तब उसे पता लगा कि उसके आदमियों ने देशरक्षा की अन्तिम आशा पर कुल्हाड़ा चला दिया है। उसने इस समाचार को सुनकर दुःख से भरा एक लम्बा श्वास लिया और सेना के शेष भाग को पेरिस के बाहिर **फौण्टेनब्ल्यू** नाम के अपने विश्रामस्थान में ठहरने की आज्ञा दी।

शत्रुओं की सेना ने पेरिस पर पूरा अधिकार कर लिया। कुछ डर से, और कुछ कृतघ्नता से, पेरिस की सैनेट ने नैपोलियन को राजगद्दी पर से उतारने का निश्चय किया। महाराज की विपद्गत दशा को देख कर, फ्रेंच सेनापतियों ने भी स्वामिद्रोह करना शुरू किया। जिनके शरीर का मांस भी नैपोलियन की कृपा का फल था, और जिन्हें साधारण पुरुष की दशा से उठाकर उसी ने सेनापति बनाया था, वे भी

एक २ करके शत्रुओं के सामने सिर झुकाने लगे । नैपोलियन की दशा प्रति दिन निर्बल होने लगी ।

इन्हीं दिनों में सन्धियें भी चलती रहीं। नैपोलियन के दूत पेरिस में भेजे गये। वहां पर रूस, प्राशिया, आस्ट्रिया और इङ्गलैंड के राजाओं तथा राजप्रतिनिधियों की सभा के सामने नैपोलियन और फ्रांस के भाग्यनिश्चय का प्रश्न उपस्थित हुवा । विचार बहुत लम्बा तथा पेचीदा था । उपर्युक्त देशों को नैपोलियन कई वार पराजित कर चुका था, तथा उनकी राजधानियों में भी अपनी विजयदुन्दुभि बजा चुका था । अब उनकी बारी थी । वे भी उसका सर्वनाश किये विना कैसे रह सक्ते थे ? बहुत विवाद के अनन्तर यह निश्चित किया गया कि नैपोलियन को आधिपत्य से हटाकर पुराने बोर्बोन राजाओं को उसके स्थान पर फ्रांस का शासक बनाया जाय; नैपोलियन को महाराज की उपाधि रखने का अधिकार दिया जाय तथा एल्बा नाम का द्वीप उसका निवास स्थान हो, उस द्वीप का पूरा शासन नैपोलियन के हाथों में हो । गुज़ारे के लिये उसे फ्रांस के कोष से कुछ मासिक धन मिलने का भी निश्चय करके शत्रुओं ने अपना उद्देश्य समाप्त किया ।

जब इन सारी शर्तों और सन्धियों का समाचार नैपोलियन को मिला, क्रोध और निराशा से वह आपे से बाहिर होगया । उस ने फिर से शस्त्र उठाकर युद्धक्षेत्र में लड़ मरने का सङ्कल्प किया । किन्तु कई विचार उसे फिर से लड़ाई प्रारम्भ करने से रोकते थे । कई फ्रेंच लोग अब शत्रु से जा मिले थे; फिर से युद्ध करने का अभिप्राय अपने देश वासियों से लड़ना था, और नैपोलियन को वह सह्य न था । साथ ही यह सुनते सुनते उसके कान थक गये थे, कि सारे योरप की अशान्ति का कारण एक नैपोलियन है । उस के पास शक्ति भी अब बहुत थोड़ी रह गई थी। उसके बहुत से सेनापति तो शत्रुओं से जा मिले थे, और जो शेष थे, उनकी हिम्मतें टूट चुकी थीं । इन सब विचारों को सामने रखकर नैपोलियन ने उपर्युक्त सन्धि को स्वीकार कर लेने का ही निश्चय किया ।

जिस शान्ति तथा धैर्य्य के साथ नैपोलियन ने इस विपत्ति को सहा, वह उस के आत्मा की महती शक्तियों के जतलाने वाली थी । विजय में तो सभी धीर रह सक्ते हैं, किन्तु धीर वह कहाता है जो पराजय में धीरता का धारण करता है और विपत्ति में चट्टान बनता है । नैपोलियन ने जिस धैर्य्य से इस आपत् को सहा वह उसकी शक्ति का परिचायक था । यद्यपि पहले पहल इस सिंहासनपात का

समाचार सुन कर वह निराश हो गया था, और कई कहते हैं कि उसने निराशा में ही आत्महत्या के विचार से विष भी खा ली थी, तथापि सर्वतोभावेन उस ने उस कष्ट का सहन बहुत धीरता से किया।

अन्त को, फ्रांस की भूमि का त्याग करके एल्बा के लिये प्रस्थित होने का समय आया। बड़े ही स्नेह के साथ वह अपने सब मित्रों तथा सेनापतियों से मिला; फिर उसने अपने स्वामिभक्त तथा वीर रक्षकदल के योद्धाओं के साथ अन्तिम मुलाकात की; और सब दर्शकों के साश्रुनयनों से निरीक्षित, और कम्पित हृदयों से आलिङ्गित होता हुवा वह केवल छःसौ सिपाहियों को साथ लेकर फ्रांस से अपने नये राज्य तथा कारागार के लिये प्रस्थित हुआ।

चञ्चला राजलक्ष्मी के विभ्रमों की गति विचित्र है! कल का सम्राट् आज का कैदी बन गया है और कल के विजित आज विजेता बन रहे हैं! क्या इस पर भी कोई मनुष्य इस चपला के कृपा–कटाक्ष पर भरोसा रख सक्ता है?

चतुर्थ परिच्छेद।

एल्बा और फिर पेरिस॥

एल्बा द्वीप फ्रांस से दो सौ मील की दूरी पर स्थित है। वहां की जलवायु स्वास्थ्य के लिये उत्तम है, और वहां की प्रकृति भी सर्वथा सौन्दर्य्य–रहित नहीं है। द्वीप यद्यपि छोटा है तथापि मनुष्य के एकान्तवास के लिये पर्याप्त है। इसी द्वीप में शासन करने के लिये, महाराज नैपोलियन अब फ्रांस से प्रस्थित हुआ। विधि भी बड़ा बलवान् है। वह मनुष्य, जिसे कल सारे योरप का साम्राज्य भी थोड़ा प्रतीत होता था और जिस की महत्त्वाकांक्षा लाखों मनुष्यों के बध करने पर भी शान्त न होती थी; आज एक छोटे से द्वीप में बन्द होने के लिये जहाज़ पर सवार होता है। नैपोलियन अप्रैल मास की २८ तारीख़ के दिन एक ब्रिटिश जहाज़ पर चढ़ कर एल्बा की ओर को चल दिया। ६ दिनों तक मनोरम समुद्र की वायु के झोकों के आनन्द लेकर, मई मास की तीसरी तारीख़ के प्रातः ही उस ने, दिगन्त में उठते हुए एल्बा द्वीप के हरे २ वृक्षों से लदे हुए पर्वतों को दृष्टिगोचर किया।

नैपोलियन एल्बा में जब तक रहा, बड़ी ही चैन और शान्ति से उस के दिन कटे। अपने छोटे से साम्राज्य की आय बढ़ाने, उसे रास्तों, पुलों और कुवों से सजित करने, और पढ़ने लिखने तथा बातचीत करने में ही वह दिन बिता देता था। अपनी प्रजा की देख भाल के लिये प्रायः वह घोड़े पर चक्कर लगाया करता था। उस के साम्राज्य का विस्तार इस से ही अनुमित हो सक्ता है कि घोड़े पर सवार होकर वह उस के एक किनारे से दूसरे किनारे तक दो घण्टे में ही घूम आ सक्ता था। इसी छोटे से द्वीप में, अपने थोड़े से साथियों के साथ, विद्या और प्रकृति का अनुशीलन करते हुए उस ने अपने दिन व्यतीत करने शुरू किये। वह छोटा सा द्वीप उस के निवास के कारण योरप भर के बड़े २ मनुष्यों की यात्रा का केन्द्र बन गया। उस के पास से गुज़रते हुए सभी लोग, उस द्वीप में उतरते और सम्राट् से बातचीत करते थे। प्रायः अंग्रेज़ लोग भी वहां उतरते रहते थे। वे लोग नैपोलियन की मुट्ठी और छोटी सी सुन्दरमूर्त्ति को देख कर, आश्चर्यित होते थे। उन्हों ने पत्रों में पढ़

रक्खा था कि नैपोलियन एक रुधिरपिपासु राक्षस है; वह बदसूरत और भयानक है। वे अब उस की कोमल तथा मधुरमूर्त्ति को देखते, तो उन के आश्चर्य्य की सीमा न रहती थी। जो नैपोलियन के पुराने परिचित थे और साम्राज्य के समय में उस के आचार व्यवहारों को देख चुके थे, उसे वर्त्तमान दशा में ऐसा सन्तुष्ट तथा आल्हादित देख कर, उस की शक्तियों पर मोहित थे। जो किसी दिन पृथ्वी के राज्य से भी सन्तुष्ट न दीखता था और दिन रात नई २ विजयों की चिन्ता में लगा रहता था, उस का एल्बा में प्रसन्न चित्त होकर रहना उस की अद्भुत शक्तियों का परिचायक था।

इसी एकाकी दशा में रहते हुए उस को १० मास व्यतीत हो गये। इन दस महीनों में फ्रांस के राजनैतिक क्षेत्र पर कई फसलें हुई और कट गई। वह इन मासों में अद्भुत गोलमाल का केन्द्र बना रहा। जिस दिन नैपोलियन को राज्यच्युत किया गया था, उसी दिन से फांस की गद्दी पर बोर्बोन का **अठारहवां ल्यूई** अधिष्ठित हुआ। साम्राज्य प्राप्ति के समय ल्यूई लंदन में था, वहां से अधिकार पाने के लिये वह शीघ्र ही फ्रांस में आ गया। साधारण प्रजा द्वारा भय से और विदेशीय नरेशों और राजपक्षपातियों द्वारा हर्ष से अभिनन्दित होता हुआ, वह पेरिस में प्रविष्ट हुआ। पेरिस के निवासी इस अद्भुत मूर्त्तिवाले राजा को देख कर बहुत सन्तुष्ट नहीं हुए। जहां वे पहले छोटे से किन्तु सुन्दर सम्राट् के स्थिर कदमों को देखने के अभ्यासी थे, वहां उन्हें अब गठिया का मारा हुआ अशक्त, और बूढ़ा ल्यूई दिखाई पड़ा। उसे देख कर ही फ्रेंच लोगों को घृणा होगई; फिर जब उन्हें यह ध्यान आया कि यह अशक्त पुरुष विदेशियों द्वारा उन पर बिठाया गया है, तब उन की घृणा की सीमा न रही।

पहले बोर्बोन राजाओं के फ्रांस में तथा, अब के फ्रांस में बड़ा अन्तर था। क्रान्तिरूपी सन्ध्या ने इन दोनों समयों में दिन और रात का सा अन्तर कर दिया था। अब प्रजा उन वाहियात और गर्हणीय व्यवहारों को न सह सक्ती थी, जिन्हें तब की प्रजा सहर्ष सिर पर धारण करती थी। समय बदल गये थे; और साथ लोगों के चित्त भी परिवर्तित होगये थे। वह स्वाधीनता का भाव जो फ्रांस निवासियों के अन्दर घर कर चुका था, किसी साधारण शक्तिद्वारा नहीं दबाया जा सक्ता था। उसे दबाने के लिये नैपोलियन जैसी शक्तियों वाले मनुष्य की ही आवश्यकता थी। बेचारे ल्यूई में उस शक्ति का लक्षांश भी न था। यदि ल्यूई में केवल शक्ति

का अभाव ही होता तब भी खैर थी, किन्तु साथ ही बोर्बोनवंश की स्वाभाविक शठता और अन्धता भी उस में विद्यमान थी। जहां अब नैपोलियन के साम्राज्य का विस्मरण कराके नये शासन के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिये बड़े ही उदार तथा नीतियुक्त शासन की आवश्यकता थी, वहां ल्यूई ने अपनी नैसर्गिक ज्ञानान्धता से देश में अशान्ति की आग भड़कानी शुरू की।

राज्यपरिवर्तन के समय जो संस्था आघोषित की गई थी, उस द्वारा सब फ्रांस निवासियों को राज्य की नौकरियों के समान अधिकार दिये गये थे; ल्यूई ने पड़ते ही उन का भंग करना शुरू किया। सेना में से पुराने अभ्यस्त सेनाध्यक्षों को निकाल कर उन के स्थान में अशिक्षित कुलीन प्रवासियों को भर्ती कर दिया। नैपोलियन के वीर तथा योरप–विख्यात सेनापतियों का अपमान करना उस ने अपना कर्तव्य समझ लिया, और जितने साम्राज्यकालीन बड़े पुरुष थे उन को भुलाने तथा बदनाम करने के लिये विशेष साधन किये। कई सेनाओं को विसर्जित कर दिया गया। विसर्जित सिपाही जब अपने २ खेतों में पहुंचे तो विदेशियों के आक्रमण से उन्हें तबाह हुआ पाया। सिवाय बुड़बुड़ाने के उन के पास कोई साधन न था। कृषि का बुरा हाल होने पर वाणिज्य भी बेसुरा होने लगा। शासन का प्रवाह १८ वर्षों को सर्वथा उपेक्षित करके, फिर पीछे को लौट चला। साधारण प्रजा इस दशा को डर से तथा आशङ्का से, और समझदार लोग सम्भावना से देखने लगे। हरएक की आंखें पेरिस से हट कर एल्बा द्वीप पर टिकने लगीं। यह प्रसिद्ध किया गया कि देश के दुःख मुक्त करने के लिये एक विशेष प्रकार के वस्त्रों का रिवाज सर्दियों में चलाया जायगा। जब सर्दियें आईं तो प्रत्येक मनुष्य के कपड़ों पर एक छोटीसी मुड़ी हुई तिकोन टोपी, और हरे कोटवाले आदमी की तस्वीर दिखाई देने लगी। हर-एक मनुष्य यह अनुभव करने लगा कि शीघ्र ही क्रान्ति होने वाली है। सारे चिन्ह निश्चित क्रान्ति का निर्देश कर रहे थे, यदि सन्देह था तो क्रान्ति के उद्भवस्थान में था। क्रान्ति उत्पन्न कहां से होगी? पेरिस से या एल्बा से?

हर एक मनुष्य की आंखें क्रान्ति के लिये पेरिस पर लगी हुई थीं, किन्तु दैव को कुछ और ही अभीष्ट था। जिन दिनों में फ्रांस देश क्रान्ति के लिये तय्यार होरहा था, उन्हीं दिनों में नैपोलियन के चित्त में भी क्रान्ति के सामान पैदा हो रहे थे। वह योरप के पत्रों में फ्रांस के समाचार बड़े ध्यान से पढ़ता रहता था। वहां पर अशान्ति तथा असन्तोष का वृत्तान्त पत्रों तथा यात्रियों द्वारा निरन्तर उसे मिलता

रहता था। साथ ही उसे यह भी पता लगता जाता था कि एल्बा में भी वह सर्वथा रक्षित नहीं है; पत्रों में यह चर्चा बड़े ज़ोर शोर से चल रही थी कि उसे योरप समीपवर्ती एल्बा द्वीप से हटाकर **सेण्टहेलीना** में भेज दिया जाय, जहां से लौटना उस के लिये सर्वथा असम्भव हो जाय। सेंटहेलीना की एकाकिता और अस्वस्थता को वह अच्छी प्रकार जानता था। उस सूखे द्वीप में सूखने के लिये जाने से वह बहुत घबराता था। उस के मासिक व्ययार्थ जो धन फ्रांस के राजकोष से देना निश्चित हुआ था, वह एक वार भी नहीं दिया गया था। यह भी ख़बर चारों ओर फैल रही थी कि एक हत्यारा नैपोलियन को मारने के लिये बोर्बोन राजाओं द्वारा निश्चित किया गया है। इन सब समाचारों ने उस के मन को और भी चलायमान कर रक्खा था।

नैपोलियन की यह मानसिक दशा थी जब **बैरन चाबोलन** नाम का उस का एक पुराना सेवक तथा राजसभा का सभासद् उस के पास पहुंचा। वह सीधा फ्रांस से आरहा था। उस से नैपोलियन ने वहां के समाचार पूछे तो उसे पता लगा कि सारा देश बोर्बोन लोगों से असन्तुष्ट होकर उसी की ओर निहार रहा है। बैरन ने नैपोलियन को बताया कि ऐसा एक भी राजनैतिक नेता फ्रांस में इस समय नहीं है जो बोर्बोन राजाओं को चाहता हो। साथ ही उस ने यह भी कहा कि बड़े २ कई सेनापति तथा राजसचिव अपने आन्तरिक दिल से नैपोलियन के पुनरागमन की आकांक्षा रखते हैं। नैपोलियन के चालित मन में इस वार्तालाप ने और भी गति देदी, और वह एक बड़े ही इतिहास-प्रसिद्ध साहासिक कार्य्य के लिये उद्यत हुआ।

एल्बा में पहले सब विजेत्री शक्तियों ने अपना एक २ प्रतिनिधि बन्दी की देख भाल के लिये रक्खा था, किन्तु दस महीने के अनुभव ने उन्हें बता दिया था कि उन का बन्दी बड़ा ही शान्त तथा निश्चेष्ट है; वह एल्बा को छोड़ने की कोई इच्छा नहीं रखता। इस लिये, वे सब प्रतिनिधि धीरे १ इधर उधर खिसकने लगे, और उन का बन्दी अपने ६ सौ रक्षक सिपाहियों की रक्षा में रहने लगा। २६ फ़रवरी के दिन, नैपोलियन की बहिन ने द्वीपवासी सब बड़े २ आदमियों को एक सहभोज में निमन्त्रित किया। नैपोलियन भी उस सहभोज में विद्यमान था, और उस का वार्त्तालाप यथापूर्व खुला और प्रसन्नतासूचक था। उस सहभोज में राजदर्बारों के प्रतिनिधियों को भी निमन्त्रण था, किन्तु उन में से कोई भी द्वीप में उपस्थित न था, अतः सहभोज कुछ सूना सा प्रतीत होता था। नैपोलियन के दो एक सेनाध्यक्ष भी

उस में विद्यमान थे। सहभोज ही चुकने पर उस ने उन्हें अपने कमरे में बुलाया और कुछ गुप्त आज्ञा उन के कानों में देदी। रातभर वे दोनों सेनाध्यक्ष चुपचाप उस आज्ञा के पालन में लगे रहे। प्रभात के समय, सूर्योदय से प्रथम ही, शरीर-रक्षक दल के ६ सौ सिपाहियों ने अपने आप को एक छोटे से पोत के ऊपर समुद्र-यात्रा के लिये सज्जित पाया। किसी को भी पता न था कि यह नौका किधर को प्रस्थान करने लगी है। सभी यात्री बड़े विस्मितचित्तों से एक दूसरे के साथ बातें कर रहे थे, जब उन्हें सामने से मुड़ी हुई परिचित टोपी दिखाई दी, और थोड़ी ही देर में छोटे २ कदम रखता हुवा सम्राट् नैपोलियन उन के सामने आखड़ा हुवा। तोपों का शब्द किया गया, और जहाज़ के बादबान फैला दिये गये। जब पोत किनारे से कुछ दूर चला गया तब नैपोलियन ने सेना के सामने आकर कहा,—'वीर सैनिको! आज हम फ्रांस का साम्राज्य जीतने के लिये प्रस्थित होते हैं। क्या तुम इस कार्य में मेरे सहायक होगे?' केवल नैपोलियन की बुद्धि पर भरोसा रखते हुए सिपाही चिल्ला उठे, 'महाराज की जय हो'।

पांच दिन तक यह देशविजयार्थ सन्नद्ध जहाज़ समुद्र पर चलता रहा। रास्ते में कई स्थानों पर उसे इंग्लिश नौकाओं का सामना हुवा, पर उन्हों ने उसे केवल वणिक्पोत समझकर छोड़ दिया। मार्च की एक प्रविष्टा के दिन नैपोलियन **कैनस** नाम की बन्दरगाह पर पहुंच गया, और फिर दूसरी वार फ्रांस का साम्राज्य प्राप्त करने के लिये उस ने साहसिक यात्रा प्रारम्भ की। आज तक ऐसी विजययात्रा का वृत्तान्त भी किसी ने न पढ़ा होगा। कई लाख फौज, और राजधानी के स्वामी एक सम्राट् को, ६०० सिपाहियों की सहायता से हराने का भी आजतक किसी ने यत्न न किया होगा। जो आजतक किसी ने नहीं किया था, उसी के करने के लिये हमारा नायक तय्यार हुआ, और निःसंदेह उस ने उसे बहुत ही कृतकार्य्यता से कर दिखाया।

फ्रांस की भूमि पर उतरने के अगले ही दिन उस ने विजययात्रा प्रारम्भ की। जहां कहीं वह पहुंचा, वहीं पर उसका स्वागत हुआ। जहाज़ पर ही उस ने प्रजा के नाम घोषणापत्र लिखवा रक्खे थे, उस ने उन्हें बंटवाना प्रारम्भ किया। फ्रांस की आवेश-पूर्ण प्रजा बोर्बोन राजाओं के दस महीनों के राज्य से ही तङ्ग आचुकी थी। जिस नगर में अपने सिंह-समान वीर सिपाहियों के साथ नैपोलियन पहुंचा, उसीने अपने दरवाज़े खोल दिये। जो सेना उस के साथ लड़ने के लिये भेजी गई, वही उस के साथ मिल गई।

ग्रीनोबल नगर के पास राजा की भेजी हुई ६ सहस्र सेना नैपोलियन का रास्ता रोकने के लिये खड़ी थी। जब उसे यह समाचार मिला, तब उस ने एक अद्भुत साहसिक चाल चली। सारी सेना को पीछे छोड़ कर वह अकेला ही उस सेना के सामने चला गया। सामने ६ सहस्र सिपाही बन्दूकें कन्धों पर रक्खे चट्टान की तरह खड़े थे, वह शनैः २ उन के पास आने लगा। सेना न हिली। जब वह सेना से केवल १० कदम की दूरी पर रह गया, तब सेनापति ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि 'प्रहार करो'। आज्ञा पाकर सिपाहियों ने अपनी बन्दूकें संभालनी शुरू कीं। नैपोलियन ने अपनी छाती पर से हरे कोट के बटन खोलते हुवे ऊंचे शब्दों में कहा,— 'सैनिको! क्या तुम में से कोई ऐसा है जो अपने सम्राट् और सेनापति पर गोली चलाए? यदि कोई है तो वह वार करे, मेरी छाती खुली है।' सम्राट् के चिर परिचित शब्द सुनते ही हरएक सिपाही की बन्दूक का मुंह नीचे को होगया। सेनापतियों ने घबराकर अपने घोड़ों के एड़ियें लगाईं और रफूचक्कर होगये।

अब तक पेरिस में नैपोलियन के आने का समाचार पहुंच चुका था; ल्यूई ने घबड़ाकर पुराने सेनापति ने को बुलाया और नैपोलियनका रास्ता रोकने के लिये कहा। ने यद्यपि वीर था तथापि उसका सिर वीरता के अनुकूल न था। ल्यूई के सामने उस ने नैपोलियन को पिञ्जरे में बन्द करके लाने की प्रतिज्ञा की, और सेना सहित रास्ता रोकने के लिये चल दिया। ज्यों ही वह अपने पुराने सम्राट् के पास पहुंचा, त्यों ही उस का दिल द्रवित हो गया। अपनी शपथ को भूलकर, अपनी सारी सेना के साथ वह भी अपने पुराने स्वामी के पीछे २ हो लिया। इस प्रकार प्रति दिन अपनी शक्ति को बढ़ाता हुआ, नैपोलियन पेरिस के पास पहुंचने लगा। जब ल्यूई ने सुना कि साहसी कोर्सिकन पेरिस से केवल एक दिन के रास्ते पर है, तब उस के तो गठिया के मारे हुए शरीर में कंपकंपी छूट गई। अपने परिवार और मुकुट के रत्नों सहित गाड़ी में सवार होकर वह सब से छोटे रास्ते से फ्रांस के बाहिर होगया।

२० मार्च के दिन नैपोलियन पेरिस में प्रविष्ट हुआ। अपने पुराने शानदार सम्राट् के आनेपर पेरिस ने जो हर्ष प्रकट किया, वह असीम था। वह पेरिस के द्वारतक गाड़ी में आया किन्तु आगे चलना उस के लिये असम्भव था। जोश में भरे हुए लोगों ने उस के देह को गाड़ी मेंसे उठा लिया और हाथों ही हाथों पर वह राजमहल तक पहुंचाया गया। सारे मार्गों में कहीं तिल धरने को स्थान न था। स्वभावोज्ज्वल पेरिस उस दिन असाधारणतया उज्ज्वल होगया। उसी सैनेट के सभ्यों ने, जिस ने दस मास पूर्व

उस की राज्यच्युति का ठहराव पास किया था, आज उस के स्वागत में भाग लिया। रुधिर की एक भी बूंद गिराये विना, २० दिन में फ्रांस के सारे देश को जीत लेना तथा स्थित राजा को भगा देना नैपोलियन का ही कार्य्य था।

पञ्चमपरिच्छेद।

वाटर्लू ।

+ "Waterloo was written in the book of Destiny." Napoleon. +

"वाटर्लू दैव की पुस्तक में लिखा जा चुका था। नैपोलियन।"

पेरिस में पहुंच कर नैपोलियन का प्रथम कार्य्य देश की अव्यवस्था को दूर करना था। बोर्बोन राजा जिस दुर्व्यवस्था में राष्ट्र को छोड़ गये थे, उसके रहते हुए, वह अपने आप को कदापि रक्षित नहीं कर सक्ता था। साथ ही वह अब फिर से अपने आप को फ्रैंचप्रजा का राजा बनाना चाहता था। इस लिये उसने सारे देश के वासियों से अपने सम्राट् होने के विषय में सम्मतियें मांगी। बड़ी भारी बहुसम्मति से वही सम्राट् निश्चित किया गया। समयानुकूल संस्था में कुछ परिवर्तन करके, उस पर भी देश भर की सम्मति ली गई। बहुसम्मति ने उन परिवर्तनों को भी स्वीकार किया। इस प्रकार एल्बा से लौट कर फ्रांस के सम्राट् बनने की चेष्टा को नियम पूर्वक बनाकर, वह योरप-गर्भ में से उठती हुई आंधी का सामना करने के लिये तय्यारियों में लगा।

सारे योरप के सम्राट् तथा राजप्रतिनिधि **वीना** की सभा में देशों का भाग्य-निश्चय कर रहे थे, जिस समय उन्होंने सुना कि नैपोलियन एल्बा से निकल आया है, और पेरिस ने उसका अदृष्टचर अभिनन्दन किया है। इस समाचार को सुनते ही योरप की कांट छांट में लगे हुए इन सब विजेता नरेशों के आश्चर्य्य तथा भयमिश्र-विस्मय की सीमा न रही। जिस कार्य्य को करके वे विश्राम लेने के लिये बैठे थे, वही कार्य्य सर्वथा नये सिरे से करने योग्य हो गया। जिस शत्रु को वे सर्वथा नष्ट हुआ समझ रहे थे, उसीकी चमकीली खड्ग-धारा उन्हें अपने सिरोंपर दीखने लगी। वे खुशियें और विलास, जिनका दौर दौरा चल रहा था, इस समाचार के साथ ही शून्य हो गईं। सम्मिलित राजाओं की सारी शक्तियें पहले निःसत्त्व हो गईं, किन्तु शीघ्र ही पहले धक्के का प्रभाव उतर गया, और सब राजा तथा राजप्रतिनिधि फिर से नैपोलियन को आसनच्युत तथा जीवनच्युत करने के उपाय सोचने लगे।

बहुत विचार के पीछे सम्मिलित राजाओं ने फ्रांस के सिंहासन पर से नैपोलियन

को उतार कर, उस के स्थान पर बोर्बोन राजाओं को ही बिठाने का निश्चय किया। साथ ही उन्होंने एक घोषणापत्र निकाला जिस द्वारा एल्बा से भाग आने को राजनैतिक पाप बताते हुए, नैपोलियन को सभ्यसमाज के सब नियमों से बाह्य करार दिया गया। साथ ही शत्रुओं ने यह सूचना भी फ्रेंचप्रजा को देनी चाही कि वे फ्रांस के विरुद्ध युद्ध नहीं कर रहे हैं, किन्तु उनका मुख्य विरोध अकेले नैपोलियन से है; जब वे नैपोलियन को फ्रांस के सिंहासन पर से उतार देंगे, तब फिर से फ्रांस स्वाधीन हो जायगा, और योरप में शान्ति की स्थापना होगी।

शत्रुओं की इस आघोषणा ने फ्रांस के कई स्थानों में जोश फैला दिया, और कई स्थानों में उबलते हुए जोश पर पानी छिड़क दिया। जहां पर लोग नैपोलियन के बहुत पक्ष में थे, वहां पर इस घोषणा ने उन में आग फूंक दी; किन्तु ऐसे स्थानों में जहां अभी बोर्बोन राजाओं का प्रभाव बहुत बढ़ा हुआ था, लोगों के दिल नैपोलियन से फिर गये। शत्रुओं के वाक्यों को सत्य समझते हुए उन्हों ने सोचा कि यदि ये सारे युद्ध—ये सारे भय—केवल एक व्यक्ति के कारण ही हैं, तो उस एक का नाश करके शान्ति की स्थापना क्यों न की जाय? किन्तु वे बेचारे नहीं जानते थे कि सम्मिलित राजाओं के वाक्योंका मूल्य भी उतना ही है, जितना नैपोलियन की प्रजा के राज्याधिकार बढ़ाने के विषय की आघोषणाओं का।

इस घोषणापत्र को विस्तारित करके शत्रुओं ने अपनी सेनाओं की बागें पेरिस की ओर को मोड़ीं, और आठ लाख सेना मृत्यु के दूत की तरह गर्जती हुई फ्रांस के ऊपर चढ़ चली। किन्तु नैपोलियन अब युद्ध न चाहता था, और वह जानता था कि वह अब युद्ध करभी नहीं सक्ता। उस के पास न सेना थी, और न कोष था। कई सेनापतियों ने शत्रु का आश्रय ले लिया था, और कई निरन्तर युद्धों से थक कर विश्राम कर रहे थे। शत्रु, काले मेघों की तरह उमड़ते हुए चारों ओर घिर रहे थे, और नैपोलियन के पास उनका सामना करने के लिये साधन न थे। तब किसी भी उपाय से सन्धि करने का ही उस ने सङ्कल्प किया। सब देशों के राजाओं के पास सन्धि के लिये उसने अपनी दस्तख़ती चिट्ठियें भेजीं—चारों ओर शान्ति की झण्डियों को लिये हुए राजदूत दौड़ाये। किन्तु अब बहुत विलम्ब हो चुका था; बारबार की पराजयों से अपमानित और इस महासत्त्व प्राणी की शक्ति से थका हुआ योरप अब उसको नामशेष करने के लिये तुला हुआ था। उस के

सन्धि के प्रस्ताव को या शान्ति के केतु को किसी ने भी सत्य तथा गम्भीर नहीं समझा; किसी ने उसपर विचार करने का भी कष्ट न उठाया।

शान्ति और सन्धि से अपनी स्थिति को असम्भव देख कर, अब सम्पूर्ण शक्तियों को उसने सेना की तय्यारी में लगाया। चारों ओर से सेनायें एकत्र कीं; तथा नई सेनायें भर्ती कीं। दिन रात परिश्रम करके कोषों में से उन सेनाओं के पालने योग्य धन भी इकट्ठा किया, और थोड़े ही दिनों के परिश्रम से उसने अढ़ाई लाख के समीप सेनायें शस्त्रों से सज्जित कर लीं। उस अढ़ाई लाख सेना में से आधी को पेरिस की तथा देश के अन्य भागों की रक्षार्थ स्थापित करके, शेष आधी को लेकर वह १२ जून (१८१५) के दिन फ्रेंचसीमा के बाहिर से घिरते हुए शत्रु का रास्ता रोकने के लिये प्रस्थित हुआ।

अगले दिन वह अपनी सेनाओं के उपनिवेश में पहुंच गया। वहां पहुंच कर उसने शत्रुओं की तथा अपनी व्यवस्थिति पर विचार किया। उसने देखा कि उस से थोड़ी ही दूर सामने शत्रु की दो मुख्य सेनायें पड़ी हुई रूसीसेना के आने की प्रतीक्षा कर रही हैं। सेनापति **ब्लूचर** १,२०,००० सेना के साथ **नैमर** नगर को दुर्गबद्ध करके, उस में उपनिवेश डाले पड़ा था। उस से कोई नौ दस मील की दूरी पर **ब्रूस्सल्स** में अंग्रेज़ सेनापति **वैलिंग्टन** अपनी एक लाख संगीनों से उस की सहायता करने के लिये तय्यार था। फ्रेंच महाराज ने शत्रु की इस अवस्थिति को देख कर एक साहसिक कार्यक्रम सोचा। उसने सोचा कि सब से प्रथम अकस्मात् ही ब्लूचर की सेना पर धावा कर दिया जाय तथा उसे ऐसा घेरा जाय कि उस की शक्ति का बहुत ही छोटा भाग शेष रह जाय, जो भाग शेष रहे वह भी उधर को न जा सके जिधर को अंग्रेज़ों की सेना पड़ी हुई है। इस प्रकार से एक सेना का विच्छेद करके फिर वैलिंग्टन पर धावा किया जाय और उसे भी पीछे को भगा दिया जाय। वहां से भगाया जाकर वैलिंग्टन सिवाय समुद्र के कहीं आश्रय न पासक्ता था।

यह था साहसिक कार्यक्रम, जो नैपोलियन ने निश्चित किया। इस सारे क्रम की सफलता इसी बात पर आश्रित थी, कि शत्रु की सेनाओं पर अचानक आक्रमण किया जाय। यह बहुत कुछ सम्भव भी था, क्योंकि अभी तक शत्रु के किसी भी सेनापति को यह पता न लगा था कि नैपोलियन पेरिस से चल दिया है। किन्तु इसी समय एक ऐसी दुर्घटना हो गई जिस ने न केवल इस कार्यक्रम को बिगाड़ दिया, साथ ही नैपोलियन के विजय में सर्वथा सन्देह डाल दिया। **बोर्मोण्ट** नाम का एक सेना-

ध्यक्ष, जिसे नाराज़ होकर पहले समूाट् ने अपनी सेना से निकाल दिया था, कई सेनानियों के कहने पर फिर से भर्ती कर लिया गया था। वह युद्ध के ऐन शुरू में, शत्रुओं की सेना में जा मिला। यह स्वामिद्रोही नैपोलियन के सारे कार्यक्रम को सुन गया था, और साथ ही सब सेनापतियों को जो २ आज्ञायें मिली थीं, उन से भी अभिज्ञ होगया था। **ब्लूचर** को उस ने सब कुछ सुना दिया, और उसे सचेत कर दिया। इस घटना ने नैपोलियन का अकस्मात् वार करना असम्भव कर दिया।

तथापि अपनी सेना की वीरता पर भरोसा रख कर, उस ने अगले दिन ब्लूचर पर आक्रमण कर दिया। वैलिंग्टन से उस के मेल को रोकने के लिये, नैमर और ब्रूसल्स के बीच में बसे हुवे एक छोटे से **काट्रेब्रास** नाम के ग्राम पर अधिकार जमाना आवश्यक था। इस कार्य के लिये उस ने **सेनापति ने** को भेजा। सायंकाल के समय सेनापति **ने** उस ग्राम से चार पांच मील दूर रह गया। उस की सेना बहुत थकी हुई थी और ग्राम में कोई भी शत्रु देखने को न था। **ने** ने समझा कि अब आगे जाने से क्या लाभ, यहीं आराम करके प्रातःकाल ग्राम पर अधिकार कर लेंगे। यह विचार कर उस ने वहीं पर अपने डेरे डाल दिये, और समूाट् के पास एक दूत यह कहने के लिये भेज दिया कि काट्रेब्रास पर अधिकार जमा लिया गया है। नैपोलियन को जब यह समाचार मिला तो उस ने और सब प्रबन्ध ठीक समझ कर और शत्रुओं के मिलने को असम्भव करके ब्लूचर की सेना पर धावा किया। थोड़े ही युद्ध में ब्लूचर की एक लाख से अधिक सेना के पैर उखड़ गये; अब सेनापति **ने** का समय था; भागती हुई प्राशियन सेना को काटने के लिये ही उसे **काट्रेब्रास** पर भेजा गया था, किन्तु वह वहां कहां था? प्रातःकाल उठ कर **ने** ने देखा कि जिस ग्राम को वह अपना समझ कर सोया था, वैलिंग्टन उसमें अपनी प्रबल सेना को लिये पड़ा है। उस ने लज्जा और निराशा से खिन्न होकर कई धावे ग्राम पर किये, किन्तु वैलिंग्टन की अचल सेना न चली। ज़रासी नींद ने हाथ में आई हुई जीत को फिसल जाने दिया! थोड़ी सी भूल ने फ्रांस का साम्राज्य पलट दिया!

हारी हुई प्रशियनसेना पीछे को लौटने लगी; वैलिंग्टन ने भी उस के साथ मेल करने के लिये पीछे मुड़ना शुरू किया। नैपोलियन ब्लूचर का पीछा करने के लिये सेनापति **ग्रोची** को छोड़ कर, स्वयं वैलिंग्टन का ध्वंस करने के लिये, ब्रूसल्स की

ओर को मुड़ा । वैलिंग्टन थोड़ा सा पीछे जाकर वाटर्लू नाम के स्थान पर ठहर गया और वहां पर अपनी सेना को प्रबल स्थिति में स्थापित करके शत्रु और ब्लूचर की प्रतीक्षा करने लगा । रात से पूर्व ही उस के सामने की भूमि में फ्रेंच-सेना के भी डेरे लग गये । दोनों ओर से रात भर तय्यारियें होती रहीं; योरप के भाग्यनिश्चायक अंतिम युद्ध के लिये दोनों सेनायें सन्नद्ध होती रहीं ।

शनैः २ रात बीत गई और प्रभात का समय हुआ । इस सारे काल में निरन्तर वर्षा होती रही थी, इस लिये प्रातःकाल सारी की सारी भूमि गीली पड़ी थी । गीली भूमि में तोपों का हिलना कठिन होता है, और नेपोलियन सेनापति ही तोपों का था ; तोपें ही उस के विजय का मुख्य कारण होती थीं । शत्रु की सेना में छिद्र करने का उस का यही उपाय था कि उस के मध्य में निरन्तर गोलों की मूसलधार वर्षा की जाय । जहां सेना के मध्य में छिद्र हुवा, वहां नैपोलियन की पैदल सेना घुसकर शत्रु को दो भागों में विभक्त कर देती थी । तब घुड़-सवारों की बारी आती थी । वे छिन्न हुई हुई शत्रुसेना के एक २ भाग पर पृथक् २ वार कर के उन्हें नष्ट कर देते थे । जिन तोपों के आश्रय नैपोलियन विजय पाता था, आज उन्हीं का चलना कठिन था । वैलिंग्टन के लिये यह कठिनाई न थी । वह ऊंचे स्थान पर पहले से ही अपना दुर्ग बांधे डटा हुआ था, उसे केवल अपने स्थान की रक्षा करनी थी ।

ग्यारह बजे के लगभग भूमि कुछ सूखी, तब युद्ध प्रारम्भ हुवा । जो लोग युद्धविद्या से अभिज्ञ हैं वे कहते हैं कि ऐसा घोर युद्ध और कोई देखने में नहीं आया । दोनों ओर की सेनायें अपने २ प्रकार से अतिवीर थीं । नैपोलियन से नीत हुई फ्रेंचसेना का आक्रमण, बिजली के आकस्मिक धक्के से कहीं प्रबल होता था । दूसरी ओर अंग्रेज़ थे । अंग्रेज़ों की दृढ़ता को कौन नहीं जानता ? जितने आक्रमण से और देशों की सेना में भाजड़ पड़ जाती है, उतने आक्रमण से इंग्लिश सेना का एक कदम भी पीछे नहीं पड़ता । तब फिर युद्ध की भयानकता में क्या सन्देह था ?

युद्ध के प्रारम्भ से ही फ्रांस की सेना ने दुर्निवार आक्रमण शुरू किये । कुछ घण्टों के युद्ध में ही अंग्रेज़ी सेना के दोनों पार्श्व बहुत पीछे धकेल दिये गये । मध्य भाग, जहां स्वयं वैलिंग्टन खड़ा हुआ था, अविचलित रहा । यह देख कर नैपोलियन ने अपनी ३५०० घुड़सवारों की वीर सेना को मध्य भाग के तोड़ने के

लिये भेजा । उस ने मुड़ कर पास खड़े हुए सेनापति ने की ओर देखा ; ने ने अपने कोष में से तलवार निकाली, नैपोलियन को प्रणाम किया और वह घुड़सवारों के आगे हो लिया । तब एक विचित्र दृश्य उपस्थित हुआ । इस सेना के घुड़सवारों के घोड़े ऊच्चैःश्रवा के समान ऊंचे तथा वेगवान् थे । उन के ऊपर ऊंचे २ मुकुटों को धारण किये हुए सवार देवसेना के समान शोभायमान हो रहे थे । हरएक सैनिक एक हाथ में लगाम, और दूसरे में पिस्तौल लिये हुए, दांतों के बीच में तलवार दबाये हुए, और शत्रु की सेना की ओर को आंखें किये हुवे खड़ा था । आज्ञा दी गई, दुन्दुभि बजने लगी, वादित्र का गान शुरू हुआ और यह घुड़सवारों की सेना शत्रु के मुख्य भाग को काटने के लिये प्रस्थित हुई ।

सामने पहाड़ी के नीचे इंग्लिश पैदल सेना खड़ी हुई थी । उसे यद्यपि ओझल होने के कारण इस सेना के सिपाही न दीखते थे तथापि ३५ सौ घोड़ों की एक कालीन टाप को वह भी सुन रही थी । बीच २ में 'महाराज की जय हो' का नाद करती हुई और वायुसमान घोड़ों के एड़ी लगाती हुई सेना पहाड़ी की चोटी पर पहुंची । शत्रु ने उसे देखा और उस का दिल ज़ोर से धड़कने लगा । ३५ सौ मुकुटों की ज्योति और ३५ सौ घोड़ों की टाप ने उसे सशङ्क कर दिया । अंग्रेज़ी सेना सहम गई; फ्रैंचसेना शत्रु के मध्य को उड़ा हुआ समझ कर प्रसन्न होने लगी।

घुड़सवारों को भी शत्रु का सैन्य दीख पड़ा, उन्होंने अपने घोड़ों का वेग और भी बढ़ा दिया । इसी बढ़ाये हुए वेग से जाते हुए घुड़सवारों की अगली पंक्ति ज्योंही पर्वत की समाप्ति पर पहुंची कि न जाने कहां गई । दूसरी, तीसरी और चौथी पंक्ति पहाड़ के अन्त तक पहुंची और वह भी वहीं विलीन हो गई । पहाड़ के अन्त में एक ११ फ़ीट गहरी खाई थी, उस का किसी ने ध्यान भी न किया था । ज्योंही घोड़े वहां पहुंचे, वे डरे, ज़रा झिझके; किन्तु अब झिझकने का समय न था । पिछले सवारों के घोड़ों का बल अनिवार्य्य था । घोड़े और सवार धड़ाधड़ खाई में पुर होने लगे । ३५०० में से आधे के लगभग सवार इस खाई के अर्पण हुए, तब वह खाई भरी । शेष सवार उस भरी हुई खाई पर से पार हुए । उन्होंने शत्रु की सेना में जाकर प्रलय मचा दिया । हर एक को अपनी जान के लाले पड़ गये । एक २ घुड़सवार ने बीस २ शत्रुओं को यमद्वार दिखाया । थोड़ी ही देर में शत्रु का मध्यभाग छिन्न भिन्न होता हुआ नज़र आया, किन्तु वह सर्वथा ध्वस्त नहीं हुआ । यदि वह खाई की दुर्घटना न होती तो इस वार में अंग्रेज़ी फ़ौज के बारे

न्यारे थे। किन्तु दैव ही नैपोलियन के विरुद्ध था ! यह वाटर्लू के पराजय का प्रथम कारण था।

यद्यपि इस आक्रमण से शत्रु का नाश नहीं हुआ, तथापि उस के पैर उखड़ गये। अंग्रेज़ी सेना धीरे २ पीछे को लौटने लगी। चट्टान के समान दृढ़ **वैलिंग्टन** के मुख पर भी चिन्ता की रेखायें पड़ने लगीं। दिन भर तो वह पीछे न लौटने पर तुला रहा, किन्तु फ्रेंचसेना का आक्रमण अनिवार्य्य था। वह केवल **ब्लूचर** की सेना की प्रतीक्षा कर रहा था, किन्तु सायंकाल के तीन बज गये और ब्लूचर नहीं पहुंचा। वैलिंग्टन का दिल टूटने लगा। सायंकाल के पांच बजे थे। वह बार २ घड़ी निकालता और कहता कि 'अब रात्रि या ब्लूचर में से कोई आना चाहिये' किन्तु उन दोनों में से कोई भी न आता था। अंग्रेज़ीसेना को पीछे लौटता हुआ देखकर नैपोलियन चिल्ला उठा कि अब मैदान मार लिया। किन्तु अभी उस का यह वाक्य समाप्त भी न हुआ था कि उस ने अपने पीछे की ओर दृष्टि उठाकर देखा तो सेनापति **ब्लूचर** की ९० हज़ार सेना पहाड़ी पर से उतर रही है।

पेचीदा समय उपस्थित हुआ। वैलिंग्टन सहायक को देखते ही लौटता २ ठहर गया, नैपोलियन का दिल एकदम धड़कने लगा। दिन भर के युद्ध से फ्रेंच-सेना बहुत ही थक चुकी थी। मरे हुओं की भी संख्या कम न थी, इस समय उस के पास ९० सहस्र सैनिकों से अधिक कठिनता से होंगे, ऐसी अवस्था में शत्रुसैन्य में उतनी ही ताज़ी सेना का योग होजाना डरावना था—घातक था।

अब नैपोलियन के पास केवल एक ही उपाय था। वह किसी तरह ब्लूचर के पहुंचने के प्रथम ही यदि वैलिंग्टन को भगा सके तो ब्लूचर का आना निरर्थक किया जा सक्ता था। किन्तु सारी फ्रेंचसेना थकी हुई थी, इस भगाने के कार्य्य को कौन करता ? केवल रक्षकसेना शेष थी, वही इस समय काम आ सक्ती थी। अपनी सारी चार लाख सेना में से अच्छे २ सिपाहियों को चुन कर नैपोलियन ने यह रक्षकसेना तय्यार की हुई थी। प्रायः उस के सारे बड़े २ विजय इसी सेना के अन्तिम धावे से सम्पूर्ण हुए थे। सारा योरप इन ९ सहस्र घुड़सवारों के नाम से काँपता था। नैपोलियन ने अब इसी रक्षकसेना से कार्य्य लेने का विचार किया ! ब्लूचर का प्रतिरोध करने के लिये १० सहस्र सैनिकों को नियत करके, उस ने रक्षकसेना को अन्तिम आक्रमण की आज्ञा दी। अदम्य ने सिर झुका कर रक्षकदल के आगे हुआ।

हरएक सैनिक समझ गया कि अब अन्तिम समय आ गया है । दोनों ओर की सेनायें जानती थीं कि उन का भविष्यत् इसी क्षण पर अवलम्बित है । उन का भविष्यत् क्या, सारे योरप का भविष्यत् इसी क्षण पर अवलम्बित था । यह दल नैपोलियन की दक्षिण भुजा था, यदि इस का वार खाली गया तो समझो कि नैपोलियन का दाहिना हाथ कट गया । ९ सहस्र जगद्विख्यात सैनिकों के ऊंचे मुकुटों और हवा में फहराते हुए फून्दों को उद्यत देख कर फ्रेंचसेना आशाभरे शब्दों में चिल्ला उठी—'महाराज चिरजीवी रहें।' साथ ही अंग्रेज़ी सेना अपने मृत्यु दूतों को सामने खड़ा रखकर स्तम्भित होगई । दुन्दुभिनाद शुरू हुआ और रक्षकदल के घोड़े हवा होगये । योरप का भविष्यत् निश्चित होने का समय निकट आया। आज तक कभी रक्षकदल का वार खाली नहीं गया था, उन के मुकुटों पर कभी पराजय का कलंक न लगा था; देखें आज क्या होता है ?

रक्षकदल शत्रुसेना के पास पहुंचा । सामने खड़ी हुई अंग्रेज़ीसेना के सिपाहियों का साहस नहीं पड़ता था कि वे गोलियें मारें । नैपोलियन के बीसों विजयों को एकदम अपने ऊपर गिरता देखकर उन के जी सहम गये । किन्तु **ड्यूक आव वैलिंग्टन** स्वयं वहां पर आया और उसने सिपाहियों को निशाना मारने की आज्ञा दी । उसी समय २०० के लगभग तोपों के मुंह खुल गये । रक्षकदल पर धांय २ गोले बरसने लगे । नैपोलियन एक ऊंचे स्थान पर खड़ा हुआ अपने इस अन्तिम यत्न को देख रहा था । पहले उसे रक्षकदल बढ़ता हुआ दीखता रहा, फिर उस ने गोलियों और गोलों से उस के अगले भाग को भुनते हुए देखा, और थोड़ी देर में सिवाय धुंवे के कुछ भी न दीखता था । रक्षकदल शत्रुगर्भ में घुस गया । २० मिनट तक यही हाल रहा । फिर एकदम गोलों का चलना बन्द हुआ । धुंवा आकाश से साफ़ हुआ । तब नैपोलियन ने देखा कि ऐन शत्रु गर्भ में रक्षकदल के केवल शेष रहे हुए सौ सिपाही खड़े हुए हैं, और सब नष्ट हो गये ।

भुनते २ रक्षक केवल सौ रह गये, किन्तु फिर भी उन्हों ने पीछे को कदम नहीं रक्खा । वीरता की इस पराकाष्ठा को देखकर **वैलिंग्टन** ने उन पर गोले चलाना बन्द करके उन के पास शान्ति की झण्डी भेजी और शस्त्र रख देने के लिये कहा । रक्षकदल के सेनापति **कैम्ब्रोन** ने इस कथन का जो उत्तर दिया वह इतिहास में सर्वदा स्मृत रहेगा । उस ने कहा कि ' रक्षकदल का सिपाही मरना जानता है, किन्तु शस्त्र रखना नहीं जानता । ' यह महाभारत की वीरता का आदर्श था।

फिर से तोपों ने अपने मुंह खोल दिये, और पांच मिनट में वे सौ सिपाही भी शून्य शेष हो गये। इस प्रकार, वाटर्लू के युद्ध में, नैपोलियन की सारी विजयों का हेतु यह रक्षकदल बिल्कुल नष्ट हो गया।

अब फ्रेंचसेना को कोई आशा न रही। जिसे जिधर रास्ता मिला, वह उधर ही भाग निकला। ब्लूचर की सेना ने फ्रेंचसेना का पीछा किया और शेष को भी ध्वंस कर दिया। नैपोलियन ने भी निराश होकर अपने घोड़े के एड़ी लगाई और पेरिस का रास्ता लिया। दो दिन तक रास्ता तय करता हुआ, फटे हुए कपड़े और मिट्टी से लिप्त मुंह के साथ, २१ जून के दिन नैपोलियन पेरिस लौट आया।

आगे जो कुछ हुआ, वह थोड़े में ही कहा जा सक्ता है। विजय के साथ लोकप्रियता निवास करती है। विशेषतया उन लोगों के लिये, जो केवल विजय की सीढ़ियों द्वारा ही ऊपर चढ़े हों, पराजय मृत्यु के समान होता है। जो कुलक्रमागत राजा हैं, पराजय उन की उतनी हानि नहीं कर सक्ता, जितनी बाहुबल से उन्नति प्राप्त करने वालों की कर सक्ता है। वाटर्लू के पराजय ने पेरिस में नैपोलियन के विरुद्ध एक बड़ा भारी दल खड़ा कर दिया। पेरिस में जाकर, उस ने अपनी मन्त्रिसभा से शत्रुओं के रोकने के लिये उचित अधिकार मांगे। मन्त्रिसभा देने को तय्यार थी किन्तु लोकप्रतिनिधियों की नियामक सभा में उस के विरुद्ध एक बड़ा भारी दल खड़ा होगया था। उस में से कई स्वार्थ से उस का विरोध करते थे तथा कई सच्चे दिल से उसे फ्रांस की अशान्ति का मुख्य हेतु समझते थे। इन सब ने मिल कर नैपोलियन से प्रार्थना की कि वह देश की रक्षा के लिये सम्राट् पद से मुक्तिपत्र दे दे। सारी सेना और पेरिसपुरी उस से युद्ध में चलने की प्रार्थना कर रही थी, लोग उस को नेता बनाकर शत्रुओं पर टूट पड़ने को तय्यार थे, किन्तु नैपोलियन की दृष्टि भविष्यत् पर जमी हुई थी। उस के मन में यह विचार बड़े बल से काम कर रहा था कि केवल अपने आधिपत्य के लिये, इस समय, देश में आन्तरिक युद्ध उत्पन्न करना उसे भविष्यत् सन्तानोंकी दृष्टि में गिरा देगा। इस लिये उस ने नियामकसभा के प्रस्ताव के सामने सिर झुकाया और अपने पुत्र के नाम राज्य लिख कर स्वयं सम्राट् पद से मुक्तिपत्र दे दिया।

नैपोलियन के सम्राट् न रहने पर एक सामयिक शासनसंस्था बना ली गई जिस का मुख्य धूर्त फूशा हुआ। यह फूशा बड़ा ही नीच था। वह ऐसा नीच था कि जिस का नौकर होता था, उसे दूसरे के हाथ बेच देना भी उसके लिये स्वाभा

विक बात थी । नैपोलियन के निपात का मुख्य कारण वही हुआ । उस का पुलीसाध्यक्ष रहते हुए भी फूशा ने उस के शत्रुओं से मेल कर लिया, और उस के विरुद्ध एक ज़बर्दस्त पार्टी खड़ी कर ली । इस **फूशा** ने अपनी कुटिल नीतियों से नई शासनसंस्था में मुख्यस्थान पाकर भी शान्ति न की । एक नीचता से सन्तुष्ट न हो कर, उस ने नैपोलियन को शत्रु के हाथ में बेचने का भी निश्चय किया ।

सम्राट् पद से मुक्त होकर नैपोलियन थोड़ेसे मित्रों के साथ पेरिस से दूर रहने लगा । किन्तु उसे यह ज्ञात था कि उसके शत्रु उसे कैद करने या पकड़ने का पूरा यत्न करेंगे, इस लिये उस ने फ्रांस की भूमि को छोड़कर अमेरिका में जीवन का शेष भाग बिताने का विचार किया । **फूशा** ने ऊपर से तो नैपोलियन के इस विचार के साथ सहानुभूति प्रकट की और उसकी यात्रा के लिये दो नौकायें तय्यार करवादीं, किन्तु जब नैपोलियन नौका में सवार होगया तो नौका को आगे जाने से निषेध कर दिया और साथ ही बहाना बना दिया कि जब तक अङ्ग्रेज़ी सरकार नैपोलियन के अमेरिका जाने के साथ सहमत न हो, तब तक वह अनुमति नहीं दे सक्ता ।

नैपोलियन बड़ी द्विविधा में पड़ा । अब वह सर्वथा कुटिल शत्रुओं के हाथ में था । न वह नौका में लोगों को अपने साथ चलने के लिये उभार सक्ता था और न ही सेना की सहानुभूति अपने साथ खींच कर शत्रुओं का पराजय कर सक्ता था । ऐसी अवस्था में, उसने, कठिनता से छूटने का एक नया उपाय सोचा । इङ्गलैण्ड देश स्वतन्त्रता की भूमि प्रसिद्ध है । सब जानते हैं कि वहां हरएक निवासी को समान स्वाधीनता प्राप्त रहती है, इस लिये उसने उसी के आश्रय का निश्चय किया । **कैलरोफ़ोन** नाम के एक अङ्गरेज़ी जहाज़ के अध्यक्ष से उसने पूछा कि क्या वह उसे इङ्गलैण्ड पहुंचा देगा ? अध्यक्ष ने उसका ले जाना स्वीकार कर लिया । नैपोलियन अपने साथियों सहित कैलरोफ़ोन पर सवार हुवा । कैलरोफ़ोन भी इङ्गलैण्ड की ओर चला, किन्तु उसने अपने यात्रियों को इंग्लैण्ड की भूमि पर उतारने की जगह **नैर्दम्बरलैंड** नाम के एक और जहाज़ पर उतार दिया । तब नैपोलियन को बताया गया कि उसे अब इंग्लैण्ड में न उतारा जायगा, किन्तु ब्रिटिश सरकार की आज्ञानुसार **सेंटहेलीना** नाम के द्वीप में कैदी रक्खा जायगा ।

षष्ठ परिच्छेद ।

सेण्टहैलीना ।

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः ।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम् ॥ (बाल्मीकिः)

हरएक जाति के इतिहास में कई ऐसे भाग पाये जाते हैं, जिन के वहां न होने से कोई भी हानि न होती—उल्टा कोई न कोई लाभ ही होता । इतिहास के ऐसे भाग, उस जाति के लिये सदा लज्जा के, और इतिहास-लेखकों के लिये सदा दुःख के स्थान होते हैं । अब जिस इतिहास के भाग का हम वर्णन करने लगे हैं वह ऐसा ही है । सेण्टहैलीना में नैपोलियन की स्थिति का इतिहास किसी भी देश के इतिहास के मुख को उज्ज्वल न ही करता, और न ही वह भाग नैपोलियन के चरित्र का प्रकाशमानं भाग है। जैसे **लार्डरोज़बरी** ने निष्पक्षपात दृष्टि से सेण्टहैलीना का वृत्तान्त वर्णन करते हुए कहा है, हम भी कहते हैं कि 'हम प्रसन्न होते यदि नैपो-लियन कैदी होकर इंग्लैण्ड के हाथ न पड़ता; हम प्रसन्न होते यदि नैपोलियन कैद ही न होता, और उस के प्रथम ही किसी युद्ध में—वाटर्लू में या ड्रस्डन में—गोली के आघात से समाप्त हो जाता' । सेण्टहैलीना में कैद होकर वह भी सदा अपने पहले न मर जाने पर शोक प्रकाशित किया करता था। किन्तु यदि उसने कैद होना ही था, तो इंग्लैण्ड के हाथ कैद होना बहुत बुरा था—न यह नैपोलियन के लिये अच्छा था और न ही यह इंग्लैण्ड के लिये अच्छा था' ।

नैपोलियन यदि इंग्लैण्ड के सिवाय किसी और देश का कैदी होता तो निः-सन्देह पांच बरस तक उसे अपना शरीर कारागृह में न सड़ाना पड़ता । अवश्य शीघ्र ही उसका बध कर दिया जाता और इस तरह उसका अकीर्तिकर परन्तु सुलभ अन्त हो जाता । साथ ही नैपोलियन को कैद करना इंग्लैण्ड को बहुत ही मंहगा पड़ा। वह सारे योरप के अशान्तिमन्दिर का पुजारी समझा जाता था, तब शान्ति के पवित्र उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसे कहीं पर बन्द करना आवश्यक था । उस बन्द करने के लिये कई प्रकार के बन्धन भी आवश्यक थे । वे बन्धन योरप के सम्राट् के गौरव के कदापि अनुकूल न हो सक्ते थे । तब इतने बड़े आदमी को कैद करके कुछ न कुछ बदनामी का कमाना इङ्गलैण्ड के लिये आवश्यक था । किन्तु यदि

केवल इतना ही होता—यदि केवल आवश्यक बन्धनों पर ही बस की जाती—तो बदनामी का मार्जन सुलभ था ! किन्तु दुर्दैववश से उस समय इंग्लैण्ड की गवर्न्मेण्ट विचित्र राजसचिवों के हाथों में थी। **लार्ड लिवर्पूल** की गवर्न्मेण्ट जैसी ही योग्यता-रहित थी, वैसी ही हठीली थी। गवर्न्मेण्ट के बनाने वाले सारे सचिवों में से एक भी विशेष राजनैतिक दूरदर्शिता रखने वाला न था। जब नैपोलियन को पहले पहल कैद किया गया तो लार्डलिवर्पूल ने अपने एक सहयोगी को लिखा था कि 'मेरी यह इच्छा है कि इस बदमाश बोनापार्ट को हम फ्रांस के नये राजा के हाथों में मार देने के लिये दे दें।' जो मनुष्य एक योरपविजयी महापुरुष को गोली से मरवा देने की इच्छा रखसक्ता है, निःसन्देह वह बहुतही छोटे दिल का होगा। लार्डलिवर्पूल के इसी छोटे दिल ने इंग्लैण्ड के इतिहास पर बहुत बड़ा धब्बा छोड़ दिया है। इंग्लैण्ड की दिग्दिगन्त में प्रसिद्ध हुई हुई न्यायप्रियता और स्वाधीनता को इस सङ्कुचित विचार वाले सचिव ने बहुत ही बड़ा धक्का पहुंचाया था। हम समझते हैं कि यदि नैपोलियन के कैद होने के समय उसका योग्य वैरी **विलियमपिट** राज-सचिव होता, तो इन पांच बरसों का इतिहास वैसा अकीर्तिकर न होता जैसा अब हुआ है। नैपोलियन के साथ जो बर्ताव किया गया, उस से सारे निष्पक्षपात अंग्रेज़ शर्मिन्दा हैं, और निःसन्देह ईलियट, पिम, फौक्स, शैरिडन और ग्लैडस्टन जैसे स्वर्गत उदार नीतिज्ञ भी, अपने देश के एक सचिव की इन सङ्कुचित चेष्टाओं को याद कर के दुःखित होते होंगे। इंग्लैण्ड का दुर्भाग्य था कि ऐसे महत्त्व-पूर्ण तथा उत्तर-दायिता के समय में उसे ऐसे अयोग्य तथा अनुदार सचिव प्राप्त हुए, जिन से इन पांच बरसों का इतिहास सब के लिये दुःखमय होगया।

नोर्दम्बरलैण्ड नाम का जहाज़ सम्राट् को लिये हुए १६ अक्टूबर (१८१५) के दिन सेण्टहेलीना के तट पर उपस्थित हुवा। जहाज़ पर से उतार कर उसे एक छोटे से घर में टिकाया गया। पहले पहल तो उसे जो घर दिया गया वह बहुत ही छोटा तथा गन्दा था, वह नैपोलियन के एक घोड़े के सोने योग्य भी न था। दूसरा घर बहुत कुछ बड़ा था, किन्तु बड़प्पन भी सापेक्षक होता है। जिस घर में फ्रांस के भूतपूर्व सम्राट् को टहराया गया, उसमें केवल तीन कोठरियें थीं, जिन में से एक उस के सोने और विश्राम करने के लिये, तथा दूसरी पढ़ने लिखने तथा बैठने के लिये थी। तीसरी कोठरी में वह स्नानादि किया करता था। ये दोनों छोटी २ कोठरियें साथ ही साथ लगी हुई थीं, और पर्दों द्वारा उन में भेद किया जाता था। कोठरियों का फ़र्श

कच्चा था, और चूहों की बिलें उसे और भी उपहास्य बनादेती थीं। बड़े २ चूहे दिन रात उन कोठरियों की दीवारों तथा घरों में घूमते रहते थे और नैपोलियन को तंग किया करते थे।

इन्हीं छोटी २ कोठरियों में थोड़ी सी मासिक आय के सहारे, नैपोलियन साथियों सहित दिन बिताता था। ब्रिटिश सरकार ने उस का वार्षिक वेतन १२ सौ पौण्ड रक्खा था। इन बारहसौ पौंडों के आधार पर पलने के लिये २९ व्यक्ति थे। सेण्ट-हेलीना में आने से पूर्व नैपोलियन को चार साथी चुनने का अधिकार दिया गया था। उस ने **लेसकेसस, कौण्टबर्टरैण्ड, मैलकौम** और **गोगौंड** अपने कैद के साथी चुने। वे सब, उन में से दोके परिवार और अन्य भृत्यादिकों को मिला-कर २९ मनुष्य नैपोलियन के परिवार में थे। फिर यह भी सब लेखकों द्वारा स्वीकृत बात है कि सेण्ट हेलीना में सभी कुछ मंहगा बिकता था; वह ऐसा मनहूस द्वीप था कि वहां पहले से ही बहुत थोड़ी वस्तुएं थीं, और जो होती थीं वे भी बहुत अधिक मूल्य से प्राप्त होती थीं। कभी कभी तो नैपोलियन को धन के लिये बहुत ही तंग होना पड़ता था। एक वार भोजन तय्यार करवाने के लिये पर्य्याप्त धन भी उस के पास न रहा। उसने अपने भृत्यों को चांदी की एक तश्तरी तोड़ कर बेच देने की आज्ञा दी। बर्टरैण्ड ने वह तश्तरी लेली, किन्तु तोड़ कर बेची नहीं। दो एक दिन में धन सम्बन्धी कष्ट दूर हो गया, तब उस ने वह तश्तरी सम्राट् के सामने रखदी। और एक वार जलाने के लिये एक भी लकड़ी न रही। तब नैपोलियन ने अपने नौकर को आज्ञा दी कि वह उस की चारपाई तोड़ कर उसे काम में लावे। ये दृश्य विचित्र प्रतीत होते हैं। यदि ये सत्य न होते तो शायद इन्हें कोई स्वीकार न करता, किन्तु इस बात के सिद्ध करने के लिये सेण्ट-हैलीना में रहने वाले हर एक मनुष्य की साक्षी उपस्थित की जासक्ती है, कि नैपो-लियन सदा धनसम्बन्धी कष्ट में रहता था।

एक धन सम्बन्धी कष्ट ही इन बरसों को दुःखमय बनाता हो, ऐसा नहीं। और भी अनेक प्रकार के कष्ट थे, जिन्हें लिखता हुवा सेण्टहैलीना का इतिहास-लेखक आंखों में आंसू लाये विना नहीं रह सका। नैपोलियन का शरीर कार्य और परिश्रम के बिस्तरे में पला हुआ था। उस के अनथक शरीर को व्यायाम और परिश्रम करने का अभ्यास पड़ा हुआ था। उसे अब निश्चेष्ट जीवन में पड़ना पड़ा। जो नैपोलियन दिन में अठारह घण्टे कार्य करके भी न थकता था, उसे अब सिवाय हाथों पर सिर रखने

के कोई कार्य न रहगया । ऐसी भयानक तथा दुःखदायिनी अवस्था से बचने के लिये, उसने प्रतिदिन घोड़े पर चढ़ कर कुछ दूर तक सैर करने का विचार किया। द्वीप के शासक से पूछा गया तो उसने कहा कि बोनापार्ट भ्रमण के लिये जासक्ता है, किन्तु उस के साथ एक अंग्रेज़ सिपाही अवश्य रहेगा । जब कभी नैपोलियन कहीं घूमने जाता, तभी उस के साथ कोई न कोई पहरेदार अवश्य रहता । यह दशा उस के लिये असह्य हो गई । करोड़ों मनुष्यों के ऊपर जो मनुष्य किसी दिन अधिकार चला चुका हो, वह दिन भर एक पहरेदार की दृष्टि में रहे, यह उस के लिये सहनातीत था। इसी लिये उसने घर से बाहिर जाना छोड़ दिया । किन्तु, इस पर भी छुटकारा न था । द्वीप के शासक ने अपने एक आदमी को आज्ञा दी कि वह दिन भर में कैदी को एक वार अवश्य देख लिया करे । इस आज्ञा का नैपोलियन को भी पता लग गया । उस ने और भी अदृश्य रहना शुरू किया । कभी २ तो दिन रात में एक वार भी वह बाहिर न निकलता था । जिस दिन वह ऐसा करता, शासक के आदमी को बड़ा ही कष्ट होता । कभी २ तो वह बारह २ घण्टों तक नैपोलियन की कोठरियों के चारों ओर से झांकियें मारता रहता, कभी दरवाज़ों के छिद्रों में से देखता, और कभी बारी की सीखों में से नज़रें दौड़ाता। नैपोलियन के नौकर उसे ऐसा करते देखकर हंसा करते, तो वह बेचारा शर्मिन्दा होकर कोने में दबक जाता । किन्तु वह क्या करता ? उस का कार्य ही यह था । स्वामी की आज्ञा का पालन आवश्यक था । नैपोलियन भी उसे खूब ही छकाया करता था ।

जिस घर में नैपोलियन रहता था उस के चारों ओर सन्तरी दिन रात पहरा देते थे । इन सन्तरियों के अतिरिक्त सारे द्वीप में थोड़ी २ दूरी पर सिपाहियों के कैम्प लगे हुए थे । द्वीप के किनारे पर बड़े प्रबल पहरे थे, और प्रत्येक पहाड़ी की चोटी पर भी रक्षा का खूब प्रबन्ध किया हुआ था । सब जगह तार का ऐसा प्रबन्ध था कि हरएक स्थान से अधिक से अधिक दो मिनट में समाचार शासक तक पहुंच जाता था । द्वीप के इन आन्तरिक प्रबन्धों के अतिरिक्त बाहिर भी बड़ी चौकस रक्खी गई थी । द्वीप से निकलने के केवल दो रास्ते थे; शेष सारे तट ऊंचे नुकीले पत्थरों की चट्टानों से आवृत थे । उस पर से एक मनुष्य का तट पर जाना बहुत ही कठिन था । दोनों निकलने के स्थानों पर सज्जित बेड़े हर समय तय्यार रहते थे । इन सब के अतिरिक्त दो नौकायें द्वीप के चारों ओर निरन्तर चक्कर काटा करती थीं ।

इतनी रक्षा थी, जिस के मध्य में ब्रिटिश सरकार ने फ्रेंचसम्राट् को कैदी

किया हुवा था। किन्तु तब भी, द्वीप का शासक उसे विना तंग किये न रह सक्ता था। नैपोलियन को रोज़ देखने की आज्ञा के विषय में ऊपर लिखा जाचुका है। उस के अतिरिक्त कभी २ विशेष मनुष्य भी नैपोलियन के देखने के लिये भेजे जाते थे। जब वह अपने आप को दिखाने से इन्कार करता तो किवाड़ तोड़ कर घुसने की धमकी दी जाती थी।

इस प्रकार के अनेक कष्ट थे जो नैपोलियन को सहन करने पड़ते थे। किन्तु इन सब की शिकायत सुनने वाला कोई न था। जो मनुष्य ब्रिटिश सरकार द्वारा उस द्वीप का शासक नियत किया गया था, वह पूरा २ पिशाच था। उस की शक्ल सूरत ही भद्दी थी, ऐसा नहीं; वह व्यवहार में भी बड़ा बेसमझ और क्रूर था। यह ब्रिटिश सरकार का दौर्भाग्य था कि उसे ऐसा मनुष्य सेण्टहैलीना की शासकता के लिये प्राप्त हुआ। इस शासक का नाम **सर हडसन लो** था। इस जैसा बदनाम शायद ही कोई और पुरुष इतिहास में मिल सके। इस का नाम आज दिन साहित्य में नीचता तथा क्रूरताका सूचक हो चुका है। सेण्टहैलीना के सारे अनावश्यक दुःखों का बड़ा भारी कारण यही मनुष्य था। यह बड़ा ही सन्देही, हठी तथा निर्लज्ज था। नैपोलियन का जान बूझकरअपमान करना इसने अपना कर्त्तव्य समझा हुआ था। तब ऐसे मनुष्य के पास दुःखों की शिकायत क्या हो सक्ती थी? हाँ, इंग्लैण्ड की सरकार के सामने ये कष्ट उपस्थित किये जा सक्ते थे, किन्तु उस द्वीप के सारे पत्रव्यवहार खोलने का अधिकार शासक को प्राप्त था। तब भला अपनी शिकायत वह आगे क्यों भेजने लगा?

किन्तु अकेला **हडसन लो** भी दूषित नहीं कहा जा सक्ता। उस के ऊपर जो सचिव था, वह अनुदारता में कई वर्ष तक उसे भी पाठ पढ़ा सक्ता था। उस ने भी कैदी के साथ कठोर व्यवहार करने की आज्ञा देने में कमी नहीं की। यदि करने वाला नीच **लो** था, तो कराने वाला **लार्ड बैथर्स्ट** था। नैपोलियन को अनावश्यक दुःख देने में यदि पाप हुआ तो दोनों को, और यदि पुण्य हुआ तो दोनों को। इन दोनों जेलरों के रहते नैपोलियन के कष्टों का दूर होना असम्भव था।

शासक के साथ या सचिव के साथ किसी विषय में पत्रव्यवहार करना एक और कारण से भी कठिन था। ब्रिटिश सरकार की यह दृढ़प्रतिज्ञा थी कि वह नैपोलियन को कभी भी राजा, महाराज या सम्राट् न बुलायेगी। यह प्रतिज्ञा जैसी ही वृथा थी, वैसी ही अनुदारता के प्रकट करने वाली थी। **लार्ड रोज़बरी** ने अपने Napoleon–The Last Phase नामक ग्रन्थ में इस विषय पर बहुत अच्छा विवाद

किया है । आपने बहुत अच्छी तरह से दिखा दिया है कि नैपोलियन हर तरह से सम्राट् पद का अधिकारी था । यदि किसी अन्य देश के शासक को राजा कहाने का अधिकार था तो नैपोलियन को भी सम्राट् कहाने का अधिकार था । वह केवल राजा का पुत्र होने से राजा न था, किन्तु सारी फ्रैंचजाति के चुनाव से सम्राट् था । यदि एक जाति का चुनाव किसी मनुष्य को सम्राट् नहीं बना सक्ता, तो और क्या बना सकेगा ? ऐसी अवस्था में, नैपोलियन को सम्राट् न लिख कर केवल सेनाध्यक्ष नैपोलियन लिखना उस समय की ब्रिटिश सरकार की अनुदारता को प्रकट करता है । इसी कारण से नैपोलियन का किसी भी ब्रिटिश राज कर्म्मचारी के साथ पत्र व्यवहार या बात चीत करना असम्भव था । वे उसे सेनाध्यक्ष बुलाने पर उतारू थे, वह इसे सहन नहीं कर सक्ता था । वह कहता था कि 'मुझे सम्राट् न बुलाने में वे केवल मेरा अपमान नहीं करते, किन्तु सारी फ्रैंचजाति का अपमान करते हैं । मुझे सारी फ्रैंचजाति ने सम्राट् की उपाधि दी थी ।' उस समय नैपोलियन के साथ ऐसा व्यवहार हो रहा था कि 'चपेड़ मारूं और रोने न दूं' ।

इन सब कष्टों तथा दुःखों को झेलते हुए, नैपोलियन ने कैद के ये पांच बरस बिताये । बाहिर के सब सुखों से वंचित होकर पढ़ने लिखने तथा बात चीत करने में जो आमोद हो सक्ता है, उसे ही वह प्राप्त करता था । अपने साथियों के साथ बात चीत करने तथा उन्हें अपने विजयों तथा पराक्रमों के वृत्तान्त लिखाने में ही उस के दिन बीतते थे । कभी २ वह शरीर का कुछ व्यायाम करने के लिये बाग में भी कार्य किया करता था । किन्तु प्रायः उसका सारा दिन कोठरी के अन्दर बन्द होकर ही बीतता था । अपने अनुयायियों के साथ वह यथासम्भव प्रसन्न होने का यत्न करता था, किन्तु उस के भाग्य में अब प्रसन्नता न लिखी थी । संसार में ऐसी आकस्मिक उन्नति और ऐसा आकस्मिक निपात और कहीं देखने में नहीं आया ।

वह अनथक शरीर जो पांच २ दिनों तक घोड़ों पर से न उतरता था, इस निष्क्रियता से रोगी तथा शिथिल होने लगा । वे शक्तियें, जिनके सामने आधे योरप का शासन भी हंसी ठट्ठा था, निकम्मी होकर मनुष्य के शरीर को ही कतरने लगी । दुःखों और कष्टों ने नैपोलियन के अनथक और अद्भुत शरीर को ५ वर्षों में ही क्षण कर दिया । वह धीरे २ बीमार तथा शिथिल होने लगा; उस का जीवन-प्रदीप शनैः २ निर्वाणोन्मुख होने लगा । पुराने विजयों और वर्त्तमान पराजय ने उस के दिल

के टुकड़े २ कर दिये । वह प्रतिदिन कमज़ोर होने लगा । कमज़ोरी की अवस्था में उस पर पुराने रोगों ने आक्रमण किया । उसका पिता पेट में फोड़ा हो जाने से मरा था । उसी रोग ने उसे भी आ दबाया । उस के पेट में फोड़ा निकल आया । वेदना दिन २ बढ़ती गई । थोड़ी बहुत चिकित्सा, जो उस सूखे कटीले द्वीप में हो सकी थी की गई, किन्तु विधि को कौन रोक सकता है ? आंधी और तूफ़ान सारे द्वीप को जड़ों से उखाड़ने की धमकी दे रहा था और प्रकृतिदेवी अपने रुद्रतम रूप में परिणत थी, जब ९ मई (१८२१) के दिन एक छोटी सी कोठरी में १९ वीं शताब्दि के सब से बड़े पुरुष के प्राण पखेरू आकाश गामी हुए ।

नैपोलियन के मृत शरीर को उस के साथियों ने फ्रांस में ले जाना चाहा, किन्तु ब्रिटिश सरकार ने आज्ञा नहीं दी । उसी द्वीप में, एक नदी के पास जगह खोदकर, सम्राट् का मृतकशरिर गाड़ दिया गया। कबर पर नैपोलियन के अनुयायियों ने 'सम्राट् नैपोलियन' या केवल 'नैपोलियन' लिखना चाहा, किन्तु द्वीप के अंग्रेज़ शासक ने यह भी स्वीकार न किया । बीस बरसों तक महान् नैपोलियन की समाध विना किसी चिन्ह के एक एकाकी निर्जनस्थान में पड़ी रही । उस समय के पीछे, १८४० में फ्रांस-नरेश ल्यूई फ़िलिप ने ब्रिटिश सरकार से अपने देश के महत्तम मनुष्य की शव मांगी । ब्रिटिश सरकार ने यह मांग स्विकार करली, और बड़ी ही शान के साथ कई जहाज़ों के मध्य में आवृत होता हुवा नैपोलियन का मृतशरीर फ्रांस में लाया गया । इस मृतशरीर का फ्रांस में उतना ही आदर हुवा, जितना जीवित शरीर का होता था । आज भी फ्रेंचजाति की देवपूजा का चिन्हरूपी नैपोलियन का बुत पेरिस की शोभा बढ़ा रहा है ।
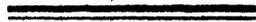
सप्तम परिच्छेद ।

सिंहावलोकन ।

एक दिन था जब नैपोलियन के विषय में कोई निष्पक्षपात सम्माति बनाना बहुत ही असम्भव था । उस के सम्बन्ध की घटनायें अभी इतनी नई थीं कि ठण्डे सिर से विचारना बहुत ही कठिन था । उस के मित्र और भक्त, उस के विजयों और पराक्रमों से इतने मोहित थे कि उन्हें उस के मानुषीय शरीर में कोई भी दोष नहीं दीखता था—जो स्पष्टतया असम्भव है । दूसरी ओर ऐसे भी पुरुष थे जो उस असाधारण मनुष्य के शरीर में सिवाय पैशाचिक शक्तियों के और कुछ भी न देखते थे । जो उस के मित्र थे, वे उस के गौरव पर मोहित थे; जो उस के शत्रु थे वे उसके कार्य्यों से बहुत क्रुद्ध थे । किन्तु आज वह दिन नहीं है । आज समय बदला हुवा है। बरसों के युद्धों से उबला हुवा रुधिर अब शीतल हो गया है और फटे हुए ज्वाला-मुखी पर्वत से निकला हुवा गर्म मसाला मृण्मय हो गया है । पुराने द्वेष भूल गये हैं, और शत्रु और मित्र कुछ २ ठीक सोचने के योग्य हो गये हैं । इसलिये, अब, नैपोलियन के विषय में कोई सम्माति बनाना बहुत कठिन नहीं है ।

किन्तु यह कार्य्य बहुत सहल भी नहीं है । नैपोलियन का जीवन एक पहेली है, जिसे बूझना बहुत कठिन है । यद्यपि जितना साहित्य नैपोलियन के विषय में उत्पन्न हो चुका है, उतना किसी भी एक मनुष्य के विषय में नहीं है, तथापि ऐसी घुण्डियें आज तक विद्यमान हैं जिन के खोलने के लिये हमारे पास कोई भी सामान नहीं है। इस असाधारण पुरुष का जीवन ऐसा चक्करदार है, और उस के कई रास्ते ऐसे गुप्त हैं, कि तत्त्वोद्देश्य पर पहुंचना बहुत दुष्कर कार्य्य है । तथापि, नैपोलियन के चरित लेखकों ने इस विषय में बहुत सिर पच्ची की है, और जीवन-चारित पढ़ने का लाभ भी यही है । यदि हम चरितनायक के तत्व को ही न समझ सके, तो हमने जीवन क्या पढ़ा?

नैपोलियन के चरित की मुख्य २ सारी घटनायें हम अपने पाठकों को सुना चुके हैं । नैपोलियन ने क्या किया ? इस प्रश्न का उत्तर दिया जा चुका है । इस परिच्छेद में हम इस प्रश्न का उत्तर देने का यत्न करेंगे कि नैपोलियन क्या था ?

वह एक असाधारण पुरुष था, इस में सन्देह नहीं। किन्तु क्या वह महापुरुष भी था ? और क्या वह सत्पुरुष भी था ? ये दो प्रश्न हैं जिनका उत्तर देना बड़ा कठिन कार्य्य है। किन्तु ये दो ही प्रश्न हैं जिन के उत्तर पा लेने पर हम समझ सकेंगे कि नैपोलियन क्या था ?

क्या नैपोलियन महापुरुष था ?

महापुरुष शब्द का विस्तृत लक्षण निश्चित करना यहां अभीष्ट नहीं है, केवल इतना कह देना पर्य्याप्त है कि महापुरुष शब्द से वह पुरुष अभिप्रेत है जिसकी मानसिक तथा असाधारण शक्तियें साधारण पुरुषों से बहुत महत्तर हों, और जिसके कार्य उन शक्तियों के पूरे २ चिन्ह रखते हों। यदि महापुरुष शब्द के ये ही अर्थ ठीक हैं, तो नैपोलियन महापुरुषों का भी महापुरुष था। वह संसार के उन महापुरुषों में से एक था जिनकी कीर्ति और मानता को देश परिमित नहीं कर सक्ता, समय मिटा नहीं सक्ता और भविष्यत् धुंधला नहीं कर सक्ता। वह उन महापुरुषों की श्रेणि में से एक था जिन में सिकन्दर और सीज़र प्रताप और शिवाजी के नाम लिखे जाते हैं। उस की युद्ध करने की शक्तियों से आज तक न किसी ने निषेध किया है, और न कोई करेगा। सेनापति पियोली कहा करता था कि 'इस कोर्सिकन का शरीर सिकन्दर का है, और सिर सीज़र का है।' अंग्रेज़ इतिहासज्ञ एलिसन कहता है कि 'आज तक किसी भी एक मनुष्य को नैपोलियन की अपेक्षा बड़ी शक्ति, तीक्ष्णप्रतिभा और प्रबल क्रियाशीलता नहीं दी गई।' उस के सारे संग्रामों का एक साधारण अनुशीलन यह विश्वास कराने के लिये पर्य्याप्त है कि उस की युद्धशक्ति असाधारण थी; युद्धविद्या से सर्वथा अज्ञ अध्येता भी उन का वृत्तान्त पढ़ता हुआ समझ सक्ता है कि उस की सी गति की तीव्रता, भविष्यत् के सोचने की शक्ति, शत्रु के स्थान तथा अवस्थिति को समझ लेने की प्रतिभा, सङ्घटनाशक्ति, और सेना में अपने आत्मा को फूंक देने की कुशलता, उस के शत्रुओं में न थी। उस के शत्रुओं में ही क्या—और भी दो एक के सिवाय अन्य ऐतिहासिक योद्धाओं में नहीं पाई जाती। वह वाटर्लू में हार गया, इस में सन्देह नहीं; किन्तु उस की हार एक सेनापति की हार न थी। वह हार सेनापति से सेनापति की हार न थी, किन्तु दैव से एक महापुरुष की हार थी। जब तक उस में और वैलिंग्टन में युद्ध रहा, निःसन्देह नैपोलियन का पलड़ा भारी रहा। विजय उसी की ओर को झुक रही थी। किन्तु, ग्रौची का ब्लूचर का पीछा न कर सकना,

और तोप के शब्द को सुनकर भी सहायतार्थ न उपस्थित होना, नैपोलियन के वश में न था। यदि ब्लूचर की नई सेना ऐन थकावट के समय पर न पहुंच जाती, या ग्रौची निदेशानुसार युद्ध में हाथ बँटाने के लिये समय पर पहुंच जाता, तो योरप का वर्तमान इतिहास बहुत भिन्न होता। किन्तु शत्रु पराजित हो सक्ते हैं, दैव पराजित नहीं हो सक्ता। अन्तिम युद्ध में नैपोलियन दैव से लड़ रहा था, शत्रुओं से नहीं।

केवल युद्धविद्या, यदि उस के साथ शासनचातुर्य न मिला हुआ हो, कुछ भी नहीं। तैमूर लङ्ग और चङ्गेज़खां विजेता थे, बड़े योद्धा थे, किन्तु इतिहास उन्हें उस कोटि में नहीं रखता जिस में नैपोलियन और सिकन्दर रक्खे जाते हैं। सिकन्दर के विजयों की कीर्ति हम सुनते आते हैं, इस में सन्देह नहीं; किन्तु बहुत प्रशंसायोग्य तथा अचम्भे में डालने वाली बात यह है कि निरन्तर युद्धों तथा विजयों में फंसे रहते हुए भी, इतनी थोड़ी आयु में वह एक सुरक्षित और विस्तृत साम्राज्य छोड़ गया। शासनविद्या में, संघटनाशक्ति में, तथा राजनियम समझने में, नैपोलियन सिकन्दर से कहीं बढ़ कर था ; उस के समय का समृद्ध फ्रांस, अद्भुत-नियमशास्त्र, नैपोलियन स्मृति और आन्तरिकशक्तियुक्त विस्तृत साम्राज्य, ये सब डंके की चोट उसकी असाधारण शासनशक्तियों का परिचय दे रहे हैं।

वह स्वभावतः इन सब विद्याओं से सम्पन्न था, यह नहीं कहा जा सक्ता। किन्तु उस के अन्दर इन विद्याओं के आत्ममय करने के योग्य शक्तियें विद्यमान थीं, यह निःसन्देह है। युद्धविद्या उस ने किसी से नहीं सीखी। जब वह प्रथमशासक बना, तब शासन कार्य्य से वैसा ही अनभिज्ञ था, जैसा एक साधारण सिपाही। किन्तु अपनी असाधारण प्रतिभा से उस ने तत्तद्विषय के विद्वानों से उन २ विषयों का ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया। छोटी से छोटी शासन सम्बन्धी बात पूछने में भी वह न शर्माता था। उस की असाधारण प्रतिभा ने जिस बात को एक वार जान लिया, फिर उस के पूछने की आवश्यकता न होती थी। इस प्रकार से ज्ञान इकट्ठा करते २, थोड़े ही दिनों में, वह शासनविद्या में अपने गुरुओं से बहुत अधिक हो गया, और शासन और युद्ध उसके बायें हाथ के खेल हो गये। जहां वह अपने समय में प्रथम योद्धा था, वहां प्रथम शासक भी था।

शासन और युद्ध की जिन करामातों को उस ने किया, उन्हें पाठक ऊपर पढ़ आये हैं। उन करामातों के करने के लिये जैसी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों की आवश्यकता होती है, वैसी उस में बहुतायत से विद्यमान थीं। उस की बुद्धि

तथा शरीर अनथक थे । जब तक अभी वह साम्राज्य के विलासों में पड़ कर तथा पीछे से एल्बा की आरामतलबी में रहकर मोटा न होगया था, तब तक कभी भी किसी ने उसे थका हुआ या ऊंघते हुए न देखा था। सैकड़ों मीलों की यात्रा घोड़े की पीठ पर करके, कई युद्ध रास्ते में लड़कर, दिनों का जागता हुआ जब वह पेरिस में लौट कर आता, तो उस का पहला काम आरामचौकी पर लेटना न होता था, किन्तु वह सीधा अपनी मन्त्रिसभा का अधिवेशन बुलाता, आठ नौ घण्टों तक उस सभा का कार्य्य करके फिर नई इमारतों या अन्य स्थानों को देखता, और फिर कहीं जाकर आराम लेता। आराम भी उस का क्या था? एक घण्टे तक गर्म पानी में स्नान किया और बस, फिर वैसे के वैसे चुस्त ।

उस की शक्तियें निःसन्देह महती थीं, किन्तु उस के उद्देश्य कैसे थे? जो कुछ लीला उसने योरपरूपी रङ्गस्थली पर दिखाई वह किस उद्देश्य से थी? क्या वह सारे कार्य्य केवल स्वार्थवश होकर, अपनी प्रसिद्धि के लिये ही करता था, या उस का कोई और भी उच्च उद्देश्य था? ये प्रश्न हैं, जो पहले प्रश्नों की अपेक्षा बहुत कठिन हैं । आज तक उस के किसी ज़हरीले से ज़हरीले शत्रु ने भी, उस की असाधारण शक्तियों पर सन्देह नहीं किया, किन्तु उद्देश्य के विषय में कुछ न पूछिये। इस विषय में तो जितने मुंह उतनी बात वाली कहावत चरितार्थ होती है । उस के मित्र या भक्त उसे समानता और स्वाधीनता के लिये, फ्रांस की उन्नति तथा रक्षा के लिये लड़ता हुआ समझते हैं, किन्तु उस के शत्रु उसके सब युद्धों तथा विजयों में सिवाय आत्मोदय की अभिलाषा के कुछ नहीं देखते । जहां उस के भक्तों की दृष्टि में वह आदर्श राजा था, वहां उस के विरोधियों की दृष्टि में वह आदर्श पिशाच था ।

वस्तुतः उस के उद्देश्य क्या थे? यह ढूंढ निकालना कितना कठिन है, यह उपर्य्युक्त मतभेदों के निरीक्षण से स्पष्ट है । जहां दो प्रबल स्रोत एक दूसरे से सर्वथा विरुद्ध इतने ज़ोर से चल रहे हों, वहां भला एक मध्यगामी स्रोत का चलना सुलभ कैसे हो सक्ता है? किन्तु, तथापि, इस विषय पर प्रकाश डालने का हम पुस्तक में यत्न करते आये हैं ।

वह पूरा २ पिशाच नहीं था, यह ठीक है, किन्तु वह सर्वथा स्वार्थरहित देवता था, यह कहना भी प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता । अपने पूर्व जीवन में, साम्राज्य से पूर्व, वह फ्रांस की कीर्ति के लिये बहुत करने को तय्यार होता था, हम यह भी कह सक्ते हैं कि उस समय वह देश की नामवरी तथा शक्ति के लिये ही विजय तथा शासन में नियुक्त होता था, किन्तु पिछले जीवन में अवस्था बदल गई थी । ज्यों २

उसे अपनी शक्तियों पर भरोसा होता गया, और ज्यों २ विजय का प्याला उसे पीने को मिलता गया, त्यों २ उसकी कामनायें और इच्छायें अपने आप में केन्द्रित होती गईं; वह अधिक से अधिक स्वार्थपरायण होता गया। रूस पर आक्रमण में हम उसे केवल अपने व्यक्तिगत झगड़े के लिये लाखों मनुष्यों का प्राणहरण करता हुआ पाते हैं।

उसके उद्देश्यों का प्रश्न उसके आचरणों का स्मरण कराता है, और हम इस प्रश्न पर आ पहुंचते हैं कि क्या वह सतपुरुष था? या इसे अधिक उपयुक्त बनाने के लिये यूं रखसक्ते हैं कि क्या वह दुष्ट पुरुष था? क्या उसका सामाजिक जीवन स्याह था?

यह प्रश्न फिर वैसा ही विवादग्रस्त है, जैसा उद्देश्यों का था। हर एक रङ्ग की सम्मतियें सुनाई देती हैं। ऐसे भी कई प्रसिद्ध लेखक हो गये हैं, जिन्होंने नैपोलियन को परले दर्जे का दुराचारी, तथा राक्षसप्रकृति माना है, किन्तु इसके अतिरिक्त दूसरी ओर ऐसे भी कई विज्ञ लेखक हो गये हैं, जो उसके व्यक्तिगत चरित्र को बहुत शुद्ध मानते हैं। यदि कोई आदमी एक विजेता राजा से महात्मापुरुषों जैसी उदारता तथा निःस्वार्थभाव की आशा रखता हो तो वह भूल पर है। विजयों और पराक्रमों के साथ उन प्रिय और सुन्दर गुणों का अवस्थान बहुत कठिन है, जो एक स्वाधीन तथा चारुचरित गृहस्थ में पाये जाते हैं। किन्तु यदि ज़रा सापेक्षक दृष्टि डाल कर देखें तो कहना पड़ता है कि उस के आचरण तथा व्यवहार शुद्ध थे, या कम से कम अशुद्ध न थे। उसे पापाचार और विलास के जितने सामान प्राप्त हो सक्ते थे, वे अचिन्तनीय हैं। किन्तु उन सब को लात मार कर आचारों को शुद्ध रखना कोई छोटी बात नहीं। यद्यपि ऐसे भी कई इतिहासज्ञ हैं जो उसे विलासप्रेमी मानते हैं, किन्तु उनकी संख्या अब घट रही है। जैसे इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध **कवि औस्कार ब्रौनिङ्ग** ने लिखा है 'जितना ही अधिक हम उस के विषय में जानते हैं, उतना ही अधिक आदर उसके लिये हमारे मन में उत्पन्न होता है, उसकी क्रियायें उतनी ही अधिक सहेतुक प्रतीत होती हैं, तथा उसके ऊपर कलंक लगाने वाली गाथायें निर्मूल प्रतीत होती हैं।' लार्डरोज़बरी की भी सम्मति है कि 'उस के आचरण ऐसे स्याह न थे जैसे वर्णित किये जाते हैं।'

वह अपने घर में बड़ा अच्छा गृहस्थ था। अपनी अर्धाङ्गिनी के साथ उसका व्यवहार प्रेमयुक्त था। पुत्र से उसे अगाध प्रेम था, अपने भाइयों को वह यथा-

शक्ति आराम देता था। उसके भाइयों ने चाहे उसके साथ कितनी ही कृतघ्नता या कम से कम अकृतज्ञता दिखाई हो, इस में सन्देह नहीं कि उसका उनके साथ व्यवहार बहुत ही अच्छा रहा। क्रोध, तथा मोह उस के अपने वश में थे। कहते हैं कि क्रोध उसके गले तक आता था, इस के ऊपर सिर में कभी भी प्रवेश न करता था। उसके क्रोध की दो एक गाथायें प्रसिद्ध हैं। एक वार एक दार्शनिक के यह कहने पर कि फ्रांस बोर्बोन राजाओं को चाहता है, उसने उस के पेट में इतने ज़ोर से ठुड्डा मारा कि बेचारा निर्बल दार्शनिक मूर्छित गिर पड़ा। इसी प्रकार एक वार उसने अपने मुख्य न्यायाधीश को मुक्कियों से खूब ही सीधा किया था। किन्तु ये केवल दो तीन ही अपवाद क्रोध के दृष्टान्त हैं। अन्यथा उसका क्रोध पर निर्द्वन्द्व राज्य पाया जाता है।

आमोद प्रमोद में वह कदापि लिप्त नहीं हुआ। उसका यह पूछना सर्वथा ठीक था कि 'मुझे आमोद प्रमोद और विलास के लिये दिन रात में समय ही कहां मिलता है?' उसका समय कार्यों से ऐसा व्यापृत था कि विलास भोगों के लिये अन्तर निकालना कठिन था। साथ ही विलासी की शक्तियें स्थिर नहीं रह सक्तीं, नैपोलियन इस बात को अच्छी तरह जानता था। कभी भी विषयों ने उसे अपनी ओर आकृष्ट नहीं किया, यह कहने को हम तय्यार नहीं, किन्तु इस से उसके आचार में दोष नहीं आता। वह मनुष्य ही नहीं जिसे विषय कभी भी अपनी ओर नहीं खींचते। आचारशुद्धता यदि इसका नाम है कि जीवन के किसी भाग में भी विषय आकर्षण न करें तो संसार में कोई भी शुद्धाचारी नहीं हो सक्ता। शुद्धाचारी वह है जो विषयों के आकर्षण को परे हटाकर अपने कार्य में लग जाता है, और उनके वशीभूत नहीं हो जाता। हम यह दावे से कहते हैं कि इन अर्थों में नैपोलियन सदाचारी था।

किन्तु पहली अर्धाङ्गिनी को छोड़ कर दूसरा विवाह करने की घटना हमारे इस कथन को सन्देह में डाल सक्ती है। यदि वह शुद्धाचारी था तो उसने दूसरा विवाह क्यों कराया? हमारी समझ में यह प्रश्न आचारसम्बन्धी न होकर धर्म सम्बन्धी है। उसने दूसरा विवाह विषयवासना को पूरा करने के लिये नहीं किया था, यह सब मानते हैं। पहली पत्नी **जोज़फाइन** के साथ उसका प्रेम अखण्डित था, किन्तु दूसरे विवाह का उद्देश्य फ्रांस के लिये भविष्यत् राजा का सद्भाव करना था। उसकी पहली पत्नी निःसन्तान थी, और आगे भी नैपोलियन के सन्तान होने की आशा न थी। फ्रांस के शासन की स्थिरता के लिये, नैपोलियन के उत्तराधिकारी

का होना अत्यावश्यक था । यह उद्देश्य था जिसने उसे दूसरा विवाह करने पर वाधित किया । अतः विषयवासना का पूरा करना उसका उद्देश्य न था । हाँ यह अवश्य कहा जा सक्ता है, कि यह दूसरा विवाह धर्म की दृष्टि से सर्वथा निन्दित था । यदि नैपोलियन धार्मिक होता तो राजनीति की दृष्टि से इस आवश्यक कार्य्य को न करता । किन्तु क्या वह धार्मिक न था ?

यह बताना बहुत कठिन है कि उस का धर्म्म कौनसा था ? या उस का कोई धर्म्म था भी या नहीं ? फ्रांस में उस ने क्रिश्चियनधर्म को स्थापित किया था, यह ठीक है, किन्तु इस से वह क्रिश्चियन था यह सिद्ध नहीं होता । वह राजनैतिक जीवन में धर्म की आवश्यकता को खूब समझता था, और उस से पूरा काम लेना चाहता था। धर्म के आश्रय पर वह अपने राज्य को तथा फ्रांस की सामाजिक दशा को स्थिर करना चाहता था। अपना उस का कोई धर्म न था। वह ईसाई तो था ही नहीं। ईसाई धर्म की अपेक्षा वह मुहम्मदी धर्म को अच्छा समझता था। उस ने यह कई वार कहा था कि वह ईसाई धर्म की अपेक्षा मुहम्मदी धर्म को बहुत सरल तथा सत्य के समीप समझता है । मिश्र देश के विजय के समय उस ने कुरान और मुहम्मद की प्रशंसा भी खूब की थी । किन्तु इस से वह मुसल्मान था, यह भी नहीं कह सक्के । वह एक ईश्वर को मानता था, और आचारशास्त्र को स्वीकार करता था । बाकी धार्म्मिक सिद्धान्तों पर उस का विश्वास न था। वह प्रायः कहा करता था कि मैं ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेता यदि वह सृष्टि के प्रारम्भ से प्रकाशित हुआ होता। जो धर्म सृष्टि के आरम्भ से नहीं है, वह ईश्वरीय भी नहीं हो सक्ता । शोक कि वेद का शब्द उस तक न पहुंचा था, जिस से पुराना कोई भी पुस्तक या ज्ञान संसार में नहीं पाया जाता ।

युद्ध और शासन में, घर और दरबार में, वह दयालु तथा कृपाशील था इस में सन्देह नहीं । उस के जीवन में ऐसे सैकड़ों से अधिक उदाहरण हैं, जिन से पाया जाता है कि वह थोड़े से उपकार का बहुत बड़ा बदला देने के लिये हर समय तय्यार रहता था; और उपकार के सामने पुराने सब दोषों को झट से ही भूल जाता था । एक दरज़ी, जिसने छोटी अवस्था में उस के लिये कुछ कपड़े थोड़ी कीमत पर बनाये थे, उस के सम्राट् बनने पर मालामाल कर दिया गया था; और एक सरायवाली को, जिस ने प्रारम्भ समय में उसे घर में आश्रय दिया था पीछे से जन्म भर के लिये पेन्शन दी गई थी । पहली वार आसनत्याग के समय जो सेनापति स्वामिद्रोह करके शत्रु से जा मिले थे, एल्बा से लौट कर

नैपोलियन ने फिर उन्हें अपने २ स्थान पर नियुक्त कर दिया था। ये सब उस की दयालुता तथा क्षमाशीलता का फल था।

नैपोलियन के सामाजिक जीवन के विषय में बहुत कुछ जान कर, इस जिज्ञासा का होना स्वाभाविक है कि उसका व्यक्तिगत चरित कैसा था ? क्या वह घर में और परिवार में भी वैसा ही क्रूर और निर्दय था, जैसा समरभूमि में ? वह जब समरभूमि में तोपों की बाढ़ों पर बाढ़ें छोड़ता था तब सहस्रों ही आदमी भुन जाते थे, उनको भुनते हुए देख कर भी वह गोलों की वर्षा को बन्द न करता था, जनहत्या के साथ २ उसका आवेश और क्षोभ अधिकाधिक बढ़ता था। उसकी युद्धप्रणाली का बीजमन्त्र था ही तोप का गोला। जो मनुष्य युद्धभूमि में ऐसा निरपेक्ष घातक हो सक्ता था, वह अपने घरेलू जीवन में कैसा था ? क्या वह अपनी अर्धाङ्गिनी के साथ तथा परिवार के अन्य सभासदों के साथ भी क्रूरतायुक्त व्यवहार करता था ? ये शङ्काएं हैं, जो स्वभावतः पाठक के मन में उत्पन्न होती हैं। इनका कुछ थोड़ा सा उत्तर हमने ऊपर दिया है। किन्तु यहां व्यक्तिगत और सामाजिक जीवनों का परस्पर सम्बन्ध दिखाना भी फल से रहित न होगा।

उपर्युक्त शङ्काओं का मन में उत्पन्न होना स्वाभाविक है तथा आवश्यक भी है। मनुष्य के व्यक्तिगत चरित का ज्ञान ही उसके सामाजिकचरित के ज्ञान की कुञ्जी है। सामाजिक जीवन इतनी भिन्न २ प्रकार की घटनाओं और पेचींदा संयोगों का मेल है, कि उसमें भूसे और अनाज का पृथक् २ करना बहुत ही कष्टसाध्य है। समाज स्वयं बहुत ही भिन्न २ प्रकार की इकाइयों का समूह है। तब उस में एक सामाजिक जीवन रखने वाले मनुष्य के लिए एक प्रकार का तथा ऊंच नीच और पेचेरहित जीवन रखना असम्भव है। जब सामाजिकजीवन ऐसा सरल नहीं होसक्ता, तब उसका वास्तविक विश्लेषण साधारणतया कैसे सम्भव हो सक्ता है ? सामाजिकजीवन के विश्लेषण को सहल करने का एक ही उपाय है, और वह उपाय व्यक्तिगत जीवन का अनुशीलन है। कोई मनुष्य कैसा ही असाधारण क्यों न हो, वह अपने सामाजिकजीवन को व्यक्तिगत जीवन से सर्वथा पृथक् नहीं कर सक्ता। दोनों जीवनों में ढांचा एक ही रहता है, बदलता है केवल खोल। सामाजिकजीवन, व्यक्तिगत जीवन की केवल बढ़ी हुई छाया है। नैपोलियन के सामाजिक जीवन की कुञ्जी पाने के लिये आवश्यक है कि हम उसके व्यक्तिगत चरित पर एक दृष्टि डालें; और साथ ही यह भी देखें कि उस के निजू जीवन का उस के सामाजिकजीवन से क्या सम्बन्ध था?

हम ऊपर बता आये हैं कि अपने गृहस्थ में वह बड़ा दयालु तथा उदार गृहपति था। अपनी अर्धाङ्गिनी जोज़फाइन के साथ उसका अगाध प्रेम था। हमारे इस कथन के साथ, किसी भी इतिहासज्ञ की अननुमति नहीं है कि उस का और उस की पहली स्त्री का पारस्परिक प्रेम सच्चा और हार्दिक था। वह जोज़फाइन पर सदा दयालु रहता था, और जब तक वह अपने घरेलू जीवन को त्याग कर उसके राज्यकार्य में हाथ न डालती थी, तब तक कभी भी उसे कोई आक्षेपक शब्द न कहता था। जोज़फाइन के साथ उसका सच्चा प्रेम इस दोषाभास के खण्डन के लिये पर्याप्त है कि नैपोलियन हृदयरहित पिशाच था।

किन्तु, अब एक कदम आगे चलिये। वाग्राम के युद्ध के पश्चात् नैपोलियन दूसरे विवाह का विचार करता है। उस के दूसरे विवाह का कारण क्या था? जोज़फाइन के नैपोलियन से तब तक कोई सन्तान नहीं हुई थी, और न आगे होने की आशा थी। इस सन्तानाभाव से उसकी महत्त्वाकांक्षा का प्रतिबन्ध होता था। वह फ्रांस में एक नये राजवंश को स्थापित करना चाहता था; उसकी आकांक्षा थी कि वह योरप का साम्राज्य अपने बाल बच्चों के हाथों में छोड़ जाये। किन्तु तब तक उसके कोई बाल बच्चा न था, और न ही आगे होने की आशा थी। बस इसी विचार ने, उसके और जोज़फाइन के विवाहसम्बन्ध को तुड़वा दिया। इतने बरसों के स्थिर हुए हुए पवित्र पतिपत्नीभाव पर चौका फिर गया। नैपोलियन ने दूसरा विवाह कर लिया और जोज़फाइन अलहदा एक महल में रहने लगी।

नैपोलियन के सामाजिक जीवन का अन्तःसार समझने के लिये इस घटना का निरीक्षण पर्याप्त है। यह गृहस्थसम्बन्धिनी घटना क्या बतलाती है? यह बतलाती है कि नैपोलियन हृदयवान् पुरुष था। प्रेम, दया आदि मानुषीय गुण उस में विद्यमान थे। किन्तु साथ ही उसमें एक और चीज़ भी थी और वह महत्त्वाकांक्षा थी। वह महत्त्वाकांक्षा पहले परिमित थी। समय के साथ ही वह बढ़ती गई। आखिर वह बढ़ती २ उस हद तक पहुंच गई, जहां पर उसका नाम महत्त्वाकांक्षा के स्थान में पागलपन हो गया। उस समय उस महत्त्वाकांक्षा ने प्रेम जैसे पवित्र सम्बन्ध को भी तुड़वा दिया। स्वभावतः नैपोलियन मनुष्य था, किन्तु महत्त्वाकांक्षा उसे मनुष्य से अतिरिक्त कुछ और बना देती थी। ड्यूक आव औनियां का कैद करवाना तथा उस पर अभियोग चलवाना भी इसी घटना के समान है। वह नहीं चाहता था कि किसी बोर्बोन वंशीय राजपुत्र का प्राणघात करे, या उसे कैदी बनाये,

किन्तु, जब वे उसकी एक मात्र इच्छा—महत्त्वेच्छा—के सामने विघ्नरूप होने लगे तब उस से न रहा गया, और उस ने वह कार्य्य कर डाला, जिसके विना वह आने वाली आधी आपत्तियों से बचा रह सक्ता था ।

तथापि, जब तक महत्वाकांक्षा की काली छाया बीच में न पड़ती थी, तब तक नेपोलियन एक सुशील मनुष्य के समान रहता था । अपनी अर्धाङ्गिनियों से उस का पतिप्रेम प्रशंसनीय था, पुत्र के साथ उसका स्नेह असीम था, और क्योंकि किसी तरह की भी महत्वाकांक्षा का प्रतिबन्ध उसके और उसके छोटेसे पुत्र के बिच में नहीं आसक्ता था, इसलिये पुत्र से उसका प्रेम बहुत ही बढ़ा हुआ और निष्कलङ्क था । अपने परिवार के अन्य लोगों के साथ भी उसका व्यवहार बुरा न था । उस के भाई यद्यपि निर्गुण और कायर थे, तथापि वह वारंवार उनपर लक्ष्मी की वर्षा करता था; उन्हें राजा बनाता और सिंहासनों पर स्थित करता था । जोज़फाइन के पहले पुत्र **यूगन** के साथ भी उसका बहुत गाढ़ा स्नेह था । सारांश यह कि जब तक महत्वाकांक्षा उसके गृहस्थ प्रेम में विघ्न नहीं डालती थी, तब तक वह सम्मानयोग्य गृहपति था ।

उसका स्वभाव बाल्यकाल से ही कुछ असन्तोषी तथा खिजू था । वह थोड़ी ही बात में नाराज़ हो जाता था । साम्राज्यप्राप्ति से पूर्व प्रथमशासकता के समय में, वह अपने घर में कभी २ परिवार के सारे लोगों के साथ भागा करता था । उसका कद छोटा था, इसलिये वह तेज़ न भाग सक्ता था । किन्तु किसी से पीछे रहना उसके स्वभाव में न था । वह अपनी सारी शक्ति का व्यय करके अन्धा होकर भागता था । भागते २ कभी २ गिर भी जाता था । तब एक विचित्र दृश्य दिखाई देता था । भागने में गिर जाने पर भला किसे हंसी नहीं आती ? किन्तु नैपोलियन के गिरने पर हंस देना मौत को बुलाना था । किसी की भी मजाल नहीं होती थी कि कोई उस पर हंस दे । किन्तु हंसी रुके कैसे ? हंसी को रोकना असम्भव देख कर, सारे उपस्थित जन—जोज़फाइन भी—हंसी छुपाने के लिये यत्न करते थे । कोई उद्यान में घुस जाता, कोई मकान की ओर को भाग निकलता—जिसे जहां छुप कर हंसने का स्थान मिलता, वह वहीं पहुंच जाता । यदि नैपोलियन किसी को हंसते देख लेता, तो हंसने वाले की शामत आजाती ।

नैपोलियन स्वभाव से ही चपल था, और कभी निकम्मा न बैठ सक्ता था ।

जब वह अपने आसन पर बैठता था, तब चाकू से उसके सिरे छीलता रहता था; वह आसन चांदी का बना हुआ है या सोने का, यह विचार उसके लिये निकम्मा था । उसका निजमन्त्री प्रातःकाल मेज़ पर अच्छी से अच्छी निब कलम में लगा कर रख देता था, और ज़ब सायंकाल के समय मेज़ साफ़ करता था, तब वहां पर सिवाय छोटे २ लोहे के टुकड़ों के और कुछ न मिलता था। शासक का चञ्चल हाथ, विना एक अक्षर लिखे ही, निबों के टुकड़े २ कर देता था। घर में जब कभी वह ख़ाली होता, तब अपनी बन्दूक उठा कर जोज़फाइन के पालतू पक्षियों के निशाने किया करता । बेचारी जोज़फाइन चुप हो रहती थी। किसी दूसरे मनुष्य से बात करते २ भी उसके लिये अपने हाथों को निचिल्ले रखना असम्भव था, वह प्रायः उसके कान को पकड़ कर मरोड़ा करता था और उसके सेनापति तथा मन्त्री इस कथन में एक शब्द हैं कि उसके हाथ बहुत अशक्त न थे । जब वह कान को मरोड़ता था, तब चुपके २ सहते जाना और न चिल्ला उठना बड़े धैर्य का कार्य्य था । नैपोलियन के आदमी इस सहने की कला में प्रवीण हो गये थे, किंतु बाहिर के आदमी के लिये बहुत कठिनता थी । ये सब स्वभाव बताते हैं कि वह प्रकृति से जहां दया और स्नेह से रहित न था, वहां उसके अंग प्रत्यङ्ग में गति तथा विनाशकता भरी हुई थी, वह उनके विना रह ही न सक्ता था। लोग शङ्का करते हैं कि वह इतने बड़े साम्राज्य को पाकर निचिल्ला क्यों नहीं बैठ गया? उनकी शङ्का का यही उपयुक्त उत्तर है । वह स्वभाव से ही गतिशील था, और उसकी गतिशीलता विशेषतया रचना की ओर न झुक कर विनाश की ओर को झुकती थी ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उस में गुण भी थे और दोष भी थे । मनुष्य कहाता भी वही है जिस में गुण दोष दोनो हों । वह भी मनुष्य था, किन्तु असाधारणता उस में भेद करती थी । उस की शक्तियें असाधारण थीं, उस के गुण और दोष भी असाधारण थे । वह गुणी या दोषी— जो कुछ भी था, असाधारण था । जो लोग उस के गुणपक्ष पर दृष्टि डालते हैं, वे उस में असाधारण गुणों का समूह पाते हैं; और वे जो उस के दोषपक्ष पर दृष्टि डालते हैं, उसे असाधारणतया दोषी देखते हैं । जब दोनों दल एकपक्षदर्शी हैं तब क्यों न हम उस के दोनों पक्षों पर दृष्टि डालें और उस के पिछले जीवन के स्वार्थभाव और किसी धर्म पर भी अविश्वास न होने पर शोक प्रकाशित करते हुए, उस की असाधारण शक्तियों तथा उस के अनेक आदरणीय गुणों की प्रशंसा करें !

इस प्रकार हम इस 'मनुष्य' के चरित का समीक्षण समाप्त करते हैं। हम उसे 'मनुष्य' कहते हैं क्यों कि वह इस से अधिक अच्छे और किसी नाम से नहीं बुलाया जा सक्ता। आज भी फ्रांस में जाइये और ग्रामों में घूमिये। आप को पता लगेगा कि वहां के ग्रामीण लोग नैपोलियन को विजेता या सम्राट् के विशेष नाम से नहीं पुकारते, और न हीं जानते हैं। वे उसे मनुष्य नाम से जानते हैं, और उसी नाम से पुकारते हैं। आज भी वहां के बहुत बूढ़े पुरुष अपने बच्चों को कहते हुए सुने जाते हैं कि 'बच्चा! इस ग्राम के बीच में से मैंने उस मनुष्य को जाते देखा था और उस के पीछे अनेक राजाओं की पंक्ति जा रही थी।' वह मनुष्य था, और मनुष्य के सारे गुण उस में विद्यमान थे। साहस, वीरता, धैर्य और उदारता की वह मूर्ति था। यदि वह स्वार्थी था, तो भी उस में मनुष्य का ही गुण था, क्यों कि अस्वार्थी मनुष्य देव कहाते हैं, मनुष्य नहीं।

परिशिष्ट ।

परिच्छेदों के आदि में दिये हुए श्लोकों के अर्थ ।

प्रथम अध्याय ।

प्रथम परिच्छेद—(पृष्ठ १) पत्थर भी रोने लगता है, और वज्र का हृदय भी फट पड़ता है ।

द्वितीय परिच्छेद—(पृष्ठ ९) क्रान्तिरूपी वेगवान् जलप्रवाह को कौन रोक सक्ता है ?

तृतीय परिच्छेद—(पृष्ठ १५) विवेक से गिरे हुओं का ऐसा निपात होता है, कि फिर उठना कठिन हो जाता है ।

द्वितीय भाग ।

प्रथम परिच्छेद—(पृष्ठ २५) जिस पुरुष के माता पिता तथा आचार्य्य श्रेष्ठ हों, वही ज्ञानवान होता है ।

द्वितीय परिच्छेद—(पृष्ठ ३०) नवोदित सूर्य की किरणें भी पहाड़ों के सिरों पर ही पड़ती हैं ।

तृतीय परिच्छेद—(पृष्ठ ३५) हे मेघ ! ऐसे कड़े समयों में अमृत से सींचते हुए तुझे विधाता ने न जानें कहां से भेज दिया है ?

चतुर्थ परिच्छेद—(पृष्ठ ४३) छोटी सी भी मणि विष के प्रभाव को उतारने के लिये पर्य्याप्त बल रखती हैं; जो स्वभाव से ही तेजस्वी हैं, उन के छोटे या बड़े भारी शरीर पर उन का प्रभाव अवलम्बित नहीं रहता ।

पञ्चम परिच्छेद—(पृष्ठ ५४) शूर कृतज्ञ और दृढ़विक्रम वाले पुरुष के पास निवासार्थ लक्ष्मी अपने आप ही जा पहुंचती है ।

षष्ठ परिच्छेद—(पृष्ठ ६१) गुण ही पूजा के स्थान हैं, केवल चिन्ह या आयु से पूजा नहीं होसक्ती ।

सप्तम परिच्छेद—(पृष्ठ ६६) स्वभाव से ही जो बड़े आदमी होते हैं, वे न जानें क्यों सदा ऐसे ही कार्य्य को प्रारम्भ करते हैं, जो बहुत महान् हो ?

तृतीय भाग ।

प्रथम परिच्छेद—(पृष्ठ७९) आग की शिखा को नीचे करदो तो भी वह ऊपर को ही जाती है ।

द्वितीय परिच्छेद—(पृष्ठ८७) अन्य साधारण लोग जिन नियमों से बांधे जाते हैं, वे असाधारण पुरुषों पर लागू नहीं होते ।

तृतीय परिच्छेद—(पृष्ठ ९७) विजयी और उठते हुए नरेश को देख कर प्रजायें उस का ऐसे ही स्वागत करती हैं, जैसे द्वितीया के चन्द्रमा का किया जाता है ।

चतुर्थ परिच्छेद—(पृष्ठ १०७) गुणी लोग अपने गुणों से उज्ज्वलता को प्राप्त होते हैं, जन्म की वहां कोई गिन्ती नहीं होती ।

चतुर्थ भाग ।

पंचम भाग ।

सद्धर्मप्रचारक।

आर्य्यभाषा का साप्ताहिक पत्र।

यह पत्र संसारमात्र को मित्र की दृष्टि से देखता हुआ उसका साप्ताहिक निरीक्षण करता है।

यह पत्र प्राचीन गुरुकुलशिक्षाप्रणाली के विजय की घोषणा देने वाला दूत है।

यह पत्र प्राचीनतम वैदिकधर्म को ही मनुष्यमात्र के कल्याण का हेतु समझता हुआ उसी का प्रचारक है।

यह पत्र विज्ञान साहित्य और इतिहासादि की उन्नति करना अपना कर्त्तव्य समझता है।

यह पत्र देशभर की भाषा आर्यभाषा और देशभर की लिपि देवनागरी लिपि करने के यत्न में है।

यह पत्र पंजाब के शिक्षित समाज में विशेषतया और देश के शिक्षित समाज में साधारणतया बहुत सम्मानित है।

यह पत्र वर्त्तमान सभ्यता की अशान्तिमयी चंचलता के दूर करने के लिये विशेषतया यत्नवान् है।

वार्षिक मूल्य—सर्व साधारण से ३।।) विद्यार्थियों से २।।) और भारत विभिन्न देशों से ४।=) नियत हैं।

जो इस पत्र को मंगवाना चाहें निम्न लिखित पते से मंगवालें—

प्रबन्धकर्ता—सद्धर्मप्रचारक
गुरुकुल कांगड़ी

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास।

प्रथम भाग—द्वितीय संस्करण

(श्री० प्रोफेसर रामदेवजी विरचित)

इस इतिहास में प्राचीन आर्य्यों की धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक तथा आत्मिक दशाओं का वर्णन है।

पुष्ट प्रमाणों से यह सिद्ध किया गया है कि प्राचीन आर्य्य ऐतिहासिक विद्या से भली भांति अभिज्ञ थे। उन दिनों भारतवर्ष में प्रजातन्त्र राज्य था, बड़ी बड़ी युनिवर्सिटियां थीं, शिक्षा के कई केन्द्र स्थान थे, और शिक्षा के नियम निर्धारित थे। भारतवासी ज्योतिष, रेखागणित, बीजगणित, अङ्कगणित तथा भूगोलादि से भली भांति अभिज्ञ थे, राजधर्म्म और प्रजाधर्म्म के मर्म्म को समझते थे, कई प्रकार के शिल्पों को जानते थे, अश्वतरी तथा ऐरावति आदि समुद्र पर चलनेवाली नौकाओं को भी बनाते थे। इसी भाग में उन प्रमाणों की समालोचना भी की गई है जिन्हें यूरोपीय विद्वान् अपने इस पक्ष के समर्थन में प्रस्तुत किया करते हैं कि प्राचीन आर्य्य यज्ञों में पशुवध करते थे, तथा वे गोमांसभक्षक थे, और यह भी बताया गया है कि ब्राह्मण-ग्रन्थ का अलङ्कार विकृत कथा के रूप में प्राचीन चैल्डियावालों के डैल्यूज टैब्लेट, तथा ईसाइयों में बाईबिलादि में भी वर्णित है।

इस इतिहास की सुप्रसिद्ध विद्वानों ने बड़ी प्रशंसा की है और इस पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान इसी से करना चाहिये कि प्रथम संस्करण तीन मास में समाप्त हो गया था। और दूसरा संस्करण हाथों हाथ बिक रहा है।

मूल्य प्रति पुस्तक केवल १।) सवा रुपया है। जिन महाशयों को इस पुस्तक के देखने की इच्छा हो, वे निम्नलिखित पते से मंगावें:—

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल काङ्गड़ी (हरद्वार)